









“ একএব বৃহদ্বর্ষো নিধনেপ্যনুযাতি যঃ ।  
শরীরেণ সমপ্রাশং সর্ষমন্যন্ত, গচ্ছতি ॥”

“ एक एव बृहद्वर्षो निधनेऽप्यनुयातियः ।  
शरीरेण समं नाशं सर्वमन्यन्त, गच्छति ॥

৬ষ্ঠ ভাগ । } শকাব্দা ১৮০৫ ।  
৩য় সংখ্যা । } আশ্বিন—পূর্ণিমা

৬ষ্ঠ ভাগ । } শকাব্দা ১৮০৫ ।  
৩য় সংখ্যা । } আশ্বিন—পূর্ণিমা ।

ধর্ম ।

( মহাভারত হইতে )

বিদ্যাভিত্তং বপুঃশৌর্য্যং কুলে জন্ম বিরাগিতা ।  
সংসারচ্ছিত্তিহেতুঃ ধর্মান্দেব প্রবর্ততে ॥  
বিদ্যা, ধন, শৌর্য্য, কৌলিন্য, আরোগ্য এবং  
সংসার নিবৃত্তির উপায় তত্ত্বজ্ঞান এতাবৎ সমস্তই  
ধর্ম্মানুষ্ঠান দ্বারালাভ হইয়া থাকে ।

অর্থ সিদ্ধি পরামিচ্ছন্ ধর্ম্মমেব সমাচরেৎ ।

ন হি ধর্ম্মানুষ্ঠৈত্যর্থঃ স্বর্গলোকাদিবায়তন্ ॥

পরমার্থ সাধনের ইচ্ছা করিয়া ধর্ম্মের অনুষ্ঠান  
করিতে হইবে, অনুষ্ঠান ভিন্ন স্বর্গলোক হইতে  
অমৃত পাতের ন্যায় ধর্ম্মের কথা বাতী কহিলেই  
কেবল ধর্ম্ম হইতে অর্থ স্বতঃএব অপগত হইবেনা।

যে ইচ্ছা ধর্ম্মেণ তে সত্য্য যে ইচ্ছা ধর্ম্মেণ ধিগন্ততান ।

ধর্ম্মং বৈ শাস্বতং লোকে ন জহ্যদ্বনকাঙ্ক্ষরা ।

ধর্ম্মদ্বারা যে অর্থ ( পরমার্থ ) সঞ্চিত হয় তাহাই

ধর্ম্ম ।

( মহাভারত হইতে )

বিদ্যা বিন্ধং বপুঃ শৌর্য্যং কুলে জন্ম বিরাগিতা ।  
সংসারচ্ছিত্তিহেতুঃ ধর্মান্দেব প্রবর্ততে ॥

বিদ্যা, ধন, শৌর্য্য, কুলমর্যাদা, অরোগিতা বী  
তত্ত্বজ্ঞান, জী কি সংসার নিবৃত্তি কা উপায় হৈ,  
সমস্তই ধর্ম্মানুষ্ঠান কে দ্বারা মিলতে হৈ ।

অর্থ সিদ্ধি পরামিচ্ছন্ ধর্ম্মমেব সমাচরেৎ ।

ন হি ধর্ম্মাদৈত্যর্থঃ স্বর্গলোকাদিবায়তন্ ॥

পরমার্থ কী ইচ্ছা করকি ধর্ম্মানুষ্ঠান করনা  
বাছিয়ে, কেবল ধর্ম্ম কী বচন কী কিছু বনেগা  
নহী । স্বর্গ কী অমৃত গিরনে কী সমান ধর্ম্ম কী  
অর্থ স্বয়মেব হাত ন আবেগা ।

যেই ধর্ম্মেণ তে সত্য্য যেই ধর্ম্মেণ ধিগন্ত তান্ ।

ধর্ম্মং বৈ শাস্বতং লোকে ন জহ্যদ্বনকাঙ্ক্ষরা ॥

ধর্ম্ম কী জী অর্থ ( পরমার্থ ) মিলতা হৈ বহী



सत्य-प्रशंसनीय आर अर्थ्य द्वारा ये अर्थ उपा-  
क्षित हय ताहा रूपा वा निन्दित । एहै जना रूपा  
धनेर लोभे शास्त्रिक धर्म परित्याग करिबेना ।

धर्मं चिन्तयामानोऽपि यदि प्राणैर्विमुक्त्यते ।

ततः स्वर्गमवाप्नोति धर्मस्यै तत्फलं विदुः ॥

धर्म चिन्ता वा साधन करिते अर्थ अमूर्त्तावस्थाय  
यदि कोन वाक्तर मुह्य हय, तथापि सेहै साधु  
चिन्ता कले ताहार स्वर्ग लाभ हईबे । ईहा धर्मर  
माहात्म्या उंसवाहुंसव यालि स्वर्गां स्वर्गं रुपां  
सुखं । अद्भुतानां च शान्तां च धनाद्या कथं कारणः ॥

मिनि धर्मानुष्ठान करेन तनि उंसव हईते  
महोंसव, स्वर्ग हईते उच्चतर स्वर्ग ओ सुख हईते  
परम सुख प्राप्त हयें एवं अद्भुतान, शान्त ओ  
धनाद्या हईया थाकेन ।

धर्मः प्रज्ज्ञां वृद्धयति क्रियमाणः पुनः पुनः ।

वृद्ध प्रज्ज्ञतो नित्यं पुण्यामारभते परम् ॥

धर्मर द्वारा प्रज्ज्ञा परिवर्द्धित हय, प्रज्ज्ञा वृद्धि  
हईले परम पुण्य पथ मुक्ति पद प्राप्त हय ।

### एकटी सार कथा

कोन पण्डित नौकारे हने गमन करिते-  
छिलेन । तनि नभोमार्गे नेत्र पात करिया  
नाविक के जिज्ञासा करिलेन, नाविक, तूम ज्यो-  
तिर्दिद्या विदित आछ ? नाविक बलिब, महाशय  
आमि उहार नाम ओ जानिना । एतच्छ्रवणे पण्डित  
बलिलेन तवे तोमार जीवनेर एक चतुर्थांश  
रूपा वारित हईयाछे । नदीर उभय तीरे हरिद्वर्ण  
शय्य क्षेत्रर विचित्र शोभा सन्दर्शन करिया पण्डित  
पुनः प्रकुल मनै जिज्ञासा करिलेन, नाविक ! तूमि  
उद्भिद् विद्या ज्ञान ? नाविक उद्धर करिल, ना  
महाशय । ताहाते पण्डित बलिलेन, तवे तोमार  
जीवनेर आर एक चतुर्थांश रूपा बिनछे हईयाछे ।  
जग बिलखे नदीर एवल वेगवतीगति दर्शने  
पण्डित जिज्ञासा करिलेन, नाविक तूमि गणित जान ?  
नाविक बलिब, आमि कोन शास्त्रहै जानि ना ।  
ईहा सुनिय । पण्डित बलिलेन, तवे तोमार  
जीवनेर चारि भागेर तिन भाग अनर्थक क्रय  
हईयाछे । एहै रूप कथावार्ता हईतेछे, एमन

सत्य-प्रशंसा याग्य हो ओ अर्थ्य से जो अर्थ प्राप्त  
लगत। वर हय वा निन्दित है । एतदर्थ हय  
धन के लालच से परम प्राप्त धर्म को न छोड़ना ।

धर्मं चिन्तयामानोऽपि यदि प्राणैर्विमुक्त्यते ।

ततः स्वर्गमवाप्नोति धर्मस्यै तत्फलं विदुः ॥

धर्म को चिन्ता या साधन करते २ अर्थात् अ-  
पूर्णस्थिति में यदि किसी ने परमार्थ को मिथारे,  
तर्हिपि उस साधु चिन्ता के फल से उन की स्वर्ग  
मिलेगा । धर्म को ऐसी महिमा है ।

उत्सवादुत्सवं यान्तु स्वर्गात् स्वर्गं सुखात् सुखं ।

अद्भुतानाय शान्ताय धनाद्या कर्मकारिणः ॥

जिन ने धर्म का अनुष्ठान करता है वे उत्सव  
से महोत्सवकी, एक स्वर्ग से दुसरा उत्तम स्वर्ग का  
वो सुख से परम सुख को प्राप्त हाने हैं ।

धर्मः प्रज्ज्ञां वृद्धयति क्रियमाणः पुनः पुनः ।

वृद्ध प्रज्ज्ञतो नित्यं पुण्यामारभते परम् ॥

धर्म से प्रज्ञा बढ़ती है, प्रज्ञा बढ़ने पर परम  
पुण्य पथ मुक्ति पद मिल जाता है ।

### एक सार कथा ।

किसी पण्डित ने नाव पर चढ़के कहीं जा  
रहा था । उनने आकाश मार्ग के ओर नेहार के  
मल्लाह से पूछा, कि तुम ज्योतिष जानते हो, मल्लाह  
ने बाला, नहीं महाराज, मैं तो उस का नाम तक  
नहीं जानता हूँ । यह सुनकर पण्डितजी बोले,  
आरे तब तेरा जीवन का चौथाई तो वृथा व्यतीत  
हो गयी । नदी के दो किनारे सबजी की भांति २  
विचित्र शोभा देख २ कर पण्डित ने फिर प्रफुल्ल  
चित्तता से पूछा कि हे नाविक ! तुम उद्भिद् विद्या  
कुछ जानते हो ? उसने उत्तर दिया कि नहीं  
महाराज । इस से पण्डितजी ने बोला, हा ! तब  
तो तुम्हारे आयु की ओर एक चौथाई भी व्यर्थ  
व्यतीत गयी । क्षण भर के अनन्तर नदी की प्रवह वेग-  
वती गति देख के पण्डितजी ने मल्लाह से फिर पूछा  
कि गणित जानते हो ? मल्लाहबोला मैं कोई शास्त्र  
नहीं जानता हूँ । इस से पण्डितजी बोले हा  
तुम परमायु के चार भाग के तीन भाग व्यर्थ हो  
बिनष्ट किये हो । ऐसी बातोंकाप ही रही थी कि

आय, नाविक जलें बाँप दिया पाड़ु । औ माँतार  
दिउते २ पाँउठके जिज्जाया करल, ठूमि माँतार  
जान ? पाँउठ वाल्लेन, ना । नाविक बल्ल  
तवे तोमार समस्त जाननहै रुथा बिनय हईल ।  
ठूमि शिखर उगवानके अरण करिय, मारदार जन्य  
अस्तुत हउ ।

ये सकल विद्या मनुष्यके यत्न यत्नग २हैते  
रक्षा करिते পারে ना, ताहा शिक्षा करिया अति-  
मान ओ अहंकार करा रुथा ओ मूर्खता मात्र । ये  
पराविद्या अत्यास पूरक मारु गण मन्त्रण द्वारा  
अगाध गम्भीर तब नदीर प्रवण श्रोत अतिक्रम  
करिया पाप, ताप, शोक, रोग, यत्न आदि  
२हैते निस्तार पान ताहा सकलें शिक्षाया ।

## आगेर गिरि ओ अक्षर जल ।

सेकानेव कथा छडिया नाओ, से राम ओ नाह  
से अयोध्या ओ नाह—से पुरातन हिन्दू समाज ओ  
नाह एवँ से एकचर्यादि आश्रम ओ नाह ।  
वर्तमान समये नवान युवक विश्वविद्यालय  
छडिया, ताल हड्ड, मन्द हड्ड, याहा शिक्षा  
छेन सेहै शिक्षा बोधा माथाय करिया कत  
मधुर कल्पनाय कत आशाभरा रुदये संसार  
अवेश करेन । संसार तँहार सुखसुख रक्षित  
छेक येन पावित उखल गङ्गापुरी बलिया बोध  
हय किन्तु संसार अवेश करिले तँहार नयनेर  
से इन्द्रजाल भाङ्गया याय । तখন बुझिते पावेन  
कल्पनार जगते ओ कार्येर जगते कत अत्रेद—  
तখন बुझिते पावेन कि भयानक स्थाने आसि-  
याछेन । एथाने रोगे प्रेष नाह, पिपासाय जल  
नाह, विपदे साधनानाह ; एथाने प्रणये सेरुप  
आश्र विसर्जन नाह, दयार, सहानुभूतिके सेरुप  
निःस्वार्थपरता नाह ; एथाने आकाङ्क्षा मिटेना,  
साध पूरेना ; एथाने विपदेर उपर विपद, स्वाधीन  
चिन्ताय, स्वाधीन गतिते पदे पदे प्रतिबन्धक,  
एथाने भगवत्प्रेम नाह, ईश्वरे आश्र समर्पण  
नाह ; एथाने पदे पदे प्रलोभन, पदे पदे  
पदस्वर्जन ; एथाने दारुण विषय तृष्णा ओ स्वार्थपरतार  
छक्र अनवरत घूर्णमान ! हरि ! हरि ! ईश ! से  
अप्रेर, गङ्गा, पुरी नहै ईश तीव्र निराश कालिमा  
मय पिशाच पुरी ।

संसारेर अवलम्बिकाय यधन विवृत्त, अतिवृत्त

को डवता हड्ड देख कर मल्लाहने जल में कुँद पड़ा  
औ पेरते २ पण्डितजी से पूछा कि आप पेरने  
को जानते हैं ? पण्डितजी ने बोला, नहीं । मल्लाह  
तब बोल्बोठा कि, हे महाराज, आप का सारा  
जीवन व्यर्थ है विनष्ट हुआ । आप शीघ्रही भगवत  
को स्मरण कर मरने के लिये प्रस्तुत होइये ।

जितना विद्या मनुष्य को मृत्यु को यातना से  
बचा नहीं सता है, उन सब को सिख कर  
अनिमान वो अहंकार करना हथा वा मूर्खता  
मात्र है । जिस परा विद्या को अभ्यास करके साधु  
गण पेरते हुए अथाह गंभीर भवनदी के प्रवल  
प्रवाह के पार उतार कर पाप, नाप, शोक, रोग,  
मृत्यु, आदि से वचजाते हैं, वही विद्या शिक्षा योग्य  
है ।

## ज्वालामुखी पहाड़ वो आंसुकी धारा ।

प्राचीन कालको बात तो भला छोड़ो : क्योंकि नवे  
शोरामचन्द्रजी है या वह अथाथा पुरी विद्यमान है  
अब वह पुराणा हिन्दू समाज भी नहीं वह ब्रह्म-  
चर्यादि आश्रम भी नहीं । आज कलक नव युवक  
गण विश्व विद्यालय ( युनिवर्सिटी ) से निकल के  
वहाँ भले बुरे चाहे जो कुछ सिखे हो उस शिक्षा  
बोझ भर पर लिए हुए कितनी मधुर कल्पना वो  
आशा से पूर्ण हृदय से संसारिक व्यापारों में प्रवेश  
किये करते हैं । संसार उन्हीं को मुख स्वप्न र-  
क्षित आश्रों के साधने माना कि एक परम प-  
वित्र उज्ज्वल गन्धर्व पुरी है, किन्तु सांसारिक  
व्यापारों में फसने हो से नेत्र को यह इन्द्रजाल मिट  
जातो है । तब मुझ पड़ता है कि कल्पना के क्षेत्र  
से कार्य क्षेत्र का क्या प्रभेद है । तब समझ सक्ते  
हैं कि किस भयंकर स्थान में आ पड़े हैं । यहाँ  
रोग का औषध नहीं, प्यास का जल नहीं, विपद-  
काल में मिठी वचन नहीं, प्रणय में आत्म विस-  
र्जन नहीं, दया में, सहानुभूति में निःस्वार्थप-  
रता नहीं ; यहाँ वासना मिठतो ही नहीं, अभि-  
लाषा पूरतो ही नहीं, यहाँ विपत पर फिर विपत  
आजाता, स्वाधीन चिन्ता, स्वाधीन गति में सदा  
ही बाधा बी विघ्न होता, यहाँ भगवत प्रेम नहीं,  
उन के चरण में आत्म निर्भर नहीं ; यहाँ प्रतिपद  
विक्षेप में प्रलाभन देख पड़ता, प्रति मूहूर्त में  
पैर फिक्कलजाता, यहाँ दारुण विषयतन्त्रा वा स्वार्थ  
परता को चाक्री सदैव चल घुम रहो है । राम,  
राम, कहाँ ! ! यह तो स्वप्न को वह गन्धर्व पुरी  
नहीं, यह तीव्र निराशा रूप अन्धकारमय पिशाच  
पुरी है ।

जब संसार की प्रचंड प्रवण के आघात से हम

उ अवसर हईया पड़ि, तখন मन बाह्य जगतेर दुक्के ज्ञान हईया अस्तुर्जगतके आशय लाब करे । कथतः चिन्ताय कि सुख ! मंगार मरुत अतात जीवनेर दुई एकटी पवित्र काव्यो मरुत आति आमल नया पूर्ण फल । तगवानेर मरुविषय निवारक हस्तरे निम्ने रहिया छि एहे चिन्ता कि सुख करो ।

तहि बालनेछलाम मन यथेन बड़ नाकुल हईया याय तथेन चिन्ताय आशय एखन करि । चिन्ताय माहायो कल्पनार चक्क फुटिया याय । तथेन येन देखिते पाई समस्त मंगार लक्षलक्ष आग्रेय गिरिते मयाकुल । अतोक मनुष्य एकएकटी आग्रेय गिरि—हृदय ताहार मरुत । अग्नि गिरिर अगुदगमे हयतः दुई चारिटी हकुरियम ओ पम्पी तामसा हईया गियाछे । किन्तु मानवाग्रेय गिरिर अगुदगमे बड़ कत लक्षा, इतीनापूर, कत कत त्रैय ; मिसर, त्रैय, त्रैय ; कत कत पादत अंगर डक्ति ओ तगरे प्रेम पूर्ण हृदय भागिया चूर्णिया गियाछे । लक्षलक्ष हृदय हईते अर्धार्ध लक्ष लक्ष गिरिर अनल लक्षी उद्गारित हईतेछे, कत कत रता, नगर, त्रैय, वरं उदपेक्षा ओ मूलादन कत कत मानव हृदयके ओ उलटि पालटि दक्षकटेछे, एखेर मंगारके तीव्र श्रमाने परिणत करिछे, पृथिवीर कछे ओ यक्षणा दिन दिन बद्धित करिछेछे ।

प्राकृतिक निष्कारने पड़िया छि, पृथिवीर आभा-नुतिक तापहि अग्निगिरिर उदपतिर निदान । मान-वाग्रेय गिरिर उदपतिर निदान अनुमकान कर, देखिते पाईने, ताता ओ अस्तुर्जगतके आभा-नुतिक ताप । विषय वानना इति मनुष्येर प्रकृति गत । एहे विषय वानना ओ ताहार अवशास्त्रावा कल थार परताहि अस्तुर्जगतके आभा-नुतिक ताप । तैहा-निगदक चरित्रार्थ करिछेई मानवेर निम्न व्यवहार । काम, क्रोध, लोभ, मोहादिर मरुतहि आग्रेय गिरिर उद्गारित अग्निनिष, गलत वाहनिःस्पन्द, उदकजल, त्रैय, इत्यादि । मोहनार रूपेर दहने पड़िया मरुत त्रैय ओ त्रैय ; दक्षाननेर मोहेर आग्रेय मोनार लक्षा छारे थारे गेल । परशुरामेर क्रोधेर दलनुवक्तिर ऐकन योगाईल कजिय ईल ; दुर्योधनेर मांसमरुत कल बाजि ओ आमरा भोग करिछेछि (२) । आर ओ कत उदाहरण देखाईने ? आमरा अतोकैई एक एकटी क, दु क, दु गिरि ।

\* इतालि देशाय छईटी नगर ; विषुविरनेर अगुदगमे त्रैय सां हईया गियाछे ।

२ । कुरुक्षेत्र युद्धेर परेई लारतवरीर अबनति रहित छईने ।

विध्वस्त, अमोभुत वा अवमन हो जाते, उस समय मन इस जगत के यत्नसे थक कर अन्तजगतका आशय लेलिताही फलतः चिन्ता से सुख क्या ! अतीत जीवनका दो एक पवित्र काव्य का मरुत स्मृति माना कि इस संसार कपो उसर मंगार में श्रामर गय छे रहै । भगवान क सर्व विघ्ननाशक हात का कायाके नीचे मेरा स्थान है, हा ! कहाय ता यह चिन्ता कोसो सुख करी है ।

माहो हम कह रहे थे कि मन जब बहुत ही दिक्का हो जाता है, उस समय चिन्ताका आशय ले लेते हैं । चिन्ता को सहायता से कल्पना को आंखि खुल जाती है । उस समय सूझ पड़ता है क्या, यह मारा संसार लाखों लाख ज्वालामुखी पहाड़ों से परिब्याप्त है । प्रत्येक मनुष्य एक २ ज्वालामुखी पहाड़ है, हृदय उसका कन्दर है । मान लेते हैं कि ज्वालामुखी पहाड़ों से आग निकलने पर दो चार हरकलियम वो पम्पी (१) सुभी मात हागये, किन्तु मानव रूपी ज्वालामुखी गिरियों को आग उगरने पर कितने लंका, हस्तनापूर, कितने द्रव, मिसर, गुनान, राम-कितने पवित्र रहे, भक्ति वो भगवत प्रेम पूर्ण हृदय टुट फुट हागये । लाखों हृदय से अर्धार्ध लाखों पहाड़ों के आगकी लहर निकल रही है, कितने राज नगर, गांव, बरं उदका से भी अधिक मनुष्यवृत्ति कितने भविष्य हृदय को उलट पलट के दाहन कर रही हैं, सुख मय संसारको भीषण श्रमान भूमिवनारही है पृथ्वी के कछ वो यातना दिनों दिन बढ़ा रही है ।

प्राकृतिक विज्ञान में पढ़ चुके हैं, कि पृथ्वी के भीतर का उच्चाप ही ज्वालामुखी पहाड़ों की उत्पत्ति का निदान है । अब टूटो, मानव-ज्वालामुखी पर्वतकी उत्पत्तिका मूल क्या है ? देख लेना कि वह भी अन्तर जगत की भीतर की गर्मियों से उत्पन्न होता है । विषयवा मनानह हृत्ति मनुष्यों की प्रकृति में निहित है । यह विषय वानना वो स्मार्थपरता ही, जोकि उस वानना का अवश्यभावी फल है अन्तजगत का अन्तरस्थ उच्चाप है । इन्हीं की कत कल्य करने ही के लिये रिपुओं का व्यवहार है । काम, क्रोध, लोभ, मोहादिका कार्यमें प्रवृत्त होना ही निकली हुई आग्नि शिखा, गलौ हुई धात, उष्ण जल, राक आदि है । हिलेनाके कपाग्नि से जर मरे द्रव वो गुनान ; दशानन के मोहाग्नि से सुवर्ण लंका भस्मोभूत हो गयी, परशुराम के क्रोधरूप प्रचंड आग से जरमरे चावियकल ; दुर्योधन के मांसमरुत का फल आजतक हम भोग कर रहे हैं ए । फिर कितने दृष्टान्त दिखावे जाय ? हम सब एक २ मनुष्य एक २ ज्वालामुखी पहाड़ हैं ।

(१) ये इताली के दो शहर हैं । विषुविरने के आग निकले, पर जर करभूमि के सामील हो गये ।

ए कुरुक्षेत्र संग्रामही के अन्तर से भारतवर्ष की प्रकृति जीने लगी ।

कौन कौन अगिगिरि दुई एकवार स्फूर्ण करिया छिरकानेर जन्य निरुद्ध हय-येमन बाझीकि, विश्वागिज ; कौन कौनटीर वा आग्नेय उपादान सहेउ एकेवारे स्फूर्ण हयना येमन बशिष्ठ ; कौन कौनटी वा छिरकाल धरिया अलितेछे ताहार उताहरणेर अभाव नहि ।

ताहि बलितेछिलाम, संसार अगिगिरिमे समालुल । कदम पुष्पेर केशरेर न्याय अगिगिरि माला संसारके बेकन करिया रहियाछे । कतकाल एहि आशुग अलिबे, कतकाल एहि आशुगे संसार छारथार हईबे, कतकाल संसार भाषण समाने परिणत থাকिबे, भगवान जानेन । भारत वसेर तैपदक समये एहि अनल अनेकटा निबिया गियाछल—एतेर प्रभावे, राम दिनेर प्रभावे एहि अनलेर तीव्रता अनेक शीतल हईयाछिन, अनेक आग्नेय गिरि वीतोदगौरण हईयाछिन । किन्तु हाय ! एतन कि हईतेछे ? एतन ये ए अनल अप्रतिहत प्रभावे अलितेछे ! कोथाय वा सेहै अपौरुषेय वेदेर महिमा प्रचार ! कोथाय वा सेहै तेजःपुञ्ज ऋषिगणेर पवित्र मासुना । भारत एतन भाषण अस्कारमय समान-फेद । एहि भाषण अस्तमसेर मध्ये आग्नेय गिरि माला भाषणभावे अलितेछे ।

हा ! ए अनल निबाईवार कि कौन उपाय नहि ? ए आभासुरिक ताप शीतल करिबार कि कौन उपाय नहि ? वेदेर महिमा प्रचार बन्क हईया गियाछे, किन्तु वेदेर महिमामो यायनाहि ; वेदतो याय नाहि ; ऋषिगण लुकायित हईयाछेन—ताहार अस्तित्वतो जगं हईते बिलुप्त हय नाहि । वेद याय नाहि, रामिरा यान नाहि तबे गियाछे कि ? गियाछि आमरा, गियाछे आमादेर उक्त मनोवृत्ति राशि, गियाछे आमादेर आशु । एतन उ उपाय आछे, एतन उ उपाय आछे । ये उपाये, ये उपाये बाझीकि, विश्वागिजेर ताप मिटियाछिल से महदनुष्ठानेर कथा बलितेछिन । ये उपायेर कथा बलितेछि ताहा तत कठोर-साधानहे, सेहै उपाय अनुतापेर दुई एकटा अकपट अश्रु बिल्लु । मन हईते आर्या शास्त्रेर उ आर्याश्रुतिगणेर प्रति अविश्वास कालिमा मुहिया फेल, ताहारिगणेर प्रति

किमो २ पहाड़ने एक दोबेर मात्र ज्वाला माला निगल के चिरदिन के लिये निवृत्त होता है, जैसा कि बाल्मीकि, विश्वामित्र ; किमो २ पहाड़ में ज्वाला के उपादान रहे भी कभी आग निगलतीही नहीं, जैसा की वशिष्ठजी ; किमो २ ने निरन्तर जल रहा है, इस के दृष्टान्त की क्या कमी है ।

मोहो हम कह रहे थे, कि संसार ज्वालामुखी पहाड़ों में भरा हुआ है । कदम्बकेगरी के समान इन पहाड़ों ने संसार वेष्टन करलिया । राम जाने, कि और कितनी दिन तक यह आग लहरती रहेंगे, कितनी दिन तक यह आग संसार को राख छार करती रहेंगी वी कितनी दिन तक यह संसार भयंकर श्मशान सृष्टि बना रहेगा । भारतवर्ष के वैदिक काल में यह आग बहुत सी बूढ़ गयी थी । वेद के प्रभाव से, ऋषियों के प्रभाव से इस आग को तेजो बहुत सी ठंडी पड़ी थी—अनेक ज्वालामुखी पहाड़ों की आग निगलना एकवारगी बंदही हो गयी थी । किन्तु हा ! अब क्या हो रहा है । अब तो वह आग बेरोकबट बड़ी प्रचंडता से जल रही है । अवोरुषेय वेदों की महिमा का प्रचार अब कहां ! उन तेजः पुंज ऋषियों के पवित्र शिष्या-वाणी अब कहां सुनने में आती ! भारत अब भीषण अस्कारमय श्मशान क्षेत्र बन गया । इस भीषण अस्वतामस के भीतर ज्वालामुखी पहाड़ समूह भाषण भाव से जल रहे हैं ।

हा ! अब इस अनल को बुताने के लिये कौन सा उपाय किया जाय ? इस अन्तराल उत्ताप को शीतल करने का क्या कोई औषध नहीं ? वेदों की महिमा का प्रचार ही रुक गया किन्तु वेदों की महिमा तो अलोप नहीं हुई है, वेद भी तो नष्ट न हुए । ऋषिगण अन्तर्धान हुए किन्तु उन्होंने कीं सत्वा या विद्यमानता अब तक संसार से अलोप न हुई । वेद भी बने बनाये तैयार हैं, ऋषि लोग भी विद्यमान हैं तब नष्ट क्या हुआ ? नष्ट हुए हम सब ! नष्ट हुए हमारी उन्नत वी उदार मन की वृत्तियां !! नष्ट हुआ हमारा आत्मत्व !!! अब भी उपाय है, अब भी औषध है । हम उस महत अनुष्ठान की बात नहीं कहते जिस में बाळीकी, विश्वामित्र जीका उत्ताप मिठा था । जिस औषध की बात हम कहने चाहते वह उतना कठोर साध्य नहीं वह औषध यह है “ पञ्चात्ताप से गिरती

অসহ্যবহার ও নিজ নিজ পাপাচারের জন্য অনু-  
তাপের অশ্রু বিমর্জিত কর । দেখিবে অনুতাপাশ্র  
তোমার মনকে মহৎ করিবে, আত্মসংযমকে  
আর্দ্র ও আকৃষ্ট করিবে, তোমার আত্মাত্মিক তাপ  
নিবাইবার উপায় করিয়া দিবে। তুমি আনন্দ-ব-  
হীন হইয়া নৃত্য করিবে তোমার চক্ষু হইতে ভক্তি  
ও ধেমবারি নিঃসৃত হইবে, সেই দুঃখের, ক্ষোভের,  
ভক্তির, প্রেমের একত্রীভূত পবন অশ্রুজল অগ্নি  
গিগিরি অন্তস্তাপ নিবাইবে ।

মানব ! যখন সংসারের দারুণ কটিকার অভি-  
ভূত হইবে, যখন সংসারের তীব্র প্রলোভন স্রোতে  
তোমার উচ্চ প্রবৃত্তি সকল ভাসিয়া যাইবার  
উপক্রম করিবে, যখন শোকে, দুঃখে, বিপুল  
নিঃস্বার্থ মহানুভূতি পাইবেনা তখন উদ্ধে চাহিয়া  
একবার প্রাণ ভরিয়া ডাকিবে—

“ হে নাথ ! শরণং দেহি মাং ভক্তঃ শরণাগতঃ ”  
আর ছুই এক বিন্দু অকপট অশ্রু সেই প্রার্থনা  
বাক্যের সহিত মিশাইয়া দিয়া বলিবে

“ ভগবন !

অবিনয়মপনয় বিবেশা ! দময় মনঃশময় বিষয়  
রসতৃষ্ণাম্ ” । কঠিন হইওনা-জননকে উন্মুক্ত করিয়া  
দাও, তোমার আকাঙ্ক্ষা ও ব্যগ্রতা তোমার প্রতি  
অশ্রুধারাতে প্রতিভাত হউক। একবার প্রাণ খুলিয়া  
উচ্চৈঃস্বরে ডাক

“ অপরাধ সহস্র নদুল্পাতিতং ভীম ভদ্রাণ্যনাদরে  
অগতিং শরণাগতং হরে কৃপয়া কেবলমাত্রমাংসকুরু ”

জননকে যদি আরও একটু মহৎ করিতে পার  
তবে তির নিঃশঙ্ক ভাবে বল,—

“ নাথ্য পশ্যে নবশনিচয়ে নৈব কামোপভোগে  
নদ্বাণ্যং তদ্বদভু ভগবন্ ! পূর্বকণ্মানুরূপং ”

তাঁহা হইলে দেখিবে তুমি এক অপূর্ববল পাই  
যাছ, প্রলোভন জালের মধ্যবর্তী হইয়াও প্রলোভন  
জয় করিতে সমর্থ হইতেছ, তোমার আত্মাত্মিক  
তাপ সঞ্জাত হইতে না হইতেই মর পাইতেছে,  
তুমি অকৃত মহত্বের সোপানে অহিরোহণ করি-  
তেছ । তুমি জনয়ের এই ভাবকে যদি পরিস্ফুট  
রাখিতে পার তাঁহা হইলে কালে তুমি এক অনা-  
স্বাদিত পূর্ব অক্ষয় সুখ লাভ করিবে ।

হুই নিষ্কপট আঁসুখী দো এক বৃন্দী ” । আর্থ্য শাস্ত্র  
বা আর্থ্য ঋষিগণের জা অবিভ্রাম রূপ কালিমা  
মন মেন লগো হুই হৈ উস কো মিঠা ভালো, উন  
পর জা অগোম্য ব্যবহার বা স্য অনেক পাপানুষ্ঠান  
কিয়ে হৈ, তান্মিত্ত পয়্যাত্তাপ কো আঁসু গিরাম্মা ।  
দেখ লেনা ইস সে তুমহার মন বড় জায়গা, আর্থ্য  
ঋষিগণের মন লামাবিগা বোখোঁব লাবিগা, তেরে  
মীতর কো গম্মী মিটানে কা উপায় কর দেগা । ত  
আনন্দ সে বিহ্বল হাकर নৃত্য করতে রহিগা, তেরে  
আঁখি মেন সে ভক্তি বা প্রেম কো ধারা বহতী রহিগা,  
উস দুখী সে, চোঁম সে, ভক্তি বা প্রেম সে ইকঠটী  
মিলৌ বা গিরতী হুই আঁসু কা ধারা জ্বালামুখী  
কে মীতর কা উত্পাপ কো নিবারণ করিগা ।

হে মানব । জব সংসার কে প্রচণ্ড ঝঙ্কার সে বিব্রম হৈ  
জা অগো, জব সংসার কে তীব্র প্রলোভন কো ধারা মেন  
তেরী উত্তমোত্তম প্রবৃত্তিয়া বহু জানে লগেগো, জব  
গোক, দুঃখ বা আপদ কাল সে নিঃস্বার্থ মহানু-  
ভূতি ন মিলিগো উম সময় আঁখি কো জপর উঠা  
কর একবির একাধ চিন্ততা সে তো পুকারনা—

“ হে নাথ শরণং দেহি মাং ভক্তঃ শরণাগতঃ ”

আঁসু মিলিয়ে কহতে রহিগো “ ভগবন্ ।

“ অবিনয়মপনয়বিবেশো ! দময় মনঃশময় বিষয়রস  
তৃষ্ণাম্ ”

কঠোর ন বনৌ, হৃদয় কো খুল দৌ, তেরী অভি-  
লাষা বো আয়হ তেরী প্রত্যেক অশ্রু বিন্দু, সে ভাসিত  
হৈ ; এক বির পূর্ণহৃদয় সে পুকার কে কহৌ—

“ অপরাধ সহস্র সংকুলং পতিতং ভীম ভদ্রাণ্যনাদরে  
অগতিং শরণাগতং হরে ; কৃপয়া কেবলমাত্রমাংসাত্মকুকাং ”  
হৃদয় কো যদি আর মী থাড়ে বহুত বড়া সখী  
তব নিটল বৌ নিডর সে বীলৌ—

“ নাথ্য ধর্ম্যে নবসু নিচয়ে নৈব কামোপভোগে ।

যদু ভাব্যং তদুভবতু ভগবন্ ! পূর্বকণ্মানুরূপম্ ॥ ”

ইস সে তুম কো এক অপূর্ব সামর্থ্য মিলিগৌ, সুখ  
পড়িগা কি প্রলোভনজাল কো বীচ মেন রহ কর মী  
প্রলোভন কো জয় করনে মেন সমর্থ হুই হৌ, তেরা  
মীতর মেন সন্তাপ প্রগট হীনে কো পহলৌ হী প্রণয়  
হৈ জাতা হৈ, ত প্রকৃত মহত্ব কো সীড়ী পর চড়  
রহি হৌ । প্রফুল্লতা সে যদি সদৈব ইস ভাব কো  
রচা পর সখী, তো অন্ত কো এসা এক অপূর্ব  
অক্ষয় সুখ মিলিগা, জী কি তুম কো কখী ন মিলা ।



आहा ! এমন দিন কবে আসবে যখন পৃথিবীর পুণ্যক জীবের জন্য এইতে এইরূপ পবিত্র উৎসুক পূর্ণ পুণ্যনাথের নিঃসৃত হইবে। পুণ্যক চক্ষু হইতে এইরূপ পবিত্র অনুভূত পও আকাঙ্ক্ষার অপূর্ণ অশ্রুজল নির্গত হইবে, সেই পরিজ্ঞ অশ্রু জলে অভিষিক্ত হইয়া, কোটি কোটি জীবের পুণ্যের কুসুমস্তবক ভগবানের চরণে উৎসর্গীকৃত হইবে। কোটি ২ আগুণ গিরির আভাস্তরিক তাপ নিবিস্য নাইবে, কোটি কোটি মনুষ্য দেবতাদিক পূজা হইয়া উঠিবে।

ভাই আশ্বাসস্থান। এস এই অপূর্ণ সুখ পাইবার জন্য প্রস্তুত হই, এস আবার মুহূর্তাদপি মহৎ হইতে ব্যাকুল চিত্তে চেষ্টা করি-এস মধুর সুখে মধুর তানে গাই—

দেব ! দেব ! কৃপালো ! হৃদয়তীনাং গতির্ভব  
সংসারার্ণব মগ্নানাং প্রমীদ পরমেশ্বর ”

শান্তিঃ ! শান্তিঃ ! শান্তিঃ ! হরিঃ ! ওঁ !

### তোমার সম্পদ ।

( প্রাপ্ত )

মানব : এই অবনী মণ্ডল ভ্রম গ্রহণ করিয়া আপনাকে স্মৃতি করিবার জন্য তোমার বড় আগ্রহ দেখিতে পাই। তোমার সুখের আশা অতীব বলবতী। আশা মরোচিকায় বিনুগ্ন হইয়া ভূমি সময়ে ২ আত্ম নিশ্চিন্ত হইয়া গাও, ভূমি ঈশ্বোত বিষয় লাভের যোগ্যাদিকারী কিনা তাহা তোমার অন্তরে একবারও উদয় হয় না। তোমার যত কেন সম্পদ বৃদ্ধি হউক না তাহাতে আমি তৃপ্তি নহি, কিন্তু যতই তোমার সম্পদের মূলানুসন্ধান করি, ততই দেখিতে পাই যে কোন না কোনরূপে অন্যের সম্পদের মূলে কুঠারাঘাত করিয়া ভূমি নিজ সম্পদ বৃদ্ধি করিতেছে। দেখিলাম ভূমি ভূমিকে হইয়াই অগ্রজ ভ্রাতা বা ভগ্নিকে মাতৃস্তন্য হইতে বঞ্চিত করিলে ও হাস্য বিকসিত বদনে শ্রয়ঃসুখে পান করিতে লাগিলে। কিঞ্চিৎ বয়ঃ প্রাপ্ত হইয়াই বালক বালিকা সহ বাল্যক্রীড়ায় আমোদ অনুভব করিতে শিক্ষা করিলে, দেখিলাম তাহাতেও তোমার সম বয়স্ক গণকে পরাস্ত করিবার ইচ্ছা। বিদ্যা শিক্ষার্থ বিদ্যালয়ে গমন করি-

হা বহু শ্রম দিন কবে হাঙ্গা, জবদি পৃথ্বী তলকে প্রত্যেক জীবকে হৃদয় সে ইস ভাতি পবিত্র আয়হ পূর্ণ প্রার্থনা নিকলতী রহেগী, প্রত্যেক নেত্র সে ইস ভাতি পবিত্র অনুগাক বো অভিল্লাপা সে অপূর্ণ আঁসু গির-  
তোরহংগী, উম পবিত্র অশ্রুজল সে সিন্ধিত হাঙ্কর ক  
হাঙ্কী জীবকে পাণ কপী ফুলী কী গুচ্ছা ভগবানকে  
শরণ পর উল্লগী হাঁগি। কড়ারহা জ্বালামুখী  
পহাড় কে অন্তরম্ব উল্লাপ ঠাড়া পড় জায়গা ক-  
ডোরহা মনুষ্য দেবতা সে অধিক পূজ্য বন জাবিগে।

হে আর্থ্য ভাইয়ী ! অব আয়হে, হম সব ইস সুখ  
কে লিয়ে আয়হ পূর্ণচিত্ত সে চেহা করে, আয়হে ম-  
ধুর আনন্দ সে মধুর তান জমাবি —

“ দেব ! দেব ! কৃপালী ! ত্বমগতীনাং গতির্ভব : ।  
সংসারার্ণব মগ্নানাং প্রসাদ পরমেশ্বর ॥ ”

শান্তিঃ শান্তিঃ শান্তিঃ হরিঃ, অঁ।

### তেরা সম্পদ ।

( প্রাপ্ত )

হে মানব ! ইস সংসার মৈ জন্মকর স্বয়ং সুখী  
হোনে কে লিয়ে তেরা বড়াহী আয়হ দেখ পড়তা হৈ ।  
তেরে সুখ কী আশা বড়া বলবতী হৈ । আশা কপী  
মৃগ তৃণা মৈ মোহিত হাঙ্কর সময় ২ পর আত্ম  
বিস্মৃত হী জাতা হৈ । তু জী কুচ্ছ চাহতা হৈ উম  
কে যোগ্য অধিকারী তু হৈ যা নহী, সী এক বের  
মৌ নহী সাঁচতা হৈ । তেরা সম্পদ জিতনা কহী ন  
বড়ে মৈ উম মৈ দুখী ন হু, পরন্তু তেরে সম্পদ কে  
মূল জিতনাহী মৈ দৃঢ়তা হু উতনেহী দেখ পড়তা  
হৈ । কি কিমৌ ন কিসী কে সম্পদ কে মূল মৈ কু-  
লহারী মার কর তু অপনা সম্পদ বড়াতা হৈ । দেখা  
কি তু জনম্তেহী বড়ে ভাইয়া বহীন কী মাতা  
কে স্তন্য দুধ পৌনে সে কুড়ায়া অী মসকুরাতা হুয়া  
তু স্বয়ং সুখ সে পৌনে লগা । জব তুনে ৫ । ৩  
বরস কী অবস্থা মৈ অীর ২ লড়কী বা লড়কিয়ী  
সে বাল্য খেল মৈ প্রহল হুয়া, উম সময় মৌ দেখা  
কি সহচরী কী পরাস্ত করনা হী তেরা ইচ্ছা  
রহী । বিদ্যা সিখনে কে নিমিত্ত বিদ্যালয় মৈ  
গয়া, সাথ উন্নতি কে বিশ্ববিদ্যালয় কী বিবিধ

ले, उन्नतिर सङ्गे २ विश्वविद्यालयों के विविध उपाधि लाभ करी। एकजना असामान्य प्रतिभा सम्पन्न पुरुष लोक है। सहाय्या गणके पराभव करिया। अथः श्रेष्ठ है। ऐहै कुटील ईच्छा तोमार चिर सङ्गिनी रहिल । तुमि कृतविद्या है। विद्यालय है। ते बहिर्गत है। देखिनाम तुमि एतने विविध पथेर पथिक है। येनिके ऐश्वर्यो अविपति है। वार आशा पाईनेछ, तुमि मेहै पथेहै गमन करिले । देखिनाम कथन तुमि दास्य वृत्ति द्वारा सुखी है। वार आशये वेगे गमन करितेछ ; एकथानि आवेदन पत्र हस्त तुमि यथाय उपरित है। ते तथै तोमार नाय अनेके दण्डमान । सकलरहै लक्ष्य एक ; अन्त्या आवेदनकारोगणके वृत्ति करिया तुमि अथः कृतकृता है। ऐहै ईच्छा तोमार ह-ये नृत्त करितेछे । आवार देखिनाम तुमि दास्यवृत्तिके येर ज्ञान करिया प्राड्विद्याकेर पथ अवलम्बन करियाछ । एपथ दास्य अपेक्षा डाल, धनागम यथेष्ट, दिवा रात्रि अर्थ पिपामार कृति नाहै, अनेार अर्थी प्रत्यर्थीर संख्या तोमार निकट अधिक हय है। है तोमार ईच्छा टिकिसक ३०, शिन्पीह ३, सकलहै तोमार सम्पद अनेार कृतिर उपर निर्भर करितेछ ।

मनोर अभाव सहै—वासना सहै—तोमार सम्पद सुखकर ओ अभाके जनक नहै । तुमि लोभ परि-त्याग कर, समस्त रत्न भाँडारेर द्वार तोमार सम्पुथे उन्मुक्त है। ऐथन आर सम्पद वृद्धि करिवार जन्य अपरेर सम्पदे हस्तक्षेप करिते है। ऐथन अपरेर सम्पद वृद्धि करिते ना पारिले निज सम्पद वृद्धि है। ऐथन दार्थेर दुर्गन्ध दूषित सम्पद विगर्जन दिवे ततहै आनन्द उपभोग करिते पारिवे । येथाने तुमारे सम्पद उपभोग है। ऐहै दिके अग्रसर ह ३, येथाने काहाके ३ भय करिते हय ना तथाय गमनकर, मे पद पाईले संसारेर समस्त सम्पद डूछबोधहय है। ऐ पद अवलम्बन कर ये पद दर्शन करिले विपद सम्पद एक है। ऐयाय मेहै पद भक्ति युक्त है। ऐवन कर ।

उपाधि पाकर एक असामान्य प्रतिभा सम्पन्न पुरुष बना किन्तु सहा ध्यायियों को पराभव कर स्वयं श्रेष्ठ बनेगा, यह कुटिल इच्छा तेरे मंग बराबर रह ही गयी । तु कृत-व्यवहन कर विद्यालय से निकला, अब तुझे विविध पंथके पथिक होना देख पड़ा । जिधर ऐश्वर्य को अधोस्तर बनने की आशा मिलती है, तु उधरही दोड़ता । देख पड़ा कि, कभी तु दास्य वृत्ति से सुखी होनेके आशय से बड़े तेज से जा रहा है ; एक आवेदन पत्र हात पर लिये हुए जहाँ जा पहुँचा, वहाँ तो तेरे समान बहुत से खड़े हैं । सब का अभिप्राय एकही ठहरा, अन्याय उमीदवारों को वंचित कर तुही स्वयं कृतकृत्य हो जा । यही इच्छा तेरे हृदय में नृत्य कर रही है । फिर देखा कि तु दास्यपन की तुच्छ मानकर व-कीली की राह धरा । यह पथ दास्यत्व से उत्तम है, धनागम भी बहुत, दिनरात विभव-लक्षणा की चूटी नहीं ; अर्थी, प्रत्यर्थियों की संख्या अन्य वकीलों से तेरे समीप अधिक हो जाय, यही तेरी अभिलाषा है । निकिसक बनो, शिल्पी बनो बणिक बनो, सर्व्व वही दुसरे को दानि पर तेरे सम्पद की हडि देख पड़ती है ।

मन की चाह विद्यमान रहने — वासना बनो रहते — तेरा सम्पद सुखकर वा अभौष्ठजनक नहीं । तु अनामक चित्त बन जा — तेरी सम्पद की सीमा न मिलेगी । तु लोभ का छाँड़ दे, समस्त रत्न भाण्डार की दरवाजा तेरे साम्हने खुल दी जायगी । उस समय फिर निज सम्पद बढ़ाने के लिये दुसरे के सम्पद पर हात न डालना पड़ेगा — अथवा दुसरे का सम्पद बढ़ाये बिना निज सम्पद बढ़ेगी ना नहीं । स्वार्थ के दुर्गन्ध से दूषित सम्पद की तु जितना ही विमर्जन करता जायगा आनन्द उतना ही तुझे उपभोग करने मिलेगा । जहाँ सम्पद लक्षणा की शान्ति हुई, उसही ओर आगे बढ़ जा, जहाँ किसीही की डरना न पड़ती, वहाँही चला जा जो पद मिलने से संसार के समस्त सम्पद की तुच्छबुझ पड़ता है, उस ही पद के शरण ले ले — जिम पद कमल की दर्शन करलेने से विपद सम्पद सब समान देख पड़ते हैं, भक्ति भाव से उसी पद की सेवा करते रहो ।

## रामपुरहाट हरि भक्ति प्रदायिनी सभा

सठ वार्षिक उत्सव ।

१६ ई. ई. ११ ई. आषाढ़ पर्याय ५ दिन अत्र रामपुरहाट हरि भक्ति प्रदायिनी सभा सठवार्षिक उत्सव महा मनादेशों सहित पूज्य गुरु महाराजों द्वारा किया।

१६ ई. आषाढ़, बुधवार । श्रीमन्नारायण जी, लक्ष्मी, तुलसी, वाग्वादिनी श्री गणपतिजी की घोड़ग-उपचार सहित पूजा, हाम वी तदनन्तर विष्णु महस्र नाम पाठ, निमन्त्रित ब्राह्मण भोजन, श्रीमन्नारायण जी आरति तत्पश्चात् सभा सम्पादन, सहकारी सम्पादन, सभागण ७ भारतवर्षीय आर्य धर्म प्रचारिणी सभा संस्थापक-सम्पादन सुविख्यात श्रीमान् श्रीकृष्णप्रसाद सेन महाराज कर्तृक सभा उत्पत्ति काले वार्त्तालाप ७ मन्त्रणा इत्यादि। ताहार मध्ये एकटी कथा ऐही छिन्न ईहेन, ये आज काल येकूप समय उपस्थित, प्राय देखित पावरा याय ये अनेक मूर्ति पूजन विषये मन्त्रिक चित्त; ऐही त्रय संशोधन निमित्त यिनि ऐही विषये युक्ति, शास्त्र ७ विज्ञान पूर्ण प्रमाणसह तालरूप लिखित पारिवेन ताहार उत्साह वर्द्धनार्थ अत्रसंभा ४०० पारितोषिक दिवेन ।

८ई आषाढ़, बृहस्पतिवार । पूर्वार्द्ध सभा आचार्य द्वारा श्रीमद्भगवद्गीता पाठ ७ व्याख्या, संगीत ७ संकीर्तन, तत्पश्चात् उक्त कुमार कर्तृक हिन्दी भाषा एकटा सुललित ७ सुदीर्घ वक्तृता इहेन । वक्तृताति एत उत्कृष्ट ७ अमय आदिनी इहेयाछिल ये बेहार ७ ब्रजवासीरा अनिरल अक्षर विमर्जन करिते करिते, “ब्रह्मणेरा, कुमारः दीध क्रौवो इ ७ “बेहारिनी जीते रहिये,” “मूलशानेरा थोदा दोया करे,” इत्याकार शब्द ध्यानति परिपूर्ण इहेयाछिल, वक्तृता ७ अटल अटल भावे छुई गन्तार अधिक उत्तेजित चित्त वक्तृता करिया सकलके परिभूष करियाछिलेन । बेला ४टा इहेते

## रामपुरहाट हरिभक्ति प्रदायिनी सभा का ६४ वार्षिक उत्सव ।

ज्येष्ठ शुक्ल १५ से लेकर आषाढ़कृष्ण ४ तक लगातार ५ दिन इस रामपुरहाट हरिभक्ति प्रदायिनी सभा का ६४ वार्षिक उत्सव बड़े धुम धाम की आनन्द से सम्पन्न हो गया ।

१६ दिन । श्रीमन्नारायणजी, लक्ष्मी, तुलसी, वाग्वादिनी श्री गणपतिजी की घोड़ग-उपचार सहित पूजा, हाम वी तदनन्तर विष्णु महस्र नाम पाठ, निमन्त्रित ब्राह्मण भोजन श्री सन्ध्या का श्रीमन्नारायण की आरति हुए । अनन्तर इस के सभा की उत्पत्ति के अर्थ वार्त्तालाप वी मन्त्रणा हुई थी । तत्काल इस सभा के सम्पादन, सहकारी सम्पादन, सभ्यगण वी भारतवर्षीय आर्य धर्म प्रचारिणी सभा के संस्थापक—सम्पादन सुविख्यात श्रीमान् श्रीकृष्ण प्रसाद सेन महाराज उपस्थित थे । वार्त्तालाप में से एक उत्तम बात यह स्थिर की गयी कि आज काल के समय में प्राय देख पड़ता है, कि बहुत से लोग “मूर्तिपूजन” पर सदेव सन्देह उठाये करते हैं ; इस विषय भ्रम को मिटाने के लिये जिस किसीने विशेष रूप युक्ति, सास्त्र वी विज्ञान पूर्ण प्रमाण सहित कोई पुस्तक लिख सकेगा, उन के उत्साह बढ़नार्थ यह सभा ४०० चाकिस रुपये पारितोषिक देगी ।

२५दिन । प्रातःकाल में सभा के आचार्य महाशय ने श्रीमद्भगवद्गीता पाठ वी व्याख्यान किया, तदनन्तर भजन वी संकीर्तन हुआ, अन्त में उक्त कुमारजी ने भाषा में एक सुललित वी सुदीर्घ वक्तृता करी । वक्तृता ऐसी उत्कृष्ट वी मन लोभावनी हुई थी जो विहार वी वंगदेशीयों के हृदयों में आखें में से आंसू गिराते २ ब्राह्मण गण कहने लगे कि कुमारजी दीर्घायु बने रहो, कोई कहे जीते रहो, मुसलमान लोग कहने लगे “खुदा दीवा करे” इस रीति शब्दों से स्थान परिपूर्ण हो गयी । वक्ता भी ने दो घन्टे से अधिक काल तक निरल भाव से परम उत्तेजना सहित वक्तृता कर सब को सन्तुष्ट करी थी । दोपहर के उपरान्त ४ बजे से सन्ध्या



## শুভ সমাচার।

ভারতীয় ধর্মের বর্তমান দুর্দশা দেখিয়া চিন্তাশীল আখ্য মন্তান মাতেই হৃদয়ে বেগনা বোম হইয়াছে। ভারতে কেবল বিবিধ উপধর্মের উৎকট উপদ্রব বৃদ্ধি হইয়াছে তাহা নহে, হিন্দু সমাজের নিজ মর্মদেশে রোগের অন্বেষ নাহি। যৌহার লোক সমাজে অর্থাৎ (হিন্দু) বাণীয়া পরিচিত, তাঁহাদের মধ্যেও অনেক সমাজানুরাগে হিন্দু কিন্তু কাষতঃ বাভিচারী-স্বৈচ্ছাচারী ও যথেষ্টাচারী হইয়া উঠিয়াছেন। এইরূপ সমাজ মধ্যে অধ্যাত্মচারের প্রবল অধিকার দর্শনে চিত্তাশীল মন্তানুরাগী পুরুষ বর্গ আর দূর চিত্তে থাকিতে পারিতেছেন না। যাহাতে ভারতবর্ষীয় আখ্য ধর্ম প্রচারিণী সভার কার্য প্রবাহ প্রবল বেগে চলিতে থাকে, ইহা অনেকেই মনোগত চেষ্টা, কিন্তু বিবিধ কারণে তাঁহারা কাম্যক্ষেত্রে সাহায্য করিতে অসমর্থ। তাঁহাদের সহানুভূতি ও শুভ ইচ্ছা জন্য আমরা তাঁহাদিগকে ধন্যবাদ প্রদান করি।

আজ আখ্য ধর্ম্যানুরাগী গণকে একত্রে শুভমংবাদ দান করিতেছি। পরিভ্রাজক শ্রীমৎ শ্রীমো আত্মা হংস জী মহারাজ অত্র সভার কার্যে নিতান্ত প্রীত ও উৎসাহিত হইয়া সনাতন ধর্মের প্রচারার্থ প্রবৃত্ত হইলেন। ইনি পূর্বে একজন বিত্তবিশালী ভূস্বামী ছিলেন। বিনয় কার্যে তাহার উপমা পথের অর্গল স্বরূপ বেধে ইনি তাহা পরিত্যাগ পূর্বক প্রব্রজ্যাত্মক অবলম্বন করিয়াছেন। ভূসম্পত্তি ও অপ্রাপ্ত বয়স্ক পুত্র এক্ষণে কোর্ট অব ওয়ার্ডসের তত্ত্বাবধানের অধীন আছে। হংস স্বামীর ন্যায় উদার, ও অকপট চিত্ত মহত্মা অতি অল্পই দৃষ্টি গোচর হয়। ইনি এক্ষণে আনন্দের ধর্ম্যাচারে কার্য করিবেন।

কাশী নিবাসি শ্রদ্ধাঙ্গদ পণ্ডিত সাহিত্যাচার্য শ্রীযুক্ত অম্বিকা দত্ত ব্যাস “বৈষ্ণব পত্রিকা সম্পাদক” মহাশয়ও ধর্ম্যাচারের পদ গ্রহণ করিলেন। ইনি একজন সদ্ভক্তি এবং সংস্কৃত ভাষায় সুশিক্ষিত, শাস্ত্রজ্ঞ ও ধর্ম্যানুরাগী পুরুষ। ইহার উভয়েই এক্ষণে পশ্চিমোত্তর প্রদেশে কার্য করিবেন।

## শুভ সমাচার

ভারতীয় ধর্ম কো বর্তমান দুর্দশা দেখ কর প্রত্যেক চিন্তাশীল আখ্য মন্তান কে হৃদয় মেন ক্রোধ অনুভব হই রহা হৈ। ভারতখণ্ড মেন জো কেবল বিবিধ উপধর্মী কা বিষম উপদ্রব মচ গয়া, সো নহী, হিন্দু সমাজ কে নিজ মর্ম দেশ মেন ভী রোগ কো কুছ কমো নহী। জো লোগ সমাজ মেন আখ্য (হিন্দু) কর মানি জাতি হৈ, উনহী কে মধ্য মেন বহুতেরে লোগ সমাজ কে উর সে বাহর হিন্দু হৈ, কিন্তু, কাখি কাল মে ব্যভিচারী, স্বৈচ্ছাচারী বা যথেষ্টাচারী বনি হুয় হৈ। সমাজ মেন ইম ভাতি অধ্যাত্মাচার কে প্রবল অধিকার দেখ কর চিন্তাশীল ধর্ম্যানুরাগী পুরুষ গণ নিশ্চিন্ত রহ নহী সকে হৈ। ভারতবর্ষীয় আখ্য ধর্ম প্রচারিণী সভা কা কার্য প্রবাহ প্রবল বেগ সে চলত রহি যহী বহুত লোগো কো ইচ্ছা হৈ, কিন্তু, নানা কারণ সে উনহী নে কার্যকাল মে সহায়তা देने মে অসমর্থ হৈ। উনহা কো সহানুভূতি বা শুভ ইচ্ছা কে লিয়ে हम उन सब को धन्यवाद देते हैं।

आज आख्य धर्मानुरागी पुरुषों को हम एक शुभ संवाद देते हैं। परिभ्राजक श्रीमत् स्वामी आत्माहंसजी महाराज इस सभा के कार्य से नितान्त प्रीत वो उत्साहित होकर सनातन धर्म प्रचारार्थ प्रवृत्त हुए। ये पूर्व में एक विभवशाली जमींदार थे। विषयव्यापार को अपने तपस्यामार्ग की बाधा समझ कर उस को परित्याग पूर्वक हस्तगत ग्रहण किये। जमींदारी वा नावालक लड़का अब कोर्ट, अब वार्ड्स के अधीन है। हंस स्वामी के समान उदार वो अकपट चित्त महत्मा थोड़े ही देख पड़ते हैं। इनने हमारे “धर्माचार्य” का कार्य करने रहेंगे।

काशी निवासि श्रद्धांगद पण्डित साहित्याचार्य श्रीयुक्त अम्बिकादत्त व्यास “वैष्णव पत्रिका” के सम्पादक महाशय ने भी धर्माचार्य का पद स्वीकार किया। इनने बड़े सद्भक्ता हैं श्री संस्कृत भाषा भाषी भांति पढ़े हुए, शास्त्रज्ञ वो धर्मानुरागी पुरुष हैं। ये दोनों महात्माही अब पश्चिमोत्तर प्रदेश में कार्य करते रहेंगे।

## मूदगलपुर

( पूर्व प्रकाशित के अंग )

अथाहुतं श्रियत एव देवाः ।  
जाग्रत स्वरूपत्वमभीष्ट मिदं ।  
अथान् ददौ तं कृपया यथेच्छं ।  
राधाभूतः पूर्णमकिचनेभ्यः ॥ ४४ ॥

लोकेश्वर अर्थात् साधन विषये भगवती चण्डी  
देवीर अर्थात् जाग्रत रूपता श्रुतिसे पाওয়া  
गया । प्रत्येक राधा पुरुष कर्ण के चण्डी देवीर कृपा-  
से ही अकिचन निगके ईच्छामत धन दान क-  
रितेन । ४४ ।

पुराकिन प्रत्यह देव चण्डी—  
—अनं समागत्य निशामुखेऽसौ ।  
अश्वात्तं बहिः प्रत पूर्णमस्मि—  
इडापत् लोह कटाह मेकं ॥ ४५ ॥

वे कर्ण पुरात प्रति दिन अर्द्धाद्य समये चण्डी  
स्थाने आगिया अश्वात्त अग्नि स्थापन करिया तद्-  
पार प्रत पूर्ण एक लोह कटाह स्थापन करि-  
तेन । ४५ ।

ततः समाराधयितुं यथावत्  
देवोमिमा मारभतेऽस्मकं कर्णः ।  
पूजावसाने ज्वलदुष्ण पात्र  
मध्ये निचिक्षेप निजं च देहम् ॥ ४६ ॥

परे कर्ण यथा विधि देवीर पूजा आरम्भ करि-  
तेन । पूजा समापन होले से ही अश्वात्त उष्ण  
कटाह मध्ये आपनार देह निक्षेप करितेन । ४६ ।

मांसानि भक्षयामासुः  
शिव दूताः सकौतुकम् ।  
तस्य देहस्य भूयसा  
ताम्रं च घृतं ताजने ॥ ४७ ॥

सै घृत पात्र मध्ये तदीय देह भूके होले  
पर शिव दूता सकल कौतुकेर सहित मांस भक्षण  
करित । ४७ ।

सर्वाणि भक्षयित्वा ताः  
मांसानि तस्य भूपतेः ।  
वारिणामृत कुण्डस्य  
जीवयामास तं पुनः ॥ ४८ ॥

ताहारा नृपत कर्णेर समस्त शरीरस्य मांस भक्षण  
करत अमृत कुण्डेर जल द्वारा पुनर्जीवित तांहाके  
जीवित करित । ४८ ।

स पुनर्जीवितोऽपश्यत्  
राधा प्रसन्नतः परम् ।

## मुदगलपुर

( पूर्व प्रकाशित के अंग )

अथान् ददौ तं कृपया यथेच्छं ।  
जाग्रत स्वरूपत्वमभीष्ट मिदं ।  
अथान् ददौ तं कृपया यथेच्छं ।  
राधाभूतः पूर्णमकिचनेभ्यः ॥ ४४ ॥

सुनने में आती है कि भगवती चण्डीदेवी ने  
लागी के अभीष्ट साधन में साक्षात् जाग्रत रूपिनी  
है । पूर्व में राधापुत्र कर्णजी ने इस चण्डीदेवीजी  
की कृपा से देवता का यथेच्छा धन दान किया  
करता था । ४४ ।

पुराकिन प्रत्यहमेव चण्डी—  
स्थानं समागत्य निशामुखेऽसौ ।  
प्रज्वाल्य बहिः प्रत पूर्णमस्मि  
नस्थापत् लोह कटाहमेकम् ॥ ४५ ॥

कर्ण महाराज ने प्रति दिन संध्या की चण्डी  
स्थान में आकर अग्नि प्रज्वलित कर उस पर एक  
लोहेका कड़ाह धर देता था ।

ततः समाराधयितुं यथावत्  
देवोमिमा मारभतेऽस्मकं कर्णः  
पूजावसाने ज्वलदुष्ण पात्र  
मध्ये निचिक्षेप निजं च देहम् ॥ ४६ ॥

तदनन्तर कर्णजी देवी की यथाविधि पूजा आ-  
रम्भ करते ; पूजा समाप्त होने पर उस प्रज्वलित  
तम कड़ाह में स्वयं कुंद पड़ते थे ।

मांसानि भक्षयामासुः  
शिव दूताः सकौतुकम्  
तस्य देहस्य भूयसा  
ताम्रं च घृतं ताजने ॥ ४७ ॥

उस घृत पूर्ण पात्र में उनका देह भुंजाने पर  
शिवदूतों सब आनन्द पूर्वक मांस भोजन क-  
रती थीं । ४७ ॥

सर्वाणि भक्षयित्वा ताः  
मांसानि तस्य भूपतेः  
वारिणामृत कुण्डस्य  
जीवयामास तं पुनः ॥ ४८ ॥

उन सब ने राजा कर्ण की शरीर का मांस खा  
कर अमृत कुंड की जल द्वारा फिर उन को  
जीवाय देती थी ।

स पुनर्जीवितोऽपश्यत्  
राधापुत्रस्ततः परम् ।

परिपूर्ण कटाहं तं

स्वर्णं रौप्यं महाधनम् ॥ ४३ ॥

अनन्तर कर्ण पुनर्जीवित होइया देखितेन सेइ  
लोह कटाह महामूल्य धन एवं सुवर्ण ओ रौप्ये परि  
पूर्ण होइया रहिषाछे । ४३ ।

बिलोक्यातीव सन्तुष्टो

धर्मात्मा स्रुतनन्दनः ।

समस्त तद्धनं प्रातः

दत्तो दीनेत्याह सः ॥ ५० ॥

त'हा देखिया धर्मात्मा कर्ण परम सन्तुष्ट मने सेइ  
समस्त धन लईया प्रातः काले दान ब्याकु दिगके  
दान करितेन । ५० ।

इति श्रीराज कुमार तर्करत्न विरचितं मुक्ताले-  
पाख्यानं समाप्तम् ।

**मतिहारी, आर्य धर्म प्रचारिणी सभा**

३ य वार्षिक उत्सव के कार्य विवरण ।

यिनि निगुण निराकार ओ आकाशवत् सर्वव्यापी  
होइया ओ काहार ओ नयन गोचर होयन न', यिनि  
मनो-वृद्धि अतीत ओ अनु-क्त भक्त के भावानु-  
सारे यिनि निज सगुण स्वरूप देखाइया कृताभ  
करेन अगरी सेइ सब सामर्थ्य शील परमात्मा के  
नमस्कार करि ।

“सौराः शैवाश्च गानेशाः वैष्णवाश्चैव पूजकाः ।  
नामैव प्राप्नुवन्ति ह वर्षास्तुः सागरः यथा ॥”

१म दिन । बेला ११ टा होइते सायंक ७टा  
पर्याप्त संस्कृत पाठशाला विद्यार्थी वर्ग के परीक्षा  
पूरी होइल । व्याकरण के १२ जन ओ ज्योतिष के  
५ जन परीक्षा पूर्ण होइया पारितोषिक  
लाभ करिषाछे ।

२ य दिन । पूरुषार्जुन श्रीमन्नारायण के ओ भग-  
वती शत्रु विधानानुसारे पूजा होइल । बेला  
१ टा होइते ३ टा पर्याप्त ब्राह्मण ओ साधुगण के  
दक्षिणा सह भोजन कराइया दान दरिद्र गण के  
अन्न दान करा होइल । अपराह्न ५ टा होइते आ-  
रत करिया वज्र देशी ओ बेहार नामी सकल एकत्र  
सम्मिलित होइत अत्युत्सव उत्साह पूर्वक नगर स-  
कीर्तन करिया १ टा के समय सभाय प्रत्यार्थ होइ-  
लैन । सन्कार समय भगवती आरति ओ नैवेद्य  
होइल । त' प'रे सभाय पठित महाशय  
वाचन के ध्यान पाठ करिलैन, आर जगज्जननी

परिपूर्ण कटाहं तं

स्वर्णं रौप्यं महाधनम् ॥ ४६ ॥

अनन्तर कर्ण ने पुनर्जीवित होकर देखते कि  
वह लोह के कटाह महामूल्य धन ओ सुवर्ण वा  
रुपा आदि में परिपूर्ण है ।

बिलोक्यातीव सन्तुष्टो

धर्मात्मा स्रुतनन्दनः ।

समस्त तद्धनं प्रातः

दत्तो दीनेत्याह सः ॥ ५० ॥

इतना देखकर धर्मात्मा कर्ण परम संतुष्ट मन  
में वह सब धन लेने कर प्रातः काल का दान दरिद्रों  
को दान करते थे ॥ ५० ॥

इति श्रीराज कुमार तर्करत्न विरचितं मुक्ताले-  
पाख्यानं समाप्तम् ।

**मतिहारी आर्य धर्म प्रचारिणी सभा ।**

३ तिसरे साल के उत्सव का कार्य विवरण ।

प्रथम सर्व सामर्थ्यवान परमात्मा की प्रणाम करने  
हैं, जो निर्गुण निराकार रूप में आकाश के समान  
सर्वव्यापी रहने पर भी इन्द्रियगोचर में नहीं  
आते वरन मन वृद्धि में परे रहते हैं और हम के  
तुल्य प्रेमियों के भाव अनुसार निज सगुण स्वरूप का  
अनेक रंग रूप गुण देखा कर सबों को प्राप्ति अपने ही  
में देखलाते हैं । “सौराः शैवाश्च गानेशाः वैष्णवाः  
शक्ति पूजकाः । नामैव प्राप्नुवन्ति ह वर्षास्तुः सागरः  
यथा ॥

१म दिन । ११ बजे दिन में संस्कृत पाठशाला के  
विद्यार्थियों की परीक्षा आरम्भ हो कर लग भग  
६ बजे संध्या समय तक हुई, विद्यार्थी व्याकरण के  
१० वीं ज्योतिष के ५ पारितोषिक पाने के योग्य  
हुये ।

२य दिन । सभा में श्रीमन्नारायणजी वी भगवती  
की पूजा हुई । १ बजे से ३ बजे तक शहर भर के  
ब्राह्मण संतों को भोजन कराया दक्षिणा दे कंगालों  
को अन्न दान दिया गया । ५ बजे से ७ बजे रात  
तक सब आर्य-संतान बंग देसी वी बिहारो परस्पर  
मिल के नगर संकीर्तन बड़े उत्साह से करते  
हुए फिर सभा मंदिर में उपस्थित हुये । देवी की  
आरती हुई । नैवेद्य भोग लगा । उपरान्त इस के  
सभा पंडित महाशय ने देवी की ध्यान पाठ करे ।  
उपरान्त जीवों की भौतिक दुःख विचार जगत

सङ्ग स्वल्पे जायके अंग प्रदान करने, ईश्वर  
विस्तार पूर्वक व्याख्यान करि उक्त गणेश चि  
त्तचित्रसे आर्द्र करि दिये ।

तदनन्तर सभार सम्पादक श्रीवायु रघुनन्दन लाल  
सभार मनागम उ नाय एवं कान्य निवरण मावारण  
समक्षे पाठ करि लें । तत्परे श्रीवायु दबवारि  
लाल सभा स्थापनेर आवश्यक उ मध्य प्रचारके  
उन्नति करे विस्तार पूर्वक एकटी वाचनिक वक्तृता  
करि लें । अतःपर श्रीवायु नन्दन लाल आनन्द  
पूर्वक दुईटी व्याकरणे परीक्षाद्वारे प्रदान वा  
मकके वार्षिक ७५ टाका करि दृष्टि दिवने  
श्रीकार करि लें । परिशेषे पण्डित गणेश भगवान्  
रक्षा करि आमाद वटने पूर्वक सभार उन्नयन  
समाप्त हटेन ।

तिन वंसर पूर्वक एहे मतिहारीते कोन  
उन्नयन कोन उन्नयन प्रजादित आवश्यक हटेले  
अनेक छर देशयात्रार सुत्र दिन जानिते हटेले  
एकटी योग्य पाण्डित पाण्डित बाउतेन । एलाके  
कोन प्रकारे कान्य समाप्त करि । एलाकार  
अनेक प्रकारे मन्त्रा गायत्री पयानु उ जानित न ।  
तपान्तिर केवल नाम मात्र जानित । किन्तु एहे  
मध्य सभार सङ्स्थापनेर पर मतिहारीर मति  
मुख के परिवर्तन हईयाछे उ किय कान्य अनुष्ठानेर  
स्तिथि हईयाछे ।

## विज्ञापन सूचीति

आगामी १ला कार्तिक हईते " सूचीति " नामी  
( रायेल आठ पेजो एक कम्पार आकारे ) एक  
थानि पाण्डित पत्रिका प्रकाशित हईते । बालक  
उ युवक इन्दर अदये आचार्यीति नीतिर अवतन  
उ आचार्य भावेर उद्दीपना करि ईश्वर मुख उद्देश्य  
ईश्वर अग्रिम वार्षिक मूल्य डाकव्यय सहित १५० ;  
किन्तु दुर्गा पूजार पूर्वक मूल्य प्रेरण पूर्वक आहक  
श्रेणीभूत हईले १५ मात्र लागिने । टाका ना  
पाईले काहाके उ आहक मध्ये गण करि हईनेना ।  
आचार्य सन्तान गण ! आचार्य भावे उद्दीपित उ उ  
साहित हईया शीघ्र २ " सूचीति " आहक श्रेणी-  
भूत हईने—भारतेर मलिन मुख पुनरुज्ज्वल करुन  
मर्माभूत यन्त्रालय । वंशवद  
मिसिर पोखरा, बाराणसी } श्रीभूधर चट्टोपाध्याय

को अभय देनवालो हई इम भाव को विस्तार से  
व्याख्या करके सभामनों को प्रेमरस में भिगाया ।

इस के बाद श्रीरघुनन्दन लाल सम्पादक सभा  
के माल भर का जमा खर्च वी कार्य विवरण  
और कान्य के परिचा फल को पढ़ सुनाया ।

तदनन्तर श्रीदरवागो लाल ने खड़ा हो सभा के  
न रहने से जो हानि है वा उस के हानि से जो  
लाभ है और धर्म का प्रचार वी उन्नति किम भांति  
में होती है इम को विस्तार से कहा उनको वक्तृता  
होजाने पर श्रीरघुनन्दन लाल ने बड़ी प्रसन्नता में  
दा विद्याधियों में जिन्होंने अति उत्तम परीक्षा  
व्याकरण में दी थी, एक विद्यार्थी को छः रुपया मा-  
लाना देने का अंगोकार किया इसकी बाद पंडितों  
का मतकार किया गया, और प्रसाद बंटने पर  
हरिध्वनि करके सभा का उत्सव समाप्त हुआ ।

यही मोतिहारी है जहां तीन बरस पहिले यदि  
किसी मध्य को कोई पूजा करने को आवश्यकता  
या यात्रा पूछना होती थी तो विद्वान ब्राह्मण न  
रहने के कारण निराम हो किमी न किमी तरह  
चला लेते थे । यहां के ब्राह्मणों में प्रायः संध्या  
गायत्री तपेणादि क्रिया को तो नाम मात्र जान-  
ते थे, अब वही मोतिहारी है कि जहां घर घर  
विद्यार्थी अपने क्रियाकर्म में तत्पर होते हुये हैं ।  
यह केवल सभा का फल है ।

## विज्ञापन । सूचीति ।

( रायेल ८ पेजो एक फर्मा को पत्रिका पत्रिका )  
आगामी कार्तिक मास से नियम पूर्वक ( बग  
भाषा में ) प्रकाशित जागे । बालक वी युवकों के  
हृदय में आर्य रीति नीति को प्रवर्तन वी आर्य  
भाव को उद्दीपना करना इसका मुख्य उद्देश्य है ।  
डाक व्यय सहित इस का अग्रिमवार्षिक मूल्य १॥ ) ;  
किन्तु दुर्गापूजा के पहले रुपये भेज के आहक व-  
नने से १० एक रुपया मात्र लगेगा । बिना रुपया  
पाये किसही को आहक के मध्य में नहीं गिना  
जायगा । आर्य सन्तानगण ! आर्य भाव से उद्दीपित  
वो उन्माहित होकर शीघ्र शीघ्र " सूचीति " के  
आहक बनो । भारत के मलिन मुख पुनरुज्ज्वल  
कौजिये ।  
धर्माभूत यन्त्रालय । वंशवद ।  
मिसिर पोखरा, बाराणसी } श्रीभूधर चट्टोपाध्याय

## विदेशीय एजेण्टगणों के नाम ।

अशुक्त बाबू केदार नाथ गङ्गापाध्याय	भागलपुर
„ यादचन्द्र बन्द्योपाध्याय	मतिहारी
„ जगन्मोहन	लाहौर
„ पूर्णचन्द्र बन्द्योपाध्याय	रामपुरहाट
„ विहालिलाल राय	जामालपुर
„ रमेश चन्द्र सेन	ऐ
„ हेमचन्द्र दास	ऐ
„ मंगिलाल सेन	मुरशिदाबाद
„ राजकुमार दास	वहरमपुर
„ ईन्द्रनारायण चक्रवर्ती	गया
„ अक्षय कुमार चट्टोपाध्याय	

७७ नं० कांस्टेबल स्ट्रीट, कलकत्ता

एजेण्ट गणों के नामों के तालिका में आधिक  
महाशय गण गृहान्तर्गत दान करिसे, आम प्राप्ति  
है।

## धर्म प्रचारक संक्रान्त नियमावली ।

१। यदि कौन धर्मार्थ आयातमें प्रतिष्ठा रक्षा  
और प्रचार निमित्त बाङ्गला अथवा हिन्दी भाषा या  
उत्तर भाषा में कौन विषय लिखि या प्रेरण करेन,  
तब लिखित विषय सारवान विवेचना है, न,  
आनन्द और उन्माह-महाकरे धर्म प्रचारके प्रकाश  
करा है।

२। धर्म प्रचारके मूल्य और उन्माह संक्रान्त  
पत्रानि आमार नामे पाठ्य है। पत्र  
विषय है, प्रहीत है।

३। मूल्य साधारणतः पोष्टल मन्त्रि आदरे, पा  
ठ्य है। डाक टिकट मूल्य पाठ्य है, न,  
अन्त आना मूल्य टिकट प्रेरण करिसे।

४। धर्म प्रचारके डाक मन्त्रि मह अग्रिम वार्षिक  
मन्त्रि नियम तिन प्रकार ।

उत्तम कागज मन्त्रि ० वार्षिक	७/०	प्रतिगण	१०/०
मध्यम	६	॥	१०/०
साधारण	६	॥	१०/०

धर्म प्रचारक कार्यालय । श्रीपूर्णानन्द सेन  
मिस्टर पोखरा । बाराणसी । कार्यालय ।

५। यह पत्र प्रति पूर्णिमा में भारतवर्षीय  
आयुध प्रचारिणी मन्त्रि उन्माह प्रकाशित है।

## विदेशी एजेण्ट महाशयों के नाम ।

अशुक्त बाबू केदारनाथ गंगापाध्याय	भागलपुर ।
„ यादचन्द्र बन्द्योपाध्याय,	मतिहारी !
„ जगन्मोहन,	लाहौर ।
„ पूर्णचन्द्र बन्द्योपाध्याय,	रामपुरहाट ।
„ विहारौलाल राय,	जामालपुर ।
„ रमेशचन्द्र सेन,	„
„ हेमचन्द्रदास	„
„ मंगिलाल सेन	मुरशिदाबाद ।
„ राजकुमार दास	वहरमपुर ।
„ अक्षय कुमार चट्टोपाध्याय, ६६ नं०,	कलेज स्ट्रीट कलकत्ता ।

एजेण्ट महाशयों के पास तत्तत् स्थान के याहक  
महाशयगण मन्त्रादि दें तो मैं पाऊँगा ।

## धर्म प्रचारक सम्बन्धी नियमावली ।

१। यदि कोई धर्मार्थ आर्थिक को प्रतिष्ठा  
रक्षा और प्रचार करने के निमित्त बाङ्गला अथवा  
देवनागरी में वा इन दोनों भाषाओं में कोई  
प्रस्ताव लिखके भेजें तो लिखित विषय सारवान  
आत होने में आनन्द भी उन्माह सहित धर्मप्रचारक  
में प्रकाश किया जायगा ।

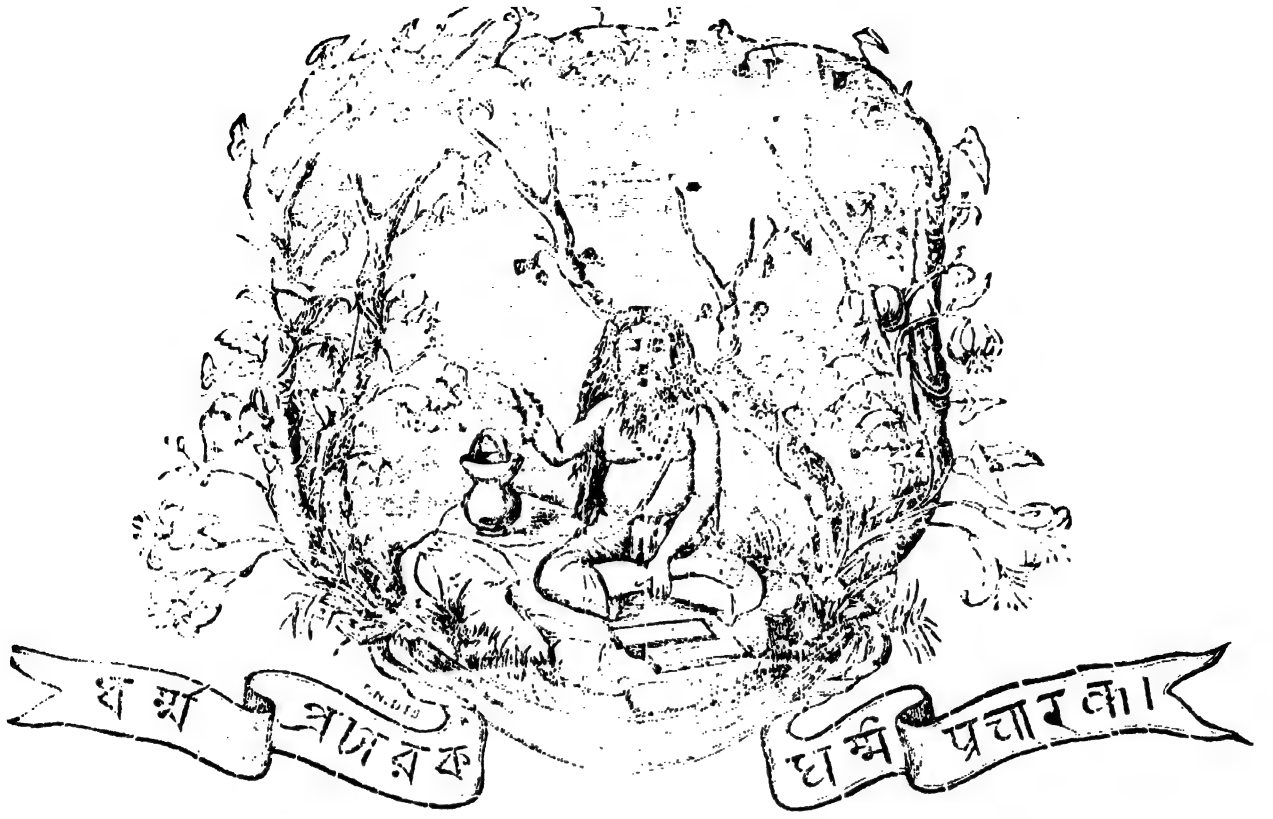
२। धर्मप्रचारक पत्र का मूल और इस पत्रसम्बन्धी  
पत्रादि मेरे पास भेजना होगा । पत्र वैरि होता  
नहीं लिया जायगा ।

३। मूल्य सम्भवतः पोष्टल मन्त्रि अर्द्ध करके  
भेजना । यदि डाक टिकट में भेजें तो आध आ-  
निय टिकट करके भेज दें ।

४। धर्मप्रचारक का डाक कर सहित अग्रिम  
वार्षिक मूल तीन प्रकार का है ।  
उत्तम कागज पर छपा हुआ वार्षिक ३१/० प्रतिगण ।  
मध्यम „ २१/० १०/०

साधारण „ ११/०  
धर्म प्रचारक कार्यालय । श्रीपूर्णानन्द सेन  
मिस्टर पोखरा, बाराणसी । कार्यालय ।

५। यह पत्र प्रति पूर्णिमा में भारतवर्षीय आर्थिक  
प्रचारिणी समा के उन्माह से प्रकाशित होता है ।



“ एक एव सुरुद्धर्मो निधनेऽप्यनुयाति यः ।  
शरीरेण समन्नाशं सत्त्वमन्यत्, गच्छति ॥ ”

“ एक एव सुहृद्धर्मो निधनेऽप्यनुयाति यः ।  
शरीरेण समं नागं सर्वमन्यत्, गच्छति ॥ ”

६ छ भाग । } शकाब्दा १८०५ ।  
४ र्थ संख्या । } आवन— पूर्णिमा

६ छ भाग । } शकाब्दा १८०५ ।  
४ र्थ संख्या । } आवन— पुणिमा ।

### आचार्योऽर उपदेश ।

“ वेद मनुच्य आचार्योऽन्तेवासिन मनुशास्ति  
मत्तयं वद धर्मां चर स्वाध्यायान्मा प्रमदः आचार्याय  
प्रियं धनमाहृत्य प्रजातन्तुं मा व्यवच्छेत्सौः  
सत्यान्न प्रमदितव्यम् धर्मान्न प्रमदितव्यम् कुशलान्न  
प्रमदितव्यम् इत्येतेन प्रमदितव्यम् देव पितृ काव्या  
त्वां न प्रमदितव्यम् मातृ देवो भव पितृ देवो भव  
आचार्य देवो भव अतिथि देवो भवयानि अनवद्यानि  
कर्मणि तानि सेवितव्यानि नो इतराणि यान्यस्माकं  
सुचरितानि तानि त्वयोपास्यानि नो इतराणि एको  
चास्मात् श्रियां सो ब्राह्मणाः तेषां त्वया आसनेन प्रश-  
सितव्यम् अद्वया देयम् अश्वद्वया अदेयम् श्रिया देयम्  
क्रिया देयम् भिया देयम् संविदा देयम् अथ यदि ते कर्म  
विचिकित्सा वा हतिविचिकित्सा वा स्यात् ये तत्र ब्रा-  
ह्मणाः सम्मार्शिनः युक्ता अयुक्ताः अलूक्षा धर्मकामाः स्युः  
यथातं तत्र वर्त्तेरन् तथा तत्र वर्त्तेथाः अथाभ्याख्या-  
तेषु ये तत्र ब्राह्मणाः सम्मार्शिनः युक्ताः अयुक्ताः अलू-  
क्षा धर्मकामाः स्युः यथा ते तेषु वर्त्तेरन् तथा तेषु

### आचार्य का उपदेश ।

वेद मनुच्य आचार्योऽन्तेवासिन मनुशास्ति—सत्यं-  
वद धर्मं चर स्वाध्यायान्मा प्रमदः आचार्याय प्रियं  
धनमाहृत्य प्रजातन्तुं मा व्यवच्छेत्सौः सत्यान्न प्रम-  
दितव्यम् धर्मान्न प्रमदितव्यम् कुशलान्न प्रमदितव्यं  
भूत्ये न प्रमदितव्यम् मातृ देवो भव पितृ देवो भव  
आचार्य देवो भव अतिथि देवो भवयानि अनवद्यानि  
कर्मणि तानि सेवितव्यानि नो इतराणि यान्यस्माकं  
सुचरितानि तानि त्वयोपास्यानि नो इतराणि एको  
चास्मात् श्रियां सो ब्राह्मणाः तेषां त्वया आसनेन प्रश-  
सितव्यम् अद्वया देयम् अश्वद्वया अदेयम् श्रिया देयम्  
क्रिया देयम् भिया देयम् संविदा देयम् अथ यदि ते कर्म  
विचिकित्सा वा हतिविचिकित्सा वा स्यात् ये तत्र ब्रा-  
ह्मणाः सम्मार्शिनः युक्ता अयुक्ताः अलूक्षा धर्मकामाः स्युः  
यथातं तत्र वर्त्तेरन् तथा तत्र वर्त्तेथाः अथाभ्याख्या-  
तेषु ये तत्र ब्राह्मणाः सम्मार्शिनः युक्ताः अयुक्ताः अलू-  
क्षा धर्मकामाः स्युः यथा ते तेषु वर्त्तेरन् तथा तेषु



तेषु ये तत्र ब्राह्मणाः सम्मर्शिनः युक्ताः अयुक्ताः  
अनूक्ता धर्म कार्यास्तु यथा ते तेषु वर्तन्ते तथा  
तेषु वर्तन्तेः एष आदेशः एष उपदेशः एषा-  
वेदोपनिषत् एतदनुशासनम् एवमुपासितव्यम्  
एवमुच्छेत्तुपास्यम् ।”

“आचार्य शिष्याके वेद शिक्षा दिया। এইরূপ  
উপদেশ দিতেছেন। সত্য কথা কহিবে। স্বীয়  
ধর্মের অনুষ্ঠান করিবে। অধ্যয়ন করিতে আলস্য  
করিবেনা। আচার্য্য কে তাঁহার অভ্যাসিত ধর্মা-  
চরণ করিয়া প্রদান করিবে। অন্যত্র তাঁহার  
নিকট আদেশ গ্রহণ করিয়া দার পরিগ্রহ করিবে।  
দার পরিগ্রহ করিলে প্রজা বৃদ্ধি হইবে ; অতএব  
ইহার অন্যথা চরণ করিয়া প্রজা বৃদ্ধির বিচ্ছেদ  
করিবেনা। দেখ, দার পরিগ্রহ করিয়া যেন সত্য  
ধর্ম হইতে চ্যুত হইওনা। গার্হস্থ্য ধর্ম্মানুষ্ঠানে  
আলস্য করিবেনা। আজ্ঞা রক্ষা কার্যে আলস্য  
করিবেনা। শুভ কার্যের অনুষ্ঠানে আলস্য ক-  
রিবেনা। অধ্যয়ন ও অধ্যাপন কার্যে আলস্য করি-  
বেনা। দেবকৃত্য ও পিতৃকৃত্যের অনুষ্ঠানে আলস্য  
করিবেনা : মাতাকে দেবতা জ্ঞান করিবে। পি-  
তাকে দেবতা জ্ঞান করিবে আচার্য্য কে দেবতা  
জ্ঞান করিবে অতিথিকে দেবতা জ্ঞান করিবে।  
কলতঃ নোকে যে সকল কর্ম্ম অনিন্দিত সেই সকল  
কর্ম্মের অনুষ্ঠান করিবে তদ্বিত্ত নিন্দিত কর্ম্মের  
কদাচ অনুষ্ঠান করিবেনা। শেষ কথা এই যাগরা  
অর্থাৎ তোমাদের পূর্বতন অশেষ বেদবিৎ আচার্য্য  
মহোদয় গণ যে সকল কার্য্য করিয়া গিয়াছেন  
তোমরা সেই সকল কার্য্যের অনুষ্ঠানেই যত্নশীল  
হইবে ; আপন মনোমত যথেষ্ট ব্যবহার করিতে  
প্রবৃত্ত হইবেনা। ব্রাহ্মণ উপস্থিত হইলে, পাদ ও  
অঙ্গনাদি দ্বারা তাঁহার অঙ্গানোদন করিবে।  
ব্রাহ্মণ গণকে অন্ন পূর্বক দান করিবে। অশ্রদ্ধার  
সহিত দিবেনা। ঐশ্বর্য্যের সহিত দান করিবে।  
লজ্জার সহিত দান করিবে। অর্থাৎ মনের উৎসাহ  
বৃদ্ধির জন্য দান কার্য্যের আড়ম্বর কর কতিনাই  
কিন্তু মনে মনে লজ্জিত হইও অথবা ভূমি যতই  
কেন দাওনা তথাপি উচ্চ অঙ্গ, এই বিবেচনা ক-  
রিয়া লজ্জিত হইবে। লজ্জিত হইয়া সেই লজ্জা  
চাকিবার জন্য গুপ্ত ভাবে দান কার্য্য সমাধা করি-  
বে। এবং ভয়ে ভয়ে দিবে। অর্থাৎ আশ্রিত যথেষ্ট

বর্শিষা : । एष आदेशः एष उपदेशः एषा वेदोपनिषत्  
एतदनुशासनम् एवमुपासितव्यम् एवमुच्छेत्तुपास्यम् ।

वेद की शिक्षा देकर आचार्य ने शिष्य का इस  
भांति उपदेश दे रहा है। सत्य बोलना ! निज धर्म  
अनुष्ठान करना। पढ़ने में आलस्य न करना।  
आचार्य की मनोभिमत दृष्य संग्रह कर उन को  
दे देना। अनन्तर उन से अनुमति ले कर विवाह  
करना। दार परिग्रह करने पर प्रजा का संख्या  
बढ़ जायगी। अतएव इस को अन्यथा कर प्रजाह्रास  
को न रोकना। सावधान रहना, जैसा कि विवाह  
करके सत्य धर्म से अत नही। आश्रम योग्य धर्मा-  
नुष्ठान में आलस्य न करना निज कुशल के अर्थ  
आलस्य न करना। शुभ कार्य करने में आलस्य न  
करना। पढ़ने से पढ़ाने में आलस्य न करना।  
देवकृत्य से पितृ कृत्य करने में आलस्य न करना।  
मोता को देवता जानना। पिता को देवता जानना।  
आचार्य को देवता जानना। अभ्यागत को देवता  
जानना। फलतः लोक में जो सब कार्य अनिन्दित  
हैं वही सब करना से निन्दित कर्मों को कभी न  
करना अन्त को यह स्मरण रखना कि हम सब अ-  
र्थात् तुम्हारे पूर्वतन अशेष वेदविद् आचार्य म-  
होदयों ने जो २ कार्य कर गये, तुम्हें भी वही कर्म  
में करने में लगे रहना। स्मृत्यानुसार किसी  
काम में प्रवृत्त न होना। ब्राह्मण तुम्हारे स्थान  
पर आजाने से उन को पाद से आसनादि देकर  
विश्राम करावना। ब्राह्मणों को अन्नपूर्वक दान  
देना। अन्नदा से न देना। साथ ऐश्वर्य के दे देना।  
लज्जा मानकर दान करना। मन के उत्साहार्थ  
चाहे दान देने में बाहर २ बड़े आडम्बर फैलाओ  
किन्तु मने मन लज्जित होना, अथवा तुम जितना  
ही क्यों न दो तथापि उस को अल्प समझ कर ल-  
ज्जित होना। लज्जित हो कर फिर उस लज्जा को  
ढांपने के लिये गुप गुप दान करते रहना भी भय  
भीत होकर दान करना। अर्थात् मैं बहुत कुछ  
देता हूँ ऐसा मानकर अभिमान न प्रगट करना।  
श्रुति की स्मृति के वा व्यवहार शास्त्र के किसी प्रबंध

দিত্তি জ্ঞান করিয়া অহংকার ভাব প্রকাশ করি-  
বেনা। যদি হোমার শ্রোত, শ্রোতা বা আচার  
প্রাপ্ত কর্মে সন্দেহ উপস্থিত হয় তাহা হইলে সেই  
পুদেশে সেই সময়ে যে সকল ব্রাহ্মণ গণ পিটারক্ষম,  
অভিজ্ঞ, অতন্ত্র, অক্রুরমতি, ও ধর্ম কানুক হইবেন  
তাহারা সেই শ্রোত শ্রোতা বা আচার পরম্পরা  
প্রাপ্ত কর্মে যেরূপ পুরস্কৃত হইবেন তুমিও সেইরূপ  
পুরস্কৃত হইবে। ইহাই আদেশ ইহাই উপদেশ। এই  
বাক্য উপনিষৎদের মার। ইহাই ঈশ্বরের বাক্য।  
অতএব এইরূপেই উপাসনাকর্তব্য। অবশ্য এই  
রূপেই উপাসনা কর্তব্য। অবশ্য এইরূপেই উপা-  
সনা কর্তব্য”।

## আর্য্য শাস্ত্র বিজ্ঞান ।

(জ্যোতিষ বিজ্ঞান সমালোচনা)

(পূর্ব প্রকাশিতের পর)

৩য় কারণ। অদৃষ্ট—ধর্ম বা অধর্মকে অদৃষ্ট বলে।  
কাণ্ডে পরিণত মনোবৃত্তি সকলের অতীতাবস্থা গত  
সংস্কার ভাব মাজকে, যদ্বারা বারম্বার সেই প্রকার  
বৃত্তিরই কার্য্য হইতে থাকে, ধর্মাদ্বয় কহে। এত-  
দ্বারা যে প্রকারে মানবের স্বভাব গঠিত হয় তাহা  
অতি আশ্চর্য্য ও পরমানন্দ বন্ধক, কিন্তু সৎক্ষেপে  
তাহার কিছুকাজ বলিলে সবিবেশ উপকার নাই,  
এজন্য এখানে সমুদায়ই নিরস্ত থাকিলাম।

৪র্থ কারণ।—পিতার স্বাভাবিক প্রকৃতি। প্রত্য-  
ক্ষই ইহার প্রধান প্রমাণ।

৫ম কারণ। মাতার স্বাভাবিক প্রকৃতি ইহারও  
প্রত্যক্ষ প্রমাণই জাঙ্ঘ্য মান।

৬ম কারণ। প্রথম জন্ম কালীন পিতা মাতার  
প্রকৃতি।

৮ম ঐ । গর্ভাবস্থায় মাতার প্রকৃতি।

১১ম ঐ । আহার।

১২ম ঐ । আচার।

১৩ম ঐ । সংসর্গ।

এ সকলের প্রমাণও পুত্য় দণ্ডায়মান রহিয়াছে।  
ক্রমশঃ।

## চাক চিন্তাবলী ।

২৩। চাকের বাদ্য বহুদূর ভেদ করিয়া গমণ  
করে, কারণ তাহার অভ্যন্তর ভাগ অতীব দীর্ঘায়-

পর যদি তুমিহার। কুক্ষ শংকাউঠে তো তম প্রদেশ মৈ  
তম সময় জা সব ব্রাহ্মণ কো বিচার পঠ , অমিষ্ট,  
স্বতন্ত্র, অক্রুরমতি বা ধর্ম্যকামী দেখ পড় গা. তন  
সব কে ঐশ্বর্য্য স্মার্ত্ত বী আচার অনুসার তুমিই ভী  
কার্য্য মৈ প্রস্তুত রহনা। যহী আদেশ হৈ। যহী ভ-  
পদেশ হৈ। ইমো বাক্য কো উপনিষদী কো মার  
জাননা। ইমচী কো ঈশ্বর যাণী কর মাননা। অত-  
এব ইমচী রীতি মৈ উপাসনা করনা। অবশ্য ইম  
চী রীতি মৈ উপাসনা করনা।

## আর্য্য শাস্ত্র বিজ্ঞান ।

(জ্যোতিষ বিজ্ঞান কো সমালোচনা)

(পূর্ব প্রকাশিত কো আগ)

৩রা কারণ। অদৃষ্ট—ধর্ম বা অধর্ম কো অদৃষ্ট  
কহা জাতা হৈ। কার্য্য মৈ পরিণত মনোবৃত্তি কো  
অতীত অবস্থা কো প্রাপ্ত হুয়া সংস্কার ভাব মাত্র  
কো নাম, জিস মৈ বার বার তমো প্রকার বৃত্তি হা  
কো কার্য্য হাওে রহে, ধর্ম্য ধর্ম্য হৈ। ইম মৈ মনুষ্য  
কো প্রকৃতি জিস রীতি মৈ বনতী হৈ, বহু পরম আ-  
য়্য বী অতীত আনন্দ বর্ধক হৈ, কিন্তু তম কো সং-  
লপ মাত্র কহনে মৈ যথা যোগ্য উপকার নহী হাওা।  
ইমনিযে যহা তম বাত কো উঠানে মৈ ইম সর্ব্বথা  
নিরস্ত রহে।

৪র্থ কারণ। পিতা কো স্বাভাবিক প্রকৃতি। ইম  
কো ফল প্রত্যক্ষ হৈ দেখ পড়তা হৈ।

৫ম কারণ। মাতা কো স্বাভাবিক প্রকৃতি। ইম  
কো ভী প্রত্যক্ষ প্রমাণ তৈয়ার হৈ।

৬। ৭ কারণ। প্রথম জন্ম কো সময় পিতা বী  
মাতা কো প্রকৃতি।

৮ বা কারণ। গর্ভকাল মৈ মাতা কো প্রকৃতি।

১১ হা কারণ। আহার।

১২ হা কারণ। আচার।

১৩ হা কারণ। সংসর্গ।

ইন সব কে ভী প্রত্যক্ষ প্রমাণ বিদ্যমান হৈ হৈ।

শেষ আগ।

## চাক চিন্তাবলী ।

২২। চাক বজনে পর তম কো ধ্বনি বহুত দুর  
তক চলী জাতী হৈ, কোঁকি তমকা ভীতর অত্যন্ত



तन, किन्तु उहा एत कठोर, क्रांतवटु ७ तीव्र ये  
कहा था। मनेई कर्ण कृष्ण भीतल हय । माधक !  
पुनः अन्तर्ये वका दूर देश पयान्त पुरिष्ठानित  
हय, किन्तु उहा मारवान ना छैले नोकेर चिह्न  
आकर्षण करिते पावेन । पुनः अन्तर्ये मार पुन  
कथा प्रयोग करवे, नत्रवा तोमर उपदेश अना-  
हार अत्राते नाशिया बाईवे ।

२४ । तुमि यदि विश्वास कर दे अश्वरके पूजा  
करिले तनि तोमर प्रति मस्तुष्ट छैवेन । तवे  
तहाके किङ्कण उपचारे पूजा करिवे डिर कार-  
वा । तहाः दुहा छैया तहाके पूजा करिले  
कि तनि अही छैवेन ? याहा याहाः पुनः आछे  
ताहा ताहाके जल सेवार्ति वधनई विशेष आ-  
नन्दित हय ना । याहर याहा नाह ताहाई तहा-  
हाके उपहार देओ, तनि मस्तुष्ट छैवेन । पत्र,  
पल्लव, जल, वसु अलङ्कार, धूप दीप नैवेद्य,  
चन्दन, आदिर ताहार मथेछे आछे केवल ईहाते  
कि तनि मस्तुष्ट छैवेन ? माधक ! तनि पुन,  
ताहार किछुरई अभाव नाई, अत्रात ताहार  
“ दीनता ” नाई । तुमि “ दीनहार ” जालि  
उपहार दिया मजल नयने करयोदे ताहार पूजा  
कर, ताहार आनन्दान लाउ करिव ।

२५ । यदि तुमि मणि लाउ करिया मनी छैवेत  
छाओ तवे कनीर भय दुख बोध कर । यदि भग-  
वानेर कृपा लाउे यूही छैवेत ईछाकर । तवे  
लोक निन्दार भय, मान अर्थादा हानि भय ७  
निक वैषयिक मोरव ७ प्रतिष्ठा लोपेर भय  
करि ७ना ।

२६ । इहौ यथन लोकालयेर मया दिया चलिया  
याय कुकुर गण ताहार पन्नाते दूरे थाकिया चिह्न  
कार करिते थाके, इहौ ताहार निके दक्षता ७  
करेना । उहूतयना महात्मा गण यथन लोक समाजेर  
हितार्थे इहौ छैया कार्याक्रेते विचरण करिते  
थाकेन, तथन निन्दावादी ७ अनाया कत्त लोक  
कत्त कथाई दलिते थाके, किन्तु ताहाते महात्मा  
गणेर गतिरोध भय ना, अन्तर्ये होत्राते येसन  
इहौ चलिया याय तद्रूप ताहार ७ भगवद्ध भय  
ईछार वशवही छैया अग्रसर छैवेत थाकेन ।  
अग्रं भगवान तहादेर परिचारक ७ महाय ।

फैला हुआ वो बिगल है । किन्तु वह इतना कठोर,  
कर्ण-कटु वो तीव्र है, जो उस को ठहर जाने हो  
पर कर्ण-कृष्ण गौतल हाते है ।

हे माधक ! प्रशस्त हृदय को बातें बहुत दूर  
तक ध्वनित हाती या फैल जाती है, किन्तु वे यदि  
मारवान नहीं, तो लोगों के मन को नहीं खींच  
सकते हैं । जब बोलना, तो प्रशस्त हृदय में मार  
पूर्ण कथा बोलते रहना, नहीं तो तुम्हारे उपदेश  
सब अनास्था को धारा में बटिकाने वही जांगे ।

२४ । यदि तुम्हारा यही विश्वास है कि भगवान  
की पूजने पर वे तुम पर मन्त्र होंगे, तो किम  
रीति में उन की पूजना स्थिर किये हो ? उन्हीं की  
सामग्री से उन्हीं की पूजने पर वे क्या तृप्त होंगे ?  
जिम का जो द्रव्य बहुत है, उस को उस द्रव्य देने  
में वह कभी विशेष रूप आनन्दित नहीं होते हैं ।  
जिन की पास जो सामग्री नहीं, उन को वही सामग्री  
भेट चढ़ाओ, वे हर्षित होंगे । पत्र, पल्लव, जल, वस्त्र,  
भुषण, धूप, दीप, नैवेद्य, चन्दन आदि उन के घर  
में बहुत हैं, केवल इतने ही में क्या वे तृप्त होंगे ?  
हे माधक ! वे तो पूर्ण हैं, किमो सामग्री का अ-  
भाव उन का नहीं है, अतएव वे “ दीनता ” रहित  
हैं । तुम “ दीनता ” को डालो मजाकर उन को  
भेट चढ़ाओ वो मजल नेच में कर जोड़ के उन की  
पूजा करो, उन में आशर्वाद मिलेगी ।

२५ । मणि में यदि तुम धनो बनने चाहो, तो  
फणी के भय को तुच्छ मानी यदि भगवत की कृपा  
में सुखी होने मांगो, तो लोक निन्दा का भय, मान  
मर्त्यादा हानि का भय, निज वैषयिक गौरव को प्र-  
तिष्ठा नष्ट होने का भय मत करो ।

२६ । हाथो जब बाजार में चला जाता है, तब  
कुत्ते सब दूर से बहुत भौकते रहते हैं किन्तु  
हाथा उस पर कुछ भी ध्यान नहीं देता है ! उन्नत  
हृदय महात्मा गण जब समाज के हितार्थे ब्रतों को  
कर कार्य क्षेत्र में विचरते रहते हैं, उस समय  
निन्दक गण वो अन्यान कितने लोग कितने छुछ  
कहा करते, किन्तु उसे महात्माओं की गति कभी  
नहीं रुकती है । हाथोमान को हमारे से जैसा  
हाथो चला जाता है, उस रीति उन्हीं ने भी  
भगवत की प्रेरणा के वश होकर आगे बढ़े जाते  
हैं । भगवन स्वयं उन्हीं के चालक वा सहायक बने  
रहते हैं ।

## आर्या धर्म की उन्नति ।

## आर्य धर्म की उन्नति ।

देखा गइतेछे पृथिवीर सर्वत्रेई उन्नतिर चिह्न दिन २ रूढ़ि पाइतेछे । आसिया, युरोप, आफ्रिका, आमेरिका सकलेंई उन्नतिर पश्चाते धावमान, एक देश अपन देशेर गति अतिक्रम करिते गइवान रहिराछे । धर्म, कर्म, रीति नीति समस्त विषयेई अग्रसर हइते सकलेंर सविशेष टिकी, आनादिगैर भारत भूमि यादच पृथिवीर रहिभूत नहे, यदिच भारतवर्ष आसियार एकटा प्रकाश थु, किन्तु ठेकार उन्नतिर वेग सकल देश हइतेई पश्चाते पड़िरा आछे । येदिके दृष्टि पात करन ये विषय अवलोकन करन देखिबेन भारतेर गति धीर ओ हलु शिथिल जड़ता, आलस्य, छहलता ओ दिवा रात्रि उल्ला वा विधाय श्रम-सेवा भारतके आश्रम करिया राखिराछे । समाज नातिर प्रचुर प्रचार, धर्म नीतिर संस्कार, सदस-द्विचार, व्यवसायेर उन्नति, सामाजिक श्रम विधानेर चेष्टा यत किछु कार्यहै केन हउक, भारत ताहा श्रम शय्याय सुटिया निद्रितावधाय साधन करिते चाहे । भारतेर निद्रा कुड्कारेनि निद्राकेओ पराभव करिराछे । निद्रितेर धन चोरे अपहरण करिले से जानितेओ पावेन । निद्रित भारतेर धन विदेशी गण लइया गेल, भारतेर तन्त्रा भाङ्गलना, विदेशी गण भारतेर धर्म नष्ट करिल, भारत जागिल ना, विदेशी गण भारतेर विद्यार प्रतिभा हानि करिल, भारत तथाच निद्रित, विदेशी गण भारतेर धन धनी हइया भारतके ताहादेर पाठुकार छायाय आश्रय दल, अचेतन भारत ताहाओ आनन्द पूर्वक मानिया लहिल, भारतके मूर्ख बलिल, भारतके विधर्मी बलिया तिरस्कार करिल, दुर्बल बलिया गुणा करिल, भारत एताबे अवनत मस्तके होकार करिल । ये भारतेर

आजकल पृथिवी के सब देशों में उन्नति और आगे बढ़ने की चेष्टा दिखाई देती है । एशिया, योरोप, आफ्रिका, अमेरिका सब उन्नति के पीछे पड़े हैं, सब, एक दूसरे का उन्नति की दौड़ में पीछे डालना चाहते हैं । धर्म, कर्म, रीति, नीति सब में सब की आगे बढ़ने की चेष्टा हो रही है । यद्यपि हमारा भारतवर्ष पृथिवी से बाहर नहीं है, यद्यपि भारतवर्ष एशिया का एक बड़ासा खण्ड है, परन्तु इस उन्नति की दौड़ में यह सब से पीछे है, जिस तरफ देखिये, जिस विषय में देखिये भारतवर्ष ठंढी मांस ले रहा है । जड़ता, आलस्य, कायरपद और दिनरात सोनेकी इच्छा, हमारे भारतवासियों को घेरे हुई है । समाज नीतिका प्रचार, धर्मनीति का संस्कार और सदसद्विचार, व्यवसाय की उन्नति, सामाजिक सुखविधान की चेष्टा, इत्यादि जितने काम हैं, सब को भारतवासी सोये हुए करते हैं । इनकी निद्रा कुम्भकर्ण की निद्रा से भी बड़ी है । सोये आदमी का धन चोर उठाये लिये जाता है, परन्तु उसकी कुछ खबर नहीं होती, निद्रित भारतवासियों का धन विदेशी लिये जाते हैं, भारत पड़ा सोता है, विदेशियों ने भारतवासियों का धर्म लेलिया, भारतवासी सोये हैं, विदेशियों ने भारतवासियों की विद्या लेली, भारतवासी सोये हैं । विदेशियों ने भारतवासियों के धन से धनी होकर इनको अपना आश्रित बनाना चाहा, सोये भारतने खुशी से वही मान लिया, भारत की मूर्ख कहा, भारतकी विधर्मी कहा, कायर कहा, सब भारतने इसकी झट्टीकार कर लिया । जिस भारत का धर्म पैसफिक समुद्र से भी गंभीर है, जिस भारतके धर्म में भक्ति, ज्ञान, योग, वैराग्य, प्रेम, ईश्वरीपासना इत्यादि किसी विषय के उपदेश का अभाव नहीं है,

धर्म प्रशालु महाभागर इहेतेओ सुगठार, ये भारतेर धर्म्ये भक्ति, ज्ञान, योग, तैरागा, प्रेम, द्वैतरोपासना आदि कोन विषयेरहे अभाव नाई, भारतेर निद्रित महान गण विदेशीयेर कथानुसार इदृश समस्तधर्म निज धर्मके अमार ओ यक्ति बिहीन बलिया निरकारण करिल ।

एकणे भारतेर एहे घोर निद्रा भङ्ग करिनार कि कोन उपाय नई ? भारत कि चिरकाल निद्रितहे थाकिवे ? एतए प्रश्नोदरे हर तो कह बलिबेन, ये यখন सकलेहे निद्रित तवे जागाहैवे के ? तन्मध्ये ये २४ जन जाग्रत इहेन ताहारा ओ आचार आतृगणेर शोचनीय अवस्था अति दुगा प्रदर्शन करिते लागिनि । आतृ गणेर प्रति महानुभात प्रकाश करा दूरे थाकुक ताहानिके अपमान करिते आरम्भ करिल, आर यदिवा जागाहैते चेन्को करिल ताहाओ गालि दिया, तिरस्कार करिया ओ पदानीत करिया । हा ! एहे कोशमे कि निद्रित भारत पुनरुत्थित इहेवे ? भ्रमना करिलेहे कि भारत निज धर्म समालोचना ओ तत्त्व विचारार्थ प्रवृत्त इहेवे ? भारतेर धर्म पुनरुद्भापित करिबार জন্য एकणे सारु सद्गुरु प्रयोजन इहेयाछे । गिनि सुप्रसिद्ध बल्लभ शक्ति मागंधी विशिष्ट, निज आतृगणेर अवस्था तातदुख ओ ताहानिके संपादे आनिवार मरुपाय उद्गम रूप विद्रित आछेन, तिनहे इदृश उरुतर काये सुपटे इहेवेन । धर्माप प्रचारेर জন্য आर्मादिगेर आधुनिक धर्म प्रचारक गणके कोन नूतन निकेतन निर्माण करिते छहेवेन । आर्मादिगेर पुरातन आन्य महापुरुष गणेर विरचित धर्म मन्दिर समर्पित ओ शोभित करिबार জন্য युरोप इहेते बाड़, देओलालगिरि आनाइते इहेवेन, मन्दिर आलोकित करिबार জন্য ग्यास वा लाडिलालोकेर प्रयोजन इहेवेन । आन्य धर्म निकेतने ज्ञान मृत्यु उद्गमित थाकिर । एरूप उज्ज्वल करिया राखिवाछे । ये उदार निकट समस्त मोक्षिहे गमिल

उस भारत के सोये सन्तानों ने विदेशियों कहन में अपने धर्म की मार ज्ञान और युक्ति बिहीन ठहराया ।

अब क्या भारतवासियों को निद्रा से उठाने का कोई उपाय नहीं है ? क्या चिर काल के लिये भारतवासियों सोयेही रहेंगे ? इस सवालके जवाब में यह कहा जा सकता है कि जब सभी सोये हैं तो उनकी कौन जगावेगा ? तिस पर भी जो दोचार जागे, उनकी अपने भाइयों की अवस्था पर घृणा आनि लगी, अपने भाइयों के साथ सहानुभूति प्रकाश करने के बदले उन्हां ने उनका अपमान किया, और यदि उठाने को चेष्टा भी की तो गाली देके, तिरस्कार करके, और लात मारके । क्या इसी उपाय से सोये भारतवासी उठेंगे ? क्या केवल तिरस्कार से भारतवासी अपने धर्म की समालोचना और उसके महत्त्व विचार में प्रवृत्त होंगे ? यदि विचार के देखा जावे तो भारत के धर्म की फिर से उज्जीवित करने के लिये ऐसे मदयुक्त का अभाव है, जो वक्तुत्व गति रखने के साथ, अपने भाइयों की अवस्था की अच्छी तरह जाने और उन की सत्पथ में लाने के यथार्थ उपाय की पहचाने । धर्म के विषय में हमारे आधुनिक धर्मप्रचारकों को कोई नई इमारत नहीं बनानो पड़ेगी । हमारे पूर्व पदों के रचित धर्ममन्दिर को मजाने के लिये उन लोगों कीओर से भाड़ दिवालगीर नहीं मंगानो पड़ेगी और, मन्दिर को आलोकित करने के लिये गैस वा बिजली की रीशनी की दरकार नहीं पड़ेगी । इस मन्दिर में ज्ञान का सूर्य ऐसा प्रकाशमान है कि उस के आगे सब नई रीशनी फीकी जंचेगी, इस के तेज, इसकी सफाई, इसकी सजावट के आगे विदेशीय सजावट निस्तेज हो जायगी ।

हम लोगों ने कितने ही बलाघों को अपने

है। याहैवे। ईश्वर देव, निम्नलता, ईश्वर शोभा देखिले निदेशाय मञ्जु निराश्रु मञ्जु पाहैवे।

आमरा कत वक्तुक निज शब्द छाड़िया विदेशाय शब्द हईते उपमा निदेश सुनियाछि, निज श्रोत्र वर्गेर हृदयस्थ कराहैवार जना आमरा कत व्याक्तिके कठोर शब्द वाचहार करिते शान-याछि, व्याख्यान दिवार समय कत लोकके सुदीर्घ समास युक्त उक्ते ओ कठोर संस्कृत पद प्रयोग करिते सुनियाछि। ईश्वर परिणाम फल ईश्वर दृष्टि हय ये हय, श्रोत्रा उपदेष्टार कथा ग्रहण करार परिवर्तते तत्सह बाधिवाने श्रुत हय नतवा विरक्त हईया दीरे २ उठिया याय, वक्तु अवशेषे निरुपाय हईया दमिया पड़ैन एवं मरुभूमिते दृष्टि पातेर न्याय ताहार समस्त पारि-अम निरर्थक हईया याय।

ज्ञान बर्दिनी सभाय आमरा बाबु श्रुतक प्रसन्न सेन महाशयैर वक्तुता सुनियाछिनाम। ताहार समस्त मतेर सहित आमादेर सम्पूर्ण ऐकमता नी हईक किन्तु ताहार वक्तुता सुनिलेई ये एक प्रकार आनन्द अनुभूत हय, धर्म भाव सकलैर मनै उद्दीपित हय ओ आदि धर्म संक्रान्त शास्त्रादि पाठे कति परिबर्द्धित हय, ताहाते किछु मात्र सन्देह नाई। याहारा ताहार वक्तुता सुनियाछैन ईश्वर ताहारा उत्तम रूप बुझिते पारियाछैन। ईहकि सामान्य आश्रयैर विषय ये ये म'डोरारि जाति वाचना त्रिभु अना कथ'ई सुनिते जानैना, याहारा एक मात्र गुरु पृजाई धर्मैर चरम नोमा स्त्रि करिया राखियाछे, याहारा धर्म मुठान समयै ओ धृति, यत, चिनिर दर विस्तृत हय ना ताहारा ओ देड़ घंटा काल सुन्न हईया धर्मार्थ वाता सुनितेछिन ओ अणजना ओ चकल हय नाई। एत-दर्शने आमादेर विशेष आशा हईतेछे ये सेन महाशय यदि मध्ये २ निज वक्तुता द्वारा कलि-

है, कितने लोगों को अपने सुननेवालों के हृदय गम कराने के लिये कठोर शब्द व्यवहार करने सुना है, कितने लोगों को धर्मविषय में व्याख्यान देने के समय बड़े लंबे २ संस्कृत के पद के पद व्यवहार करते सुना है, परन्तु इसका प्रतिफल यही होता है कि या तो सुननेवाले वक्ता के सदुपदेश को ग्रहण करने के बदले लड़ पड़ते हैं और कहीं उग्रता की अपनी २ राह लेते हैं, वक्ता विचारे, हीरा गुल मचाके गान्त हो जाती है, और चटान पर वर्षा की तरह बिचारी का सब पशियम हथा हो जाता है।

ज्ञानवर्दिनी सभा में हमलोगों ने बाबू श्रीकृष्णप्रसन्न-सेन को वक्तृता देते सुना, और चाहे हमलोग सब विषय में उनसे एक मत न हों, परन्तु उनकी वक्तृता सुननेहोम जो एक प्रकार आनन्द अनुभव होता है धर्मभाव सबके चित्तमें उद्दीपित होता है और आर्यधर्मके शास्त्रों को पढ़ने की रुचि बढ़ती है इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है। जिन लोगों ने, उनको वक्तृता सुनी उनका यह अच्छातरह अनुभव हो गया। यह क्या थोड़े आर्य्य को बात है कि जो मारवाड़ी जाति सिवाय वाणिज्य की बात के दूसरी बात नहीं सुनना जानते, जो गुरुजी महाराज को पूजनाही धर्म की चरम सीमा समझें हुए हैं जीलोग धर्म क्रिया के समय भी 'वांजे', 'कारे', 'धोती', 'घ', 'चीनी' के दर की नहीं भूलते, विलोग डेढ़ घण्टे तक सुपचाप धर्म की बातें सुनते रहे, और जरा न उग्रताये। हमलोगों को यह देख कर आशा होती है कि यदि सेन महाशय कधी २ अपनी मधुर वक्तृता कलकत्ते की हिन्दुस्तानी समाज के उपकार के लिये दिया करें तो बहुत से मदुष्टान जिनका न होना कलकत्ते के लिये कलंक स्वरूप है, उसके होने की भी संभावना हो।

कता हाइन्द् धानी समाजेंर उपकाराथ बहू करेन,  
ताहा इहेले ये २ कायेंर अभाव बसतें कलि-  
कता कलङ्कित आछे, तनावं मदुछान अना-  
राधेन संसाधित हईते पार ।

भा. मि. ।

### प्राप्त पत्र ।

सम्पादक महाशय !

आर्य कूल गोरव पाकुड़ निवासी उल्लेख्य  
राजा तारेच्छा पाण्डे महाशय आर्य धर्म प्र-  
चारणी सभार काय सौकर्याथे एकट्ठी मुद्रायत्न  
दान करियाछेन, आमादेर सनातन धर्मेर सत्ताथ  
प्रचार जन्य त्रिबुक्त पण्डित राज पोर्षाविक शास्त्री  
चतुर्भुज शर्मा ७ काशीधाम इहेत जयपुरे गमन  
करियाछेन एवं पण्डित प्रवर त्रिबुक्त शशधर तर्क-  
चूडामणि महाशय ओ भा, आर्य धर्म प्रचारिणी  
सभार अयोग्य सम्पादक श्रीबुक्त कुमार त्रिबुक्त  
प्रसन्न सेन महाशय अनन्त उद्देशेहर सहित आ-  
मादेर प्रिय आर्य धर्मेर निगूढ मर्म साधारणेर  
समक्षे व्याख्या ओ प्रचार करितेछेन ईहा अपेक्षा  
प्रीतिकर समाचार आर कि हईते पार ? नि-  
शेषतः पुण्यधाम वाराणसीत मुखा सभा उठिया  
आमातेत आर्य धर्म पुनरुद्घोषन मन्त्रेण समिक  
अशार सकार इईयाछे । एहे समये, आर्य धर्म  
प्रचारिणी सभार सभा गणेर समक्षे एकट्ठी प्रस्ताव  
उपस्थित करी आवश्यक दिवेचना करिनीग ।

अनेक दिन हईल, त्रिबुक्त पण्डित शशधर तर्क-  
चूडामणि महाशय वद्वेपनीत धारणेर आवश्यकता  
मन्त्रेण एकट्ठी गतुद्धम वक्तृता प्रदान करियाछि-  
लेन एवं येई वक्तृतापीर सारांश धर्म प्रचारक  
प्रकाशित इईयाछिल । ईहा द्वारा ये हिन्दू मण्ड-  
लीर कत उपकार इईयाछे ताहा निश्चया वास्त-  
व्यता उद्घोषित मध्ये २ श्रीबुक्त कुमार त्रिबुक्त  
राधियाछे, एणेर अलत उद्देशेहर सहित हिन्दू

### (प्राप्त पत्र)

सम्पादक महाशय ! आर्य - कूल - गोरव पाकुड़  
के राजा श्री पूतारेय चन्द्र पांडे महाशय ने  
आर्य धर्म प्रचारिणी सभा के कार्यार्थ एक मुद्रा  
यत्न दान किया, हमारे सनातन धर्म का सन्धार्य  
प्रचार करने के लिये अत्युक्त पण्डित राज पोर्षा-  
विक शास्त्री चतुर्भुज शर्माजी ने काशी जैसे जयपुर  
में पधारे श्री पण्डित प्रवर अत्युक्त शशधर तर्क चू-  
डामणि महाशय वी भा : आर्य धर्म प्रचारिणी सभा  
के सुयोग्य कार्य सम्पादक श्रीमान कुमार श्रीकृष्ण  
प्रसन्न सेन महाशय ज्वलंत उत्साह सहित हम सब के  
प्रिय आर्य धर्म के निगूढ मर्म सबके साझा करने व्याख्या  
वो प्रचार कर रहे हैं, इससे आनन्द को समाचार  
फिर क्या ही सत्ता है । विशेषतः पुण्य भूमि श्री-  
काशीजी में मुख्य सभा आ जाने से आर्य धर्म को  
पुनरुद्घोषनार्थ अधिक आशा का संचार हुआ । इस  
ही अवसर में आर्य धर्म प्रचारिणी सभा के सभ्य  
सज्जनों के निकट एक प्रस्ताव छेड़ना मुझे आवश्यक  
वृत्ति पड़ता है ।

बहुत दिन हुए अत्युक्त पण्डित शशधर तर्क चूडाम-  
णि महाशय ने हिजों के लिये “यज्ञोपवीत धारण”  
इस आशय पर एक अत्युत्तम वक्तृता करी थी और  
उस का सारांश धर्म प्रचारक में प्रकाशित हुआ  
था, इस से जो हिन्दुओं का कितना उपकार हुआ  
सो हम लिख प्रगट नहीं कर सकते हैं । बीच २  
में अत्युक्त कुमार श्रीकृष्ण प्रसन्न सेन महाशय ने  
ज्वलंत उत्साह सहित हिन्दु धर्म के गूढ़ अभिप्राय  
सब व्याख्या को करते हैं, उस से सब साधारण  
का बहुत उपकार होते रहते हैं । किन्तु खेद यह  
है कि वह सब वक्तृता संवाद पत्रों में प्रकाश न  
होने से आशानुरूप फल नहीं मिलता है । यह सब  
व्याख्यान प्रकाश होना अतीव आवश्यक है । “धर्म  
प्रचारक” पत्र द्वारा शास्त्र के अभिप्राय जहां तक  
सब साधारण के गोचर हो सके सो होय,  
किन्तु मेरे विचार में दुसरा और भी कुछ उपाय

धर्मग्रंथ गुरु धर्म सकल बाधा करिया थाकेन एवं ताहा द्वारा आपामर साधारणेर यथेष्ट उपकार हईर, थाके । किन्तु, दुःखेर विषय एहे ये, से सकल वस्तुता केन पत्रिकाय प्रकाश ना हओयाते आशा मत कल दर्शितेहेन । एहे सकल व्याख्यान प्रकाश हओया अतीव आवश्यक । धर्म प्रचारकेर द्वारा शास्त्रेर धर्म सकल यतदूर साधारणेर गोचर हईते পারে, हईक । किन्तु, आमार विवेचनाय, आर एकटी उपाय अवलम्बन करा आवश्यक । ताहा एहे—आन्तर्गतर्पणेर आवश्यकता, अत नियमेर उपकारिता, विग्रहादि उगलक करिया भगवनेर आराधना उद्देश, पुष्प, तुलसी-पत्र प्रभृतिर द्वारा देवता आराधना कल, श्रीकृष्णेर लीला समूहेर तात्पर्य एवंप्रकार विषय सकल शास्त्रीय प्रमाण सह विरत करिया कुट्ट २ पुस्तकाकारे, प्रात मासे किछा पन्ने, प्रकाश करत सामान्य मूल्य, आपामर साधारणके प्रिय करले भाल हय । विद्यालयेर अल्पवयस्क छात्र गणके विवरण करा समग्ररूपे ज्ञेय । अतदर्थे अर्थेर प्रयोजन । आर्य धर्म प्रचारिणी सभा सभा सभा गण अछुएह प्रकार मासे २ किछु २ करिया प्रदान करिले ए पुस्तकटी काये परिणत हईते পারে । एवं आमा आशा करि धार्मिक सभा गण एहे समूह काये किछु २ व्यय करिते कातर हईवेन ना ।

आर्य आतागण ! एकबार देखुन देखि, धर्म प्रचारार्थे, श्रुतीयानगण कत मत उपाय उद्भावन करितेहे । प्रथमे, विद्यालय स्थापन करिया बालक गणके शिक्षा प्रदान करितेहे, परे, ताहारा ज्ञान लाभ करिने, ताहादेर हस्त, दाँदेर गीत, मधि लिखित समाचार प्रवृत्ति अर्पण करिया ताहार धर्म हृदयङ्गम करिया दितेहे । आर एकदिके, प्रचारक गण वस्तुता द्वारा श्रुतीय धर्मेर उद्देश साधारणेर हृदयङ्गम करिया दितेहे एवं श्रुतीय धर्म प्रतिपादक कत पुस्तिका विवरण करितेहे । एहे सकल पुस्तिका कत प्रकार फल प्रकाशित हईराहे । एहे सकल व्यापारे कि

अवलम्बन करना आवश्यक बांध होता है । वह यह है कि आह तपणादि को आवश्यकता क्या ब्रत नियम संजमों से लाभ क्या । मूर्ति पूजन का क्या अभिप्राय है, तुलसी, फूल आदि से देवाराधन का फल क्या, श्रीकृष्ण लीलायें क्या तात्पर्य है इत्यादि आशयों पर व्याख्यान शास्त्रीय प्रमाण सहितलिख के छोटी-पुस्तक छपा छपा कर प्रति मास या प्रति पञ्चान्तमें प्रकाश कीजाय वो अल्प मौल में बिके, विद्यालयके छोटे-बालकों को बिन मौल बंटना सर्वथा उचित है । एतदर्थ द्रव्य का विशेष प्रयोजन है । आर्य धर्म प्रचारिणी सभा के सभ्य गण छपा कर प्रति मास कुछ दान करने पर यह प्रस्ताव कार्य में परिणत होसक्ता है । हम आशा करते हैं कि धर्मात्मा सभ्य गण इस महत कार्य के लिये थोड़ा बहुत व्यय करने में संकोच न मानेंगे ।

आर्य भ्राता गण ! एक बार देखिये तो, धर्म प्रचारार्थ इसाह लोग कितना कुछ उपाय निकालते हैं । पहले विद्यालय स्थापन करके बालकों को शिक्षा देते हैं, फिर वे सब थोड़ा बहुत मिखने पर उन सब को दाउद के गीत, मधि का सुसमाचार आदि पढ़ने दे देते हैं । दूसरे ओर देखिये पादरी लोग वस्तुता कर करके इसाही धर्म को प्रेषता सब को समझाते हैं श्री इसाही धर्म को प्रष्टि के लिये कितने पुस्तक बटते हैं । फिर यह सब का भिन्न २ भाषा में उल्था भी होता जाता है । अंगरेज लोग इस व्यय को अपनायास उठालते हैं । हम सब क्या ऐसेही सारविहीन हो गये कि हमारे मनातन धर्म को पुनर्जीवित करने के अर्ध सामान्य अर्थ भी व्यय नहीं कर सकेंगे ? हा ! सब जाति को तो निज २ धर्म रक्षार्थ उद्यत देखते हैं, केवल इसही सब निद्रित । हम मुसलमानों पर यवन समझ के घृणा मानते हैं किन्तु वे लोग दैनिक नेसाज भी नहीं पुकते । आफिस में काम करते



नामासेइ एही बाय-बार बहन करि तेहेन । आ-  
मरा कि एत असार हईया पड़िया कि ये, आमा-  
देर सनातन धर्मके पुनर्जीवित करिबार छन। गा-  
मान्य मात्रोबाय दीक्षा करि ते अग्रसर हईयन ?  
हाय ! सकल जातिकेई सोय २ धर्म रक्षार छन।  
उद्यम पूर्ण देखि ते पाई केवल आमादेर निद्रित ।  
आमरा मुसलमान दिगके यवन बानिय द्रव्य करि रन।  
थाकि । किन्तु, ताहारा ताहादेर आताहिक नमाज  
परित्याग करेन। कार्यालये कार्याकरि तेहेनमा-  
जेर समय हईन, अमानि हातेर काज ताग करत  
नमाज करि ते गहन करिन । सामान्य मजूर  
मजूरी करि तेहे, नमाजेर समय हईन, अमानि  
पथेर मध्ये नमाज करि ते आरम्भ करिन । इराज  
दिगके आमरा स्नेह बानिया थाकि, किन्तु देखुन ता-  
हारा निग्रम मत ईश्वरेर आराधना करि रन। थाके ।  
अस्तुतः प्रतिरिवारे उपासनालये उपस्थित हईया  
उपासनाय योग दिय। थाके । केवल आमादेरई  
मध्य हईते नियम सकल लुप्त हईतेहे । आ-  
मराई केवल सकल बन्दना करि ते समय पाईन ।  
विद्यालये किन्ना कार्यालये गहन करि ते हईवे,  
सुतरां सकल, पूज करिबार समय नाई । कोन  
उपासनालय नाई मेथाने गिया धर्म क्षुण्ण  
शान्ति हईते पावे । ज्ञाने २ देवालय आछे बटे,  
किन्तु, मेथाने गिया तृप्ति लाभ करिबार उपाय  
कोथार ? प्रेरित नःकृत भाषा मन्त्र उच्चारण  
करि तेहेन, आपामर साधारण ताहार धर्म हृदय-  
क्रम कर। दूरे थाक, तनि निजे ताहा बुझि ते  
पावेन कि ना मन्देह । आमादेर मध्य धर्म  
भाव शिथिल हईयार ईश्वर एकटी कारण । आ-  
मरा अनेक मन्त्र उच्चारण करि, अनेक मन्त्र अवण  
करि, किन्तु ताहार अर्थ बुझि ते पाविना सुतरां  
ताहा पाठ किन्ना अवण करि रन। तृप्ति लाभ हई ना ।  
यवन अनेकेई संस्कृत भाषा अवगत नहेन, तथन  
पूजा प्रवृत्ति ते सकल मन्त्र उच्चारित हई ताहार  
अर्थ साधारण बुझिबार सुनिधा कर। उचित ।

कोन २ ज्ञाने, आर्य धर्म सभा संस्थापन हईयाते,  
धर्मतत्व लुप्त कथित उपाय हईयाते, किन्तु,

रहे किन्तु नेमाज के समय आजाने पर झट सब  
काम छोड़ नेमाज कर लेते हैं । मजूर लोग म-  
जूरी करते नेमाज का समय होतेही झट सड़क के  
किनारेही में नेमाज पढ़ना आरम्भ कर देते हैं ।  
अंगरेजों को हम स्नेह मानते हैं किन्तु देखिये  
उन्हीं ने भी नियमानुसार भगवत की आराधना  
की करती हैं, कुछ भी न करे तो प्रति रविवार  
गिर्जे में उपस्थित हो भगवत उपासना करते हैं ।  
केवल हमारे लोकोच में से यह नियम दिनों दिन  
उठता जाता है । हमही सब को केवल संध्यावन्दन  
करने का समय नहीं मिलता है । स्कूल या आ-  
फिस जाना है, सुतरां संध्या पूजा करने का अव-  
सर कहाँ ? वाह ! वाह ! ऐसे मन्दिर भी सर्वत्र नहीं  
मिलता, जहाँ जाने पर धर्म-सुधा की निहति  
होय । मानते हैं किस्थान २ में देवालय है, किन्तु  
वहाँ जानेसे भी मन लग कहाँ मानता ? पूजारी जी  
संस्कृत भाषा में मंत्र उच्चारण करते हैं, साधारण  
लोगों की समझना तो किनारे रहो उन्ने स्वयं सम-  
झता है या नहीं उसमें भी सन्देह है । हमारे लोच  
धर्म भाव शिथिल होने का यह भी एक कारण है ।  
हम अनेक मंत्र उच्चारण करते हैं, अनेक मंत्र अवण  
करते हैं किन्तु उन सब के अभिप्राय नहीं समझने  
पर उस रीति पाठ की अवण से कुछ फल नहीं मि-  
लता है । जब देख पड़ता है कि बहुतेरे लोग म-  
रुत नहीं समझते हैं, तो पूजा प्रवृत्ति में जो  
सब मंत्र पड़े जाते हैं वह सब साधारण के समझने  
के लिये कुछ उपाय करना चाहिये ।

किसी २ स्थान में आर्य धर्म सभा स्थापन  
होने पर धर्म तत्व सिखने का कुछ २ उपाय हुआ,  
किन्तु इन्हीं की संख्या इतनाही अल्प है जो उससे  
बहुत उपकार की आशा नहीं की जा सक्ति है ।  
ऐसी २ सभा सर्वत्र स्थापित होना चाहिये । हम  
आशा करते हैं कि सोये हुए आर्य समाज गव आन-

होती सन्धा एत दम्प्य ये, ताहार द्वारा मगधिक  
उपकारेर आशा करा बाटैते पाटैर ना । एवम्प्र-  
कर सत्ता पुति आये सन्धापित हग्या । उचत ।  
आशा करि, आमादेर निहित आशा तातागण  
आलसा शया । हईः उथान करत तत्पक्ष  
मनोयोगी हरेन । सत्ता समूहेर कार्य गुलि  
क, आ, ध, प्र, सत्ता अनुमोदनानुसार  
एकताने चलिले ताल हर ।

वशमद

पना । १८ आबण । भारत वशीर आ, ध, प्र, सत्ता  
१२९० । जनैक सत्तामद ।

## राजा उ साधु ।

कोन समये जनैक राजा वन यथो मग्या  
करिते गियाछिलेन । तनि एकटी मगेर पच्छा २  
धावमान हईया क्खु हईया पडिलेन एवम् एकटी  
रुकेर सुगीतल छायाय निश्राम करिते लागिलेन ।  
इतस्ततः दृष्टि करिते २ देखिलेन, ये एकजन  
तपस्वी प्रेमाक्ष पूर्ण लोचने भगवद्गुणानुवाद  
गान करितेछे । राजा ताहार निकटे गिया  
प्रणाम पूर्वक निवेदन करिलेन, हे महात्तन् ।  
आपनि एकाकी एहे विजन वने किछपे वास  
करेन ? तपस्वी बलिलेन, राजन् । आमि कण  
जनाउ एकाकी थाकिना, सर्व सामर्थशील पर-  
मेश्वर निरन्तर आमार सङ्गे रहियाछेन ।

रा । सिंह, बाघ, क्लृक, सर्पादि साक्षात् काल  
अरूप भेषण जस्तु गण एथाने सर्वदा विचरण करि-  
तेछे, ईहादिगके देखिया कि आपनार त्रय हरना ?

त । आमि आपनार न्याय धनुषान लईया  
कथनउ उहादिगके बध करिवार चेकी करिना,  
आमार मनेउ कथन ताहादेर प्रति वैरभाव उदय  
हरना, तवे उहारा केन आमार शक्तताचरण  
करिबे ? वरन् सर्वत्र आज्ञा दृष्टि वशतः आमि ताहा-  
दिगके मित्रभावे प्रेम करिया थाकि, ताहाते  
उहारा आमार रक्षणवेक्षणई करिया थाके ।

रा । एथाने तो अन्य कोन मनुष्य नाई, तवे

म्य को बिहावन पर मे उठ कर इन सब कामों मे  
दल चित हों । सभा समूह यदि भा : आ : ध : प्र :  
सभा के अनुमोदनानुसार प्रति कार्य काल में  
एकही तान जमा ले तो परमोत्तम हो ।

पना । ) भा : आ : ध : प्र : सभा के  
आवण- कृपा ५ । ) जनैक वगम्वद सभासद ।

## राजा वो साधु ।

एक समय किसी राजाने बौद्ध वन में शौकार  
खेलने को गया था । एक हरिणा के पिछे दौड़ते २  
आन्त होकर वृक्ष की शीतल छाया में विश्राम क-  
रने लगे । आस पास ताकते २ देख पड़ा कि  
एक तपस्वी प्रेम से आंसु गिराते हुए परमात्मा की  
गुणानुवाद गारहे हैं । राजा ने समीप जाके प्र-  
णाम कर निवेदन किया, हे महात्मन् ! आप इस  
विजन वन में अकेले कैसे विराजते हैं ? तपस्वी  
उत्तर किये, हे राजन् ! अकेला मुझे कभी नहीं  
रहने पड़ता, सर्व सामर्थवान परमेश्वर सदैव संग  
ही संग विद्यमान हैं ।

रा । यहां शेर, सिंह, भाल, सर्पआदि काल सट्टण  
भयंकर जीव सब सदाही विचरत हैं, इन्हीं से  
आप का डर नहीं लगता ?

त । मैं कभी आप समान शर धनुष लेके उन सब  
को मारने की चेष्टा नहीं करता हूं, न मैं मन से  
भी कभी उन्हीं से विरोध मानता हूं, तो वे सब क्यों  
मेरे बैर बनेंगे ? वरन मैं सर्वत्र एक आत्मदृष्टि  
हेतु मित्रभाव से उन सब की प्रेम करता हूं, इस से  
वे सब मेरे रक्षक बने रहते हैं ।

रा । यहां तो कोई और मनुष्य नहीं है, तो  
आप के जिन की क्या व्यवस्था होती ?



आपनार भोजनार दर किरूप व्यवस्था हय ?

त । लोकालये गिनि भोजन दान करेन, त्रिनि एषानेओ निता विराज मान । तांनार ता-  
ज नुगारे रुक् समूह आमार आवश्यक मत्त सुरग  
फल, पत्र, कन्द आदि प्रस्तुत रा.प ।

रा । आपनि एकजन महात्मा । आपनार विशेष  
परिचय जानिते ईच्छा करि ।

त । गुरुन निकट दक्षित हठेर निज परिचय  
जानिया लउन, तएपरे आमार परिचय जानिते  
आर विसम्भ हईवेना ।

रा । आपनई प्रकृत तागी पुरुष ।

त । आगि ना आपनि ? आगि निता अमृता  
परम पदार्थ लाउनेर जन्य, तूछ संगार मात्र त्याग  
करियाछि, याहा वास्तविक किछुई नय बल्लेलेओ हय ।  
आर आपनि किछे अमृत छथेई तत्र हईर  
अमृता पदार्थेर निके चरियाओ देखेन ना । आगि  
सकौतमेर जन्य तथा पदार्थ त्याग करियाछि  
नाज किन्तु आपनि तूछ संगारेर निमित्त मर  
वरूप परम पदार्थके त्याग करियाछेन, अतएव  
आपनिई सकलतागी !!!

रा । (लज्जित हईरा) महात्मान् : आगि दिवाते  
राजैश्वर्या भोग करि, रात्रिते सुकोमल शय्याय  
सुईरा निद्रास्थ उपभोग करि, अतएव अधिक  
सुखके, आपनि कि आगि ?

त । आगि । केनना आपनि समस्त दिन राज-  
कीय चिन्तार बाकूल, ओ सदाई शत्रु भये भित्त ;  
आगि समस्त दिन परमात्म-गद्दय निमग्न থাকिया  
अतुल आनन्द रस पान करि । रात्रिते निद्रित  
हईले आपनारओ कोमल शय्या अरण थाकेना,  
आमार रुक्तल मने पड़ेना । सुतरां तखन  
उ-येर अवस्थाई एक । वरुं मणो २ अथ जन्य  
आपनार सुख निद्रार व्याथात हय ; अतएव आ-  
पनार सुख कोथाय ?

राजा साधु अपेक्षा निज अवस्था हीन वृत्ति  
परिया साधुके बारम्बार प्रणाम पूर्वक मने २  
तत्तावत् विचार करिते २ राजधानीते प्रत्यावृत्त  
हईलेन ।

त । लोकालय मेँ भी जो भोजन देनेवाले हैं,  
वे यहाँ भी नित्य विराजमान हैं । हय समूह उन  
की आद्यानुसार जव २ प्रयोजन पड़ता मुझे सुरस  
फल, पत्र, कन्द आदि मेरे लिये तैयार रख छोड़ते  
हैं ।

रा । आप बड़े महात्मा हैं, आप का परिचय  
मुझे कृपाकर दीजिये ।

त । निज गुण से आप अपना परिचय कर ली-  
जिये, तो मेरा परिचय मिलने में विलम्ब नहीं  
होगा ।

रा । आप बड़े त्यागी पुरुष हैं ।

त । मैं या आप ? मैं तो नित्य, वो अनमोल  
परम पदार्थ के लिये संसार मात्र छोड़ा, जो सब  
सुख देहो नहीं । ओ आपने किंचित स्वप्न तुल्य  
सुख के अर्थ उस नित्य अनमोल पदार्थ को किनारे  
कर दिया । मैं सर्वोत्तम के लिये हथा पदार्थ  
को त्याग किया और आपने तूच्छ संसार के अर्थ  
सर्व स्वरूप परम पदार्थ को त्याग किया है, अत-  
एव आपही सर्व त्यागी हैं ।

रा । (लज्जित होकर) महात्मन् ! मैं दिन की  
राज ऐश्वर्य भोग करता हूँ, रात्रि की सुकोमल  
शय्या पर सोए हुए रहता हूँ, सुखी मैं अधिक हूँ,  
या आप ?

त । मैं । आप दिन भर राज्य की चिन्ता में व्यस्त  
रहते हैं, शत्रुओं से सदैव शंका युक्त बने रहते हैं ।  
मैं भर दिन परमात्मा की मत्ता में मग्न रहकर अतुल  
आनन्द रस पान करता हूँ । रात्रि की सोजाने पर  
आप को कोमल बिछावन हमरण रहता न मेरा रुक्  
तल । उस समय दोनोंही की अवस्था समान, बरन  
आप भाँति भाँति के स्वप्न देखकर लीयित होते हैं ।  
अतएव आपका सुख कहाँ ?

राजा इतनेही में अपने को हीन मान कर साधु  
की बार २ प्रणाम किये वो मनेमन बुझते बिचारेते  
राजधानी में लौट आये ।

## धन्यावाद सह आशोपहार प्राप्ति स्वीकार ।

श्रियुक्त पाण्डित्य भवशङ्कर भट्टाचार्य महाराज प्रणीत (संस्कृत) कुमुदिनी कुमुद चम्पू । श्रीमद्वाव देशान्तर चन्द्र वसु पुण्डित (वाङ्माला) नीति कवितावली ; नीति पदा ; दान विवाह विचार, ७ नवश्लोकी महिम्नः स्तव । श्रियुक्त वावु प्यारी चांद मित्र प्रणीत (इंग्रजी) फ्रेण्ड्स अन स्मिरिचुयल जम् ; नेचर अवदि सोल ; स्मिरिचुयल फ्रे लिबम् ७ (वाङ्माला) आध्यात्मिका ।

भारतेन्दु श्रियुक्त वावु हरिश्चन्द्र कर्तृक प्रणीत, संगृहीत ७ प्रकाशित (हिन्दी) अक्षर नगरी ; नील देवी ; स्तोत्र पञ्च रत्न ; गो महिमा ; भारत जननी, वन्दनी का राज वंश ; कार्तिक आन, विजयिनी विजय वैजयन्ती । श्रीमन्महाराज कुमार वावु रामदीन मिश्र कर्तृक संगृहीत ७ प्रकाशित विहार दर्पण ७ ज्योतिष । श्रियुक्त वावु गोपाल चन्द्र कृत भाषा व्याकरण । श्रियुक्त वावु साहेब प्रसाद मिश्र कर्तृक प्रकाशित नियुक्त शिक्षा ; गुरु गणित शतक ७ गणित वृत्तिसी ।

श्रीमन्महाराजाधिराज कुमार अलाल खन्ना बाहादुर मल्ल कृत पायस प्रेम प्रवाह ; फाग अनुराग ; पिण्ड धारा ७ स्वप्ने की सम्पत्ति । श्रीमद्वावु राधा कृष्ण दास प्रणीत दुःखिनी वाला । श्रीपाण्डित्य राधा चरण गोस्वामी कृत देशोपकारी पुस्तक । जनैक आक्षेप पुण्डित (इंग्रजी) दि थेट्स अन इण्डिया । श्रियुक्त वावु रामजय वाग्वी प्रणीत (वाङ्माला) कविता कुसुम ।

## प्राप्त पुस्तक समालोचना ।

१। प्रकृत उद्धृत—श्रीमदाचार्य आनन्द आशी कर्तृक विरचित ७ श्रियुक्त वावु द्विज दास दत्त द्वारा प्रकाशित । ईहाते मर्म मत ७ साधन सम्बन्ध पक्ष प्रकाशण विषय लिपिबद्ध आछे । विषय सुनिश्चित मर्मप्रश्न भावे विरचित ये ताहाते आचार्योपरि “निज मत” द्विज शास्त्र, युक्ति वा वैज्ञानिक प्रमाणदि लिखित हय नाहे । अस्वकारेण सकल मत विरुद्ध विचार वा साधन सिद्ध युक्ति विरुद्धित बलिग्रा

## मधन्यवाद ग्रन्थोपहार प्राप्ति स्वीकार ।

श्रियुक्त पाण्डित्य भव शङ्कर भट्टाचार्य महाराज प्रणीत (संस्कृत) कुमुदिनी कुमुद चम्पू । श्रीमद्वाव ईशान चन्द्र वसुजी की वनाइ इह (वंगाक्षर मे) नीतिकवितावली ; नीति पद्य ; ब्राह्मविवाह विचार वो नव श्लोकी महिम्नः स्तव । श्रियुक्तवावु प्यारीचांद मित्र कृत (अंग्रेजी) फ्रेण्ड्स अन स्मिरिचुयल जम् ; नेचर अवदि सोल ; स्मिरिचुयल इ लिबम् वो (वंगाक्षरी) आध्यात्मिका ।

भारतेन्दु श्रियुक्त वावु हरिश्चन्द्रजी के प्रणीत, संगृहीत वा प्रकाशित (हिन्दी) अक्षर नगरी ; नील देवी ; स्तोत्रपञ्चरत्न ; गोमहिमा ; कार्तिक-आन ; भारतजननी ; वन्दनी का राज वंश ; विजयिनी विजय वैजयन्ती । श्रीमन्महाराजकुमार वावु रामदीनमिश्रजी का संग्रह वा प्रकाश किया हुआ विहारदर्पण वो जिवतत्व । श्रियुक्त वावु गोपाल चन्द्रकृत भाषा व्याकरण । श्रियुक्तवावु साहेब प्रसाद मिश्रजी द्वारा प्रकाशित नियुक्त शिक्षा ; गुरु गणित शतक वा गणित वृत्तिसी ।

श्रीमन्महाराजाधिराजकुमार अलाल खन्नावहादुर मल्लकृत पायस प्रेम प्रवाह ; फाग अनुराग ; पिण्डधारा वो स्वप्ने की सम्पत्ति । श्रीमद्वावु राधाकृष्ण दास प्रणीत दुःखिनीवाला । श्रीपाण्डित्य राधाचरण गोस्वामीकृत देशोपकारी पुस्तक जनैक आक्षेप का बनाया हुआ (अंग्रेजी) दिथेट्स अन इण्डिया श्रियुक्त वावु रामजय वाग्वी प्रणीत (वंगाक्षरी) कविता कुसुम ।

## प्राप्त पुस्तकों की समालोचना ।

१। प्रकृत तत्त्व । श्रीमदाचार्य आनन्द आशी जीने विवृत किया वो श्रीवावु द्विजदास दत्त ने छपवा कर प्रकाश किया है । इस पुस्तक में धर्म सम्बन्धी मत वा साधन के विषय पर ५५ प्रबन्ध लिखे गये हैं । आशुकीं सब इतने संक्षेप से विवृत किये गये जो उनमें आचार्य का “निज मत” छोड़के शास्त्र, युक्ति या वैज्ञानिक प्रमाणादि नहीं पाये जाते, हैं । ग्रन्थकार के समस्त मत, जो वि-

বোধ হয় না। তিনি নিবেদন পত্রে লিখিয়াছেন  
“যদি কেহ সরল বিশ্বাসের দ্বারা পরিচালিত  
হইয়া এতদ্বিকল্পে কোন অকাটা যুক্তি প্রদর্শন  
করিতে পারেন, তবে আমার নিকট স্বয়ং উপস্থিত  
হইয়া কিম্বা পত্র দ্বারা তদ্বিষয় জ্ঞাপন করিলে  
আমি তাহা খণ্ডন বিষয়ে বিশেষ চেষ্টা করিতে  
কৃত সংকল্প রহিয়ায়।” বলা সাহস! “অকাটা  
যুক্তি” “খণ্ডন” করিতেও “বিশেষ চেষ্টা”!!  
মধ্যে ২ কতকগুলি উপদেশ উদার ও প্রশস্ত  
হৃদয়ের অহণোপযোগী হইয়াছে।

২। প্রসাদ-প্রসঙ্গ—৩য় সংস্করণ। ইহার সংগ্রহ  
কর্তা যে বঙ্গীয় সাহিত্য সমাজের, চিত্তাশীল কবি  
সমাজের ও ভগবদনুরক্ত ভক্ত সমাজের পরম  
আদর ও ধন্যবাদের পাত্র তাহার আর সন্দেহ  
নাই। সজ্জনের উপকারার্থ তাহার অম ও যত্ন  
অগ্রীব পুংসনীয়। মহাত্মা রাম প্রসাদের ভক্ত  
রম পূর্ণ হৃদয় হইতে বধন যে অমূল্য উচ্চাঙ্গ  
উৎখিত হইত তাহাই তিনি গান করিতেন। তা-  
হার মনের বল ও অনুরাগের মৌগন্ধ্য প্রতি সঙ্গীতে  
নৃত্য ও জৌড়া করিতেছে। গান গুলি শুনিলে  
নিদ্রিত মন জাগ্রত হইয়া উঠে।

৩। সঙ্গীত সংগ্রহ। বাউলের গাঁথা—১ম  
খণ্ড। কলিকাতা ২১০।১১ নং বর্ণপ্রয়ালিস্ ট্রিট  
ভিক্টোরিয়া প্রেসে ত্রীবাবু ভূবন মোহন ঘোষ  
কর্তৃক প্রকাশিত। বঙ্গ দেশের মধ্যে বাউল সম্প্র-  
দায়ই আত্ম তত্ত্ব সাধনের পুকাশ্য প্রচারক, যদিও  
উক্ত সম্প্রদায় এক্ষণে বহুল দুর্ভেজনে পরিপূর্ণ  
হইয়া উঠিয়াছে, কিন্তু পূর্বে ২ আচার্য্য গণের গান  
গুলি এখনও উক্ত সম্প্রদায়কে উচ্চ শ্রেণীতে স্থান  
দিতেছে। সাধক ভিন্ন সাধারণ লোকে এই সঙ্গী-  
তের সকল মর্ম্ম সুচারু রূপে বুঝিতে পারে না।  
এজন্য পুকাশক যত্ন পূর্ব্বক স্থানে ২ তত্ত্বানুভবের  
টীকা করিয়া দিয়াছেন। এক একটী গান পাঠ  
করিলে বোধ হয় যেন কবির হৃদয়ের প্রবল প্রেমের  
উত্তাল তরঙ্গ রাশি নাচিতে ২ বহিয়া যাইতেছে-  
তিনি যেন এ রাজ্য ছাড়িয়া আর কোন গুপ্ত রাজ্যে  
প্রবেশ করিতেছেন-তাঁহার পবিত্র চক্ষের বাষ্পরাশি

যত বিচার যা সাধন মিছা বুঝি সে রহিত হৈ’  
এসা অনুভব নহৌ হোতা হৈ’। “নিবেদন পত্র”  
में उन ने लिखा है “यदि कोई व्यक्ति सरल वि-  
श्वास से परिचालित होकर इसके विषय में कोई  
अकाटा युक्ति देखला सके तो मेरे पास स्वयं उप-  
स्थित हो या पत्र लिख कर मुझे जानावे, मैं उस  
का खंडन करने के लिये विशेष यत्न करूंगा।  
वाह! वाह! धन्य साहस!” “अकाटा युक्ति” का  
भी “खण्डन” के लिये “विशेष चेष्टा”!! बीच २  
में कोई २ उपदेश उदार वा प्रशस्त हृदयों के अ-  
हणोपयोगी हुए।

२। प्रसाद-प्रसंग। ३रा संस्करण। इसके संग्रह  
कर्त्ता जो बंगीय साहित्य समाज के, चिन्ताशील  
कवि समाज के वी भगवदनुरक्त भक्त समाज के  
परम आदर वी धन्यवाद के पात्र हैं, इस में कुछ  
भी सन्देह नहीं। सज्जनों के उपकारार्थ उनने  
जो अम वा यत्न उठाया सो अतीव प्रशंसनीय है।  
महात्मा राम प्रसाद के हृदय से जो कि भक्ति रस  
ने सदैव परिपूर्ण था, जब जा अनमोल तरंग उठता  
गया सोही वे तानमें जमाते गये। उनके मन  
का तेज वो अनुराग को सुगन्ध प्रति संगीत से फुट  
निकल आते हैं। इन भजनों का सुनने पर सोया  
हुआ मन भी जाग उठता है।

३। संगीत संग्रह। बाउलों के भजन संग्रह-  
१ला खंड। कलकत्ता २१०।११ नं, कर्षवालोस  
ट्राट, विक्टोरिया प्रेस से श्री बाबू भुवन मोहन  
घोष जीने प्रकाश किया। बंगाली में बाउल सम्प्रदा-  
यही प्रकाश्य रीति से आत्म तत्त्व साधन का प्रचार  
किया करते हैं। यदिच उक्त सम्प्रदाय आज कल  
बहुल दुष्टजनों से पूर्ण दुष्मा किन्तु पूर्वं २ आचार्यों  
के भजन समूह से अब तक उक्त सम्प्रदाय की उंची  
श्रेणी में गिना जाता है। साधक सुजन छोड़ के  
इतर लोग इन सब भजनों का अभिप्राय भाँती  
भाँति समझ नहीं सके हैं। इस लिये प्रकाशक ने  
स्थान २ में उन सब की ठीका भी लिख दिया।  
एक २ भजन पढ़ने पर ऐसा अनुभव होता है,  
मानो कि कबीरजी के हृदय में प्रबल प्रेम के उछ-  
लते हुए तरंग राशि नाचते कुंदते बह जाते हैं-  
मानो वे इस राज्य को छोड़के और किसी गुप्त  
राज्य में प्रवेश करते हैं- उनके पवित्र आँखों की  
वाष्प राशि मानो कुहारा बन कर सारे संसार को  
ढाँप रहे हैं- वे सब की दृष्टि के बाहर निकल  
गये। प्रकाशक महाशय इस प्रस्ताव की कृपा प्रचार

येनरुज्ज्वलिका ॥ ६॥ समस्त संसार टाकिया फेलि-  
तेछे, तौ हाके आर केर देगिते पाईतेछेना ।  
प्रकाशक एहे पुस्तक पुचार करिया ताबुक साधक  
समाजेर अनेक उपकार करियाछेन । आशा  
करि, द्वितीय खण्ड एहदपेक्षा “ भावेर गानेर ”  
संख्या अधिक बाकिवे । आर आधुनिक कवि  
दिगेर गीत ईहार सहित एकत्र करिया पूर्वतन  
अक्षेय महाभागनेर रचित गानेर अमर्यादा क-  
रिवेन ना ।

४ । ललिता नाटिका । श्रीकृष्ण लीलार शृंगार ७  
होमा रसमय गीति रूपक काशी निवासी साहित्या-  
चार्य श्रीमत् पण्डित अधिकारी दत्त व्यास विरचित ।  
एथानि सरल व्रज भाषाते लिखित । व्रज भाषा  
महज्जेह मधुर, ताहाते कृष्ण लीला नाना रस पूर्ण,  
सुतरां नाटिका ये सुजन गण मनोहारिनी हईवे,  
ताहा आश्चर्य नहे । रामधारी यात्रा गुलालारा  
गदि नाटिका लिखित रीतिते इदृश नाटक नाटि-  
कार अभिनय करे, तबे ताहादेरु अर्थ लाभ  
इय ७ समाजेरु रूचि परिवर्तन ॥ ६॥ ते पावे ।

### विज्ञापन ।

#### सुनीति

आगामी १ला कार्तिक हईते “ सुनीति ” नामी  
( रयेल आठ पेज्जा एक कर्मा आकारे ) एक  
थानि पाठक पत्रिका प्रकाशित हईवे । बालक  
७ युवक रुन्देर रूपये आयासीति नौतिर प्रवर्तना  
७ आर्य भावेर उद्दीपना कराई ईहार मुख्या उद्देश्य ।  
ईहार अग्रिम वार्षिक मूल्य डाकव्यय सहित १५० ;  
किन्तु दुर्गा पूजा पूर्वक मूल्य श्रेयण पूर्वक आहक  
श्रेणीभूक्त हईने १५ मात्र लागिबे । टाका ना  
पाईले काहाके ७ आहक मध्ये गण्य कराई हईवेना ।  
आर्य, सन्तान गण ! आर्य भावे उद्दीपित ७ उ-  
साहित हईरा शीघ्र २ “ सुनीतिर ” आहक श्रेणी-  
भूक्त हईन—तारतेर नलिन मुख पुनरुज्ज्वल करुना

वर्धायित बल्लालय ।

मिसिर पोखरा, बाराणसी ।

• वरधन

शुभर चट्टोपाध्याय ।

करके बहुत भावुक साधकों का उपकार किये हैं ।  
आशा की जाती है, कि दूसरे खंड में गूढ़ भाव  
युक्त भजन और भी अधिक रहेगा और आधुनिक  
कवियों की बनाए हुए गीत समूह इस से मिलाकर  
पूर्वतन यहा के योग्य महात्माओं के भजनों की अ-  
मर्यादा न की जावेगी ।

४ । ललिता नाटिका । श्रीकृष्ण लीला का शृं-  
गारवो हास्य रस युक्त गीति रूपक । काशी-वासो  
साहित्याचार्य श्रीमत् पण्डित अधिकारी दत्त व्यास  
जी ने बनाया । नाटिका सरल व्रजभाषा में लिखी  
गयी है । व्रजभाषा तो स्वतः एव सुमधुर है, कृष्णजी  
महाराज की लीला भी फिर नाना रस से पूर्ण है,  
तो नाटिका जो सज्जनों की मनस्वीभावनी होगी,  
इस में कुछ भी आश्चर्य नहीं । रामधारीवाले यदि  
नाटिका में लिखी हुई रीति के अनुसार इस भांति  
नाटक वो नाटिका का अभिनय करें तो उससे उन  
सब का भी लाभ ही सत्ता वो समाज की भी रुचि  
बढ़न जा सकती है ।

### विज्ञापन ।

#### सुनीति ।

( रयेल ८ पेज्जा एक कर्मा को पाठक पत्रिका )

आगामी कार्तिक मास से नियम पूर्वक ( व्रज  
भाषा में ) प्रकाशित होगी । बालक वो युवकों का  
हृदय में आर्य रीति नौति की प्रवर्तना वो आर्य  
भाव की उद्दीपना करना इसका मुख्य उद्देश्य है ।  
डाक व्यय सहित इस का अग्रिमवार्षिक मूल्य १५० ;  
किन्तु दुर्गापूजा के पहले रुपये भेज के आहक ब-  
नने से १) एक रुपया मात्र लगेगा । बिना रुपया  
पाये किसीही को आहकों के मध्य में नहीं गिना  
जायगा । आर्य सन्तानगण ! आर्य भाव से उद्दीपित  
वो उत्साहित होकर शीघ्र शीघ्र “ सुनीति ” के  
आहक बनीये । भारत के अलिन दुख पुनरुज्ज्वल  
कीजिये ।

धर्माश्रित बल्लालय ।

मिसिर पोखरा, बाराणसी ।

वरधन ।

श्रीभूषण चट्टोपाध्याय ।

## विदेशीय एजेण्टगणों के नाम ।

अशुक्त बाबू केदारनाथ गंगोपाध्याय	भागलपुर
„ यादवचन्द्र बन्द्योपाध्याय	मतिहारी
„ जगद्वन्धु सेन	लाहौर
„ पूर्णचन्द्र बन्द्योपाध्याय	रामपुरहाट
„ विशारलाल राय	जामालपुर
„ रमेश चन्द्र सेन	ऐ
„ हेमचन्द्र दाम	ऐ
„ मंगलाम सेन	सुरगिटावाद
„ पूर्णचन्द्र मुखोपाध्याय	बांकीपुर
„ राजकुमार दाम	वहरमपुर
„ इन्द्रनारायण चक्रवर्ती	गया
„ अक्षय कुमार चट्टोपाध्याय	

७७ नं० कानून ड्रॉट, कलकत्ता

एजेण्ट महाशय गणके तत्त्वस्थानीय आहक महाशय गण मूलानि दान करिसे, अग्नि प्राप्ति हईव ।

## धर्म प्रचारकसंक्रान्त नियमावली ।

१ । यदि कौन धर्मात्मा आचार्यधर्म प्रतिष्ठा रक्षा ओ प्रचार निमित्त बाङ्गला अथवा हिन्दी भाषा वा उन्नत भाषातेई कौन विषय लिखि प्रेरण करेन, तब लिखित विषय सारवान विवेचना हईले, आनन्द ओ उन्माद-मदकारे धर्म प्रचारके प्रकाश करा हईवे ।

२ । धर्म प्रचारके मूल्य ओ उन्नत संक्रान्त पत्रानि आमार नामे पाठिहते हईवे । पत्र विचारि हईले, गृहीत हईवे ना ।

३ । मूल्य साधारणतः पोस्टल मनीस डरे, पाठिहते । डाक टिकिटे मूल्य पाठिहते हईले, अक्ष आना मूल्य टिकिट प्रेरण करिबेन ।

४ । धर्म प्रचारकेर डाकमासुल मह अग्रिम वार्षिक मूल्येन नियम तिन प्रकार ।

उत्तम कागजे मुद्रित वार्षिक	७/०	प्रतिवर्ष	१०/०
मध्यम	६	॥	१०/०
साधारण	६	॥	१०/०

धर्म प्रचारक कार्यालय । श्रीपूर्णानन्द सेन  
मिसिर पोखरा । वाराणसी । कार्याध्यक्ष ।

५ । एहि पत्र प्रति पूर्णिमाते भारतवर्षीय आचार्य धर्म प्रचारिणी सभा के उन्माद प्रकाशित हईया থাকे ।

## विदेशी एजेण्ट महाशयों के नाम ।

श्रीयुक्त बाबू केदारनाथ गंगोपाध्याय	भागलपुर ।
„ यादवचन्द्र बन्द्योपाध्याय	मतिहारी ।
„ जगद्वन्धु सेन	लाहौर ।
„ पूर्णचन्द्र बन्द्योपाध्याय	रामपुरहाट ।
„ विशारलाल राय	जामालपुर ।
„ रमेशचन्द्र सेन	„
„ हेमचन्द्र दाम	„
„ मंगलाल सेन	सुरगिटावाद ।
„ पूर्ण चन्द्र मुखोपाध्याय	बांकीपुर ।
„ राजकुमार दाम	वहरमपुर ।
„ अक्षय कुमार चट्टोपाध्याय	६६ नं० कलेज ड्रॉट कलकत्ता ।

एजेण्ट महाशयों के पास तत्तत् स्थान के ग्राहक महाशयगण मूल्यादि दें तो मै पाऊँगा ।

## धर्म प्रचारक सम्बन्धी नियमावली ।

१ । यदि कोई धर्मात्मा आर्थिक धर्म को प्रतिष्ठा रक्षा और प्रचार करने के निमित्त बङ्गला अथवा देवनागरी में वा इन दोनों भाषाओं में कोई प्रस्ताव लिखके भेजे तो लिखित विषय सारवान ज्ञात होने से आनन्द भी उन्माद सहित धर्मप्रचारक में प्रकाश किया जायगा ।

२ । धर्मप्रचारक पत्र का मूल और इस पत्रसम्बन्धी पत्रादि में पास भेजना होगा । पत्र वैरि होता नहीं लिया जायगा ।

३ । मूल्य सम्भवतः पोस्टल मनीस अर्द्ध करके भेजना । यदि डाक टिकिट में भेजे तो आध आनिया टिकिट करके भेज दें ।

४ । धर्मप्रचारक का डाक कर सहित अग्रिम वार्षिक मूल तीन प्रकार का है ।

उत्तम कागज पर छपा हुआ वार्षिक	११/०	प्रतिवर्ष	१०/०
मध्यम	१०/०	॥	१०/०
साधारण	१०/०	॥	१०/०

धर्म प्रचारक कार्यालय । श्रीपूर्णानन्द सेन  
मिसिर पोखरा, वाराणसी । कार्याध्यक्ष ।

५ । यह पत्र प्रातः पूर्णिमा में भारतवर्षीय आचार्य धर्म प्रचारिणी सभा के उन्माद से प्रकाशित होता है ।





“ এক এব মুহুর্তম্ নিধনেঃ পানুয়াতি যঃ ।  
শরীরেণ সমম্মাশং সমম্মন্যন্ত, গচ্ছতি ॥ ”

“ এক এব মুহুর্তম্ নিধনেঃ পানুয়াতি যঃ ।  
শরীরেণ সমং নাশং সম্মমল্যন্ত, গচ্ছতি ॥ ”

৬ষ্ঠ ভাগ ।

শকাব্দ ১৮০৫ ।

৪র্থ সংখ্যা ।

শ্রাবণ—পূর্ণিমা

৬ষ্ঠ ভাগ ।

শকাব্দ ১৮০৫ ।

৪র্থ সংখ্যা

শ্রাবণ—পূর্ণিমা ।

### আচার্যের উপদেশ ।

“ বেদ মনুষ্য আচার্যোহন্তে বাসিন মনুশাস্তি  
সত্যং বদ ধর্ম্যং চর স্বাধ্যায়ান্মা প্রমদঃ আচার্যায়  
প্রিয়ং ধনমাহৃত্য প্রজাতন্তুং মা ব্যবচ্ছেৎসীঃ  
সত্যং প্রমদিতবাম্ ধর্ম্যম্ প্রমদিতবাম্ কুশলম্  
প্রমদিতবাম্ ভূতৌন প্রমদিতবাম্ দেব পিতৃ কাব্য।  
ভ্যাং ন প্রমদিতবাম্ মাতৃ দেবো ভব পিতৃ দেবো  
ভব আচার্য দেবো ভব অতিথি দেবো ভব বানি  
অনবদ্যানি কন্মাণি তানি সেবিতব্যানি নো ইত-  
রাণি যান্যস্মাকং সুচারতানি তানিহ্রয়োপাস্যানি  
নোইতরানি একে চাগ্রং শ্রেয়াং সো ব্রাহ্মণাঃ তেবাং  
তুয়া আসনেন প্রশসিতবাম্ অন্ধয়া দেয়ম্ অশ্রদ্ধয়া  
অদেয়ম্ শ্রিয়া দেয়ম্ হিরা দেয়ম্ ভিরা দেয়ম্  
সংবিদা দেয়ম্ অথ যদি তে কন্ম বিচিকিৎসা বা  
বুদ্ধি বিচিকিৎসা বাস্যাং যে তত্র ব্রাহ্মণাঃ সন্ম  
র্শিনঃ যুক্তা অযুক্তাঃ অলুকা ধর্ম্য কামাঃ হুয়াঃ যথা  
তে তত্র বর্তেরন্ তথা তত্র বর্তের্থাঃ অথাভ্যাখ্যা-

### আচার্য কা উপদেশ ।

বেদ মনুষ্য আচার্যোহন্তে বাসিন মনুশাস্তি—সত্য-  
বদ ধর্ম্যং চর স্বাধ্যায়ান্মা প্রমদঃ আচার্যায় প্রিয়ং  
ধনমাহৃত্য প্রজাতন্তুং মা ব্যবচ্ছেৎসীঃ সত্যম্ প্রম-  
দিতবাম্ ধর্ম্যম্ প্রমদিতবাম্ কুশলম্ প্রমদিতবাম্  
ভূতৌন প্রমদিতবাম্ মাতৃ দেবো ভব পিতৃ দেবো ভব  
আচার্য দেবো ভব অতিথি দেবো ভব বানি  
অনবদ্যানি কন্মাণি তানি সেবিতব্যানি নো ইতরাণি  
যান্যস্মাকং সুচারতানি তানিহ্রয়োপাস্যানি নো  
ইতরাণি একে চাগ্রং শ্রেয়াং সো ব্রাহ্মণাঃ তেবাং  
তুয়া আসনেন প্রশসিতবাম্ অন্ধয়া দেয়ম্ অশ্রদ্ধয়া  
অদেয়ম্ শ্রিয়া দেয়ম্ হিরা দেয়ম্ ভিরা দেয়ম্  
সংবিদা দেয়ম্ অথ যদি তে কন্ম বিচিকিৎসা বা  
বুদ্ধি বিচিকিৎসা বাস্যাং যে তত্র ব্রাহ্মণাঃ সন্ম  
র্শিনঃ যুক্তা অযুক্তাঃ অলুকা ধর্ম্য কামাঃ হুয়াঃ যথা  
তে তত্র বর্তেরন্ তথা তত্র বর্তের্থাঃ অথাভ্যাখ্যা-

तेषु ये तत्र ब्राह्मणाः सम्प्रतिनः युक्ताः अयुक्ताः  
अलूकाः धर्मं कामाःस्य यथा ते तेषु वर्तन्तु तथा  
तेषु वर्तन्ताः एष आदेशः एष उपदेशः एष-  
वेदोपनिषत् एतदनुशासनम् एवमुपासितव्यम्  
एवमुक्तैस्तुपास्यम् ।”

“आचार्य शिष्याके वेद शिक्षा दिये। ऐहिक  
उपादेश दितेहैन। सत्य कथा कहिबे। श्रिय  
धर्मोन्नत करिबे। अध्यायन करिते आलस्य  
करिबेन। आचार्य के तौहार अर्पित धना-  
हरण करिया प्रदान करिबे। अनन्तर तौहार  
निकट आदेश ग्रहण करिया दार परिग्रह करिबे।  
दार परिग्रह करिले प्रजा बुद्धि हईबे : अतः एव  
इहार अन्याथा चरण करिया प्रजा बुद्धि विच्छेद  
करिबेन। देख, दार परिग्रह करिया येन सत्य  
धर्म हईते च्युत हईना। गार्हस्थ धर्मानुष्ठाने  
आलस्य करिबेन। आश्व रक्षा कार्ये आलस्य  
करिबेन। शुभ कार्योन्नत आलस्य क-  
रिबेन। अध्यायन ओ अध्यापन कार्ये आलस्य करि-  
बेन। देवकृत्य ओ पितृकृत्योन्नत आलस्य  
करिबेन। माताके देवता ज्ञान करिबे। पि-  
ताके देवता ज्ञान करिबे आचार्य के देवता  
ज्ञान करिबे अतिथिके देवता ज्ञान करिबे।  
फलतः लोके ये सकल कर्म अनिन्दित सेहै सकल  
कर्मोन्नत करिबे तद्विन्न निन्दित कर्मोन्नत  
कदाच अनुष्ठान करिबेन। शेष कथा ऐह आभरा  
अर्थात् तौमार प्रवर्तन अशेष वेदविद् आचार्य  
महोदय गण ये सकल कार्य करिया गियाहैन  
तौमरा सेहै सकल कार्योन्नत अनुष्ठानेहै यत्नशील  
हईबे ; आपन मनोमत यथेच्छ वावहार करिते  
प्रवृत्त हईबेन। ब्राह्मण उपस्थित हईले, पाद ओ  
आसनादि द्वारा तौहार प्रणामनोदन करिबे।  
ब्राह्मण गणके प्रजा पूर्वक दान करिबे। अश्वार  
सहित दिबेन। अश्वोन्नत सहित दान करिबे।  
लज्जार सहित दान करिबे। अर्थात् मनो उन्नत  
बुद्धि जन्य दान कार्योन्नत आश्वर कर कतिनाहै  
किन्तु मने मने लज्जित हईओ अथवा भूमि यतहै  
केन दातना तथापि उन्नत अन्न, ऐह विवेचना क-  
रिया लज्जित हईबे। लज्जित हईरा सेहै लज्जा  
टाकिवार जन्य शुभ भावे दान कार्य समाधा करि-  
बे। एवं तुरे तुरे दिबे। अर्थात् आश्वार सहित

वर्तन्ताः । एष आदेशः एष उपदेशः एषा वेदोपनिषत्  
एतदनुशासनम् एवमुपासितव्यम् एवमुक्तैस्तुपास्यम् ।”

वेद को शिक्षा देकर आचार्य ने शिष्य का इस  
भांति उपदेश दे रहा है। सत्य बोलना। निज धर्म  
अनुष्ठान करना। पढ़ने में आलस्य न करना।  
आचार्य की मनोभिमत द्रव्य संग्रह कर उन की  
दे देना। अनन्तर उन से अनुमति ले कर विवाह  
करना। दार परिग्रह करने पर प्रजा का संख्या  
बढ़ जायगी। अतएव इस को अन्यथा कर प्रजाहानि  
को न बोकना। सावधान रहना, जैसा कि विवाह  
करके सत्य धर्म से व्युत्पन्न नहीं। आश्व योग्य धर्मा-  
नुष्ठान में आलस्य न करना निज कुशल के अर्थ  
आलस्य न करना। शुभ कार्य करने में आलस्य न  
करना। पढ़ने वी पढ़ाने में आलस्य न करना।  
देवकृत्य वी पितृ कृत्य करने में आलस्य न करना।  
माता को देवता जानना। पिता को देवता जानना।  
आचार्य की देवता जानना। अभ्यागत को देवता  
जानना। फलतः लोक में जो सब कार्य अनिन्दित  
हैं वेही सब करना वी निन्दित कर्मों को कभी न  
करना अन्त को यह कारण रखना कि हम सब अ-  
र्थात् तुम्हारे पूर्वजन अश्व वेदवित् आचार्य म-  
होदयों ने जो २ कार्य कर गये, तुम्हें भी वही कर्म  
में करने में लगे रहना। स्नेहानुसार किसी  
काम में प्रवृत्त न होना। ब्राह्मण तुम्हारे स्थान  
पर आजाने से उन की पाय वी आसनादि देकर  
विश्राम करावना। ब्राह्मणों को अद्वापूर्वक दान  
देना। अश्व से न देना। साध ऐश्वर्य के दे देना।  
लज्जा मानकर दान करना। मन के उन्मादवा-  
चक दान देने में बाहर २ बड़े आश्चर्य फैलायी  
किन्तु मने मन लज्जित होना, अथवा तुम जितना  
ही कर्म न दो तथापि उस को अल्प समझ कर ल-  
ज्जित होना। लज्जित हो कर फिर उस लज्जा की  
टापने के लिये गुण गुण दान करते रहना भी भव  
भीत होकर दान करना। अर्थात् मैं बहुत कुछ  
देता हूँ ऐसा मानकर अभिमान न प्रगट करना।  
शुक्ति की भांति न हो अथवा अश्व वेदवित् आचार्य

দিতেছি জ্ঞান কারিয়া অহংকার ভাব প্রকাশ করি-  
বেনা। যদি হোমার শ্রোত, শ্রাউ বা আচার  
প্রাপ্ত কর্ম্মে সন্দেহ উপস্থিত হয় তাহা হইলে সেই  
প্রদেশে সেই সময়ে যে সকল ব্রাহ্মণ গণ নিচারণ্য,  
অভিজ্ঞ, স্বতন্ত্র, অক্রুরমতি, ও ধর্ম কামুক চইবেন  
তাহারা সেই শ্রোত শ্রাউ-বা আচার পরম্পরা  
প্রাপ্ত কর্ম্মে যেরূপ প্রবৃত্ত চইবেন তুমিও সেইরূপ  
প্রবৃত্ত চইবে। ইহাই আদেশ ইহাই উপদেশ। এই  
বাক্য উপনিষৎদের সার। ইহাই ঐশ্বরের বাক্য।  
অতএব এইরূপেই উপাসনাকর্তব্য। অবশ্য এই  
রূপেই উপাসনা কর্তব্য। অবশ্য এইরূপেই উপা-  
সনা কর্তব্য”।

আর্য্য শাস্ত্র বিজ্ঞান ।

( জ্যোতি বিজ্ঞান সমালোচনা )

( পৃথক একাধিক পত্র )

তত্বে কারণ। অদৃষ্ট—ধর্ম বা অধর্মকে অদৃষ্টবলে।  
 কার্যে পরিণত মনোবৃত্তি সকলের অতীতাবস্থা গত  
 সংস্কার ভাব মাত্রকে, যদ্বারা বারম্বার সেই প্রকার  
 বৃত্তি <sup>সদা</sup> কার্য হইতে থাকে, ধর্মাদ্বয় কহে। এত-  
 দ্বার <sup>তি</sup> প্রকারে মানবের স্বভাব গঠিত হয় তাহা  
 অতি আশ্চর্য ও পরমানন্দ বর্ধক, কিন্তু সংক্ষেপে  
 তাহার কিছুমাত্র বলিলে সবিশেষ উপকার নাই,  
 এজন্য এখানে সর্বথাই নিরস্ত থাকিলাম।

৪র্থ কারণ।—পিতার স্বাভাবিক প্রকৃতি। অতঃ-  
কই ইহার প্রধান প্রমাণ।

৫ ম কারণ। মাতার স্বাভাবিক প্রকৃতি ইহারও  
প্রত্যক্ষ প্রমাণই জাঙ্ঘল্য মান।

৬।৭ ম কারণ। প্রথম জন্ম কালীন পিতা মাতার প্রকৃতি।

৮ ব      ঐ । গর্ভাবস্থায় মাতার প্রকৃতি ।

১১ শ . ঐ । আহার ।

১২ শ্রী । আচীর ।

১৩শ শ্রী । সংসর্গ ।

এ সকলের প্রমাণও প্রত্যক্ষ দণ্ডারমান রহিয়াছে।

ଦେଖିବୁ ।

চাৰু চিন্তাবলী ।

২৩। ঢাকের বাস, বহুদর ছেদ করিয়া গমণ

पर यदि तुम्हारा कुछ शंकाउठे तो उस प्रदेश में उस समय जो सब ब्राह्मण को विचार पठु , अभिज्ञ, स्वतंत्र, अकुरमति वा धर्मकाभी देख पड़ें गा, उन सब के श्रौत स्मार्त की आचार अनुसार तुम्हें भी कार्य में प्रवृत्त रहना । यही आदेश है । यही उपदेश है । इसी वाक्य को उपनिषदों का सार जानना । इसकी की ईश्वर वाणी कर मानना । अतएव इसकी रीति से उपासना करना । अवश्य इस ही रीति से उपासना करना ।

आर्यशास्त्रविज्ञान ।

( ज्योतिर्विज्ञान की समालोचना )

( पूर्व प्रकाशित के भाग )

इरा कारण । अदृष्ट— धर्म या अधर्म की अदृष्ट कहा जाता है । कार्य में परिणत मनुष्यवृत्तियों को अतीत अवस्था की प्राप्त हुआ संस्कार भाव मात्र ही का नाम, जिस से बार बार उसी प्रकार वृत्ति ही का कार्य होते रहे, धर्मा अधर्म है । इस से मनुष्यों को प्रकृति जिस रीति से बनती है, वह परम आ-रथ्य वो अतीत आनन्द बर्देक है, किन्तु उस के सं-क्षेप मात्र कहने से यथा योग्य उपकार नहीं होगा । इसलिये यहां उस बात को उठाने में हम सर्वथा निरस्त रहे ।

४थं कारण । पिता की स्वाभाविक प्रकृति । इस का फल प्रत्यक्ष ही देख पड़ता है ।

धूम कारण । माता की स्वाभाविक प्रकृति । इस का भी प्रत्यक्ष प्रमाण तैयार है ।

६।७ कारण । प्रथम जन्म के समय पिता वी  
माता वी प्रकृति ।

८ वां कारण । गर्भकाल में माता की प्रकृति ।

११ र्हा कारण । आहार !

१२ हां कारण । आचार ।

१२ हां कारण । संसर्ग ।

इन सब के भी प्रत्यक्ष प्रमाण विद्यमान हो रहे हैं ।

शेष भाग ।

## चारु चिन्तावली ।

२१। ढाक बजने पर उस को ध्वनि बहुत दूर



তন, কিন্তু উহা এত কঠোর, প্রতিবটু ও তীব্র যে তাহা থামিলেই কর্ণ কুহর শীতল হয় । সাধক ! প্রশস্ত হৃদয়ের বাক্য দূর দেশ পযান্ত প্রতিষ্ঠানিত হয়, কিন্তু উহা সারবান না হইলে লোকের চিত্ত আকর্ষণ করিতে পারেন' । প্রশস্ত হৃদয়ে সার পূর্ণ কথা প্রয়োগ করিবে, নতবা তোমার উপদেশ অনা-স্থার শ্রোতে ভাসিয়া যাইবে ।

২৪ । তুমি যদি বিশ্বাস কর যে ঐশ্বরকে পূজা করিলে তিনি তোমার প্রতি সন্তুষ্ট হইবেন । তবে তাঁহাকে কিরূপ উপচারে পূজা করিবে স্থির করি-  
য়াছ । তাঁহার দ্রব্য লইয়া তাঁহাকে পূজা করিলে কি তিনি সুখী হইবেন ? নাহা যাহার পুত্র আছে তাহা তাহাকে দিলে সেব্যক্তি বঞ্চিত হইবে বিশেষ আ-নন্দিত হয় না । যাহার যাহা নাই তাহাই তাঁ-হাকে উপহার দেও, তিনি সন্তুষ্ট হইবেন । পত্র, পল্লব, ফল, বস্ত্র অলঙ্কার, ধূপ দীপ নৈবেদ্য, চন্দন, আদির তাঁহার যথেষ্ট আছে কেবল ইহাতে কি তিনি সন্তুষ্ট হইবেন ? সাধক । তিনি পূর্ণ, তাঁহার কিছুই অভাব নাই, সুতরাং তাঁহার “দীনতা ” নাই । তুমি “ দীনতার ” ডালি উপহার দিয়া সজল নয়নে করযোড়ে তাঁহার পূজা কর, তাঁহার আশীর্বাদ লাভ করিবে ।

২৫ । যদি তুমি মণি লাভ করিয়া ধনী হইতে চাও তবে কনীর ভয় তুচ্ছ বোধ কর । যদি ভগ-বানের কৃপা লাভে সুখী হইতে ইচ্ছা কর । তবে লোক নিন্দার ভয়, মান মর্যাদা হানির ভয় ও নিজ বৈষয়িক গৌরব ও প্রতিষ্ঠা লোপের ভয় করিওনা ।

২৬ । হস্তী যখন লোকালয়ের মধ্য দিয়া চলিয়া যায় কুকুর গণ তাহার পশ্চাতে দূরে থাকিয়া চিৎ-কার করিতে থাকে, হস্তী তাহার দিকে দৃষ্টিপাতও করেনা । উন্নতমনা মহাত্মা গণ যখন লোক সমাজেয় হিতার্থে ত্রুটি হইয়া কার্যক্ষেত্রে বিচরণ করিতে থাকেন, তখন নিন্দাবাদী ও অন্যান্য কত লোকে কত কথাই বলিতে থাকে, কিন্তু তাহাতে মহাত্মা গণের গতিরোধ হয় না, হস্তিপকের ইচ্ছাতে যেমন হস্তী চলিয়া যায় তদ্রূপ তাঁহারাও ভগবদ্রত সাধু ইচ্ছার বশবর্তী হইয়া অগ্রসর হইতে থাকেন ।  
স্বয়ং ভগবান। ইহাদের পরিচালক ও সহায় ।

ফৈলা হুয়া বা বিশাল হৈ । কিন্তু বহু হতনা কঠোর, কর্ণ-কঠু বা তীব্র হৈ, জী ভম কো ঠহর জানে হী পর কর্ণ-কুহর শীতল হাঁতে হৈ ।

হৈ সাধক ! প্রশস্ত হৃদয় কী বাতী বহুত দুর তক ধ্বনিত হাতী যা ফৈল জাতো হৈ, কিন্তু বে যদি সারবান নহী, তা লোগী কৈ মন কী নহী খীঁচ সন্তী হৈ । জব বোলনা, তা প্রশস্ত হৃদয় সে সার পূর্ণ কথা বোলতে রহনা, নহী তা তুমহারে উপদেশ সব অনায়া কী ধারা মে বঠিকান বহে জাংগে ।

২৪ । যদি তুমি যথী বিশ্বাস হৈ কি ভগবান কী পূজনে পর বে তুম পর সন্তুষ্ট হীংগে, তা কিম রীতি সে ভন কী পূজনা স্থির কিয়ে হী ? ভগ্নী কী সামগ্রী সে ভগ্নী কী পূজনে পর বে ক্যা তুষ্ট হীংগে ? জিস কা জী দ্রব্য বহুত হৈ, ভস কী ভস দ্রব্য দেনে সে বহু কমী বিষয় রূপ আনন্দিত নহী হোতে হৈ । জিন কী पास জী সামগ্রী নহী, ভন কী বহী সামগ্রী মেট চড়াখী, বে হর্ষিত হীংগে । পত্র, পল্লব, জল, বস্ত্র, ভূষণ, ধূপ, দীপ, নৈবেদ্য, চন্দন আদি ভন কী ঘর মে বহুত হৈ, কেবল হতনে হী সে ক্যা বে তুষ্ট হীংগে ? হৈ সাধক ! বে তা পূর্ণ হৈ, কিসী সামগ্রী না আ-  
भाव ভন কা নহী হৈ, অতএব বে “দীনতা” হৈ নিহিত হৈ । তুম “দীনতা ” কী ডালী সজাক কী মেট চড়াখী বা সজল নেত্র সে কর জোড় । সা কী পূজা করী, ভন সে আশীর্বাদ মিলেগী ।

২৫ । মণি সে যদি তুম ধনী बनने চাহী, তা ফণী কৈ ভয় কী তুচ্ছ মানী যদি ভগবত কী কৃপা সে সুখী হোনে মাংগে, তা লোক নিন্দা কা ভয়, মান মর্যাদা হানি কা ভয়, নিজ বৈষয়িক গৌরব বা প্র-  
তিষ্ঠা নষ্ট হোনে কা ভয় মত করী ।

২৬ । হাতী জব বাজার মে চলা জাতা হৈ, তব কুসে সব দূর ২ সে বহুত ভীকতে রহতে হৈ । কিন্তু হাতী ভস পর কুছ ভী আন নহী ডেতা হৈ ! ভন্নত হৃদয় মহাত্মা গণ জব সমাজ কৈ দ্বিতার্থ মতী হী কর কার্য নেত্র মে বিচরতে রহতে হৈ, ভস সময় নিন্দক গণ বা অন্যান্য কিতনে লোগ কিতনে হী কুছ কছা করতে, কিন্তু ভসে মহাত্মাখী কী গতি কমী নহী ককতী হৈ । হাতীমান কী হমারে সে জৈসা হাতী চলা জাতা হৈ, ভস রীতি ভগ্নী নে ভী ভগবত কী প্রেরণা কৈ ভস হোকার আগে বড় জাতে হৈ । ভগবন স্বয় ভগ্নী কৈ চালক বা সহায়ক বনে রহতে হৈ ।

## आर्य धर्म की उन्नति ।

## आर्य धर्म की उन्नति ।

देखा जाइतेहै पृथिवीर सर्वत्रेहै उन्नतिर चिह्न दिन २ रुक्मि पाइतेहै । आसिया, युरोप, आफ्रिका, आमेरिका सकलैहै उन्नतिर पश्चाते धारमान, एक देश अपर देशेर गति अतिक्रम करिते गतवान रहिराहै । धर्म, कर्म, रीति नीति समस्त विषयेहै अग्रसर हईते सकलैर सविशेष चेष्टा, आमादिगैर भारत भूमि यदिच पृथिवीर बहिर्भूत नहै, यदिच भारतवर्ष आसियार एकटी प्रकाश थण्ड, किन्तु ईहार उन्नतिर वेग सकल देश हईतेहै पश्चाते पड़िरा आहै । येदिके दृष्टि पात करून ये विमर अवलोकन करून देखिबेन भारतैर गति धीर ओ यत्न स्थिल । जड़ता, आलस्य, हर्षलता ओ दिवा रात्रि उन्ना वा विश्राम सुख-सेवा भारतके आह्वन करिया राखिराहै । समाज नातिर पुचुर पुचार, धर्म नीतिर संस्कार, सदस-द्विचार, व्यवसायैर उन्नति, सामाजिक सुख विधानैर चेष्टा यत किहू कार्यहै केन हडक, भारत ताहा सुख शय्याय सुईया निद्रितावश्याय साधन करिते चाहै । भारतैर निद्रा कुम्भकर्णैर निद्राके ओ पराभव करिराहै । निद्रितैर धन चोरे अपहरण करिले से जानिते ओ पारैन । निद्रित भारतैर धन विदेशी गण लईया गेल, भारतैर तन्ना भादिलन, विदेशी गण भारतैर धर्म नष्ट करिल, भारत जागिल ना, विदेशी गण भारतैर विद्यार प्रतिभा हानि करिल, भारत तथाच निद्रित, विदेशी गण भारतैर धन धनी हईया भारतके ताहादेर पादुकार छायाय आश्रय दिल, अचेतन भारत ताहा ओ आनन्द पूर्वक मानिया लहल, भारतके मूर्ख बलि, भारतके विधर्मी बलि । तिरस्कार करिल, दुर्बल बलिगा गुणा करिल, भारत एतावत अवनत गतके भीकार करिल । ये भारतैर

आजकल पृथिवी के सब देशों में उन्नति और आगे बढ़ने की चेष्टा दिखाई देती है । एशिया, योरोप, आफ्रिका, अमेरिका सब उन्नति के पीछे पड़े हैं, सब एक दूसरे को उन्नति की दौड़ में पीछे ढालना चाहते हैं । धर्म, कर्म, रीति, नीति सब में सब की आगे बढ़ने की चेष्टा हो रही है । यद्यपि हमारा भारतवर्ष पृथिवी से बाहर नहीं है, यद्यपि भारतवर्ष एशिया का एक बड़ासा खण्ड है, परन्तु इस उन्नति की दौड़ में यह सब से पीछे है, जिस तरफ देखिये, जिस विषय में देखिये भारतवर्ष ठंडी सांसें ले रहा है । जड़ता, आलस्य, कायरपन और दिनरात सोनेकी इच्छा, हमारे भारतवासियों को घेरे हुए है । समाज नीतिका प्रचार, धर्मनीति का संस्कार और सदसद्विचार, व्यवसाय की उन्नति, सामाजिक सुखविधान की चेष्टा, इत्यादि जितने काम हैं, सब की भारतवासी सोये हुए करते हैं । इनकी निद्रा कुम्भकर्ण की निद्रा से भी बड़ी है । सोये आदमी का धन चोर उठाये लिये जाता है, परन्तु उसको कुछ खबर नहीं होती, निद्रित भारतवासियों का धन विदेशी लिये जाते हैं, भारत पड़ा सोता है, विदेशियों ने भारतवासियों का धर्म लेलिया, भारतवासी सोये हैं, विदेशियों ने भारतवासियों की विद्या लेली, भारतवासी सोये हैं । विदेशियों ने भारतवासियों के धन से धनी होकर इनको अपना आश्रित बनाना चाहा, सोये भारतने खुशी से वही मान लिया, भारत की मूर्ख कहा, भारतको विधर्मी कहा, कायर कहा, सब भारतने इसको झुकीकार कर लिया । जिस भारत का धर्म पैसफिक समुद्र से भी गंभीर है, जिस भारतके धर्म में भक्ति, ज्ञान, योग, बैराग्य, प्रेम, ईश्वरोपासना इत्यादि किसी विषय के उपदेश का अभाव नहीं है,

धर्म प्रशान्त महासागर है। तेरे अंगुली, ये भारतेर धर्म भक्ति, ज्ञान, योग, वैराग्य, प्रेम, ईश्वरोपासना आदि कौन बिषयैर है अभाव नाई, भारतेर निद्रित सन्तान गण विदेशीयैर कथानुसारै ईदृश सन्तोषम निज धर्मके असार ओ यत्ति बिहीन बलिवा निरकारण करि।

एकणै भारतेर एही घोर निद्रा भङ्ग करिवा कि कौन उपाय नाई ? भारत कि चिरकाल निद्रित है थाकिवे ? एतः प्रश्नोत्तरे हर तो कह बलि वेन, ये यथन सकलै निद्रित तवे जागाईवे के ? तन्मध्ये ये २।४ जन जाग्रत है। तहारा ओ आवार आतृगणैर शोचनीय अवस्था प्रति गुणा प्रदर्शन करिते लागि। आतृ गणैर पुति सन्तान-भूति प्रकाश करा दूरे थाकुक ताहादिगके अपमान करिते आरम्भ करि, आर यदिवा जागाईते चेष्टा करि। तहाओ गालि दिया, तिरस्कार करि। ओ पदाघात करि। हा ! एही कोशले कि निद्रित भारत पुनरुत्थित हैवे ? भ्रमना करि। ऐ कि भारत निज धर्म समालोचना ओ तन्महत्त्व विचारार्थ प्रवृत्त हैवे ? भारतेर धर्म पुनरुद्दीपित करिवा जन्य एकणै साधु सद्गुरु प्रयोजन है। यिनि सुसज्जित वस्तु शक्ति सामर्थ्य विनिष्ट, निज आतृगणैर अवस्था तावद्वत्त ओ ताहादिगके संपत्ति अनिवार सद्गुण उद्भय रूप विदित आछेन, तनिई ईदृश गुरुतर कार्ये उपर हैवेन। धर्मार्थ प्रचारैर जन्य आमादिगैर आधुनिक धर्म प्रचारक गणके कौन नूतन निकेतन निर्माण करिते हैवेन। आमादिगैर पूर्वतन आर्या महापुरुष गणैर विरचित धर्म मन्दिर सुसज्जित ओ शोभित करिवा जन्य युरोप हैते बाड़, देवालगिरि आनाईते हैवेन, मन्दिर आलोकित करिवा जन्य ग्यास वा ताड़िदालोकेर प्रयोजन हैवेन। आर्य धर्म निकेतने ज्ञान नूतन उद्भासित थाकि। एरूप उद्भूत करि।

उस भारत के सोये सन्तानों ने विदेशियों कहने में अपने धर्म की मार होन और युक्ति बिहीन ठहराया।

अब क्या भारतवासियों की निद्रा से उठाने का कोई उपाय नहीं है ? क्या चिर काल के लिये भारतवासी सोयेही रहेंगे ? इस सवालके जवाब में यह कहा जा सकता है कि जब सभी सोये हैं तो उनकी कौन जगावेगा ? तिस पर भी जो दीवार जागे, उनको अपने भाइयों की अवस्था पर घृणा आने लगी, अपने भाइयों के साथ सहानुभूति प्रकाश करने के बदले उठाने उनका अपमान किया, और यदि उठाने की चेष्टा भी की तो गाली देके, तिरस्कार करके, और लात मारके । क्या इसी उपाय से सोये भारतवासी उठेंगे ? क्या केवल तिरस्कार से भारतवासी अपने धर्म की समालोचना और उसके महत्त्व विचार में प्रवृत्त होंगे ? यदि विचार के देखा जावे तो भारत के धर्म की फिर से उज्जीवित करने के लिये ऐसे सदाज्ञा का अभाव है, जो वस्तु शक्ति रखने के साथ, अपने भाइयों की अवस्था की अच्छी तरह जाने और उन की सत्पथ में लाने के यथार्थ उपाय की पहचाने । धर्म के विषय में हमारे आधुनिक धर्मप्रचारकों की कोई नई इमारत नहीं बनानी पड़ेगी । हमारे पूर्व पुरुषों के रचित धर्ममन्दिर को मजाने के लिये उन लोगों की योरीय से भाड़ दिवालगीर नहीं मंगानो पड़ेगी और, मन्दिर की आलोकित करने के लिये गैस वा बिजली की रोशनी की दरकार नहीं पड़ेगी । इस मन्दिर में ज्ञान का सूर्य ऐसा प्रकाशमान है कि उस के आगे सब नई रोशनी फीकी जंचेगी, इस के तेज, इसकी सफाई, इसकी सजावट के आगे विदेशीय सजावट निस्तेज हो जायगी ।

हम लोगों ने कितने ही वक्ताओं को अपने

है। याहै। ईहार तेज, निम्नलता, ईहार शोभा देखिले निदेशीय मज्जा नितान्त लज्जा पाईवे।

आमरा कउ वक्त्याके निज शास्त्र छाड़िया वि-  
देशीय शास्त्र हईते उपमा दिते सुनियाछि, निज  
श्रोतृ वर्गेर हृदयक्षम कराईवार जन्य आमरा  
कउ व्यक्ति के कठोर शब्द बानहार करिते सुनि-  
याछि, व्याख्यान दिवार समय कउ लोकके सुदीर्घ  
समास युक्त उक्कट ओ कठोर संस्कृत पद प्रयोग  
करिते सुनियाछि। ईहार परिणाम फल ईहई  
दृष्टे हय ये हय, श्रोता उपदेष्टार कथा ग्रहण  
करार परिवर्ते तत्सह बाधिवान्दे प्रवृत्त हय  
नतवा विरक्त हईया धीरे २ उठिया याय, वक्त्या  
अवशेषे निरुपाय हईया बसिया पड़ेन एवम्  
मरुभूमिते स्थिति पातेर न्याय तौहार समस्त परि-  
श्रम निरर्थक हईया याय।

ज्ञान वर्द्धिनी सभाय आमरा बाबू श्रीकृष्ण प्रसन्न  
सेन महाशयेर वक्तृता सुनियाछि। तौहार  
समस्त मतेर सहित आमादेर सम्पूर्ण ऐकमत्य ना  
हउक किन्तु तौहार वक्तृता सुनिलेई ये एक  
प्रकार आनन्द अनुभूत हय, धर्म भाव सकलैर  
मने उद्दीपित हय ओ आर्या धर्म संक्रान्त शास्त्रादि  
पाठे रुचि परिवर्द्धित हय, ताहाते किछु मात्र  
सन्देह नाई। याहारा तौहार वक्तृता सुनियाछेन  
ईह। तौहारा उन्नत रूप बुझिते पारियाछेन।  
ईहाकि सामान्य आश्रयोर विषय ये ये मांड़ोरारि  
जाति व्यवसाय त्रिन्न अना कथाई सुनिते जानेना,  
याहारा एक मात्र गुरुर पूजाई धर्मोर चरम  
सीमा स्मरण करिया राखियाछे, याहारा धर्म नूतान  
समय ओ धृति, द्युत, चिनिर दर विस्तृत हय ना  
ताहारा ओ देड़ घंटा काल सुक हईया धर्मार्थ वार्ता  
सुनितेछिल ओ कणजना ओ चफल हय नाई। एत-  
ददर्शने आमादेर विशेष आशा हईतेछे ये सेन  
महाशय यदि मध्ये २ निज वक्तृता द्वारा कलि-

है, कितने लोगों का अपने सुननेवालों के हृदय  
गम कराने के लिये कठोर शब्द व्यवहार करते सुना  
है, कितने लोगों का धर्मविषय में व्याख्यान देने  
के समय बड़े लंबे २ संस्कृत के पद के पद व्यव-  
हार करते सुना है, परन्तु इसका प्रतिफल यही  
होता है कि या तो सुननेवाले वक्त्या के सदुपदेश को  
ग्रहण करने के बदले लड़ पड़ते हैं और कहीं  
उत्थता के अपनी २ राह लेते हैं। वक्त्या विचारे,  
हीरा गुल मचाके शान्त हा जाते हैं, और चटान  
पर वर्षा की तरह विचारों का सब परिश्रम बर्बाद  
ही जाता है।

ज्ञानवर्द्धिनी सभा में हमलोगों ने बाबू श्रीकृष्णप्रसन्न-  
सेन को वक्तृता देते सुना, और चाहे हमलोग  
सब विषय में उनसे एक मत न हों, परन्तु उनकी  
वक्तृता सुननेहीसे जो एक प्रकार आनन्द अनुभव  
होता है धर्मभाव सबके चित्तमें उद्दीपित होता है  
और आर्यधर्मके शास्त्रों को पढ़ने की रुचि बढ़ती है  
इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है। जिन लोगों ने,  
उनको वक्तृता सुनी उनका यह अच्छीतरह अनुभव  
हो गया। यह क्या थोड़े आर्य की बात है कि  
जो मारवाड़ी जाति सिवाय वाणिज्य की बात के  
दूसरी बात नहीं सुनना जानते, जो गुरुजी महारा-  
ज की पूजनाही धर्म की चरम सीमा समझे हुए हैं  
जीलोग धर्म क्रिया के समय भी 'वांजे', 'कारे'  
'धोती', 'घाँ', 'चीनी' के दर की नहीं भूलते, बेलोग  
डिढ़ घण्टे तक सुपचाप धर्म की बातें सुनते रहे,  
और जरा न उत्थताये। हमलोगों को यह देख कर  
आश्चर्य होता है कि यदि सेन महाशय कधी २ अपनी  
मधुर वक्तृता कलकत्ते की हिन्दुस्तानी समाज के  
उपकार के लिये दिया करें तो बहुत से सदगुरुजन  
जिनका न होना कलकत्ते के लिये कलंक स्वरूप है,  
उसकी होने की भी संभावना हो।

काता इ हिन्दू श्रान्ति समाज के उपकारार्थ बद्ध करने, ताहा इहेले ये २ कार्यो अभाव वशतः कलि-काता कलङ्कित आछे, तभाव संस्मृति अनारामे संसाधित हहेते पारे ।

भा, मि, ।

### प्राप्त पत्र ।

सम्पादक महाशय !

आर्य कुल गोरव पाकुड़ निवासी श्री युक्त राजा तारेन्द्र पाण्डे महोदय आर्य धर्म प्रचारिणी सभार काय सौकर्याथे एकटी मुद्रायुक्त दान करियाहेन, आमादेर सनातन धर्म के सत्यार्थ प्रचार जन्य श्री युक्त पण्डित राज पौराणिक शास्त्री चतुर्भुज शर्मा ७ काशीधाम इहेते जयपुरे गयन करियाहेन एवं पण्डित प्रवर श्री युक्त शशधर तर्क चूड़ामणि महाशय ओ भा, आर्य धर्म प्रचारिणी सभार उपयोग्य सम्पादक श्री युक्त कुमार श्रीकृष्ण प्रसन्न सेन महोदय जलन्त उस्ताह सहित आमादेर प्रिय आर्य धर्म के निगूढ़ मर्म साधारण समक्षे बाध्या ओ प्रचार करितेहेन हेहा अपेक्षा प्रोत्तिकर समाचार आर कि इहेते पारे ? विशेषतः पुण्यधाम वाराणसीते मुख्य सभा उठिया आमाते आर्य धर्म पुनरुद्घोषन सम्बन्धे समक्षे अपार सकार इह्याछे । एहे समय, आर्य धर्म प्रचारिणी सभार सत्य गणेर समक्षे एकटी प्रस्ताव उपहित करा आवश्यक विवेचना करिलाय ।

अनेक दिन हेल, श्री युक्त पण्डित शशधर तर्क-चूड़ामणि महाशय यज्ञोपवीत धारणेर आवश्यकता सम्बन्धे एकटी अतुल्य वक्तृता प्रत्यन करियाहिलेन एवम् एहे वक्तृता के सारांश धर्म प्रचारके प्रकाशित इह्याहिल । हेहा द्वारा ये हिन्दू मण्डलीर कत उपकार इह्याछे ताहा लिखिया व्यक्त करा यारना । मध्य २ श्री युक्त कुमार श्रीकृष्ण प्रसन्न सेन महाशय जलन्त उस्ताह सहित हिन्दू

### (प्राप्त पत्र)

सम्पादक महाशय ! आर्य - कुल - गोरव पाकुड़ के राजा श्री पृथ्वी चन्द्र पाण्डे महोदय ने आर्य धर्म प्रचारिणी सभा के कार्यालय एक मुद्रा यंत्र दान किया, हमारे सनातन धर्म का सत्यार्थ प्रचार करने के लिये श्रियुक्त पण्डित राज पौराणिक शास्त्री चतुर्भुज शर्माजी ने काशी जैसे जयपुर में पधारे श्री पण्डित प्रवर श्रियुक्त शशधर तर्क चूड़ामणि महाशय वी भा : आर्य धर्म प्रचारिणी सभा के सुयोग्य कार्य सम्पादक श्रीमान कुमार श्रीकृष्ण प्रसन्न सेन महोदय जलन्त उस्ताह सहित हम सब के प्रिय आर्य धर्म के निगूढ़ मर्म सबके साझने व्याख्या वी प्रचार कर रहे हैं, इससे आनन्द की समाचार फिर क्या ही सत्ता है । विशेषतः पुण्य भूमि श्रीकाशीजी में मुख्य सभा आ जाने से आर्य धर्म की पुनरुद्घोषणार्थ अधिक आशा का संचार हुआ । इस ही अवसर में आर्य धर्म प्रचारिणी सभा के सभ्य सुजनों के निकट एक प्रस्ताव छेड़ना मुझे आवश्यक वृत्ति पड़ता है ।

बहुत दिन हुए श्रियुक्त पण्डित शशधर तर्क चूड़ामणि महाशय ने हिजी के लिये “यज्ञोपवीत धारण” इस आशय पर एक अत्युत्तम वक्तृता करी थी और उस का सारांश धर्म प्रचारक में प्रकाशित हुआ था । इससे जो हिन्दुओं का कितना उपकार हुआ सो हम लिख प्रगट नहीं कर सके हैं । बीच २ में श्रियुक्त कुमार श्रीकृष्ण प्रसन्न सेन महाशय ने जलन्त उस्ताह सहित हिन्दू धर्म के गूढ़ अभिप्राय सब व्याख्या की करते हैं, उससे सब साधारण का बहुत उपकार होते रहते हैं । किन्तु खेद यह है कि वह सब वक्तृता संवाद पत्रों में प्रकाश न होने से आशानुरूप फल नहीं मिलता है । यह सब व्याख्यान प्रकाश होना अतीव आवश्यक है । “धर्म प्रचारक” पत्र द्वारा शास्त्र के अभिप्राय जहाँ तक सब साधारण के गोचर हो सके सो होय, किन्तु मेरे विचार में इससे भी कुछ उपकार



धर्म गुरु धर्म सकल बाधा करिया थाकेन एवं ताहा द्वारा आपामर साधारणर यथेष्ट उपकार हहर थाके । किन्तु, दुःखेवर विषय एहे ये, से सकल वस्तुता केन पत्रिकाय प्रकाश ना हउयाते आना मत कल दर्शितेहेना । एहे सकल व्याख्यान प्रकाश हउया अतीव आवश्यक । धर्म प्रचारकेर द्वारा शास्त्रेर मध्य सकल यतदूर साधारणर गोचर हहेते পারে, हउके । किन्तु, आमर विवेचनाय, आर एकेटी उपाय अवलम्बन करा आवश्यक । ताहा एहेः—आरु तर्पणेर आवश्यकता, एत नियमेर उपकारिता, विग्रहादि उपलब्ध करिया भगवानेर आराधनार उद्देश्य, पुष्प, तूलमोपत्र प्रभृतिर द्वारा देवता आराधनार कल, त्रिकुशेर लीला समूहेर तात्पर्य एवंप्रकार विषय सकल शास्त्रीय अमाण सह विवृत करिया क्रुद्ध २ पुस्तकाकारे, प्रात मासे किष्ठा पक्षे, प्रकाश करत सामान्य मूल्य, आपामर साधारणके विक्रय करिले ताल हय । विद्यालयेर अल्पवयस्क छात्र गणके वितरण करा समग्ररूपे श्रेय । एतदर्थे अर्थेर प्रयोजन । आर्य धर्म प्रचारिणी सभार सभ्य गण अनुग्रह पूर्वक मासे २ किछू २ करिया प्रदान करिले ए पुस्तकटी कार्ये परिणत हहेते পারে । एवं आमरा आना करि धार्मिक सभ्य गण एहे समूह कर्ये किछू २ व्यास करिते कातर हहेवेन ना ।

आर्य आतागण ! एकवार देखुन देखि, धर्म प्रचारार्थे, धर्मीयानगण कत मत उपाय उद्भावन करितेहे । अथगे, विद्यालय स्थापन करिया बालक गणके शिक्षा प्रदान करितेहे, परे, ताहारा ज्ञान लाभ करिले, ताहादेर हस्त, दाउदेर गीत, मथि लिखित समसाचार अर्पण करिया ताहार धर्म हृदयज्जम करिया दितेहे । आर एक दिके, प्रचारक गण वस्तुता द्वारा धर्मीय धर्मेर उद्वर्ध साधारणर हृदयज्जम करिया दितेहे एवं धर्मीय धर्म प्रतिपेक्षक कत पुस्तिका वितरण करितेहे । एहे सकल पुस्तिका कत प्रकार भाषाय प्रकाशित हईयाहे । एहे सकल व्यापारे कि

अवलम्बन करना आवश्यक बांध होता है । वह यह है कि आह तपस्यादि की आवश्यकता क्या व्रत नियम संजमों से लाभ क्या, मूर्ति पूजन का क्या अभिप्राय है, तुलसी, फूल आदि से देवाराधन का फल क्या, श्रीलक्ष्मी लीलायेंका क्या तात्पर्य है इत्यादि आशयों पर व्याख्यान शास्त्रीय प्रमाण सहितलिख के छोटी-२ पुस्तक छपा छपा कर प्रति मास या प्रति पञ्चान्तमें प्रकाश कीजाय वो अल्प मूल में बिके, विद्यालयके छोटे-२ बालकों को बिन मूल बंटना सर्वथा उचित है । एतदर्थ द्रव्य का विशेष प्रयोजन है । आर्य धर्म प्रचारिणी सभा के सभ्य गण छपा कर प्रति मास कुछ-२ दान करने पर यह प्रस्ताव कार्य में परिणत होसक्ता है । हम आशा करते हैं कि धर्मात्मा सभ्य गण इस महत कार्य के लिये थोड़ा बहुत व्यय करने में संकोच न मानेंगे ।

आर्य आता गण ! एक बार देखिये तो, धर्म प्रचारार्थ इसाह लोग कितना कुछ उपाय निकालते हैं । पहले विद्यालय स्थापन करके बालकों को शिक्षा देते हैं, फिर वे सब थोड़ा बहुत सिखने पर उन सब को दाउद के गीत, मथि का सुसमाचार आदि पढ़ने दे देते हैं । दूसरे ओर देखिये पादरी लोग वस्तुता कर करके इसाही धर्म की श्रुति सब को समझाते हैं ओ इसाही धर्म की पुष्टि के लिये कितने पुस्तक बटते हैं । फिर यह सब का भिन्न २ भाषा में उल्था भी होता जाता है । अंगरेज लोग इस व्यय को अनायास उठालते हैं । हम सब क्या ऐसेही सारविहीन हो गये कि हमारे मनातन धर्म की पुनर्जीवित करने के अर्थ सामान्य अर्थ भी व्यय नहीं कर सकेंगे ? हा ! सब जाति को तो निज २ धर्म रक्षाार्थ उद्यत देखते हैं, केवल हमही सब निद्रित । हम मुसलमानों पर यवन समझ के घृणा मानते हैं किन्तु वे लोग दैनिक नेमाज भी नहीं पढ़ते । आफिस में काम करते

नामासेई एही बार-बार बहन करि तेहेन । आ-  
मरा कि एत असार हईया पड़ियाहि ये, आमा-  
देर सनातन धर्मके पुनर्जीवित करिबार जना मा-  
मान्य मात्रावय्य होका करि ते अग्रसर हईयन ?  
हाय ! सकल जातिकेई श्रौय २ धर्म रक्षार्थ जना  
उत्तम पूर्ण देखि ते पाई केवल आमराई निद्रित ।  
आमरा मुसलमान दिगके बहन बालिय दूगा करिया  
थाकि । किन्तु, ताहारा ताहादेर प्राताहिक नमाज  
परित्याग करेन । कार्यालये कार्यकरि तेहे नमा-  
जेर समय हईन, अमनि हातेर काज ताग करत  
नमाज करि ते गहन करिल । सामान्य मजूर  
मजुरी करि तेहे, नमाजेर समय हईन, अमनि  
पथेर मध्ये नमाज करि ते आरम्भ करिल । इतराज  
दिगके आमरा स्नेह बलिया थाकि, किन्तु देखुन ता-  
हारा नियम मत ईश्वरेर आराधना करिया थाके ।  
अन्ततः प्रतिरविवारे उपासनालये उपस्थित हईया  
उपासनाय योग दिया थाके । केवल आमादेरई  
मध्य हईते नियम सकल लुप्त हईतेहे । आ-  
मराई केवल सक्रा बन्दना करि ते समय पाईन ।  
विद्यालये किन्वा कार्यालये गहन करि ते हईवे,  
सुतरां सक्रा, पूज करिबार समय नाई । कोन  
उपासनालय नाई येथाने गिया धर्म क्रुधा  
शान्ति हईते पावे । स्थाने २ देवालय आछे बटे,  
किन्तु, सेथाने गिया तृप्ति लाभ करिबार उपाय  
कोथार ? प्रोहित संस्कृत भाषाय मन्त्र उच्चारण  
करि तेहेन, आपामर साधारण ताहार धर्म हृदय-  
क्रम करी दूरे थाक, तनि निजे ताहा बुझि ते  
पावेन कि ना सन्देह । आमादेर मध्ये धर्म  
भाव शिथिल हওয়ার ईश्वर एकटी कारण । आ-  
मरा अनेक मन्त्र उच्चारण करि, अनेक मन्त्र अवण  
करि, किन्तु ताहार अर्थ बुझि ते पारिना सुतरां  
ताहा पाठ किन्वा अवण करिया तृप्ति लाभ हर ना ।  
बहन अनेकेई संस्कृत भाषा अवगत नहैन, तथन  
पूजा प्रवृत्ति ते सकल मन्त्र उच्चारित हर ताहार  
अर्थ साधारणर बुझिबार सुविधा करी उचित ।

कोन २ स्थाने, आर्य धर्म सभा संस्थापन हওয়ারते,  
धर्मतत्व लाजेर कथित उपाय हईयाके । किन्तु,

रहे किन्तु नेमाज के समय आजाने पर झट सब  
काम छोड़ नेमाज कर लेते हैं । मजूर लोग म-  
जुरी करते नेमाज का समय होतेही झट मजुर के  
किनारेही में नेमाज पढ़ना आरम्भ कर देते हैं ।  
अंगरेजी को हम स्नेह मानते हैं किन्तु देखिये  
उन्हीं ने भी नियमानुसार भगवत की आराधना  
की करती हैं, कुछ भी न करे तो प्रति रविवार  
गिर्जे में उपस्थित हो भगवत उपासना करते हैं ।  
केवल हमारेही बीच में से यह नियम दिनों दिन  
उठता जाता है । हमही सब को केवल संध्यावंदन  
करने का समय नहीं मिलता है । स्कूल या आ-  
फिस जाना है, सुतरां संध्या, पूजा करने का अव-  
सर कहाँ ? वाह ! वाह ! ऐसे मन्दिर भी सर्वत्र नहीं  
मिलता, जहाँ जाने पर धर्म-सुधा की निवृत्ति  
होय । मानते हैं कि स्थान २ में देवालय है, किन्तु  
वहाँ जानेसे भी मन ठस कहाँ मानता ? पूजारी जी  
संस्कृत भाषा में मंत्र उच्चारण करते हैं, साधारण  
लोगों की समझना तो किनारे रह्यो उन्ने स्वयं सम-  
झता है या नहीं उसमें भी सन्देह है । हमारे बीच  
धर्म भाव शिथिल होने का यह भी एक कारण है ।  
हम अनेक मंत्र उच्चारण करते हैं, अनेक मंत्र अवण  
करते हैं किन्तु उन सब के अभिप्राय नहीं समझने  
पर उस रीति पाठ को अवण से कुछ फल नहीं मि-  
लता है । जब देख पड़ता है कि बहुतेरे लोग सं-  
स्कृत नहीं समझते हैं, तो पूजा प्रवृत्ति में जो  
सब मंत्र पढ़े जाते हैं वह सब साधारण के समझने  
के लिये कुछ उपाय करना चाहिये ।

किन्ती २ स्थान में आर्य धर्म सभा स्थापन  
होने पर धर्म तत्व सिखने का कुछ २ उपाय हुआ,  
किन्तु इन्हीं की संख्या इतनाही अल्प है जो उससे  
बहुत उपकार की आशा नहीं की जा सकती है ।  
ऐसी २ सभा सर्वत्र स्थापित होना चाहिये । हम  
आशा करते हैं कि जोसे इस मासिका में सब बातें



ইহার সংখ্যা এত অল্প যে, তাহার দ্বারা সমাধিক উপকারের আশা করা যাইতে পারে না। এবস্ত্র-কার সভা পুতি গ্রামে সংস্থাপিত হওয়া উচিত। আশা করি, আমাদের নিউত আযা ভাণ্ডাগণ আলসা শযা হইতে উত্থান করত তৎপক্ষে মনোযোগী হইবেন। সভা সমূহের কার্য গুলি ভা. আ. ধ. প্র. সভার অনুমোদনানুসারে একতানে চলিলে ভাল হয়।

বশব্দ

পূনা। ৯ই আশ্বিন } ভারত বর্ষীয় আ. ধ. প্র. সভার  
১২৯০ } জনৈক সভাসদ।

### রাজা ও সাধু।

কোন সময়ে জনৈক রাজা বন মধ্যে যুগয়া করিতে গিয়াছিলেন। তিনি একটা যুগের পশ্চাৎ ২ ধাবমান হইয়া ক্লান্ত হইয়া পড়িলেন এবং একটা বৃক্ষের স্থগীতল ছায়ায় বিশ্রাম করিতে লাগিলেন। ইতস্ততঃ দৃষ্টি করিতে ২ দেখিলেন, যে একজন তপস্বী প্রেক্ষা পূর্ণ লোচনে ভগবৎগুণানুবাদ গান করিতেছে। রাজা তাঁহার নিকটে গিয়া প্রণাম পূর্বক নিবেদন করিলেন, হে মহাত্মন! আপনি একাকী এই বিজন বনে কিরূপে বাস করেন? তপস্বী বলিলেন, রাজন্! আমি কণ জন্যও একাকী থাকিনা, সর্ব সামর্থ্যশীল পরমেশ্বর নিরন্তর আমার সঙ্গে রহিয়াছেন।

রা। সিংহ, ব্যাঘ্র, ভল্লুক, সর্পাদি সাক্ষাৎ কাল স্বরূপ ভীষণ জন্তু গণ এখানে সর্বদা বিচরণ করিতেছে, ইহাদিগকে দেখিয়া কি আপনার ভয় হয়না?

ত। আমি আপনার ন্যায় ধনুর্বাণ লইয়া কখনও উগাদিগকে বধ করিবার চেষ্টা করিনা, আমার মনেও কখন তাহাদের প্রতি বৈরভাব উদয় হয়না, তবে উহারা কেন আমার শত্রুতাচরণ করিরে? বরং সর্বত্র আত্ম দৃষ্টি বশতঃ আমি তাহাদিগকে মিত্রভাবে প্রেম করিয়া থাকি, তাহাতে উহারা আমার রক্ষাব্যবস্থা করিয়া থাকে।

য্য কৌ বিহাবন পর সে উঠ কর হন সব কামাং মে দত্ত চিত হাঁ। সমা সমূহ যদি ভা : আ : ধ : প্র : সমা কে অনুমোদনানুসারে প্রতি কার্য কাল মে একটৌ তান জমা লে তো পরমৌত্তম হৌ।

পূনা। ) ভা : আ : ধ : প্র : সমা কে  
আবণ- কৃণা ৫। ) জনৈক বসম্বদ সভাসদ।

### রাজা বী সাধু।

এক সময় किसी राजाने बौच बन में शीकार खेलने को गया था। एक हरिणा के पिछे दौड़ते २ आन्त होकर वृक्ष की शीतल छाया में विश्राम करने लगे। आस पास ताकते २ देख पड़ा कि एक तपस्वी प्रेम से आंसु गिराते हुए परमात्मा की गुणानुवाद गारहे है। राजा ने समीप जाके प्रणाम कर निवेदन किया, हेमहात्मन् ! आप इस विजन बन में अकेले कैसे विराजते हैं ? तपस्वी उत्तर किये, हे राजन् ! अकेला मुझे कभी नहीं रहने पड़ता, सर्व सामर्थ्यवान परमेश्वर सदैव संग ही संग विद्यमान है।

रा। यहाँ शेर, सिंह, भाल, सर्पआदि काल सदृश भयंकर जीव सब सदाही विचरते हैं, इन्हीं से आप का डर नहीं लगता ?

त। मैं कभी आप समान शर धनुष लेकर उन सब को मारने की चेष्टा नहीं करता हूँ, न मैं मन से भी कभी उन्हीं से विरोध मानता हूँ, तो वे सब क्यों मेरे बैर बनेंगे ? बरन मैं सर्वत्र एक आत्मदृष्टि हेतु मित्रभाव से उन सब की प्रेम करता हूँ, इस से वे सब मेरे रक्षक बने रहते हैं।

रा। यहाँ तो कोई शीर मनुष्य नहीं है, तो

आपना भोजनान्तर किरूप व्यवस्था है ?

त । लोकालये यिनि भोजन दान করেন, যিনি এখানেও নিত্য বিরাজ মান। তাঁহার ভা-  
জ্য নুমায়ে বৃক্ষ সমূহ আমার আবশ্যক মত সুরস  
ফল, পত্র, কন্দ আদি প্রস্তুত রাখে।

रा । आपनि एकजन महात्मा । आपनार विशेष  
परिचय जानिते ईच्छा करि ।

त । गुरुन निकट दीक्षित होइया निज परिचय  
जानिया लउन, तत्परे आमार परिचय जानिते  
आर विलम्ब होइवेना ।

रा । आपनिहै प्रकृत तागी पुरुष ।

त । आगि ना आपनि ? आगि निता अमूला  
परम पदार्थ लाउनेर जन्य, तूछ संसार मात्र त्याग  
करिगछि, याहा वास्तविक किछुहै नय बलिसेउ हय ।  
आर आपनि किछु अल्पबल सुथेहै तूठु होइया  
अमूला पदार्थेर दिके छाडिगओ देखेन ना । आगि  
सर्वोत्तमेर जन्य वृथा पदार्थ त्याग करिगछि  
मात्र किन्तु आपनि तूछ संसारेर निमित्त सब  
अरूप परम पदार्थके त्याग करिगछेन, अतएव  
आपनिहै सर्वत्यागी !!!

रा । (लज्जित होइया) महात्मान् : आगि दिवाते  
राजेश्वर्या भोग करि, रात्रिते सुकोमल शय्या  
सुइया निद्रास्थ उपभोग करि, अतएव अधिक  
सुखाके, आपनि कि आगि ?

त । आगि । केनना आपनि समस्त दिन राज-  
कीर्य चिन्तार व्याकुल , ओ सदाहै शत्रु भये भीत ;  
आगि समस्त दिन परमात्म-सत्ताय निमग्न থাকিয়া  
অতুল আনন্দ রস পান করি। রাত্রিতে নিদ্রিত  
হইলে আপনারও কোমল শয্যা আরণ থাকেনা,  
আমার বৃক্ষতল মনে পড়েনা। সূতরাং তখন  
উভয়ের অবস্থাই এক। বরং মধ্যে ২ অগ্র জন্য  
আপনার সুখ নিদ্রার ব্যাঘাত হয় ; অতএব আ-  
পনার সুখ কোথায় ?

রাজা সাধু অপেক্ষা নিজ অবস্থা হীন বুঝিতে  
পারিয়া সাধুকে দারদ্র্যর প্রণাম পূর্বক মনে ২  
তত্তাবৎ বিচার করিতে ২ রাজধানীতে প্রত্যাবর্ত  
হইলেন ।

त । लोकालय मे भी जा भोजन देनेवाले हैं,  
वे यहां भी नित्य विराजमान हैं । वृक्ष समूह उन  
की आशानुसार जब २ प्रयोजन पड़ता मुझे सुरस  
फल, पत्र, कन्द आदि मेरे लिये तैयार रख छोड़ने  
हैं ।

रा । आप बड़े महात्मा हैं, आप का परिचय  
मुझे कपाकर दीजिये ।

त । निज गुरु से आप अपना परिचय कर ली-  
जिये, तो मेरा परिचय मिलने में विलम्ब नहीं  
होगा ।

रा । आप बड़े त्यागी पुरुष हैं ।

त । मैं या आप ? मैं तो नित्य, वो अनमोल  
परम पदार्थ के लिये संसार मात्र छोड़ा, जो सब  
सुख कुछ हैही नहीं, ओ आपने किंचित् सप्र तुल्य  
सुख के अर्थ उस नित्य अनमोल पदार्थ को किनारे  
कर दिया । मैं सर्वोत्तम के लिये वृथा पदार्थ  
को त्याग किया और आपने तूछ संसार के अर्थ  
सर्व स्वल्प परम पदार्थ को त्याग किया है, अत-  
एव आपही सर्व त्यागी हैं ।

रा । (लज्जित होकर) महात्मन ! मैं दिन को  
राज ऐश्वर्य भोग करता हूँ, रात्रि को सुकोमल  
शय्या पर सोए हुए रहता हूँ, सुखी मैं अधिक हूँ  
या आप ?

त । मैं । आप दिन भर राज्य की चिन्ता में व्यस्त  
रहते हैं, शत्रुओं से सदैव शंका युक्त बने रहते हैं ।  
मैं भर दिन परमात्मा की मत्वा मैं मग्न रहकर अतुल  
आनन्द रस पान करता हूँ । रात्रि को सोजाने पर  
आप की कोमल बिछावन स्मरण रहता न मेरा हृत्त  
तल । उस समय दोनोंही की अवस्था समान, बरन  
आप भांति भांति के सप्र देखकर कोशित होते हैं ।  
अतएव आपका सुख कहाँ ?

राजा इतनेही मैं अपने को हीन मान कर साधु  
की दार २ प्रणाम किये वो मनेमन बुझते विचारते  
राज धानो में लौट आये ।

## धर्मावाद सह आहोपहार आरुतुीकार ।

अुयुक्त पणुडत भव गंकर भट्टाचार्य महाशय कृत ( संस्कृत ) कुमुदिनी कुमुद चम्पू । अुमहावु ईशान चन्द्र वसुजी की वनाइ हुइ ( वंगाचर मे ) नौतिकवितावली ; नौति पद्य ; ब्राह्मविवाह विचार वो नव लोको महिन्ः स्तव । अुयुक्त बावु पारो टाद मित्र अणीत ( ईंगराजी ) कै थर्टस् अन स्परिचुयानिजम् ; नेचर अवदि सोल ; स्परिचुयान कै लिदस् ओ ( वाङ्माली ) आध्यात्मिका ।

भारतेन्दु अुयुक्त बावु हरिश्चन्द्र कर्तृक अणीत, संगृहीत ओ प्रकाशित ( हिन्दी ) अक्कर नगरी ; नौल देवी ; स्तोत्र पङ्क रत्न ; गो महिमा ; भारत जननी, वन्दो का राज वङ्ग ; कार्तिक आन, विज-हिनी विजय वैजयन्ती । अुमन्महाराज कुमार बावु रामदीन सिंह कर्तृक संगृहीत ओ प्रकाशित विहार दर्पण ओ फेजतत्त्व । अुयुक्त बावु गोपाल चन्द्र कृत भावा व्याकरण । अुयुक्त बावु साहेब असाद सिंह कर्तृक प्रकाशित नियुक्तशिक्षा ; ण्कगणित शतक ओ गणित वत्तिसी ।

अुमन्महाराजाधिराज कुमार अुलाल खड्गवहा-दुर मङ्गकृत पायस प्रेम प्रवाह ; फाग अनुराग ; पिय धारा ओ सपने की सम्पति । अुमहावु राधा कृष्ण दास अणीत दुःखिनीवाला । अुपणुडत राधा-चरण गोस्वामी कृत देशोपकारी पुस्तक । जनैक ब्राह्मण पुणीत ( ईंगराजी ) दि थर्टस् अन ईण्डिया । अुयुक्त बावु रामजय बागुली पुणीत ( वाङ्माली ) कविता कुसुम ।

## आरुतु पुस्तक समालोचना ।

१ । अकृत तत्त्व—अुमदाचार्य आनन्द सामी कर्तृक विवृत ओ अुयुक्त बावु बिज दास दत्त द्वारा प्रका-शित । ईहाते धर्म मत ओ साधन मन्त्रके पङ्क गणशङ्की विषय लिपिवद्ध आछे । विषय ठलि एत मङ्किणु भावे विवृत ये ताहाते आचार्योअर “ निज मत ” हिन्ना शास्त्र, युक्ति वा वैज्ञानिक अमा-गदि लिखित हर नहि । अण्कालेअर सकल मत विषय लिखित आछे । अण्कालेअर सकल मत विषय लिखित आछे । अण्कालेअर सकल मत विषय लिखित आछे ।

## सधन्यवाद मन्त्रोपहार प्राप्ति लोकार ।

अुयुक्त पणुडत भव गंकर भट्टाचार्य महाशय कृत ( संस्कृत ) कुमुदिनी कुमुद चम्पू । अुमहावु ईशान चन्द्र वसुजी की वनाइ हुइ ( वंगाचर मे ) नौतिकवितावली ; नौति पद्य ; ब्राह्मविवाह विचार वो नव लोको महिन्ः स्तव । अुयुक्तबावु प्यारीचाद मित्र कृत ( अंग्रेजी ) द्वे थर्टस् अनस्परिचुयानि-जम् ; नेचर अवदि सोल ; स्परिचुयान द्वे लिदस्’ वो ( वंगाचरी ) आध्यात्मिका ।

भारतेन्दु अुयुक्त बावु हरिश्चन्द्रजी के प्रणीत, संगृहीत वो प्रकाशित ( हिन्दी ) अंधेर नगरी ; नौल देवी ; स्तोत्रपंचरत्न ; गोमहिमा ; कार्तिक-आन ; भारतजननी ; वन्दो का राज वङ्ग ; वि-जयिनी विजय वैजयन्ती । अुमन्महाराजकुमार बावु रामदीनसिंहजी का मंग्रह वो प्रकाश किया हुआ विहारदर्पण वो छेवतत्त्व । अुयुक्त बावु गोपाल चन्द्रकृत भाषा व्याकरण । अुयुक्तबावु साहब प्रसाद सिंहजी द्वारा प्रकाशित नियुक्त शिक्षा ; गुरु गणित शतक वो गणित वत्तिसी ।

अुमन्महाराजाधिराजकुमार अुलाल खड्गवहा-दुर मङ्गकृत पायस प्रेम प्रवाह ; फाग अनुराग ; पिय धारा वो सपने की सम्पति । अुमहावु राधा-कृष्ण दास प्रणीत दुःखिनीवाला । अुपणुडित राधा-चरण गोस्वामीकृत देशोपकारी पुस्तक जनैक ब्रा-ह्मण का बनाया हुआ ( अंग्रेजी ) दिथर्ट्सचन् हु-ण्डिया अुयुक्त बावु राजजय बागुली प्रणीत ( वंगा-चरी ) कविता कुसुम ।

## प्राप्त पुस्तकीं को समालोचना ।

१ । प्रकृत तत्त्व । अुमदाचार्य आनन्द सामी जीने विवृत किया वो अुवावु बिजदास दत्त ने छपवा कर प्रकाश किया है । इस पुस्तक में धर्म सम्बन्धी मत वो साधन वो विषय पर ५५ प्रबन्ध लिखे गये हैं । आशयों सब इतने संक्षेप से विवृत किये गये जो उनमें आचार्य का “ निज मत ” छोड़के शास्त्र, युक्ति या वैज्ञानिक प्रामाण्यादि नहीं आये लगे हैं । अण्कालेअर सकल मत जो वि-

बोध होना । তিনি নিবেদন পত্রে লিখিয়াছেন  
“ যদি কেহ সরল বিশ্বাসের দ্বারা পরিচালিত  
হইয়া এতদ্বিরুদ্ধে কোন অকাটা যুক্তি প্রদর্শন  
করিতে পারেন, তবে আমার নিকট স্বয়ং উপস্থিত  
হইয়া কিম্বা পত্র দ্বারা তদ্বিষয় জ্ঞাপন করিলে  
আমি তাহা শ্রবণ বিষয়ে বিশেষ চেষ্টা করিতে  
কৃত সংকল্প রহিলাম ।” ধন্য সাহস ! “ অকাটা  
যুক্তি ” “ শ্রবণ ” করিতে ও “ বিশেষ চেষ্টা ” !!  
মধ্যে ২ কতকগুলি উপদেশ উদার ও প্রস্তুত  
হইবার প্রয়োজনীয় হইয়াছে ।

২। প্রসাদ-প্রসঙ্গ—এই সংস্করণ । ইহার সংগ্রহ  
কর্তা যে বঙ্গীয় সাহিত্য সমাজের, চিত্তাশীল কবি  
সমাজের ও ভগবদনুরক্ত ভক্ত সমাজের পরম  
আদর ও ধন্যবাদের পাত্র তাহার আর সন্দেহ  
নাই । সজ্জনের উপকারার্থ তাহার শ্রম ও যত্ন  
অতীব প্রশংসনীয় । মহাত্মা রাম প্রসাদের ভক্তি  
বন পূর্ণ হৃদয় হইতে যখন যে অমূল্য উচ্চাঙ্গ  
উৎপত্তি হইত তাহাই তিনি গান করিতেন । তাঁ-  
হার মনের বল ও অনুরাগের সৌগন্ধ প্রতি সঙ্গীতে  
নত ও জ্বলিত করিতেছে । গান শুনি শুনিলে  
নিদ্রিত মন জাগ্রত হইয়া উঠে ।

৩। সঙ্গীত সংগ্রহ । বাউলের গীতা—১ম  
খণ্ড । কলিকাতা ২০১১ নং কর্ণওয়ালিস্ ট্রিট  
ভিক্টোরিয়া প্রেসে জীবাবু ভূবন মোহন ঘোষ  
কর্তৃক প্রকাশিত । বঙ্গ দেশের মধ্যে বাউল সম্প্র-  
দায়ই আত্ম তত্ত্ব সাধনের পুঙ্খানুপুঙ্খ প্রচারক, যদিও  
উক্ত সম্প্রদায় একে বহু ভুলে ভুলে পরিপূর্ণ  
হইয়া উঠিয়াছে, কিন্তু পূর্ব ২ আচার্য্য গণের গান  
শুনি এখনও উক্ত সম্প্রদায়কে উক্ত শ্রেণীতে স্থান  
দিতেছে । সাধক ভিন্ন সাধারণ লোকে এই সঙ্গী-  
তের সকল মন্তব্য যুক্তাক্রমে বুঝিতে পারে না ।  
এজন্য প্রকাশক যত্ন পূর্বক স্থানে ২ তত্ত্বাবতের  
টীকা করিয়া দিয়াছেন । এক একটি গান পাঠ  
করিলে বোধ হয় যেন কবির হৃদয়ে প্রবল প্রেমের  
উত্তাল তরঙ্গ রাশি নাড়িতে ২ বহিয়া যাইতেছে-  
তিনি যেন এ রাজ্য ছাড়িয়া আর কোনও রাজ্য

শুধু বিচার বা সাধন সিদ্ধ বুদ্ধি সে রপিত হই-  
এসা অনুভব নহে হোতা হই । “ নিবেদন পত্র ”  
মি' উন নে লিখা হই “ যদি কোই ব্যক্তি সরল বি-  
শ্বাস সে পরিচালিত হইকর ইসকে বিরুদ্ধ মি' কোই  
অকাটা যুক্তি দেখলা সকে তা' মি'রে পাশ স্বয়ং উপ-  
স্থিত হই যা পত্র লিখ কর সুখি জানাবি, মি' উস  
কা খুঁড়ন করনে কে লিয়ে বিশেষ যত্ন করিগা ।  
বাহ ! বাহ ! ধন্য সাহস ! “ অকাটা যুক্তি ” কা  
মি “ খুঁড়ন ” কে লিয়ে “ বিশেষ চেষ্টা ” !! খাঁচ ২  
মি' কোই ২ উপদেশ উদার বা প্রস্তুত হৃদয়' কে প্র-  
য়োগ্যযোগী হুয় ।

২। প্রসাদ-প্রসঙ্গ । ইহা সংস্করণ । ইমকো সংগ্রহ  
কর্তা জো বঙ্গীয় সাহিত্য সমাজ কে, চিন্তাশীল  
কবি সমাজ কে বী ভগবদনুরক্ত ভক্ত সমাজ কে  
পরম আদর বা ধন্যবাদ কে পাত্র হৈ, ইম মে' কুছ  
মি' সন্দেহ নহে । সজ্জন' কে উপকারার্থ' উননে  
জো শ্রম বা যত্ন উঠায়া সা' অতীব প্রশংসনীয় হৈ ।  
মহাত্মা রাম প্রসাদ কে হৃদয় সে জো কি ভক্তি রস  
মে' সदैব পরিপূর্ণ থা, জব জা অনমীল তরংগ উঠতা  
গয়া সা'হো বৈ তানমে' জমাতে গয়ে । উনকে মন  
কা তেজ বী অনুরাগ কী সুগম্য প্রতি সংগীত সে ফুট  
নিকল আতে হৈ । ইন ভজনী' কা সুনে পর সাঁথা  
হুয়া মন মি' জাগ উঠতা হৈ ।

২। সংগীত সংগ্রহ । বাউল' কে ভজন সংগ্রহ-  
১লা খুঁড় । কলকাতা ২১০। ১১ নং, কর্ণওয়ালিস  
ট্রিট, বিক্টোরিয়া প্রেস সে শ্রী বাবু ভুবন মোহন  
ঘোষ জোনে প্রকাশ কিয়া । বঙ্গালে মি' বাউল সম্প্রদা-  
য়' প্রকাশ্য রীতি সে আত্ম তত্ত্ব সাধন কা প্রচার  
কিয়া করতে হৈ । যদিচ উক্ত সম্প্রদায় আজ কল  
বহুল দুঃজন' সে পূর্ণ হুয়া কিন্তু পূর্ব ২ আচার্য্য' কে  
ভজন সমূহ সে অব তক উক্ত সম্প্রদায় কী উঁচী  
অঙ্গী' মে' গিনা জাতা হৈ । সাধক সুজন ছোড় কে  
ইतर লোগ ইন সব ভজনী' কা অভিপ্রায় ভালী  
ভাতি সমস্ত নহী' সকে হৈ । ইস লিয়ে প্রকাশক নে  
স্থান ২ মি' উন সব কী ঠীকা মি' লিখ দিয়া ।  
এক ২ ভজন পড়নে পর এসা অনুভব হোতা হৈ,  
মানা কি কবীশ্বর কে হৃদয় মে' প্রবল প্রেম কে উছ-  
লতে হুয় তরংগ রাশি নাচতে কুঁদতে বহ জাতে হৈ-  
মানো বৈ ইস রাস্য কী ছোড়কে খীর কিসী গুপ্ত  
রাস্য মে' প্রবেশ করতে হৈ - উনকে পবিত্র পাখি কী  
বাণ্য রাশি মানা কুছারা বন কর সারে সংসার কী  
তাঁপ' রহে হৈ - বৈ সব কী হুচি কে বাহর নিকল

येनकुञ्जवटिका इत्या समस्त संसार ताकियर फेलि-  
तेछे, तां ताके आर केर देगिते पाईतेछेना ।  
प्रकाशक एही पुस्तक पुठार करिया तावक साधक  
समाज्जेर अनेक उपकार करियाछेन । आशा  
कार, द्वितीय खण्ड एतदपेक्षा “ भावेर गानेर ”  
संख्या अधिक থাকिबे । आर आधुनिक कवि  
निगेर गीत ईहार सहित एकत्र करिया पुस्तक  
अद्वेय महाभागनेर रचित गानेर अमर्यादा क-  
रिबेन ना ।

४ । ललिता नाटिका । श्रीकृष्ण लीलार शृंगार ७  
हामा रसमय गीति रूपक काशी निवासो साहित्य-  
चाया श्रीमत् पाण्डु ७ अपिका दत्त बास निरचित ।  
एथानि सरल ब्रज भाषाते लिखित । ब्रज भाषा  
मझेई मधुर, ताहाते कृष्ण लीला नाना रस पूर्ण,  
सुतरां नाटिका ये सूजन गण मनोहारिनी छैबे,  
ताहा आश्चर्य नहे । रामदारी यात्रा ७ गालारा  
नाटिका लिखित रीतिते ईदृश नाटक नाटि-  
कार अभिनय करे, तबे ताहादेर ७ अर्थ लाभ  
हय ७ समाज्जेर ७ रूचि परिवर्तन छैते पावे ।

## विज्ञापन ।

### सूनीति ।

आगामी १ला कार्तिक हईते “ सूनीति ” नाम्ना  
( ररेल आठ पेछा एक कर्मा आकारे ) एक  
थानि पात्रक पत्रिका प्रकाशित छैबे । बालक  
७ युवक ब्रह्मदेर हृदये आरोगीति नीतिर प्रवर्तन  
७ आर्य भावेर उद्दीपना करहि ईहार मुख्य उद्देश्य ।  
ईहार अग्रिम वार्षिक मूल्य डाकवाय सहित १५० ;  
किञ्च ७ दुर्गा पूजार पूर्व मूल्य श्रेण पुर्वक आहक  
अंगीभूत छैले १५ मात्र लागिबे । टाका ना  
पाईले काहाके ७ आहक मध्ये गण करि छैबेन ।  
आर्य, सन्तान गण ! आर्य भावे उद्दीपित ७ उ-  
साहित छैया शीख २ “ सूनीतिर ” आहक अंगी-  
भूत छै—भारतेर मलिन मुख पुनरुज्ज्वल करुना

धर्मायुत यशालय ।

वर्षाव

विभिन्न विधाया, विभिन्न विधाया, विभिन्न विधाया ।

करके बहुत भावुक साधकों का उपकार किये हैं ।  
आगा की जाती है, कि दुमरे खंड में गृह भाव  
युक्त भजन और भी अधिक रहिगा और आधुनिक  
कवियों की वनाइ हइ गीत समूह इस में मिलाकर  
पूर्वतन अहा क योग्य महात्माओं के भजनों की अ-  
मर्यादा न की जावैगी ।

४ । ललिता नाटिका । श्रीकृष्ण लीला का शृ-  
ंगार वी हास्य रस युक्त गीति रूपक । काशी-वासो  
साहित्याचार्य श्रीमत् पाण्डित अम्बिकादत्त व्यास  
जी ने बनाया । नाटिका सरल ब्रजभाषा में लिखी  
गयी है । ब्रजभाषा तो स्वतः एव सुमधुर है । कृष्णजी  
नन्दाराज की लीला भी फिर नाना रस में पूर्ण है,  
तो नाटिका जो सज्जनों की मनलोभावनी होगी,  
इस में कुछ भी आश्चर्य नहीं । रामदासीबाली यद  
नाटिका में लिखी हइ रीति के अनुसार इस भांति  
नाटक वी नाटिका का अभिनय करे तो उसमें जन  
मन का भी लाभ हो सक्ता वी समाज को भी रुचि  
बढ़न जा सक्ती है ।

## विज्ञापन ।

### सूनीति ।

( ररेल ८ पेजों एक फर्मा को पालिक पत्रिका )

आगामी कार्तिक मास में नियम पूर्वक ( ब्रज  
भाषा में ) प्रकाशित होगी । बालक वी युवकों के  
हृदय में आर्य रीति नीति की प्रवर्तना वी आर्य  
भाव की उद्दीपना करना इसका मुख्य उद्देश्य है ।  
डाक व्यय सहित इस का अग्रिमवार्षिक मूल्य १५० ;  
किन्तु दुर्गापूजा के पहले रुपये भेज की याहक ब-  
नने से १) एक रुपया मात्र लगेगा । बिना रुपया  
पाये किसी की याहकों के मध्य में नहीं गिना  
जायगा । आर्य सन्तानगण ! आर्य भाव से उद्दीपित  
वो उत्साहित होकर शीघ्र शीघ्र “ सूनीति ” के  
याहक बनिये । भारत के मलिन मुख पुनरुज्ज्वल  
कीजिये ।

धर्मायुत यशालय ।

वर्षावद ।

विभिन्न विधाया, विभिन्न विधाया, विभिन्न विधाया ।



विदेशीय एजेंटगणों के नाम ।

अशुक्ल बाबू केदारनाथ गंगोपाध्याय	भागलपुर
„ यादवचन्द्र बन्द्योपाध्याय	मतिहारी
„ जगद्वन्धु सेन	लाहौर
„ पूर्णचन्द्र बन्द्योपाध्याय	रामपुरहाट
„ विशालीलाल राय	जामालपुर
„ रमेश चन्द्र सेन	ऐ
„ हेमचन्द्र दास	ऐ
„ मलिन सेन	सुरगिदाबाद
„ पूर्णचन्द्र मुखोपाध्याय	बांकीपुर
„ राज कृष्ण दास	वहरमपुर
„ ईश्वरनारायण चक्रवर्ती	गया
„ अक्षय कुमार चट्टोपाध्याय	

७७ नं० कागज डीट, कलकत्ता

एजेंट महादय गणके तत्त्वस्थानीय आहक महाशय गण गूल्यादि दान करिसे, आमि आपु हईब ।

धर्म प्रचारकसंक्रासु नियमावली ।

१ । यदि कोन धर्मात्मा आर्याधर्म्ये प्रतिष्ठा रक्का ओ प्रचार निमित्त बाङ्गला अथवा हिन्दी भाषाय वा उठय भाषातेई कोन विषय लिखिआ प्रेरण करेन, तवे लिखित विषयटी सारवान विवेचना हईले, आनन्द ओ उन्माह-महकारे धर्म प्रचारके प्रकाश करा हईबे ।

२ । धर्म प्रचारकेर मन्य ओ एतन् संक्रासु पत्रादि आमार नामे पाठाईते हईबे । पत्र विचारिं हईले, गृहीत हईबे ना ।

३ । मूल्य सामारणतः पोष्टल मनि अर्द्धरे, पाठाईबेन । डाक टिकिटे मूल्य पाठाईते हईले, अर्द्ध आना मूल्ये टिकिट प्रेरण करिबेन ।

४ । धर्म प्रचारकेर डाकमासुग मह अग्रिम वार्षिक मूल्ये नियम तिन प्रकार ।

उत्तम कागजे मुद्रित वार्षिक	७/०	प्रतिथ	७/०
मध्यम	६/०	„	१०
साधारण	५/०	„	७/०

धर्म प्रचारक कार्यालय । } श्रीपूर्णानन्द सेन  
मिसिर पोखरा । वाराणसी } कार्याध्यक्ष ।

एहै पत्र प्रति पूर्णिमाते भारतवर्षीय आर्यधर्म प्रचारिणी सभा उन्माह प्रकाशित हईया थाके ।

विदेशी एजेंट महाशयों के नाम ।

अशुक्ल बाबू केदारनाथ गंगोपाध्याय	भागलपुर ।
„ यादवचन्द्र बन्द्योपाध्याय,	मतिहारी !
„ जगद्वन्धु सेन,	लाहौर ।
„ पूर्णचन्द्र बन्द्योपाध्याय,	रामपुरहाट ।
„ विशालीलाल राय,	जामालपुर ।
„ रमेशचन्द्र सेन,	„
„ हेमचन्द्रदास	„
„ मलिन सेन	सुरगिदाबाद ।
„ पूर्ण चन्द्र मुखोपाध्याय	बांकीपुर ।
„ राजकृष्ण दास	वहरमपुर ।
„ अक्षय कुमार चट्टोपाध्याय, ६६ नं०,	कलेज डीट कलकत्ता ।

एजेंट महादयों के पास तत्तत् स्थान के आहक महाशयगण मूल्यादि दें तो मैं पाऊँगा ।

धर्म प्रचारक सम्बन्धी नियमावली ।

१ । यदि कोई धर्मात्मा आर्यधर्म को प्रतिष्ठा रक्षा और प्रचार करने के निमित्त बङ्गला अथवा देवनागरी में वा इन दोनों भाषाओं में कोई प्रस्ताव लिखके भेजे तो लिखित विषय सारवान ज्ञात होने से आनन्द ओ उन्माह सहित धर्मप्रचारक में प्रकाश किया जायगा ।

२ । धर्मप्रचारक पत्र का मूल और इस पत्रसम्बन्धी पत्रादि मेरे पास भेजना होगा । पत्र वैरिं होतो नहीं लिया जायगा ।

३ । मूल्य सम्भवतः पोष्टल मनि अर्द्धर करके भेजना । यदि डाक टिकिट में भेजे तो आध आनिया टिकिट करके भेज दें ।

४ । धर्मप्रचारक का डाक कर सहित अग्रिम वार्षिक मूल तीन प्रकार का है ।

उत्तम कागज पर मुद्रित वार्षिक	११/०	प्रतिसंख्या	१०
मध्यम	१०/०	„	१०
साधारण	९/०	„	१०

धर्म प्रचारक कार्यालय । } श्रीपूर्णानन्द सेन  
मिसिरपोखरा, वाराणसी } कार्याध्यक्ष ।

यह पत्र प्रति पूर्णिमा में भारतवर्षीय आर्यधर्म प्रचारिणी सभा के उन्माह से प्रकाशित होता है ।





“ एक एव स्रुद्धर्मो निधनेऽप्यनुयाति यः ।  
शरीरेण समन्नाशं सत्त्वमनात्, गच्छति ॥ ”

“ एक एव सुहृद्धर्मो निधनेऽप्यनुयाति यः ।  
शरीरेण समं नाशं सर्वमन्यत्, गच्छति ॥ ”

७ छ भाग । } शकाब्द १८०५ ।  
५ म संख्या } भाद्र—पूर्णिमा

६ भाग । } शकाब्द १८०५ ।  
५ म संख्या } भाद्र पूर्णिमा ।

### मार्कण्डेय पुराण । ७ अथाय ।

तृगन्धि मांस संघाते पूय शोणित पूरिते ।  
कर्तव्या न रतिर्यत्र तत्रात्मकमियं रतिः ॥  
अन्नतां महाभाग यथा लोको विमुह्यति ।  
काम क्रोधादिभिर्दीर्घैरवशः प्रवलाभिः ॥  
द्रुक, अहि, मांस द्वारा गठित, रुधिर ७ पूय पूर्ण  
असार शरीरे आसक्ति थाका (अर्थात् आत्माके  
विमृष्ट है। “देहहोमि” अतदुक्तिसे शरीरके  
यत्न करा) नितान्त अवैध, किन्तु आत्मा ताहाते  
पूर्णसक्त रहिग्राहि । हे महाभाग ! काम क्रोधादि  
अवल रिपु ताड़नार जीव अवसन्न प्राय है।  
वेरूपे विमोहित हय ताहा अवग करुन ।  
अज्ञा प्रकार संयुक्त महि भूयः पुरं महं ।  
चर्म तित्ति महारोधं मांस शोणित लेपनम् ॥  
मानव देह एकटी महानगर स्वरूप । ज्ञानमय  
अदृष्ट आँखोंसे एही नगर परिरक्षित । अहि, माला

### मार्कण्डेय पुराण । ८ अथाय ।

त्वगस्ति मांस संघाते पूय शोणित पूरिते ।  
कर्तव्या न रतिर्यत्र तत्रात्मकमियं रतिः ॥  
अन्नतां महाभाग यथा लोको विमुह्यति ।  
काम क्रोधादिभिर्दीर्घैरवशः प्रवलाभिः ॥  
त्वचा, हड्डी, मांस से बना हुआ शोणित वो  
पूय से परिपूर्ण असार शरीर में खेह रखना ( अ-  
र्थात् आत्मा को भूलकर यह “ देहहोमि ” इस  
बुद्धि से शरीर को यत्न करना ) नितान्त निषिद्ध है,  
किन्तु हम सब उसी पर सम्पूर्ण खेह रखते हैं ।  
हे महाभाग ! काम क्रोधादि प्रवल शक्तियों के  
तड़पन से जीव अवसन्न होकर कैसे विमोहित हो  
जाता है, सो यवण कौजिये ।  
प्रज्ञा प्रकार संयुक्तमास्थिस्थुण पुरं महत् ।  
चर्मभिस्त महारोधं मांस शोणित लेपनम् ॥  
मनुष्य शरीर मानो एक महानगर है । ज्ञान  
मय दृढ़ दिवाल से यह नगर परिरक्षित है । हड्डी

ईहार सुद्ध, चक्षु ईहार भित्ति, ए१९ भा० स ७  
शोणित ईहार अनुलेपन ।

नव द्वारं महायासं सर्वतः आयु वेष्टितम् ।

नृपश्च पुरुषस्तत्र चेतनावानवस्थितः ॥

एह नगरें नयटी द्वार आछे, सहजे तांगते  
एवेष कर। यारना ; आयु समूह एह नगरके परि-  
वेष्टेन करिया राखियाछे । देह मध्य निवासो  
चेतन्य वान आछा एह नगरें अधिपति ।

मन्त्रिणो तत्र बुद्धिश्च मनश्चैव विरोधिनी ।

यतेते वैर नाशाय तावभावितरेतरम् ॥

ताहार छह मन्त्री—बुद्धि ओ मन ; ईहारा परस्पर  
विरोधी—एक अपरें विनाशार्थ मरुदा यत्नमीन ।

नृपस्य तस्य चक्षुरो नाश मिच्छन्ति विद्विषः ।

कामः क्रोधस्तथा लोभो मोहश्चानास्तथा रिपुः ॥  
काम, क्रोध, लोभ ओ मोह एह पुबल शत्रु च-  
क्षु राराजार विनाशेच्छ ।

यदातु सनृपस्तानि द्वाराणादृता तिष्ठति ।

तदा सुश्रवणश्चैव निरातकश्च जायते ॥

जातानुरागो भवति शत्रुभिर्नाभिभूयते ॥

राजा यधन समस्त द्वार रुद्ध करिया (समाहिताव-  
स्था) अवस्थिति करेन तखन तनि सुश्रवण, भय  
विहीन ओ प्रकृति पुष्टेर अनुराग भाजन थाकेन ।  
शत्रु गण तखन ताहके अभिभूत करिते पारे ना ।

यदातु सर्व द्वाराणि विद्वतानि स भुञ्जति ।

रागो नाम तदा शत्रुनैत्रादि द्वारमृच्छति ॥

सर्वव्यापी महायामः पञ्च द्वार एवेषनः ।

तस्यानुमार्गं विशति तदैव घोरं रिपुव्रणं ॥

किन्तु यधन अनवधानता वशतः द्वार गुलि उन्मूल्य  
करिया राखेन, तखन काम (विषयानुराग) नामक  
शत्रु नेत्रादि द्वारे उपस्थित हय । एह रिपु  
सर्वव्यापी ओ महाकाय, पञ्च द्वार पथ दिया एह  
शत्रु देह पुरे प्रविष्टे हईया थाके त९परे अपर  
शत्रु व्रण ओ ताहार अनुगमन करे ।

प्रविश्याथ सर्वे तत्र द्वारेन्द्रिय संज्ञकैः ।

रागः संश्लेषमायाति मनसा च महैतरे ॥

इन्द्रियाणि मनश्चैव वशे कृत्वा दुरासदः ।

द्वाराणि च वशे कृत्वा प्राकारं नाशयत्यथ ॥

समूह इस को खम्बे हें, चर्म इस को भित्ति औ  
मांस वो शोणित इसका लेप हें ।

नव द्वारं महायासं सर्वतः आयुवेष्टितम् ।

नृपस्य पुरुषस्तत्र चेतनावानवस्थितः ॥

इस नगर को नौ दरवाजे हैं, आनायास उस में  
कोइ पैठ नहीं मल्ला है ; आयु मण्डली इस नगर  
को घेरे रख लिये हैं चैतन्यवान आत्मा जो कि  
इस देह में विराजते हैं, इन नगर के राजा हैं ।

मन्त्रिणी तस्य बुद्धिश्च मनश्चैव विरोधिनी ।

यतेते वैर नाशाय तावभावितरेतरम् ॥

बुद्धि वो मन, ये दो उनके मंत्री हैं ; इन दोनों  
में बड़ी विवाद बनी रहती है एक दूसरे को सा-  
रने के लिये सदैव यत्न करता है ।

नृपस्य तस्य चक्षुरो नाशमिच्छन्ति विद्विषः ।

काम क्रोधस्तथा लोभो मोहश्चान्य तथारिपः ॥

काम, क्रोध, लोभ वो मोह ये चारो प्रबल शत्रु  
राजा को हत्या करने चाहते हैं ।

यदातु स नृपस्तानि द्वाराणादृता तिष्ठति ।

तदा सुस्थ बलश्चैव निरातकश्च जायते ॥

जातानुरागो भवति शत्रुभिर्नाभिभूयते ॥

राजा जब सब दरवाजे बंद करके (समाधि काल  
में) स्थिति करते हैं, उन दिनों में वे बलवान नि-  
र्भय वो सवजनों के प्यारे बने रहते हैं । शत्रु गण  
उन दिनों में उन को अभिभूत कर नहीं सके हैं ।

यदातु सर्व द्वाराणि विद्वतानि स भुञ्जति ।

रागो नाम तदा शत्रुनैत्रादि द्वारमृच्छति ॥

सर्वव्यापी महायामः पञ्च द्वार एवेषनः ।

तस्यानुमार्गं विशति तदैव घोरं रिपुव्रणं ॥

किन्तु जब असावधानता ने दरवाजे खुली रख  
छोड़ देते हैं, उस समय काम (विषयानुराग)  
नाम परम शत्रु, नेत्रादि द्वार में उपस्थित होता  
है । यह रिपु सर्वव्यापी वो महाकाय है । पाँचो  
दरवाजे को राह से यह शत्रु टेढ़कपी पुर में प्रवेश  
करता है, तदनन्तर अग्यान्यतोनों शत्रु भी उसके  
पीछे जाते हैं ।

प्रविश्याथ सर्वे तत्र द्वारेन्द्रिय संज्ञकैः ।

रागः संश्लेषमायाति मनसा च महैतरे ॥

इन्द्रियाणि मनश्चैव वशे कृत्वा दुरासदः ।

द्वाराणि च वशे कृत्वा प्राकारं नाशयत्यथ ॥

प्रविष्ट है। मन ओ अन्यानारिपु, वर्गोर सहित  
गम्यालत हय । सेई अवल रिपु मन ओ हैन्द्रिय  
द्वार समूहके आरत्ताधीन करिया ज्ञान मय प्राप्तिर  
तत्काले आरम्भ करे ।

मनस्तस्याश्रितं दृष्टो बुद्धिर्नशति तत्क्षणम् ।  
अमात्य रहितस्तत्र पौरवर्गोज्झितस्तथा ॥  
रिपुर्भिलक्ष विवरः स नृपो नाशयच्छति ।  
एवम् रागस्तथा मोहो लोभः क्रोधस्तथैव च ।  
प्रवर्तन्ते दुरात्मानो मनुष्यास्मृति नाशकाः ।

रागाः क्रोधः प्रवर्तति क्रोधात्क्रोधात्क्रोधात्क्रोधात् ।  
लोभाद्वर्तति सम्मोहः सम्मोहात् सम्मोहात् ।  
स्मृतिर्नाशयच्छति नाशो बुद्धि नाशः अश्रुति ॥  
बुद्धि मनके शक्तिर आश्रित देखिया तत्क्षणम् पला-  
यन करे ; राजा एकेवारे अमात्य शून्य हैया  
पड़ैन । पौर वर्ग भये तांहाके परित्याग  
पूर्वक पलायन करे एई अवसरे शत्रुगणनगरा-  
धिकार करिया लय । राजा एकेवारे विनष्ट हन ।  
एई रूपे मनुष्योर स्मृति शक्ति विनाशी दुरात्मा  
काम, मोह, लोभ ओ क्रोध देहपुरे प्रवेश  
करे । काम हैते क्रोध, क्रोध हैते लोभ ओ  
लोभ हैते मोहोर उद्वेगति एवं मोह प्रभावे  
मनुष्योर स्मृति विभ्रम उपहित हय । स्मृति भ्रंश  
हैले बुद्धिनाश ओ बुद्धिनाशे लोक समूहे विनष्ट  
हैया थाके ।

## आर्या शास्त्र विज्ञान ।

(पूर्व प्रकाशिते पर)

१।१० म कारण ।—आहिक ओ नाहिक क्रिया ।  
ए रूपे ग्रहादिर स्वरूप निर्णय करी आवश्यक  
हैतेहै । नतवा आमादेर शरीर ओ मनोर  
उपर ग्रहादिर कार्य प्रणाली प्रदर्शन करी सूकठिन  
अतएव एहले ए अवस्तेर उपयोगी अंश मात्र  
अवतारणा करिलामि ।

सूर्य अत्यन्त उतुत तरल धातु पदार्थ समूहेर  
समष्टि स्वरूप एकटि अभाव एकांश भुवन । तन्मध्य  
तात्त्र आर वर्ण है ताहाते अधिक । परन्तु ईहोर  
चतुर्दिके ये आवार एकटि परिवेश आछे  
(मण्डलाकार वेष्टन) ताहा पार्थिव उपधातु प्रकृति  
का प्रमाण । ए विचार कति ।—“दिव्यमग्नेन

कर मन वो अन्यान्य रिपुओं के साथ मिल जाता है।  
वह प्रबल शत्रु, मन वो इन्द्रियों को निज अधीन कर  
ज्ञानमय दिवार को तोड़ने लगता है ।

मनस्तस्याश्रितं दृष्टा बुद्धिर्नश्यति तत्क्षणात् ।  
अमात्य रहितस्तत्र पौरवर्गोज्झितस्तथा ।  
रिपुर्भिलक्ष विवरः स नृपो नाशयच्छति ।  
एवं रागस्तथा मोहो लोभः क्रोधस्तथैव च ॥  
प्रवर्तन्ते दुरात्मानो मनुष्यास्मृति नाशकाः ।  
रागात् क्रोधः प्रभवति क्रोधात्क्रोधात्क्रोधात्क्रोधात् ।  
लोभाद्वर्तति सम्मोहः सम्मोहात् सम्मोहात् ।  
स्मृति भ्रंशाद्बुद्धि नाशो बुद्धि नाशात् प्रणश्यति ॥

मन वो शत्रु के आश्रय लेते हुए देख कर बुद्धि  
उसही क्षण में भट भागजाती है । राजा एकवारगी  
अमात्य रहित होजाते हैं । पौर जन सब शत्रु के  
मारे उनकी छोड़कर भाग जाते हैं । इस अवसर  
में शत्रु गण भी नगर को अधिकार कर लेते हैं  
राजा एक दम नष्ट होजाते हैं । इसी प्रकार से  
मनुष्य को स्मृति शक्ति नाश करनेवाले दुरात्मा काम,  
मोह, लोभ वो क्रोध देह पुर में पैठ जाते हैं । काम  
से क्रोध, क्रोध से लोभ वो लोभ से मोह की उत्पत्ति  
होती है ओ मोह के प्रभाव से मनुष्य का स्मृति भ्रम  
होता है । स्मृति का भ्रम होने से बुद्धि का नाश वो  
बुद्धि का नाश होने पर मनुष्य समूल विनष्ट होजा-  
ता है ।

## आर्य शास्त्र विज्ञान ।

(पूर्व प्रकाशित के आगे)

८।१० आ कारण—यह वो नक्षत्रों की क्रियाये ।

यहां ग्रह आदि के स्वरूप निरूपण करना चाहिये।  
अन्यथा हमारे शरीर वो मन पर ग्रह आदि किस  
रीति असर करते हैं देखलाना कठिन होगा ।  
अतएव इस स्थान में इस प्रबंध के उपयोगी जो  
कुछ आवश्यक है, उतनेही लिखे जायेंगे ।

सूर्य एक अत्यन्त उष्ण तरल धातु मय पदार्थ  
समूह का समष्टी रूप अतएव बृहत् भुवन है । उन  
में ताम्र वो स्वर्ण अधिक है । परन्तु इसके धारी  
घोर जो एक परिवेश या मण्डल है वह पार्थिव  
उपधातुओं से रचित है । इस पर स्मृति का प्रमाण  
है—“दिव्यमग्नेन सविता रथेनादेवो याति इत्यादि

সূর্য্য স্বর্ণময় নিজ মণ্ডল রূপ রথে আসিতেছেন ।  
 “হিরন্ময় বপুঃ” সূর্য্যের শরীর স্বর্ণাদিময় ।  
 “বিশ্বরূপং হরিণং জাত বেদমং পরায়ণং জ্যো-  
 তিরেকং তপস্বম্” ইত্যাদি । সূর্য্য একটি ভুবনা-  
 কার, ইহা স্বর্ণাদি ধাতু হইতে জাত এবং অত্যন্ত  
 জ্যোতি ও তাপযুক্ত পদার্থ ।

“হংসঃ শুচিষ হসুরন্তরিক্সসঙ্কোভা বেদিষ  
 দতিথি দুর্গোণমং । নৃষদ্বরস দ্বোমস দজ্জা গোজা  
 শাতজা অদ্রিজা ঋতম্ হং ।” সূর্য্য তেজোযুক্ত  
 একটি ভুবন—ইহা শূন্যে অবস্থিত রহিয়াছে । ইহা  
 যজ্ঞ স্থলে আসীন বহি যেরূপ যজ্ঞাদি সংস্কৃত  
 হইয়া আমাদিগের শরীরের বিষাক্ত পদার্থ সকল  
 অপনোত করত অমৃত বিশেষ বিতরণ করেন  
 তদ্রূপ, অন্তরীক্ষ-বেদিতে সমাসীন থাকিয়া আ-  
 মাদিগের শারীরিক কুপদার্থ পুঞ্জ অপনয়ন  
 পূর্ব্বক উৎকৃষ্টতেজো বিশেষ বিতরণ করিতেছে ।  
 ইহা সর্ব্বদা দৃশ্যতঃ গতিশীল, অথচ কলস স্থিত  
 জলের মত স্থির, এবং নিজের রশ্মি বিস্তার দ্বারা  
 সর্ব্বত্র বিদ্যমান । ইহা স্বীয় রশ্মি সম্বন্ধ দ্বারা  
 মনুষ্যাদি জন্ম প্রাণীর শরীরে, স্থাবর শরীরে ও  
 আকাশস্থিত মেঘাদিতে আছে । কিন্তু ইহা স্তরে  
 স্তরে লক্ষিত হয় । ইহাতে প্রথম জলীয় পদার্থ  
 (জলজনক) ও পার্থিব (সোডিয়াম) প্রভৃতি নানা  
 প্রকার পদার্থ, তৎপর অন্যান্য সত্যপ্রমাণীকৃত  
 পদার্থ তৎপর ধাতব পদার্থ লক্ষিত হয় অর্থাৎ  
 প্রথম পরিধি (মণ্ডলকার পরিবেশ) জল জনকাদি  
 দ্বারা বিরচিত এবং তৎপর্য্যবর্ত্তি মণ্ডলটি ধাতব  
 পদার্থ দ্বারা নির্মিত । ইহা অত্যন্ত বৃহৎ ॥

সূর্য্যের অবস্থি প্রকৃতি, এইরূপ গ্রহণাদি সময়  
 বিশেষে দূরবীক্ষণ দ্বারা, অথবা আলোক বিশ্লেষক  
 যন্ত্রদ্বারা, ইহার আলোকের বিভিন্নজাতীয়ত  
 নিরূপণ করিয়া সর্ব্বদাই প্রমাণ স্বরূপে পরিচ্ছাত  
 হওয়া যাইতে পারে । এই প্রকার, সমস্ত প্রচলিতা  
 গ্রহ, উপগ্রহও নক্ষত্র সকলের প্রকৃতি ও জাতির  
 সম্ভব আছে । এ প্রসঙ্গে ইহার প্রক্রিয়া প্রতি-  
 পাদনের অনাবশ্যকতা নিরাক্তন তদ্বিষয়ে নিরন্তর  
 থাকিলাম ।

স্বাক্ষর হই যাইতে হইবে । “হিরন্ময় বপুঃ” সূর্য্য কা  
 শরীর স্বর্ণময় হইবে । “বিশ্বরূপং হরিণং জাতবেদম্”  
 পরায়ণং জ্যোতিরেকং তপস্বম্” সূর্য্য এক ভুবন মণ্ডল  
 যজ্ঞ স্থান আদি ধাতু হইতে বনা হুয়া, যৌ পরমতেজ যৌ  
 তপ্যতা যুক্ত হইবে ।

“হংসঃ শুচিষ হসুরন্তরিক্সসঙ্কোভা বেদিষদতিথি  
 দুর্গোণ সত্ । নৃষদ্বরসঙ্কোভা বেদজা গোজা, শাতজা  
 অদ্রিজা ঋতম্ হং ।” সূর্য্য এক তেজময় ভুবন হৈ,  
 আকাশ পর ইহা কৌ স্থিতি হৈ । যজ্ঞ ভূমিকৌ অগ্নি  
 জৈমা চুতাদিসেসংসিত হৌ ইম সব কৌ শারীরিক  
 বিষাক্ত পদার্থী কৌ বিনষ্ট কর এক প্রকারকৌ অমৃত  
 দান করত হৈ, ওস ভাতি আকাশ রূপ বেদী পর  
 বিরাজকর সূর্য্য নে ভৌ হমারৈ শারীরিক কুপদার্থসমূহ  
 কৌ বিনষ্ট কর কৌ এক উত্তম তেজ বিশেষ দানকিয়া  
 করত হৈ । দেখনে মৈ ইহাকৌ গতি বিশিষ্ট বৃক্ষ প-  
 ড়তাহৈ, কিন্তু গাগরী কৌ ভৌতর কৌ জলকৌ নাই যহ  
 স্থির যৌ নিজ কিরণী কৌ সর্ব্বত্র বিদ্যমান হৈ । নিজ  
 কিরণী কৌ প্রভাব সে মনুষ্য আদি জগম প্রাণীকৌ  
 শরীর মৈ স্থাবর শরীর মৈ আ আকাশ কৌ মেঘাদি  
 মৈ যহ বিরাজমান হৈ । কিন্তু ইহাকৌ এক স্তর কৌ  
 ওপর দূসরা, দূসরৈ পর তৌসরা, এসাহৌ দেখ পড়-  
 তা হৈ ইহমৈ প্রথম জলীয় পদার্থ যৌ পার্থিব (সোডি-  
 যম) আদি নানা প্রকার কৌ পদার্থ, তদনন্তর অ-  
 ন্যান্য পদার্থ জৌ পরীক্ষা সে সিদ্ধ, কিয়ে হুই হৈ  
 ওস কৌ ওপর ধাতুময় পদার্থ দেখ পড়তাহৈ অর্থাৎ  
 প্রথম পরিধি (মণ্ডলাকার পরিবেশন) জলীয় পদার্থ  
 সে বনা হুয়াহৈ, আ ওসকৌ মধ্য কা মণ্ডল ধাতুময়  
 পদার্থী সে নির্মিত হৈ । যহ অত্যন্ত বৃহত হৈ ।

সূর্য্য কৌ ইহা ভাতি প্রকৃতি আজ কাল কিসী ২  
 যন্ত্রাদি কৌ সময় দূরবীন সে অথবা প্রকাশ-বিশ্লে-  
 ষক যন্ত্র করকৌ ইহমৈ জৌ ভিন্ন ২ জাতীয় তেজ হৈ,  
 সৌ স্থির করকৌ সদৈব প্রমাণী ভূত হৌ সত্তা হৌ । ইহা  
 রৌতি সে সমস্ত যহ, ওপর যৌ নক্ষত্রী কৌ প্রকৃতি  
 ভৌ জাননেকা ওপায় হৌ । ইহা প্রসঙ্গ মৈ ইহাকৌ প্রক্রিয়া  
 কা প্রতিপাদন জৌ কি অথ অনাবশ্যক সমস্ত পড়তাহৈ  
 ইহা কৌ নিরাক্তন হৈ ।

सूर्योत्थान और अस्त के अन्तर में निर्णायक वह सञ्चालक शक्ति आहै । \*

\* पुराणादि में सूर्य को पद्माक्षी चतुर्भुज त्रिनेत्र आदि रूप (रत्नाम्बुजाक्षी इत्यादि) वर्णन किया गया, तबहार तात्पर्य अन्यप्रकार । उहा सूर्य मण्डल में विराजती हुई भगवत् शक्ति की लक्ष्य करके उन सब का वर्णन है । यह सब बातें पुराण की मौमांसा के समय विस्तार की जायगी । अब केवल एकही दृष्टान्त से प्रमाण किया जाता है । प्रगट है, कि सूर्य के नाई पुराण में पृथ्वी वी गंगाजी आदि के द्विभुज, चतुर्भुज स्वर्ण वर्ण आदि रूप वर्णित हैं किन्तु देखने में पृथ्वी, गंगा आदि का कौन रूप (भौतिक) मिलता है ? अतएव इस का दूसरा जो कुछ रूप वर्णित है, सो पृथ्वी आदि में विराजती हुई ऐसी शक्ति का रूप है, इस में कुछ भी सन्देह नहीं । सूर्य का भी वैसेही समझना चाहिये । सूर्य के अश्वरथादि को वर्णन केवल रूपक है । सूर्य का जो सात अश्व को वर्णन है ( “शुचिः समाश्र वाहनः” इत्यादि पुराण, “अयुक्त सप्त शम्भुः सूर्योत्थस्य नपचाः इत्यादि श्रुतिः” ) ये सात नक्षत्र राशि हैं । हम दिन भर में वस्तुतस्तु सूर्य को सात नक्षत्र राशि से मिलनेको देखते हैं, फिर सातही नक्षत्र राशिसे रात को सूर्य का जाना है। अर्थात् सूर्य यदि मेष राशि का एक पल बीतने पर उदय हो तो तुला राशि का एक पल बीतने पर अस्तमित होंगे । इस रीति त्रय राशि में उदय होने पर वृश्चिक राशि में अस्तमित होंगे । अतएव सूर्य को गति दिन को सात राशि करके है। रात को भी उक्त नियमानुसार अस्त राशि के हिसाब से सप्त राशिमें पुनरुदित होंगे । अतएव जो पृथ्वी के दूसरे खंड में (अमेरिका आदि) बसते हैं, हमारे राशि के समय जिनका दिन होता है, उन्हीं के हिसाब से भी सूर्य को गति सप्त राशि करके जाता है । इस रीति से जिधर क्यों नहीं जब तक सूर्य देख पड़ेगा, तबही तक सूर्य को सात राशि पर विचरता हुआ देख पड़ेगा । इस

सूर्य की प्रकृति जो ऐसीही है उसके बहुत प्रमाण श्रुति में है \* ।

\* पुराणादि में सूर्य को पद्माक्षी चतुर्भुज त्रिनेत्र आदि रूप (रत्नाम्बुजाक्षी इत्यादि) से वर्णन किया गया, उस का तात्पर्य कुछ और है । सूर्य मण्डल में विराजती हुई भगवत् शक्ति की लक्ष्य करके उन सब का वर्णन है । यह सब बातें पुराण की मौमांसा के समय विस्तार की जायगी । अब केवल एकही दृष्टान्त से प्रमाण किया जाता है । प्रगट है, कि सूर्य के नाई पुराण में पृथ्वी वी गंगाजी आदि के द्विभुज, चतुर्भुज स्वर्ण वर्ण आदि रूप वर्णित हैं किन्तु देखने में पृथ्वी, गंगा आदि का कौन रूप (भौतिक) मिलता है ? अतएव इस का दूसरा जो कुछ रूप वर्णित है, सो पृथ्वी आदि में विराजती हुई ऐसी शक्ति का रूप है, इस में कुछ भी सन्देह नहीं । सूर्य का भी वैसेही समझना चाहिये । सूर्य के अश्वरथादि को वर्णन केवल रूपक है । सूर्य का जो सात अश्व को वर्णन है ( “शुचिः समाश्र वाहनः” इत्यादि पुराण, “अयुक्त सप्त शम्भुः सूर्योत्थस्य नपचाः इत्यादि श्रुतिः” ) ये सात नक्षत्र राशि हैं । हम दिन भर में वस्तुतस्तु सूर्य को सात नक्षत्र राशि से मिलनेको देखते हैं, फिर सातही नक्षत्र राशिसे रात को सूर्य का जाना है। अर्थात् सूर्य यदि मेष राशि का एक पल बीतने पर उदय हो तो तुला राशि का एक पल बीतने पर अस्तमित होंगे । इस रीति त्रय राशि में उदय होने पर वृश्चिक राशि में अस्तमित होंगे । अतएव सूर्य को गति दिन को सात राशि करके है। रात को भी उक्त नियमानुसार अस्त राशि के हिसाब से सप्त राशिमें पुनरुदित होंगे । अतएव जो पृथ्वी के दूसरे खंड में (अमेरिका आदि) बसते हैं, हमारे राशि के समय जिनका दिन होता है, उन्हीं के हिसाब से भी सूर्य को गति सप्त राशि करके जाता है । इस रीति से जिधर क्यों नहीं जब तक सूर्य देख पड़ेगा, तबही तक सूर्य को सात राशि पर विचरता हुआ देख पड़ेगा । इस



ए सृष्टिआर एकटि कथाओ वृत्ता आवस्यक । सूर्या यथन उद्भुत तरलपदार्थ, तथन सन्वदाई उश्तेत एकटि मल्कोचक्रिया हतेतेछे अर्थात् सूर्या सन्वदाई निजेर तापके विकीर्ण करतः क्रमशः दृढ़ता हवयार चेष्टार सूर्य उपादान अवयव सकलके परिपाचन स्वरूप रूपान्तर करितेछे । एतद्वारा तदीय अवयव सकलके मध्ये परस्पर प्रजातारैर प्रति एकटि रासायनिक आकर्षण भावओ उद्भूत होइतेछे । अर्थात् सूर्योपादाने ये ताप ओ स्वर्ण प्रभृति धातुवादि पदार्थ आछे, ताहार सूर्य सूर्य दृढ़ता सम्पादनके चेष्टा करितेछे । एही क्रिया सन्वदा एतोक एह उपग्रह ओ नक्षत्रे प्रवर्तमान थाकिया ताहादिगेर स्व स्व अवयवके मध्ये परस्पर प्रजातीय आकर्षणके द्वारा परिवर्तित ओ दृढ़ता सम्पन्न होइवार चेष्टा जाइतेछे । यैरूप एही पृथिवी सन्वदा तापके विमोक्षण करतः सूर्य धातु ओ उपधातु रूप अवयव सकलके नानाविध रासायनिक संयोगवियोग द्वारा नाना प्रकारे परिवर्तित ओ सूर्य कोन कोन अवयवके साज्जाता सम्पन्न दृढ़तर करिया ताहादिगेर स्व स्व रजत प्रभृति पदार्थ निचय नैमित्तिक ताप उद्भूत होइले, सेही ताप परिमोचन करतः निजेर स्वाभाविक दृढ़ता सम्पन्न होइवा थाके । एहीरूप समस्त ग्रहादिहोइ उक्त क्रिया होइतेछे ।

राशिद्वाराई गमन करिबे ताहाते सन्देह नाई । एही सपुंराशि सूर्यके अक्ष । पृथिवीके वार्षिक गति द्वारा ये दृढ़ता सूर्यके एकटि अग्रन मण्डल कल्पित हर, ताहाई सूर्यके एक रथचक्र ("एक चक्र रथो यसा" इत्यादि द्वारा सूर्यके एक चक्र बला होइवाछे) । एवम् सूर्य मण्डल सूर्यके रथ । कोन स्थाने उक्त प्रकार सपुंराशिके सूर्य रथके चक्र एवम् छयथातुके चक्रके अग्र बला होइवाछे (सपुंराशिके बड़रे आह्वरपितमिति) इत्यादि विविध प्रकार वर्णन थाकाओ रूपककेर एकटि प्रमाण । सत्ताभावे व्याख्या करिले नाना प्रकार होइते पावेलन । रूपक वर्णनके कारणदि पुराण समा-लोचनाय उपस्थित होइवे ।

जब यह स्थिर हुआ कि सूर्य उष्ण तरल पदार्थ है तो यहां यह भी समझ लेना कि सूर्य में सदैव एक संकीर्ण-क्रिया हो रही है अर्थात् सूर्य सदाही निज उत्ताप को विस्तार करके धीरे २ दृढ़ काय होनेके लिये निज उपादानों को परिपाक या रूपान्तर करदेता है । इससे सूर्य के अवयवों के निज २ अणु के मध्य में एक रासायनिक आकर्षण शक्ति भी उपजती है । अर्थात् सूर्य के उपादान जो तास्र वो स्वर्ण आदि धातुमय पदार्थ है, वे सब अपने २ को पुष्ट करने को चेष्टा करते हैं । यही क्रिया सर्वदा प्रत्येक यह उपग्रह वो नक्षत्र में विद्यमान रहकर उन सब के निज २ अवयवों के मध्य में परस्पर प्रजातीय आकर्षण के द्वारा बटलने वो दृढ़ बनने को चेष्टा बढ़ाता है । जिस रीति से यह पृथ्वी सूर्यदा ताप को निकास के निज धातु वो उपधातु रूप अवयवों को भांति भांति के रासायनिक संयोग वियोग करके नाना प्रकार से परिवर्तित करती वो निज किसी २ अवयव का साजात्व सम्बन्ध दृढ़ करके उन सब को सुवर्ण रजत प्रभृति पिंडाकार बना डालती है । अथवा सुवर्ण रजत आदि पदार्थ पूंज नैमित्तिक ताप से गरम होनेपर उस ताप से तास्र वो स्वाभाविक दृढ़ता बनालेते हैं । यही क्रिया पृथ्वी वीर्य समस्त यह आदि में हो रही है ।

में कुछ भी सन्देह नहीं । यह समझाया है सूर्य के सात अक्षर हैं । पृथ्वी को वार्षिक गति से जो सूर्य का एक अग्रन मंडल कल्पना को जाती है, सोही सूर्य का एक रथ चक्र है ("एक चक्र रथो यसा" इत्यादि में सूर्य के रथ का वर्णन एक चक्र है । भी सूर्य का निज मण्डलही सूर्य का रथ है । कहीं उन समझाया को सूर्य के रथ चक्र वो छी-मस्तु को चक्र के अग्र करके बखान किये गये हैं ("सप्त चक्र बड़रे आह्वरपितमिति") इत्यादि भांति २ के बखान रहने से रूपक अधिक भ्रमकता है । यदि सत्य भाव से वर्णन किये जाते तो भांति भांति का बखान कभी नहीं होते । रूपक वर्णन का कादम्ब मुद्राण समालोचना के समय खिर किया





অগ্নিতাপ সেবন করিতে পাইল না। জীবনের গুঢ় কর্তব্য বিস্মৃত হইয়া ক্রিকেট খেলায় লিপ্ত হয়, কি উপায়ে মান সমাজ বুদ্ধি হয় নব্য ভারত তজ্জন্য ক্ষিপ্ত প্রায়, বুদ্ধগণ গতজীবনের সংস্কারের বশীভূত, অগত্যা তাঁহারাও শিক্ষার পরম সুখ-স্বাদে বঞ্চিত। বিনা চিকিৎসায় ও অসাবধানতায় ভারতের বিষম ব্যাধি বাড়িতে লাগিল-পরমাযু সত্ত্বে বৃষ্টি ভারতের আসন্ন কাল উপস্থিত।

ভারত নিবাসিগণ পুরাকালে ব্রহ্মচর্যের পরম সমাদর করিতেন। ব্রহ্মচর্য অভ্যাস না করিয়া তাঁহারা গার্হস্থ্য আশ্রমে প্রবেশ করিতেন না। ব্রহ্মচর্য কালে তাঁহারা বিদ্যা, নীতি, ধর্ম প্রভৃতি জীবনের অবশ্য কর্তব্য গুলি বিশেষ রূপে শিক্ষা করিয়া গুরু গৃহ হইতে লোক সমাজে প্রবেশ করিতেন। এই ব্রহ্মচর্যের প্রথা যেদিন হইতে পুণ্য ভূমি ভারতবর্ষকে পরিত্যাগ করিয়াছে সেই দিন হইতেই ইহা দুর্বলতা, দুরাগ্রহ, দুর্ব্যবহার, অক্ষোভার, ভীকতা, চপলতা, অব্যবহাচিততা আদি ক্রীণতা ও মানসিক মলিনতার প্রধান নিকেতন হইয়া পড়িয়াছে। প্রাতঃস্মরণীয় আর্য্য গণের প্রভুত্ব ও প্রতিপত্তি কালে বর্ণানুসারে ধর্ম নীতি, রাজনীতি, সমাজনীতি ও বিবিধ সাধারণ নীতি শিক্ষা পাইয়া ভারত বাসি গণ তপোবল, ধর্মবল, বিদ্যাবল, বাহুবল, বিত্তবল আদির গুণে জাতীয় প্রকৃতি লাভ করিয়া এতৎ পবিত্র ভূমিকে সভ্যসমাজের শিরোভূষণ করিয়াছিলেন। এক্ষণে বিদ্যালয়ের, শিক্ষা প্রণালীর দোষে ও পিতা মাতা আদি গুরু গণের তত্ত্বাবধান ও যত্নের অভাবে সূক্ষ্মার মতি বালক বর্গ স্বেচ্ছাচার ও যথেচ্ছাচারের বশবর্তী হইয়া সমাজকে কলঙ্কিত ও বিষম উপদ্রব প্রস্তুত করিয়া তুলিতেছে। পিতা মাতা সন্তানের শৈশব হইতেই যদি নীতি শিক্ষার দিকে মনোযোগী হইতেন, তবে তাঁহারা ও সন্তান গণ চিরস্থায়ী হইতে পারেন ও সমাজও নিরুপদ্রব থাকে। প্রথম হইতেই বালকের হৃদয় যে উপাদানে গঠিত হইয়া যার “বয়োপ্রাপ্ত হইলে, তাহা আপনা আপনিই সংশোধিত হইয়া যাইবে” পিতা মাতার এই বিষম ভ্রম ভ্রম না হইলে, ভারতের কল্যাণ নাই। পিতা মাতার উদাস ও উপেক্ষা বালক বর্গের অত্যন্ত অনিষ্ট সাধন করিতেছে। পিতা মাতা গণ যদি

ভাষ্য মেনে নহা মিলিতা হৈ। সোতানি ব্যক্তি লক্ষ্য-  
ভীয়া শুটা শুটা কে লায়া, পর ভাষ্য বয়াত্ অয়ন  
বী শনবধান সে আগ তাপনে কা ন মিলি। নম্ব  
ভারত জীবন কা গুঢ় কর্তব্য কার্য্য মূলকর কৈ  
কুছ ऐख्य मिले, कैंसे सम्मान वो पद हवि हो  
इसही में वावड़ाये है। लड़कपन वो जवानो के  
संस्कार बम हो कर हवगण भी शिक्षा के परम  
सुख भोगने में बंचित होते हैं। चिकित्सा वा  
यन बिना भारत की कठिन पौड़ा बढ़तो जाती है-  
परमायु रहे पर भी बीध होता है भारत का अन्त  
काल समीपागत है।

ভারত নিবাসী গণ প্রাচীন কাল মেনে ব্রহ্মচর্য্য  
কো অত্যন্ত আদর করত। ব্রহ্মচর্য্য অধ্যাস কিয়ে  
বিনা যে কভো গার্হস্থ্য আশ্রম মেনে প্রবেশ নহা কর-  
ত। ব্রহ্মচর্য্য কাল মেনে ওহা নে বিদ্যা নীতি, ধর্ম  
আদি মনুষ্য জীবন কে প্রবশ্য করনে কে যোগ্য কার্য্য  
সব বিশেষ বিধি সে সিদ্ধ কর গুর গৃহ সে লোক  
সমাজ মেনে লীট আসে। इस ब्रह्मचर्य की रीति  
जब से पुण्य भूमि भारतवर्ष से छूट गयी तबही से  
यह स्थान दुर्बलता, दुराग्रह, दुर्व्यवहार, अछा-  
चार, भीरता, चपलता अथवा अचित्तता आदि  
क्षीणता वो मानसिक मलिनता को प्रधान दोष हो  
बुकी है। प्रातः स्मरणीय आर्य्य महात्माओं को  
प्रभुता वो प्रतिपत्ति काल मने वर्णश्रम अनुसार  
भारत निवासिगण धर्मनीति, राजनीति, समाज-  
नीति वो भाति २ को साधारणनीति को शिक्षा  
पाकर तपोबल, धर्मबल, विद्याबल, बाहुबल, वित्त-  
बल आदि के गुण से जातीय प्रकृति लाभ करके  
इस पवित्र भूमि को सभ्य समाज की शिरोभूषण  
बना डाले। आज कल विद्यालय की शिक्षा  
प्रणाली की दोष से वो पिता माता आदि गुरुगण  
की प्रसावधानता वो अयन से सुकुमारमति बा-  
लक बर्ग स्वेच्छाचारी वो यथेच्छाचारी बनकर  
समाज को कलंकित वो अत्यन्त उपद्रव प्रस्त कर  
रहे हैं। पिता माता यदि लड़कपनही से सन्तानों  
को नीति शिक्षा देने में दक्षचित्त हो तो वे  
वो सन्तानगण चिरस्थायी हो सकें वो समाज भी  
निरुपद्रव रहे। पिता माता को यह विमर्शम,

सन्तान हहेते त्रुथो हहेते७ सन्तानके त्रुथो करिंते  
चाहेन, तवे आर कणमात्र७ विलख ना करिया।  
बालक गणेर सुनोति शिकार उपाय विधान करुन।  
नोति शिकार पुचुर परिमाणे साधारण समाजे पुच-  
लित हहेले रूथा कलह, विवाद, विसन्नाद, असन्तुष्टता,  
मूर्खता, धूर्तता, धूर्तता, कपटता। प्रवृत्तनादि समाज  
हहेते विलग्न हहेय। यात्र, विचारालये एत मिथ्या  
अभियोग ७ तज्जन्य अथवा अर्थव्यय७ हयना,  
द्रुक्तेलर प्रति अत्याचार, वेश्यालय गमन मद्यादि  
सेवन जन्य महापाप ७ समाजे दारिद्र्य दुःख रुक्ति  
हयना, सामान्य प्रभुत्व लातेर जन्य नर शोणिते  
रणरुल प्रभावित७ हयना, अधिक कि समाज नितास्त  
निरूपद्रव हहेया उठे। नोति शिकार द्वारा शारी-  
रिक, मानसिक ७ आध्यात्मिक उन्नति लाभ क-  
रिंते पारा यात्र। पारिवारिक, सामाजिक, ऐह-  
लौकिक ७ पारलौकिक समस्त सुख स्वच्छन्दताइ  
सुनोति शिकार उपर निर्भर करिंतेहे।

नोति शिकार अभाव ये वर्तमान भारतके  
अत्यन्त कतिग्रस्त करिंतेहे, ताहा अवस्थावाची  
सत्य। राजकाय शिकार भवने ७ अनुशासन  
मन्दिरे इहार कोन विधान हहेलना देखिया भारत  
वर्षीय आर्य धर्म प्रचारिणी सभा उद्दिष्ट ७ भारतेर  
भूषण स्वरूप स्नेह भाजन कोमल हृदय तरल मति  
बालक वर्गके कल्याण कल्पतरु शीतल छायाय  
सुखी करिबार निमित्त “सुनोति संचारिणी सभा”  
स्थापनेर प्रथा प्रवर्तित करिंतेहेन। अति  
श्रम दिनेर मध्येइ अनेक स्थाने उक्त सभा  
स्थापित हहेयाहे। एत७ सभा समूहेर शिकार ७  
उपदेश गुणे बालक वर्गेर प्रकृति ७ चरित्र  
अनेक परिमाणे संशोधित हहेयाहे ७ हहेतेहे।  
ये सकल बालक ७ युवा सक्ता ७ गायत्री पर्याप्त  
आवृत्ति करिंतेन ना, एहे सभासमूहेर उत्तेजनार  
उद्देशदेर प्रकृति आज काल आर्य तावापन  
हहेयाहे। सकले सुनिया अवस्थाइ सुखी हहेवेन  
ये एहे सभासमूहेर उद्देश ७ उद्देशागेइ  
“सुनोति” नामी पारिक पत्रिका आगामी कार्तिक  
मास हहेते प्रकाशित हहेवे। उगवान एहे सभा  
संस्था ७ मजल रुक्ति करुन। स्वर्ग निवासी आर्य

प्रथीत प्रथमही से बालकों के हृदय जिसर उपादान  
से गठित होते हैं, अवस्था अधिक होनेपर आपही  
आप सुधर जागे, ” जबतक नहीं छुटेगा, तबतक  
भारत का कल्याण कहाँ ? पिता माता की उदा-  
नीनता वो उपेक्षा से बालकों का अत्यन्त अनिष्ट  
होता है। पिता माता यदि सन्तानों से सुखा  
होने दोसन्तानों को सुखी करने चाहें तो जणमपि  
बिलम्ब कियेबिना बालकों को नोति शिक्षा का  
उपाय वो व्यवस्था करें।

नोतिशिक्षा अधिक परिमाण साधारण समाज में  
प्रचलित होने पर निरर्थक विगाड़, भगड़ा, भ्रमे-  
ला, असभ्यता, मूर्खता, घृष्टता, धूर्तता, कपटता,  
प्रवचना आदि समाज से दूर होजाते हैं, राजद्वार  
में इतना मिथ्या अभियोग, वो तदर्थ प्रयत्ना अर्थ  
व्यय भी नहीं होते, दुर्बलों पर अत्याचार बेश्या  
गमन वो मद्यादि सेवनजनित महापाप, वो समाज  
का दारिद्र्य दुःख नहीं बढ़ते, सामान्य प्रभुता के  
निमित्त रण भूमि भी नर शोणित से नहीं बह-  
जाती, अधिक क्या समाज निपट निरूपद्रव हो  
उठती है। नोति शिक्षा से शारीरिक मानसिक  
वो आध्यात्मिक उन्नति होती है। पारिवारिक,  
सामाजिक, ऐहलौकिक वो पारलौकिक समस्त  
सुख स्वच्छन्दताइ सुनोति शिक्षा से मिलती है।

नोति शिक्षा बिना जो वर्तमान भारत की अ-  
त्यन्त हानि पहुँचती है, इस में कुछ भी सन्देह  
नहीं। सरकारी स्कूल वो कारागार आदि में  
इस की कुछ व्यवस्था न हुई देख के भारतवर्षीय  
आर्यधर्म प्रचारिणी सभा ने स्नेहभाजन कोमल हृ-  
दय तरलमति बालक वर्ग की, जो कि भविष्यत भारत  
के भूषण रूप हैं कल्याण कल्पतरु की शीतल छाया  
में सुखी करने के निमित्त “सुनोति संचारिणी  
सभा” स्थापन की रीति चलाई। थोड़ेही दिन  
व्यतीत होते न होते अनेक स्थान में उक्त सभा  
बन गयी है। इन सभा समूह की शिक्षा वो उप-  
देश करके बालकों को प्रकृति वो चरित्र पूर्व से  
अनेक परिमाण सुधर गये वो जा रहे हैं। जितने  
बालक संख्या वो गायत्री तक की भी खबर न लेते,  
इन सभा समूह की उत्तेजना से उन्हीं को भी प्र-  
कृति आज कल आर्य भाव को प्राप्त हो गयी। सब

মহাত্মা গণ নিজ ২ তৈজস শক্তি সহযোগে বা-  
তের হৃদয় তন্ত্রী আকর্ষণ করুন। আবারো নীতি  
ভারতে পুনঃ প্রচারিত হইলে ভারতের মলিন  
মুখ নবজ্জী ধারণ করিবোমনের বল, হৃদয়ের  
উত্তেজনা, ও ভাবের পবিত্রতা ভারতে পুনরাগত  
হইয়া এই মলিন ভূমিকে পুনঃপুণ্য ভূমি করিয়া  
তুলিবে। আবার আমরা আর্থ্য দিগের জাতীয়  
গৌরব পুনরধিকারে সমর্থ হইব। স্বয়ং ভগবান  
পবিত্র হৃদয়ের পরম সখা আমাদের নেতা হইয়া  
পরম ধামে লইয়া যাইবেন।

নিম্ন লিখিত স্থান সমূহে “সুনীতি সঞ্চারিণী  
সভা” প্রতিষ্ঠিত হইয়াছে।

স্থানের নাম।	জেলা।
১। বারাণসী।	বারাণসী।
২। ডুমরাও।	আরা।
৩। গয়া।	গয়া।
৪। মুন্সের।	মুন্সের।
৫। বেগুসরাই।	ঐ
৬। ভাগলপুর।	ভাগলপুর।
৭। বাঁকীপুর।	পাটনা।
৮। বহরমপুর।	মুরশিদাবাদ।
৯। মুরশিদাবাদ।	ঐ
১০। রঘুনাথ গঞ্জ।	ঐ
১১। দাঁই হাট।	বর্ধমান।
১২। রামপুরহাট।	বীরভূম।
১৩। গৌরব ডাঙ্গা।	২৪ পরগণা।
১৪।	গয়া।
১৫। বোয়ালিয়া।	রাজসাহী।

### সভার উৎসব সমাচার। মুরশিদাবাদ।

২৬ আশ্বিন হইতে ২৮এ পর্য্যন্ত তিন দিন অতি  
সমারোহে ও আনন্দের সহিত মুরশিদাবাদ,  
আঃ ধঃ পুঃ সভার ১ম বার্ষিকোৎসব সম্পন্ন  
হইয়া গিয়াছে।

১ম দিন। পূর্বাহ্নে শ্রীমন্তারায়ণ দেবের পূজা  
ও সংকীর্্তন। মধ্যাহ্নে জাফর ভোজন। সন্ধ্যায়

জন সুন কী প্রশস্তি হই সুখী হইগে, কি হন সমা  
সমুহকী কে উল্লাহ বো উল্লগ করকে “সুনীতি”  
নাম পাস্তিক পত্রিকা আগামী কার্তিক মাসে  
প্রকাশ হইবে। ভগবান হন সমাধী কী  
সংস্থা বো মংল বড়াবো। স্বর্গস্থ আর্থ্য মহাত্মাগণ  
নিজ ২ তৈজস শক্তি সে ভারত কে হৃদয় তন্ত্রী কী  
আকর্ষণ করে। আর্থ্য রীতি নীতি ভারত মে ফির  
প্রচারিত হানে সে, ভারত কী মুখ খো, জো কি  
আজ কল মলিন হৈ, নবোন হোগো। মন কা বল,  
হৃদয় কী উত্তেজনা বো ভাব কী পবিত্রতা, ভারত  
মে পুনরাগত হাকর হুস মলিন ভূমি কী ফির  
পুণ্যভূমি বনাবেগো। ফির হম আর্থ্য মহাত্মাগণ  
কে জাতীয় গৌরব পুনরধিকার করনে মে সমর্থ  
হইগে। স্বয়ং ভগবান পবিত্র হৃদয় কে পরম সখা—  
হমারে নেতা হো পরম ধাম মে লৈ জাংগে।

নিম্ন লিখিত স্থানো মে “সুনীতি সঞ্চারিণী  
সভা বনবু কী হৈ।

স্থানো কে নাম।	জিলে।
১। বারাণসী।	বারাণসী।
২। ডুমরাও।	আরে।
৩। গয়া।	গয়া।
৪। মুন্সের।	মুন্সের।
৫। বেগুসরাই।	মুন্সের।
৬। ভাগলপুর।	ভাগলপুর।
৭। বাঁকীপুর।	পটনা।
৮। বহরমপুর।	মুরশিদাবাদ
৯। মুরশিদাবাদ	...
১০। রঘুনাথগঞ্জ।	...
১১। দাঁইহাট।	বর্ধমান।
১২। রামপুরহাট।	বীরভূম।
১৩। গৌরবডাঙ্গা।	২৪ পরগণা
১৪।	গয়া।
১৫। বোয়ালিয়া।	রাজসাহী।

### সভা কী উৎসব কা সমাচার।

#### মুরশিদাবাদ।

আবশ্য শক্ত সমস্ত শক্তবার সে লেইকর নবমী  
তক তিন দিন লগাতর মুরশিদাবাদ আঃ ধঃ পুঃ  
সভা কী প্রথম বার্ষিক উৎসব বড়ী ধুমধাম বো  
আনন্দে সে সম্পন্ন হই গয়া।

১ম দিন। প্রাতঃকাল কী শ্রীমন্তারায়ণ দেব  
কী পূজা কী সংকীর্্তন হইল। মধ্যাহ্নে জাফর ভোজন। সন্ধ্যায়



सम्पादक कर्तृक काय विवरण पाठ; तत्परे भारत वर्षीय आः मः प्रः सभार आचार्य अक्षान्पाद पण्डित वर श्रीयुक्त शशधर तर्कचूडामणि महाशय, “मर्त्य कि” एहे विषये एकटी वक्तृता करेन। साराह्, नारायण देवेर आरति ओ संकीर्तन हईराहिल।

२२ दिन। सुनोति संचारिणी सभार अधिवेशन छईराहिल। पूर्वार्हे अक्षेय पण्डितवर श्रीयुक्त कृष्णचन्द्र गोस्वामी महोदय कर्तृक श्रीमद्भागवत पाठ; तत्परे धर्म संगीत हईल। अपराह्, बालकगण कर्तृक समसरे स्तोत्र पाठ; तत्परे सम्पादक श्रीमान् दीन नाथ विश्वास कर्तृक सभार कार्य विवरण ओ श्रीमान् श्रीपति बन्धोपाध्याय ओ श्रीमान् डूपेशचन्द्र घोष कर्तृक क्रमाश्वरे “सुनोति” एव ओ “बालक दिगेर कर्तव्य” विषयक २ रचित प्रबन्ध पठित हईल। बालक वर्गेर रचना ओ कार्य कलाप येरूप भावे लिखित ओ सुसम्पन्न हईराह्, ताहा समालोचना करिले स्पर्धा विधाने बला बाहेते पारे ये, ये अतिप्रारे सभा स्थापित हईराह् तत् सिद्धिर आशार सकार हईराह्, एव तज्जना ताहारा ड्यगी पुशंसार योग्य सन्देह नाई। प्रबन्ध पठित हईले पर बांशीवर श्रीयुक्त कुमार शंकर प्रसन्न सेन महोदय सुनोति विषयिणी एकटी दीर्घ वक्तृता करेन। सङ्कार समय नारायण देवेर आरति हर।

२३ दिन। पूर्वार्हे अक्षान्पाद श्रीयुक्त गोस्वामी महाशय श्रीमद् भागवत पाठ; तत्परे भक्ति भाजन चूडामणिमहाशय “ईश्वरोपसना” विषयिणी एकटी सुदीर्घ वक्तृता करेन। तनि वैज्ञानिक प्रमाण द्वारा बुझाईरा दिलेन ये, यिनि ये भावे उपासना करुन ना केन सकलेई साकारेर उपासना करिरा थाकेन। ईश्वरेर सर्वदर्शित्व, सर्वकर्तृत्व; सर्वपालयितृत्व, सर्वनियन्त्र, एतत्ति ये सकल गुण द्वारा ताहाके लक्ष्य करिरा सुनिपुण भावे चिन्ता करा यार, ताहाते चिन्तकेर अन्तःकरणे गुण समूहेर मूल स्फूर्ति हस्तपद विशिष्ट आकृति (शिव विष्णु, एतत्ति) गठित ना हईरा कदाच थाकिते पारेन। वक्तृताटी अति हृदय

भोजन हुआ। अपराह् की सम्पादकजीने सभा का कार्य विवरण पढ़ सुनाया, तदनन्तर अहोरात्र पण्डितवर श्रीयुक्त शशधर तर्कचूडामणि, भारत-वर्षीय आर्थ्य ध० प्र० सभा के धर्माचार्य महाशय ने “धर्म क्या है” इस आशय पर एक वक्तृता की। सन्ध्या के समय नारायण देव की आरती की संकीर्तन हुए।

२४ रा दिन। सुनोति संचारिणी सभा का अधिवेशन हुआ प्रातःकाल की अक्षेय पण्डितवर श्रीयुक्त कृष्णचन्द्र गोस्वामीजी ने श्रीमद्भागवत पाठ किया, तदनन्तर धर्म संगीत हुआ। दोपहर की उपरान्त सभा का फिर अधिवेशन होने पर बालक गण एकतान से भगवत की स्तुति पाठ किये, अनन्तर दीननाथ विश्वास सभा के सम्पादकजीने सभा की कृति, श्रीमान् श्रीपति बन्धोपाध्याय की भूपेशचन्द्र घोष ने “सुनोति” की “बालकों का क्या करना चाहिये” इन आशयों पर निज २ रचित प्रबन्ध पढ़ सुनाये। बालकों की रचना की कार्य कलाप जिस रीति से लिखी गयी वो निर्वाह हुए, उस पर समालोचना करने से स्पष्ट प्रतीति होती है, कि जिस अभिप्राय से सभा स्थापित हुई है, वह सिद्ध होने की आशा अब सफल होने वाली है। इसलिये लड़कों को बहुत प्रशंसा करने चाहिये। प्रबंध पढ़ जाने पर बांशीवर श्रीमान् कुमार श्रीकृष्ण प्रसन्न सेन महोदय ने एक लम्बी वक्तृता नीति के विषय में की। संध्या की नारायण देव की आरती हुई।

२५ रा दिन। प्रातःकाल की पहले अहोरात्र श्रीयुक्त गोस्वामी जी ने श्रीमद्भागवत की व्याख्या की, तत्पश्चात् भक्ति भाजन चूडामणि महाशय ने “ईश्वरोपसना” इस आशय पर एक सुदीर्घ वक्तृता की। उन्होंने वैज्ञानिक प्रमाणों से यह भली भाँति समझा दिया कि जो जिस भाव से क्यों न ईश्वर की उपासना करे, साकार उपासना बिना उस से दूसरी कुछ बनती ही नहीं। भगवान के सर्वदर्शित्व, सर्वकर्तृत्व, सर्वपालयितृत्व, सर्वनियन्त्र आदि जितने गुणों से उस को उद्देश्य करके सुनिपुण भाव से चिन्ता की जायगा, उस से चिन्तक के हृदय में हस्तपदविशिष्ट आकृति (शिव, विष्णु, आदि) अर्थात् गुण समूह का मूल परिणाम उत्पन्न होता है। ईश्वर ही नान्वि एह दृश्य

হইয়াছিল। অপরাহ্নে ২ টা হইতে ৪ টা পর্যন্ত হরিনাম সংকীর্তন ও তদনন্তর শাস্ত্রালাপ হইলে অক্ষানন্দ ত্রিযুক্ত কুমার মহোদয় আতি বাখ্যোভার সহিত “আর্য্য ধর্মের প্রার্থতা” প্রতিপাদন করেন। বক্তৃতা অবশে প্রায় সমস্ত লোক মুগ্ধ হইয়াছিল। এ বেলা অনুমান ৬।৭ শত লোকের সভায় সমাগম হয়। সায়াহ্নে নারায়ণ দেবের আরতি, ও তাহার পর নগর সংকীর্তন হইয়া সভা ভঙ্গ হয় ইতি।

জনৈক সভা।

ওঁ নমো ভগবতে বাসুদেবায়।

বাঁকিপুুর।

বিগত ৯ই ভাদ্র হইতে ১১ই ভাদ্র পর্যন্ত বাঁকি-  
পুর আর্য্য ধর্ম সভার প্রথম বার্ষিকোৎসব নিম্ন  
লিখিত নিয়মানুসারে অতি ধুমধামের সহিত  
সম্পন্ন হইয়া গিয়াছে।

১ম দিন পূর্বাঙ্ক। ত্রি ত্রি ত্রিমস্তারারণের ঘোড়শো  
পচারে পূজা। ভারত বর্ষীয় আর্য্য ধর্ম প্রচারিণী  
সভার ধর্ম্যাচার্য্য অন্ধ্রের ত্রিপণ্ডিত শশধর তর্ক-  
চূড়ামণি মহাশয় কর্তৃক “ধর্মের আবশ্যকতা”  
বিবরণী বক্তৃতা ও তৎপরে কয়েকটি ধর্ম সঙ্গীত  
হইয়াছিল। অপরাহ্নে বেলা ৩।০ ঘটিকার সময়  
বাখ্যোবর ত্রিনত্রিযুক্ত বারু ত্রাকৃষ্ণ প্রসন্ন সেন  
মহাশয় কর্তৃক বক্তাবায় “আমাদের উৎসব”  
বিবরণী উৎসাহ সূচক একটি বক্তৃতা ও তৎপরে  
নগর সংকীর্তন হয়।

৩য় দিন। প্রত্যুষে নগর সংকীর্তন হয়। দুই  
দিনই সংকীর্তন কালে এখানকার রাজপথ গুলি  
একটি অপূর্ব আধারণ করিয়াছিল। বাস্তবিক  
ইতি পূর্বে আর কেহ কখন এখানকার জনগণকে  
এরূপ আনন্দ সহকারে হরিনামে উন্মত্ত হইতে  
দেখেন নাই। রাজ পথ গুলি লোকে লোকা  
কর্ণ এবং অপরের কথা কি বলিব বিশ্ববিদ্যালয়ের  
উপাধিকারী অনেক গুলি কৃতবিদ্য যুবককে  
যোগদান করিতে দেখিয়া আমাদের আহ্লাদের  
পরিমীমা ছিলনা। অপরাহ্নে বেলা ৩টার সময়

মনহরনী হুইল। অধিক ক্রা আতামোঁ কে আখী  
মেঁ বে আঁসু কী ধারা বহু গয়ী য়ো। দোপহর কে  
উপরান্ত দো বজে সে চার বজে তক হরিনাম সংকো-  
র্তন বো তদনন্তর শাস্ত্রার্থ হোনেপর অধাঅদ আ  
মান কুমার মহাশয় নে বড়ী বাগমোতা কে সাথ  
আর্য্য ধর্ম কী অঁচতা” প্রতিপাদন কিয়া। অ্যাখ্যান  
সুনকে সবকোই মোহিতহো গয়েথে। ইস সময় কম বে  
কম ছ: সাত সৌ পুরুষ সমা মেঁ ত্রিযমান থে অঁখা  
কী নারায়ণ কী আরতি বো তত্পশাত্ নগর সংকীর্ত-  
ন হো সমাবিসর্জন হুই।

জনৈক সভা

বাঁকীপুর।

ভাদ্র কৃষ্ণ ষষ্টমী সে लेकर दशमी तक यहां की  
आर्य्य धर्म सभा का प्रथम वार्षिक उत्सव नीचे  
लिखी हुई रीति से अत्यन्त धुम धाम सहित सम्पन्न  
हो गया।

१म दिन, प्रातः काल। त्री त्री त्री मन्मारायण  
जी की पूजा घोड़य उपचार सहित हुई अथा के  
योग्य औपंडित शशधरतर्क चूडामणि, भारत बर्षीय  
आर्य्य धर्म प्रचारिणी सभा के धर्म्याचार्य्य महाशय  
ने “धर्म की आवश्यकता” इसभाष्य पर एक वक्तृता  
करी। तदनन्तर धर्म संगीत हुआ। दोपहर  
के उपरान्त साढ़े तीन बजे से बागमोवर औलओ  
युक्त औलणप्रसन्न सेन जी ने बंग भाषा में “हमारा  
उत्सव” इस विषय पर एक उत्साह पूर्ण वक्तृता की,  
तत् पश्चात् नगर संकीर्तन हुआ।

दुसरा दिन। प्रातःकालको फिर नगर संकीर्तन  
हुआ दोही दिन नगर संकीर्तन के समय यहां की  
राज मार्ग सब एक अपूर्व ओ धारण करी यो।  
बस्तु तस्तु इसके पहले इतने भद्र जगों की एकट्ठे  
हरिनाम करते हुए कभी कोइ यहाँ देखा नहीं।  
राज मार्ग में बड़ी भौड़हुइसी अधिक क्रा बखान  
करे विश्वविद्यालय से उपाधी पाये हुए पनेक कत  
विद्य युवा की इसमें निकते देखकर हमारा अपरिसीन  
आनन्द उपजा। दोपहर के उपरान्त तीन बजे हरि-  
ओ की कत पादि दिने जाने पर सभा का फिर



सभाधिवेशनन हय । पुरे सभार सम्पादक श्रीयुक्त  
बाबू पूर्णचन्द्र मुखोपाध्याय महाशय कर्तृक सभार  
कार्य विवरण पाठ हईले पर भागलपुरेर छटपटौ तकाव  
तलाओ नामक स्थानेर आर्य धर्म प्रचारिणी सभार  
सभापति श्रीकृष्ण पण्डित नित्यानन्द मिश्र  
महाशय हिन्दी भाषाय ओ मानावर श्रीयुक्त श्रीकृष्ण  
असन्न सेन महाशय “आमादेर पैतृक सम्पत्ति”  
विषयिणी वक्तृ भाषाय एकटी उद्दीपना पूर्ण वक्तृता  
करेन । वक्तृत्वयेर उद्देश्य पूर्ण आभातेज  
सञ्जुत अलुप्त वक्तृता अवग करिन्ना सभाय वाक्छि  
मात्रेऽई हृदय आर्याभावे उत्तेजित हईया छिल ।  
३य दिन पूर्वाह्न । पाण्डिताग्रगण्य श्रीशशधर तर्कचूड़ा  
मणि महाशय कर्तृक “संस्था ओ पूजा” विषयिणी  
वक्तृता हईवार कथा छिल किन्तु शनिवार “धर्मेर  
आवश्यकता” विषयिणी वक्तृता शेष ना हओयार  
ताहार अवशिष्टांश ओ केवल पूजा सम्बन्धे एकटी  
वक्तृता हय । अपराह्न बेला ७ टार समय एई  
सभासुर्गत सुनौति सकारिणी सभार अधिवेशन  
हय । सभार सम्पादक श्रीमान बलराम गुप्त  
शारीरिक अस्वस्थता वशतः अनुपस्थित थाकाय एई  
सभार जनैक सभ्य श्रीमान पंचिकड़ा बन्ध्यापाध्याय  
सभार कार्य विवरण विवृत करिन्ना सुयोग्य सम्पादक  
केर लिखित एकटी पद्य पाठ करेन । पुरे  
एई सभार अन्यतर सभ्य श्रीमान पूर्णचन्द्र सिंह  
“सुख” विषयिणी एकटी रचना पाठ करिले पर  
श्रीमान हृदय नाथ घोषाल श्रम रचित एकटी  
पद्य पाठ करेन । सुकुमार मति बालकगणेर  
सुललित रचना सुनि देखिया आभरा परितोष  
लाभ करियाहि । अतःपर श्रीकृष्ण बाबू “सुनौति”  
सम्बन्धे एकटी सुदीर्घ वक्तृता करिले पर उक्त  
सभार उपदेष्टा श्रीयुक्त बाबू वानोनाथ बन्ध्या-  
पाध्याय वि, ए, महाशय श्रीकृष्ण बाबूके धन्यवाद  
प्रदान करिलेन । अद्य उद्भवेर शेष दिन  
ताहातेई आर्य धर्म सभार सम्पादक श्रीयुक्त बाबू  
पूर्णचन्द्र मुखोपाध्याय महाशय सभार पक्ष हईते  
वक्तृगणके धन्यवाद प्रदान करिलेन । तदुत्तर

कार्य सम्पादक महाशय ने सभा का कार्यविवरण  
पाठ किया । तदनन्तर भागलपुर छटपटौ तकाव  
आर्य धर्म प्रचारिणी सभा के सभापति श्रीकृष्ण  
पण्डित नित्यानन्द मिश्र जीने हिन्दी भाषा में  
श्रीर मानावर श्रीयुक्त श्रीकृष्ण असन्न सेन महाशय  
ने “हम लोगों की पैतृक सम्पत्ति” इस आशय  
पर बंग भाषा में एक उद्दीपना पूर्ण वक्तृता की ।  
वक्ता महोदयों की उत्साह पूर्ण आर्य तेज सम्भूत  
ज्वलन्त वक्तृता श्रवण कर मभास्य श्रीता मात्र का  
हृदय आर्य भाव से उत्तेजित हुआ ।

३य दिन, पूर्वाह्न । पाण्डिताग्रगण्य श्रीशशधर  
तर्कचूड़ामणि महाशय जीने “संस्था की पूजा” इस  
विषय पर वक्तृता देनेवाली थी । परन्तु शनिवार  
की ‘धर्म की आवश्यकता’ विषय शेष न होने  
के कारण उसका शेषांश और पूजा सम्बन्धी एक  
वक्तृता हुई । अपराह्न ६ बजे इस सभा के अन्तर्गत  
सुनौति संचारिणी सभा का अधिवेशन हुआ । सभा  
के सम्पादक श्रीमान बलराम गुप्त के पीड़ित रहने  
के कारण सभा का जनैक सभ्य श्रीमान पंचिकड़ी  
बन्ध्यापाध्याय सभा का कार्य विवरण पाठ करके  
सुयोग्य सम्पादक का लिखा हुआ एक पद्य पाठ  
किया । तदनन्तर सभा के अन्यतर सभ्य श्रीमान  
पूर्णचन्द्र सिंह ‘सुख’ विषयिणी एक रचना पाठ करने  
पर श्रीमान हृदयनाथ घोषाल रचित एक पद्य  
पाठ किया । सुकुमार मति बालक गण की सुललित  
रचना देख कर हम लोगों की असोम आनन्द  
प्राप्त हुआ । अतःपर श्रीकृष्ण बाबू ने ‘सुनौति’  
सम्बन्धी एक सुदीर्घ वक्तृता की तत्पश्चात् उक्त  
सभा का उपदेष्टा श्रीयुक्त वानोनाथ बन्ध्यापाध्याय  
वि, ए महोदय श्रीकृष्ण बाबू को धन्यवाद प्रदान  
किये । आज उद्भव का शेष दिन है इसलिये  
आर्य धर्म सभा के सम्पादक श्रीयुक्त बाबू पूर्णचन्द्र  
मुखोपाध्याय महाशय सभा की ओर से वक्तागण को

श्रीकृष्ण बाबू सभार धर्मवाद आर्य्य श्रावि गणके  
उत्सर्ग करानेसुत्र सनातन आर्य्य धर्म अनुशोचन  
कारवार जन्य सभार सकलके अनुरोध करिलेन ।  
परे परम्परे जातृतावे आलिङ्गन करिले पर  
सभा भङ्ग हईल ।

भागलपुर, जामालपुर, मज्जरपुर आदि विदे-  
शीय सभार कतकगुलि सभा आगमन करिया आमा-  
देर उत्सवे सम्मिलित हईयाछिलेन ।

उपसंहार काले ईह। वक्तृता ये उत्सवेर  
अनुष्ठाने ओ सुयोग्य वक्तृगणेर सारगर्भ वक्तृताते  
अधिकांश आर्य्य सन्तानेर हृदय आर्य्यतावे आ-  
प्तुत हईयाछे सन्देह नई । चूड़ामणि महाशयेर  
सारवान विज्ञान पूर्ण आर्य्य शास्त्र व्याख्यान श्रवण  
करिया एथानकार युवक रुन्देर अन्तरे एकटा  
नवीन भावेर उदय हईयाछे । आर्य्य श्रावि गणेर  
गुण गरिमा श्रवण, आर्य्य शास्त्र पाठ, आर्य्य गण  
आचरित कार्य्य कलाप अवगत हईवार जन्य अने-  
केई वास्तु । बलिते कि एई नवभाव परवश  
हईयाई तौहार। चूड़ामणि महाशयके किरिद्विषम  
एथाने राखिते बाध्य हईयाछिलेन । चूड़ामणि  
महाशय एताह सम्झार पर वाचनिक वक्तृता द्वारा  
तौहादेर सन्देह राशि अनेक परिमाणे विदूरित  
करिया दिया गियाछेन । ऐह। सामान्य आनन्देर  
विषय नई । उपर्युपरि सात आठ दिन वक्तृता  
हईयाछिल । ये महाशय यत्ने चूड़ामणि महाशय  
भारत वर्षीय आर्य्य धर्म सभार धर्माचार्य्येर पदे  
नियुक्त हईयाछेन परम मङ्गलमय विधाता तौहार  
मङ्गल विधान करुन ।

आमरा आशा करि ये धर्म सभार सभा गण नया-  
अनुष्ठानेर सहित सम्मिलित हईया सभार श्रीकृष्ण  
साधने सर्वदा सचेत थाकिवेन ।

जनैक सभासद ।

भारतवर्षीय आर्य्य धर्म आचारिणी सभार कार्य्यार्थ  
निम्न लिखित महाशय गण एककाीन दान करि-  
याछेन ।

धर्मवाद दिधे । इस के अनन्तर श्रीकृष्ण बाबू  
सभा का धर्मवाद आर्य्य श्रावि गण पर उत्सर्ग करके  
सनातन आर्य्य धर्म अनुशोचन के लिये सभाका  
सब को अनुरोध किया । तत्पश्चात् परस्पर भ्रातृ  
भाव से मिलने के वाद सभा विसर्जन हुई ।

भागलपुर, जामालपुर, मुजफ्फरपुर आदि विदे-  
शीय सभाओं के सभ्यगण हम लोगों के उत्सव में भा-  
गले थे ।

अन्त में यह कहना है कि उत्सव के अनुष्ठान  
को सुयोग्य वक्तागण को सार गर्भ वक्तृता से अधि-  
कांश आर्य्य सन्तानों के हृदय आर्य्य भाव से परि-  
पूर्ण हुये इस में कुछ भी सन्देह नहीं । चूड़ामणि  
महाशय का सारवान विज्ञान पूर्ण आर्य्य शास्त्र का  
व्याख्यान सुन कर यहां के युवकगण के हृदय में  
एक नवीन भाव उदय हुआ है । आर्य्य श्रावि गण  
को गुण गरिमा, आर्य्य शास्त्र, आर्य्य गण आ-  
चरित कार्य्य कलाप जानने के लिये बहुतेरे  
पुरुष व्याकुल हुये हैं । अधिक क्या इस नवीन  
भाव से उत्तेजित होकर वे लोग चूड़ामणि महाशय  
को कुछ दिन तक रहने के लिये स्वीकार कराये ।  
बड़े आनन्द का विषय है कि प्रतिदिन संध्या के  
उपरांत चूड़ामणि महाशय ने वाचनिक वक्तृता  
द्वारा उन लोगों का अनेक सन्देह निवारण किया ।  
लगातार सात आठ दिन वक्तृता हुई । जिन महा-  
त्मा के यत्न से चूड़ामणि महाशय भारतवर्षीय आर्य्य  
धर्म सभा के धर्माचार्य्य नियुक्त हुये हैं, परम मं-  
गलमय परमेश्वर उनका मंगल करे ।

हम लोग आशा करते हैं कि धर्म सभा के  
सभ्यगण नवीन अनुराग के सहित मिलकर सभा  
को उत्ति साधन के लिये सर्वदा सचेत रहेंगे ।

जनैक सभासद ।

निम्न लिखित महात्मा गण भारतवर्षीय आर्य्य धर्म  
प्रचारिणी सभा का कार्य्यार्थ एक काकीन दान  
किये हैं ।

শ্রীযুক্ত রায় শ্বেতাভ চাঁদ নাহার বাহাদুর

আজিম গঞ্জ

৩৫৭

শ্রীযুক্ত বাবু বংশীধর রায় মুরশিদাবাদ

২০৭

বিবিধ ... ... কান্দী

৫৭

## পুস্তক প্রাপ্তি স্বীকার।

শ্রীযুক্ত বাবু শ্বেতাভ চন্দ্র নাহার মহাশয় কর্তৃক প্রকাশিত “নৃসিংহ চম্পু কাব্যম্,” “আত্মানুশাসন” ও “প্রশ্নোত্তর মালা”।

## সমালোচনা।

১। শঙ্করাচার্য্য। শ্রীযুক্ত বাবুদ্বিজ দাস দত্ত এম এ কর্তৃক ইংরাজিতে ব্যাখ্যাত। নং ১৪ কলেজ স্কোয়ার কলিকাতায় প্রাপ্য। মূল্য ৬০ পাই। ইহাতে শ্রীমৎ শঙ্করাচার্য্যের মত, বিশ্বাস ও জীবনী সংক্ষিপ্ত ভাবে লিখিত হইয়াছে। ভারতবর্ষে বৌদ্ধ গণ কর্তৃক ভয়ানক ধর্ম্ম বিপ্লব কালে যিনি অবতীর্ণ না হইলে হয় তো আর্য্যদিগের পরম বৈদিক ধর্ম্ম এতদিন লুপ্ত হইয়া যাইত, সেই মহাপুরুষকে অবলম্বন করিয়া পুস্তিকা খানি লিখিত হইয়াছে দেখিয়া আগরা সুখী হইলাম। লেখক স্থানে ২ আচার্য্যকে মূর্ত্তি পূজার বিরোধী মনে করিয়াছেন কিন্তু বস্তুতঃ তাহা নহে, তিনি বৌদ্ধ গণেরই বিরোধী ছিলেন, ব্রাহ্মণ্য ধর্ম্মের কোন সম্প্রদায়েরই বিরোধী ছিলেন না। তিনি আত্মজ্ঞান সম্বন্ধে অধিক উপদেশ দিতে গিয়া কর্ম্ম ও উপাসনার প্রতি সময়ে ২ উপেক্ষা করিয়াছেন কিন্তু তাহা উচ্চাধিকারীদিগের জন্য। তিনি যে উপাসনা ও কর্ম্মের প্রতি আত্মা প্রকাশ করিতেন তাহা তাঁহারই অনেক গ্রন্থে প্রমাণ পাওয়া যায়। যাহা হউক লেখক আচার্য্যের গুণ গৌরব ঘোষণার প্রবৃত্ত হওয়ায় আমাদের ধন্যবাদার্থ হইয়াছেন।

২। সারি মালা। ইহাতে নো সঞ্চালনে গায়নোপযোগী কতিপয় গীত লিপিবদ্ধ হইয়াছে। ইহার শেষ সংগীতটী সুললিত ও মধুর হইয়াছে

শ্রীযুক্ত রায় শ্বেতাভ চাঁদ নাহার বাহাদুর

আজিমগঞ্জ ১৫৭

শ্রীযুক্ত বাবু বংশীধর রায় মুরশিদাবাদ ২০৭

বিবিধ- ... ... কান্দী — ৫৭

## পুস্তক প্রাপ্তি স্বীকার।

শ্রীযুক্ত বাবু শ্বেতাভ চন্দ্র নাহার মহাশয় কে লিপ্যয়ি হই “নৃসিংহচম্পু কাব্যম্”, “আত্মানুশাসন, ও “প্রশ্নোত্তর মালা”।

## সমালোচনা।

১। শঙ্করাচার্য্য। শ্রীযুক্ত বাবু দ্বিজদাসদত্ত এম, এ মহাশয় নে শংকরেজী মে' ব্যাখ্যান ক্রিয়া। নং ১৪, কালিজ স্কোয়ার, কলকাতা মে' মিলতা হৈ। মূল ৬০ পাই। ইহা মে' সংক্ষেপ করকে শ্রীমত শঙ্করাচার্য্য কে মত, বিশ্বাস ও জীবন চরিত লিখি গয়ে হৈ। ভারতবর্ষ মে' বৌদ্ধ লোগ জব ভয়ংকর ধর্ম্ম বিপ্লব মচায়ে থে, ওস সময় জিন কে অবতার হুই বিনা আজ আর্য্য জাতি কে পরম বৈদিক ধর্ম্ম কা পত্তা তক নহী মিলতা, ওস মহাপুরুষ কে আশ্রয় কর যহ পুস্তিকা লিখী গয়ে, ইহা থে হম বড় প্রসন্ন হুই। লেখক নে স্থান ২ মে' আচার্য্য কে মূর্ত্তি পূজা কা বিরোধী ঠহরায়া, কিন্তু বস্তুত বহু ভ্রম হৈ। বৌদ্ধ গণহী কে বিরোধী থে। ব্রাহ্মণ ধর্ম্ম কে किसी সম্প্রদায় কে বিরোধ করনা ওনকা অভিপ্রায় ন থা। আত্ম জ্ঞান সম্বন্ধী উপদেশ देने মে' ওনকো সময়সময় কর্ম্ম ও উপাসনা কেওর উপেক্ষা করনে পড়ী কিন্তু বহু উৎকৃষ্ট অধিকারিও কেলিয়ে। বৌ উপাসনা ও কর্ম্মপর আস্থা रखते उनके निजरचित बहुत ग्रंथ उसका प्रमाण है। जो ही आचार्य के गुण गौरव घोषणार्थ लेखक ने जो प्रवृत्त हुए, तदर्थ हम धन्यवाद देते हैं।

২। সারি মালা। নাম পর জাতি ২ গাবনে যোগ্য খোঁড়ীসী গীত হসমে হৈ। ইহাকা শেষ ভজন ললিত ও মধুর হৈ।

## विदेशीय एजेण्टगणेर नाम ।

श्रीयुक्त बाबू केदार नाथ गंगोपाध्याय	भागलपुर
„ यादवचन्द्र बन्द्योपाध्याय	मतिहारो
„ जगद्वन्धु सेन	लाहोर
„ पूर्णचन्द्र बन्द्योपाध्याय	रामपुरहाट
„ बिहारिलाल राय	जामालपुर
„ रमेश चन्द्र सेन	ऐ
„ हेमचन्द्र दास	ऐ
„ मतिलाल सेन	मुरशिदाबाद
„ पूर्णचन्द्र मुखोपाध्याय	बाँकीपुर
„ राज कृष्ण दास	बहरमपुर
„ ईन्द्रनारायण चक्रवर्ती	गया
„ अक्षय कुमार चट्टोपाध्याय	

७७ नं० कालेज ट्रीट, कलिकाता

एजेण्ट महोदय गणके तत्त्वस्थानीय ग्रहक महाशय गण मूल्यादि दान करिले, आम्नि प्राप्ति हवे ।

## धर्म प्रचारकसंक्रासु नियमावली ।

१ । यदि कौन धर्मात्मा आर्याधर्मर प्रतिष्ठा रक्षा ओ प्रचार निमित्त बाङ्गला अथवा हिन्दी-भाषाय वा उन्नत भाषातेई कौन विषय लिखिआ प्रेरण करेन, तवे लिखित विषयटी सारवान विवेचना हईले, आनन्द ओ उन्साह-सहकारे धर्म प्रचारके प्रकाश करा हईवे ।

२ । धर्म प्रचारकेर मूल्य ओ एतन् संक्रासु पत्रादि आमार नामे पाठाईते हईवे । पत्र विगारिं हईले, गृहीत हईवे ना ।

३ । मूल्य साधारणतः पोस्टाल मणिआर्डरे, पाठाईवेन । डाक टिकिटे मूल्य पाठाईते हईले, अर्द्ध आना मूल्येर टिकिट प्रेरण करिवेन ।

४ । धर्म प्रचारकेर डाकमागुल सह अग्रिम वार्षिक मूल्येर नियम तिन प्रकार ।

उत्तम कागजे मुद्रित वार्षिक	३।००	प्रतिखण्ड	।००
मध्यम	२।००	„	।०
साधारण	१।००	„	००

धर्म प्रचारक कार्यालय । } श्रीपूर्णानन्द सेन  
मिसिर पोखरा । बाराणसी } कार्याध्यक्ष ।

एई पत्र प्रति पूर्णिमाते भारतवर्षीय आर्याधर्म प्रचारिणी सभा उन्साहे प्रकाशित हईसा थाके ।

## विदेशी एजेण्ट महाशयों के नाम ।

श्रीयुक्त बाबू केदारनाथ गंगोपाध्याय	भागलपुर ।
„ यादवचन्द्र बन्द्योपाध्याय,	मतिहारो ।
„ जगद्वन्धु सेन,	लाहोर ।
„ पूर्णचन्द्र बन्द्योपाध्याय,	रामपुरहाट ।
„ बिहारोलाल राय,	जामालपुर ।
„ रमेशचन्द्र सेन,	„
„ हेमचन्द्रदास	„
„ मतिलाल सेन	मुरशिदाबाद ।
„ पूर्णचन्द्र मुखोपाध्याय	बाँकीपुर ।
„ राजकृष्ण दास	बहरमपुर ।
„ अक्षय कुमार चट्टोपाध्याय,	६६ नं०, कलेज ट्रीट कलकत्ता ।

एजेण्ट महाशयों के पास तत्तत् स्थान के ग्राहक महाशयगण मूल्यादि दें तो मैं पाजड़ा ।

## धर्म प्रचारक सम्बन्धी नियमावली ।

१ । यदि कोई धर्मात्मा आर्यधर्म को प्रतिष्ठा रक्षा और प्रचार करने के निमित्त बाङ्गला अथवा देवनागरी में वा इन दोनों भाषाओं में कोई प्रस्ताव लिखके भेजे तो लिखित विषय सारवान ज्ञात होने से आनन्द ओ उत्साह सहित धर्मप्रचारक में प्रकाश किया जायगा ।

२ । धर्मप्रचारक पत्र का मूल और इस पत्रसम्बन्धी पत्रादि मेरे पास भेजना हीगा । पत्र वैरिं होतो नहीं लिया जायगा ।

३ । मूल्य सम्भवतः पोस्टाल मनि अर्डर करके भेजना । यदि डाक टिकिट में भेजे तो आध आनिय टिकिट करके भेज दें ।

४ । धर्मप्रचारक का डाक कर सहित अग्रिम वार्षिक मूल तीन प्रकार का है ।

उत्तम कागज पर छपाहुआ वार्षिक	३।००	प्रतिसंख्या	।०
मध्यम	२।००	„	।०
साधारण	१।००	„	००

धर्म प्रचारक कार्यालय । } श्रीपूर्णानन्द सेन  
मिसिरपोखरा, बाराणसी } कार्याध्यक्ष ।

यह पत्र प्रति पूर्णिमा में भारतवर्षीय आर्यधर्म प्रचारिणी सभा के उत्साह से प्रकाशित होता है ।



“এক এব সুহৃদ্বর্গী নিধনেঃপ্যনুযাতি যঃ ।  
শরীরেণ সমং নাগং সর্বগন্যত, গচ্ছতি ॥”

“एक एव सुहृद्वर्गी निधनेऽप्यनुयाति यः ।  
शरीरेण समं नागं सर्वगन्यत, गच्छति ॥

৬ষ্ঠ ভাগ । } শকাব্দা ১৮০৫ ।  
৬ষ্ঠ সংখ্যা । } আশ্বিন—পূর্ণিমা ।

৬ষ্ঠ ভাগ । } শকাব্দা ১৮০৫ ।  
৬ষ্ঠ সংখ্যা । } আশ্বিন পূর্ণিমা ।

সদগুরু কপাল আত্ম জ্ঞান লক্ষণবোঝার  
উক্তি ।

“জগৎ কেন বানোতু কুহলীন মিদং জগৎ ।  
অধুনেষ ময়া দৃষ্টং নাস্তি কিং মহদদ্ব্যুতং ॥”

হে গুরো! এই মাত্র যে জগৎ প্রত্যক্ষ প্রত্যক্ষ  
হইতেছিল, তাহা কোথায় গেল! কে তাহাকে  
হরণ করিল! কোথায় বা তাহা বিলীন হইল!  
এই যাহা দেখিতেছিলাম, আর তাহা দেখিতে  
পাইনা, কি আশ্চর্য! দেখিতে ২ সমস্ত কোথায়  
লুকাইল! ।

“কিং হেরং কিমুপাদেয়ং কিমন্যং কিং বিলম্বণং ।  
অথতানন্দ পৌষ পূর্ণে ব্রহ্ম মহার্ণবে ॥  
ন কিঞ্চিদজ পশ্যামি নশৃণোমি ন বেদ্যহং ।  
স্বাত্মৈব সদানন্দ রূপেণাস্মি বিলম্বণঃ ॥”

অথতানন্দ পৌষ পূর্ণ ব্রহ্ম স্বরূপার্ণবে কোন্  
পদার্থ হের কি বা উপাদেয়, কি এছ কিই বা  
পরিত্যজ্য তব্বা আমি কিছুই বুঝিতে পারিতে-

সদগুরু কী কৃপা সে ব্রহ্মাত্ম বুদ্ধি লাভ কিয়ে উহ  
শিষ্যকৌ উক্তি ।

“জগৎ কেন বানোতু কুহলীন মিদং জগৎ ।  
অধুনেষ ময়া দৃষ্টং নাস্তি কিং মহদদ্ব্যুতং ॥”

হে গুরো! আমি जिस जगत का मैं प्रत्यक्ष कर  
रहा था, वह कहाँ गया! किसने उसको हर  
लिया! कहाँ जा वह लीन हो गया! अभी जो  
देख पड़ता था, वह फिर नहीं मिलता! आश्चर्य  
है! अब भर में ये सब कहाँ लुक गये! ।

“किंचिदं किमुपादेयं किमन्यं किं विलम्बणं ।  
अथतानन्दे पौष पूर्णे ब्रह्म महार्णवे ॥  
न किञ्चिदज पश्यामि न शृणोमि न वेद्यहं  
स्वात्मैव सदानन्द रूपेणस्मि विलम्बणः ॥

अथतानन्द रूप अमृत से पूर्ण ब्रह्म स्वरूप  
महा समुद्र में कौन पदार्थ हेय वा क्या उपदेय,  
क्या त्याज्य वो क्या त्यज्य है सो मैं कुछ भी समझ



ছিন্না : এখানে আমি কিছুই দেখিতেছি না, অসং  
আনন্দ স্বরূপ বিরাজমান আছে, ইহাই অনুভব  
করিতেছি মাত্র।

“মনোহং কৃতকৃত্যোহং বিমুক্তোহং ভবগ্রহাৎ  
নিভানন্দ স্বরূপোহং পূর্ণোহং তদনুগতঃ ॥”

হে গুরো! আমি হোগারই অনুগ্রহে সংসার  
গ্রহ হইতে মুক্ত হইলাম, ধন্য হইলাম, কৃত কৃত্য  
হইলাম ও আনন্দ স্বরূপ পরব্রহ্মৈকরূপতায় লাভ  
করিলাম।

“অকর্তাহমতোক্তাহমবিকারোহমক্ৰিয়ঃ ॥”

শুদ্ধবোধ স্বরূপোহং কেবলোহং সদাশিবঃ ॥”

হে গুরো! আজ আমি অকর্তা, অতোক্তা, নি-  
র্বিকার ও নিষ্ক্রিয় হইলাম এবং বিশুদ্ধ বোধ  
স্বরূপ একরূপ বিদ্যমান সাক্ষাৎ সদানন্দ শিব  
স্বরূপ হইলাম।

“নাহমিদং নাহমদোহপ্যভয়োরবভাসকং পরং শুদ্ধং  
বাহ্যভান্তর শূন্যং পূর্ণং ত্র্যক্ষা দ্বিতীয়মেবাং ॥”

আমি ইহা নহি, আমি উহাও নহি অথচ আমি  
ত্ৰিষ্ণু উভয়ের বিদ্যমানতা নাই। পরিপূর্ণ অদ্বিতীয়  
ত্র্যক্ষ স্বরূপ আমি।

“নারায়ণোহং নরকান্তকোহং

পুরান্তকোহং পুরুষোহমহাশঃ।

অথও বোদাহমশেষ সাক্ষী

নিরীশ্বরোহং নিরহং নির্দমঃ ॥”

সমস্ত জীবের আত্মা স্বরূপ আমিই নারায়ণ,  
আমিই নরকান্তক, আমিই ত্রিপুরান্তক (পুর-  
শব্দের অর্থ শরীর। শূল, সূক্ষ্ম ও কারণ এই তিন  
প্রকার শরীর “ত্রিপুর” পদের বাচ্য। আত্ম-  
জ্ঞান উদয় হইলেই এতদ্বিধ শরীরের পুনরুৎ-  
পত্তি হয় না, এই জন্য জ্ঞান স্বরূপ সদাশিবের  
নাম ত্রিপুরান্তক) আমিই ঈশ্বর, আমি অথও  
জ্ঞান স্বরূপ, সকল কার্যের সাক্ষী। আমার কেহ  
ঈশ্বর নাই, আমার ভাষিতও নাই আমার সমতুল্যও  
নাই।

“কর্তাপি বা কারয়িতাপি নাহং

ভোক্তাপি বা ভোজয়িতাপি নাহং।

দ্রষ্টাপি বা দর্শয়িতাপি নাহং

সোহং অসং জ্যোতিরনীদৃগামা ॥”

আমি কর্তা নহি, আমি কারয়িতা নহি, আমি ভোক্তা

নহি সত্তা হু। যহা মৈ ন কুচ্ছ দেখ সত্তা হু। যা  
কুচ্ছ সুন সত্তা হু অথবা কুচ্ছ জ্ঞান সত্তা হু।  
স্বয়ং আনন্দ স্বরূপ মৈ বিরাজমান হু, ইতনা মর  
মুম্ব অনুভব হোতা হৈ।

“ধন্যঃ স্ততঃকালোহং বিমুক্তোহং ভবগ্রহাৎ।

নিভানন্দ স্বরূপোহং পূর্ণোহং তদনুগতঃ ॥”

হে গুরো! আপনীর জগা মৈ হম সংসার রূপ গ্রহ  
মৈ মুক্ত হুয়, হম ধন্য হুয়, হম স্ততঃকাল হুয় বা  
আনন্দ স্বরূপ পরব্রহ্ম মৈ অভিন্ন বন গয়ে।

“অকর্তাহমভোক্তাহমবিকারোহমক্ৰিয়ঃ।

শুদ্ধবোধ স্বরূপোহং কেবলোহং সদাশিবঃ ॥”

হে গুরো! আজ মৈ মৈ অকর্তা, অভোক্তা, নিষ্কি-  
কার বৌ ক্রিয়া রহিন হুয়া বৌ বিশুদ্ধ বোধ স্বরূপ  
একরূপ বিদ্যমান সাক্ষাৎ সদানন্দ শিব রূপ বন  
গয়া।

“নাহমিদং নাহমদোহপ্যভয়োরবভাসকং পরং শুদ্ধং  
বাহ্যভান্তর শূন্যং পূর্ণং ত্র্যক্ষা দ্বিতীয়মেবাং ॥”

মৈ যহ নহৌ হু, মৈ বহ নহৌ হু, কিন্তু মুম্ব  
বিনা ইন দৌনৌ হৌ বৌ বিদ্যমানতা নহৌ হু, মৈ  
পরম শব্দ স্বরূপ হু। মৈরা বৌতর বৌ বাহর নহৌ,  
পরিপূর্ণ অদ্বিতীয় ব্রহ্ম রূপ মৈ হু।

“নারায়ণোহং নরকান্তকোহং

পুরান্তকোহং পুরুষোহমহাশঃ।

অথও বোধোহমশেষ সাক্ষী

নিরীশ্বরোহং নিরহং নির্দমঃ ॥”

সমস্ত জীবীর কৈ প্রাণ্য রূপ মৈ হৌ নারায়ণ হু,  
মৈ হৌ নরকান্তক হু, মৈ হৌ ত্রিপুরান্তক হু, (পুর-  
শব্দ কৈ অর্থ শরীর। শূল, সূক্ষ্ম বৌ কারণ যৈ  
তৌন প্রকার কৈ শরীর ত্রিপুর কহাটা হৈ। প্রাক-  
জ্ঞান হৌন মৈ ইন তৌনৌ শরীর কৌ উৎপত্তি মিট  
জাতৌ হৈ, ইন লিয়ে জ্ঞান স্বরূপ সদাশিব কৈ নাম  
ত্রিপুরান্তক হৈ) মৈ হৌ ঈশ্বর হু, মৈ অথও জ্ঞান  
স্বরূপ হু, সমস্ত কার্য কৈ মৈ সাক্ষী রূপ হু। মৈরা  
কৌ হু ঈশ্বর নহৌ, মৈ অহ বৌ সম ভৌ নহৌ হৈ।

“কর্তাপি বা কারয়িতাপি নাহং

ভোক্তাপি বা ভোজয়িতাপি নাহং।

দ্রষ্টাপি বা দর্শয়িতাপি নাহং

সোহং অসং জ্যোতিরনীদৃগামা ॥”

মৈ কর্তা নহৌ হু, মৈ কারয়িতা নহৌ হু, মৈ ভোক্তা

“ह आमि भोगा नहि, आमि जूको नहि, आमि  
श्रम नहि, आमि अरुं जगत् ज्योतिः स्वरूप  
विराज करितेछि ।

“नमस्तस्मै सदेकस्मै कस्मै चिदहम नमः ।

यदेतद्विश्वरूपेण राजते गुरु राजते ॥”

तोमार द्वाराई एहे अपुनर ज्ञानोदय हईल,  
ह गुरो ! तोमाके नमस्कार करि, तूमि सत् ओ  
एक स्वरूप हईयाओ विचित्र जगत् रूपे प्रकाशित  
हईयाछ, तोमाके नमस्कार करि, तूमि सकलैर  
अनुवासी हईरा विराज करिदेछ, हे गुरो  
तोमाके बार २ नमस्कार करि ।

## शुभमस्तु । ✓

भारतैर एकटी प्रधान पर्रह चलिया गेल ।  
गरुं समागमे भारत येन कि मोहन गज्जे  
मारि उठियाछिल । वज्र विभाग दुर्गोत्सवे ओ  
अनाना विभाग रामलीला रमणीयता शोक  
मन्तापानि समस्त हई बुलियाछिल । चारिदिनेर  
काग्यालर वस्त्र । अवासी गृहागत, पिता माता  
भाई, भ्रातृ पुत्रादि सह समुचित सज्जावणे मने २  
कत हई आह्लाद । पूजा, पाठ, गीत, वाद्य, नृत्त,  
उद्यम, उद्गाह, आनन्दे उद्गासे भारत कयैक  
दिन भासिल, आवार ये भारत गेई भारत हईल ।  
येन भारते “सुख सप्तेर एकटी अभिनय हईरा  
गेल । विजय दशमीते दुर्द्ध दशानन बिनके  
हईल, संगार सुख ओ शास्त्रि अत्र बहिल ।  
जीवेर हृदये प्रेमेर अवाह बहिने लागिल ;  
शिष्य गुरु चरणे, पुत्र कन्या पित्र मातृ चरणे,  
अभिनादन करिल, मित्र मित्रके प्रेमालिङ्गन करिल ;  
याहादेर सन्ध्यासर वैर भाव छिल, ताहाराओ गे  
भाववर्जन पूरक दशमीते प्रेम सज्जावण करिल, !  
हा ! कि सुखे दिन चलिया गेल । विजये ! तूमि  
भारते ये जीवनी शास्त्रि सकार करि रा गियाछ,  
ताहा येन आभरा चरिदिन उद्गाह करिदे  
पारि । आज आमादेर अनुग्रहक ग्रहक, पाठक,  
सहायक, मित्र मातृके उद्देशे यथा यथोचित  
अभिनयन करि ।

महां हुं मे भोव्य नहो हुं, में दृष्टा नहो हुं, में  
दृश्य नहो हुं, मैं स्वयं जाग्रत ज्योतिःरूप मन वि-  
राज कर रहा हुं ।

“नमस्तस्मै सदेकस्मै कस्मै चिदहम नमः ।

यदेतद्विश्वरूपेण राजते गुरु राजते ॥”

आपही की कृपा से यह अपूर्व ज्ञान का उदय  
हुआ, हे गुरु आप को नमस्कार, आप सत् वो  
एक स्वरूप हुए भी विचित्र जगत् के रूप से प्रका-  
शित हो, आप को नमस्कार, आप सब के अन्तर्स्था-  
मो बन विराज करते हो, हे गुरु आप का  
बारम्बार नमस्कार करता हुं ।

## शुभमस्तु ।

भरत खंड का एक प्रधान पर्व दिन व्यतीत हो  
गया । शरत काल आजाने पर भारतवर्ष मानो कि  
किसी भोजन मन्त्र करके मत्त हो उठा था । वंश  
विभाग दुर्गा पूजा के धूमधाम से वो अन्यान्य  
विभाग राम लीला कौ रमणीयता से शोक मन्ताप  
सबही कुछ भूल गये थे । सर्वत्र कचहरी, कार्यालय  
सब बंद रहे । प्रवासो अपने घर को आया, पिता  
माता भाइ भगिन स्त्री पुत्रादि से यथा योग्य सम्भा-  
षण कर कितने आनन्द भोग किया । पूजा, पाठ,  
गीत, वाद्य नृत्य, उद्यम, उद्गाह, आनन्द के उच्छा-  
स से भारतवर्ष कैक दिन परम ऊफण रहा, अब  
फिर भारत की दुर्हंगा जैसी की तैसी आगयी ।  
मनो भारत में एक सुख स्वप्न का अभिनय हो गया ।  
दशमी के दिन दुर्जय रावण बिनष्ट हुआ । संसार में  
सुख वो शान्ति का प्रवाह बह चला । जीवों के  
हृदय में प्रेम के प्रवाह भी बहने लगा । शिष्य गुरु  
के चरण में, पुत्र कन्या पिता माता के चरण में,  
छोटे भाइ बड़े भाइ के चरण में प्रणाम किये ।  
मित्र गण परस्पर बाहु मीनाये । जिन्हीं में वर्ष भर  
बैर भाव था वे भी कुटिलता को छोड़कर दशमी के  
दिन प्रेम सम्भाषण किये ! हा ! क्या आनन्द दिन  
व्यतीत हो गया । दशमी के दिन भारत में जिस  
जीवनी शक्ति का संचार हुआ, हम सब उसको  
बिच दिन उपभोग कर सकें यही ईश्वर से प्रार्थना  
है । आज हमारे ज्ञापक ग्राहक पाठक, सहानुभा-  
वक, मित्र मातृ की उद्देश्य करके हम यथा योग्य  
अभिनयन की प्रिय सम्भाषण करते हैं । भगवत्

पदार्थविन्दे बारम्बार नमस्कार करि लाम । भगवान्  
मंलके कुशले रक्षा करुन । शुभमस्तु ।

## आर्य शास्त्र विज्ञान ।

(पूर्व प्रकाशिते पर )

चन्द्र प्रकृति सूर्या हईते अनेकांशे विभिन ।  
इहा ज्योतिः हीन जन युक्तिकादि रचित भुवन वि-  
शेष । परन्तु इहा ए स्थले वना कर्तव्य ये चन्द्र  
ताप विहीन बलिग्राही ये ताताते आदो ताप  
नाई एरूप नहे । उहाते ओ एही पृथिवीर नाय  
तापेर सत्ता आछे । उत्तरां उक्त संकेतादि  
प्रक्रिय चन्द्र ओ अजस्र हईतेछे ।

चन्द्र जलांश नितास्तु अधिक, पार्थिवान्श  
अपेक्षारुत अनेक अल्प । उहार ये अंश  
आमादिगेर दृष्टिसे शुभ्र ओ चाकटिका युक्त बोध  
हय उहा सूर्याकिरण संयुक्त जलराशि मात्र । आर  
ये अंश कृष्णवर्ण बोध हय ताहा स्थल भाग । एही  
चन्द्रेर उपपादन आर ओ एकटि पदार्थ आछे  
ताहार नाम "सोम" । सोम पदार्थ आजकाल  
साधारणतः परिचित नाई । इहा जनजनक ओ श्रेष्ठादि  
पदार्थ घटित एक प्रकार तरलाकार मिश्र पदार्थ ।  
प्राणी दिगेर शरीर अवस्थितिर एकटि प्रधान कारण  
सोमरस । एतेक शरीरे सोमरस आछे व-  
लिया अज पुतास्र सकल एकतापन्न हईया থাকे,  
परस्पर विभिन्ने हय ना । सोमरस एकतासम्पा-  
दनवनेर आधिका जन्नाय । इहा पार्थिव अनेक  
वस्तु सहित मिश्रित থাকे । चन्द्र सोमरस  
पुनर परिमाणे आछे बलिया चन्द्रेर नामास्तु  
'सोम' ।

उक्त विषये कृति ओ संहितादि । यथा :—

"सलिलमये शशिनि रवेः किरणानि निपतन्ति ।  
प्रतिबिम्बन्ति पुनस्तानि पृथिव्यामित्यादि" (बराह  
संहिता) । सलिलमय चन्द्र सूर्येर किरण निपतित  
हईया आमादिगेर पृथिवीते प्रतिबिम्बित हय  
इत्यादि । "आप्यायस्व अमेतुते रिशतः सोम-  
विष्टम् । भवावा यसा मज्जथे" (वेदः) । हे चन्द्र  
तोमार ये सोमरस पृथिवीर पुत्येक प्राणी  
शरीरे अवस्थित हईया । उपतिष्ठान साहाय्य

पदरविन्द मे बारम्बार नमस्कार करते है ।  
भगवान सबको आनन्दित रखे । शुभमस्तु ।

## आर्य शास्त्र विज्ञान ।

(पूर्व प्रकाशित के आगे)

चन्द्र की प्रकृति सूर्य की प्रकृति से बहुत ही भिन्न  
है । चन्द्र ज्योति में रहित जल मट्टी आदि से  
बना हुआ एक भुवन है । परन्तु यह भी वही प्रकट  
रहना चाहिये कि चन्द्रमा एकवारगी ताप रहित  
नहीं है । उसमें भी पृथ्वी के समान ताप की विष-  
मानता है यतएव कथित रूप संकोच आदि क्रिया  
चन्द्र में भी सर्वदा होती है ।

चन्द्र में जल का अंश अत्यन्त अधिक है, पार्थिव  
अंश उसमें बहुत अल्प । जो अंश उसका हमारी  
दृष्टि में बड़े स्थित हो चमकदार बोध होता है वह  
सूर्य के किरणों से चमकाते हुए जल राशि मात्र  
है । जो जो अंश अल्प वर्ण देख पड़ता है वह  
उसका स्थल खंड है । चन्द्र में सोम नामक चीर  
भी एक पदार्थ रहता है । सोम का पहचान आज  
कल कोई नहीं जानता है । सोम जल जनक जो  
चिकना आदि पदार्थों से बना हुआ एक तरह का  
तरलाकार मिश्र पदार्थ है । सोम रस प्राणियों के  
जीनेका एक प्रधान कारण है । प्रति शरीर में  
सोम रस के रहने पर अंग प्रत्यंग समस्त एकतापन्न  
हुए रहते हैं, परस्पर बेलग नहीं होते हैं ।  
एकता बढ़ाने में सोमरस परम समर्थ है । पार्थिव  
वस्तुतेरे पदार्थों में इसके विद्यमानता देख  
पड़ती है । चन्द्र में सोमरस बहुत है इस लिये  
चन्द्र का एक नाम भी है "सोम" ।

उल्लिखित विषयों पर श्रुति वी स्मृति के प्रमाण ।  
"सलिलमये शशिनि रवेः किरणानि निपतन्ति,  
प्रतिबिम्बन्ति पुनस्तानि पृथिव्यामित्यादि" (बराह  
संहिता) । अर्थात् जलमय चन्द्रमा में सूर्य के  
किरण गिरकर हम पृथ्वीतल में प्रतिबिम्बित होते  
हैं, इत्यादि । "आप्यायस्व अमेतुते विष्टतः सोम-  
विष्टम् । भवावा यसा मज्जथे" (वेद) । हे चन्द्र  
तुम्हादे जो सोमरस पृथ्वी के हरेक प्राणी के  
शरीर में अवस्थित हईया । उपतिष्ठान साहाय्य

करक इत्यादि । “वेथ यथामौ लोकान  
पुन्यते ? इत्यादि” (अति०) । भूमि कि ताहा  
जान, ये कारणे ए चन्द्र भुवनटि प्राणांगणव द्वारा  
नखसा पूर्ण हईतेछे ना ? इत्यादि ।

सूर्य एवं पृथिव्यादिर न्याय चन्द्रेण समस्तदा  
अवधार परिवर्तन हईयाथाके । एहि भूमण्डले  
येरूप सर्वदा देखिते पाओर । याय ये ये स्थाने  
नद नदी ओ बालुका पूर्ण छिल, ताहाई कालक्रमे  
परिवर्तित-ओ शुष्क स्थल हईया उ मरा भूमि हई-  
तेछे, कोथाओ वा विपरीत दृष्टे हईतेछे ;  
कोथाओ उंरुके मुक्तिका राशि शस्त्रादिते परिणत  
हईतेछे, कोथाओवा पामाण मृत्त हईतेछे, कोन  
स्थान वा अत्यन्त ताप विमुक्त हईया अतिशय सुदृढ़  
हईतेछे, कोन स्थान वा तद्विपरीत दशा लाभ  
करितेछे । एहि प्रकार चन्द्रे ओ अन्याना उप  
ग्रह ग्रहादितेओ सर्वथा परिवर्तन ओ परिपाक  
क्रिया हईतेछे ।

क्रमशः

### इल्लभ कि ।

याहा अनायासे लाभ कर । यायना, ताहाई  
पाईवार जन्म लोकेर अत्यन्त आग्रह ओ चेष्टा  
देखिते पाओर । याहा । लोके याहा पाय ना,  
ताहाई पाईते चाय, याहा देखे नाहे ताहाई  
देखिवार जन्म वास्त, याहा कथनओ अवग करेनाहे,  
ताहाई श्रुति ओ एकान्त अभिलाषा । मन याहा  
पाईयाछे ताहाते परितुष्ट रहे, मनैर गति  
अव्याहत । मन त्रयगय अधीर हईया कथन पाताल  
पुरे आवेश पूर्वक तथाकार रत्न माला संग्रह  
करिते चाय, कथन नील नभोगार्गे उड्डान हईया  
नक्षत्रे २ प्रमण करिते चाय, कथन वा चूमूक दिया  
चन्द्रेण सूर्या राशि, पान करिते चाय, कथन सूर्या  
मण्डले दीप करिया अलङ्कित जगतेर तत्त्व निरीक्षण  
करिते याय, कथन धूमकेतु धरिया पृथिवी परि  
माञ्छित करिते चाय, कथन वा राहकेहि ग्रह  
करिया चन्द्र, सूर्याके निरूपण करिते याय,  
कथन ओ वा सूर्याके किराटे बसाईया, चन्द्र  
तिलक करिया ओ नक्षत्रेण माला गलाय परिग्रा

हत्यादि । “वत्थ यथासौ लांकी न पूर्यते ? ”  
इत्यादि । (श्रुतिः) तुम क्या जानते हो क्यों इस  
चन्द्र भूवन प्राणीयों से सर्वथा पूर्ण नहीं होता है ?  
इत्यादि ।

सूर्य वी पृथ्वी के न्याई चन्द्र की अवस्था भी  
सर्वदा बदल जाती है । जैसा इस भूमण्डल में  
सर्वदा देख पड़ता है कि जहां किमी समय में  
नदी बह रही थी या बालू से पूर्ण था, काल पा  
कर वही स्थान सूक कर अतीव रमणीय उर्वरा  
भूमि बन गयी । कहीं उसका विपरीत भी देख प-  
ड़ता है । कहीं तो सरस भट्टी पत्थर बन जाता  
कहीं पत्थर भी मट्ठी होजाता, कोई स्थान तो  
अत्यन्त ताप मुक्त होकर अतिशय दृढ़ बनता, कोई  
स्थान उसकी उल्टी दशा को प्राप्त होता इत्यादि ।  
इस भांति चन्द्र वी अन्यान्य ग्रह उपग्रह आदि में  
भी परिवर्तन वी परिणाम होता है ।

शेष आगे ।

### दुर्लभ पदार्थ क्या है ।

जो पदार्थ अनायास नहीं मिलता, तदर्थ म-  
नुष्य के आग्रह वी चेष्टा अधिक देख पड़ते हैं ।  
जो पदार्थ मिलने योग्य नहीं मनुष्य को चाह  
उसी पर है, जो कुछ कभी दृष्टि में न आया सोही  
देखने को मनुष्य व्याकुल है, जो बात कभी सुना  
नहीं सोही बात सुनने के अर्थ इच्छा बड़ी तेज  
है । मन की जो कुछ लिला उसे वह तम नहीं,  
मन की गति अव्याहत है । तन्ना से अधीर हो  
कर मन कभी पाताल पुर में पैठ के वहां के रत्न  
राजि संग्रह करने चाहता है, कभी नील नभी  
मार्ग पर चढ़ कर नक्षत्र नभ में फिरने को  
चाहता है, कभी चन्द्रमा को सुधा राशि पौने में  
तप्पर जाता है, कभी सूर्यमण्डल को दीपक बना  
कर दृष्टि के बाहर बिराजता हुआ जगत् के तत्त्व  
ईक्षण करने जाता है, कभी पुच्छल तारा को  
पकड़ कर पृथ्वी को आगने चाहता है, कभी  
राहु को प्राप्त करके चन्द्र सूर्य की निरूपण  
करने चाहता है, कभी सूर्य की किराट पर रख

पृथिवीতে আসিতে চায়, কখন বা বনে কখন বা পর্বতে কখন নদী তটে, এই রূপ নানা দিগ্দিগন্তে খাবিত হইয়া। কোথায় কি দুর্লভ আছে, তাহাই লাভ করিতে চায়। যাহা দুর্লভ তাহা পাইলে জীবের আনন্দের সীমা থাকেনা। দুর্লভ হইলেই যে দ্রব্যের অধিক মর্যাদা হইবে, তাহা নহে, অনাবশ্যক পদার্থ অলভ্য হইলেও তাহার মূল্য নাই। অবস্থা বিশেষে, সময় বিশেষে, স্থান বিশেষে অনেক দ্রব্যই দুর্লভ হয়, কিন্তু সর্বথা দুর্লভ কি আজ তাহাই বিচার্য। মহাত্মা শঙ্করাচার্য্য বলিয়াছেন।

“জন্তুনাং নরজন্ম দুর্লভমতঃ পুং স্ত্রং ততো  
বিপ্রতা।

তন্মাতৃদৈবিক ধর্ম্ম মার্গপরতা বিদ্বত্ত্বমস্মাং পরং ।  
আত্মানাত্ম বিবেচনং স্বমুভবো ব্রহ্মাত্মনা সংস্থিত  
মুক্তির্নোশত জন্ম কোটি সূকৃতেঃ পুণ্যোর্বিনঃ  
লভ্যতে ॥”

জীব গণ বহু চেফা, যত্ন ও ক্রেশ করিয়া যতই দুঃসাধ্য কার্য্য সম্পাদন করুক না, মনুষ্য জন্ম লাভ করিতে হইলে তৎ সর্বাপেক্ষা অধিক তর শ্রয়ত্ব করিতে হয়। সংসারের অনেক কার্য্য সাধন কবির সময় কেবল কার্য্যিক পরিশ্রম, মানসিক আগ্রহ ও আবশ্যকমত উপায় সকল অবলম্বন করিতে হয় মাত্র, কিন্তু মনুষ্য দেহ লাভ করা অতিশয় যত্ন, অগাঢ় অধ্যবসায় ও অটল সংকল্প সাপেক্ষ। একটী দৈহিক প্রকৃতি পরিত্যাগ করা ও তৎপরে প্রকৃতির মনুষ্যোচিত বৃত্তির দিকে একান্ত আগ্রহ পূর্বক প্রধাবিত হওয়া স্বপ্নায়াম সাধ্য নহে। যত্নাশাল পর্যাশ্রয় মনের ঐকান্তিকী ইচ্ছা যাদৃশ বিষয় ও ব্যাপার আশ্রয় করিয়া থাকে, মরণান্তে জীব তাদৃশ প্রকৃতিতে উপগত হয়। কাঁট, পতঙ্গ, পক্ষী, পশুাদি দেহ হইতে প্রকৃতি ক্ষুরণ পূর্বক নরাকৃতি লাভ অত্যন্ত দুর্লভ ও অকঠিন।

নৃশরীর ধারী জীবগণ ক্রীত, স্ত্রী ও পুরুষ এই তিন ভাগে বিভক্ত। নরাকার লাভ পূর্বক পুরুষ দেহ ধারণ করা কঠোর ত্রুত সংযম তপস্যাতির কল। যাঁহারা স্ত্রী পুরুষ এতদুভয় জাতিকে স্বাভাবিক সকল বিষয়ে সমান অধিকারী মনে

কি শব্দেই তালক বন। কে যৌ নরজন্মলাভ  
কী গলে মৈ পহের কে পৃথ্বী পর পানে চাহতা হৈ,  
কমৌ বন মৈ, কমৌ পর্বত পর, কমৌ নদী কিনারে,  
হুম রৌতি নানা ষৌ দৌড় ফির কর জহাঁ জৌ কুছ  
দুর্লভ হৈ সৌহী লেনে কৌ চাহতা হৈ । দুর্লভ  
পদার্থ হাত লগনে পর জীব সমৌম পানন্দ কৌ  
প্রাপ্ত হোতা হৈ । দুর্লভ হানেহী মে জৌ মর্যাদা  
দ্রব্য কৌ অধিক বড় জাতৌ সৌ নহৌ, ক্যৌকি পানা-  
বশ্যক পদার্থ পলভ্য হোনে পর ভৌ ভস কৌ মৌল  
নহৌ হোতা হৈ । সবস্থা, সময় বা স্থান বিচার  
কে কিসৌ ২ পদার্থ কৌ দুর্লভ বৃদ্ধ পড়তা হৈ ।  
কিন্তু সর্বথা দুর্লভ পদার্থ ক্যা হৈ আজ সৌহী  
বিচারনৌ হৈ ।

মহাত্মাশঙ্করাচার্য্যজীনে বোলা—

“জন্তুনাং নরজন্ম দুর্লভমতঃ পুং স্ত্রং ততো বিপ্রতা ।

তন্মাতৃদৈবিক ধর্ম্ম মার্গপরতা বিদ্বত্ত্বমস্মাৎ পরং ।  
আত্মানাত্ম বিবেচনং স্বমুভবো ব্রহ্মাত্মনা সংস্থিত  
মুক্তির্নোশত জন্ম কোটি সূকৃতেঃ পুণ্যোর্বিনঃ  
লভ্যতে ॥”

জীব গণ কহুত চেফা, যত্ন বৌ ক্রেশ সঠা কর  
জিতনেহী দুঃসাধ্য কার্য্য ক্যৌ ন সম্পাদন কর  
মনুষ্য জন্ম লাভ করনা সমস্ত কার্য্য সে অধিক  
প্রয়ত্ন সাধ্য হৈ । বহুতেরে কার্য্য সংসার মৈ এসে হৈ  
কি জিহুঁ কৌ সাধন কাল মৈ কেবল মাশ কার্য্যিক  
পরিশ্রম, মানসিক আগ্রহ বৌ আবশ্যক অনুসার  
উপায় কৌ অবলম্বন করনা পড়তা ; কিন্তু মনুষ্য  
দেহ লাভ করনে মৈ অত্যন্ত যত্ন, প্রগাঢ় অধ্যবসায়  
বৌ নিয়ন্ত সংকল্প চাহিয়ে । কিসৌ এক দৈহিক প্র-  
কৃতি কৌ পরিত্যাগ করনা বৌ অনন্তর মনুষ্যোচিত  
বৃত্তিয়াঁ কৌ আর একান্ত আগ্রহ পূর্বক প্রকৃতি কৌ  
প্রধাবিত হোনা ক্যা স্বল্প পরিশ্রম কৌ বিষয় হৈ ?  
মরণ কাল পর্যন্ত মন কৌ ঐকান্তিকী ইচ্ছা  
জিস ২ বিষয় বৌ ব্যাপার সে ফঁসী রহতৌ হৈ, ম-  
রণান্ত মৈ সত্বী সবকৌ প্রকৃতি আত্মা মৈ আ-  
মিলতৌ হৈ । কাঁট, পতঙ্গ, পক্ষী, পশু আদি কৌ দেহ  
মৈ নিবাস কর প্রকৃতি কৌ সঞ্চিত করকে নর কৌ  
আকার বননা অত্যন্ত দুর্লভ বৌ সুকঠিন হৈ ।

তুঁদেহ ধারী জীব গণ তৌন স্ত্রী মৈ বিভক্ত  
হৈ, জেমা কি ক্রীত, স্ত্রী বৌ পুরুষ । নর কৌ আ-  
কার পাকার পুরুষদেহ ধারণ করনা বিন কঠোর  
ব্রত, সংযম, তপস্যাডিকে নহৌ হৌ সম্ভা হৈ । জৌ  
কৌগ যহুঁ মানতৌ হৈ কি স্ত্রী বৌ পুরুষ দুন হৌনৌ



करेन, तँ हादेर सिद्धांत निश्चय बुद्धि विज्ञित नहे। स्त्री जाति स्वाभाविक रूढ़ि भेदे पुरुष अपेक्षा अनेक नीच। स्त्रीर कोमल प्रकृति जगतेर कलाप सामन करिते २ पुरुष प्रकृतिर दिके धारित हय एवं धीरे २ पुन प्रकृति जनित स्त्री देह विनष्ट होइया पुरुष भावेर आविर्भाव ओ पुं देहेर सकार होइते থাকे। स्त्रीजाति मानवीय रूढ़ि निचयेर अस्फुटावनाय काव। तँ प्रकृति उन्नताकारे परिणत होइले स्त्री ३ ओ स्त्रीत्वेर चर-मोन्नति होइले पुरुषत्व लाब होइया থাকे ; अतः प्राकृत पुरुष-प्रकृति लाब नितान्त होइ छल्लै बलिते होइवे।

पुरुष मात्रेई सकल ज्ञान मनुष्य ताका बना ययना, केन ना तन्मध्ये अनेक पुरुष पूर्व संस्कार जनित तथा कार्य कलापे निष्ठ होइया पुरुषोचित कार्यो पराङ्मुख थाकेन, एवं सामान्य नाच कुले जन्म ग्रहण पूरक आहार निद्रा ओ विविध वासनासक्त होइया मानवसमाजके कलङ्कित करेन। मनुष्य देह धारी दिगेर मध्ये वेनाभायी व्याकरण होइया आरओ सुकठिन। अर्थोपार्जनर जन्य शिल्प चातुर्यादि शिक्षा ओ सभाविजयी होइया मर्यादा पाईवार आशये शास्त्रादि अज्ञान करिते आयई लोकैर आग्रह देपिते पाओया यार, किन्तु आज्ञा सुद्धिर जन्य परमार्थ विद्याभासे कय जन मनुष्येय प्रवृत्ति होइया थाके ? होइलेओ अनेके वेद शास्त्र कठिष्ठ करिया थाकेन बाटे किन्तु आचार्येय निकट होइते ताहार अर्थोपार्जन करिया लरेन ना, साधारण भावे भाषागत अर्थ बुझिलेओ ताहार गम्भीर तात्पर्य बुझित सकले समर्थ होइन ना। वेद वाक्य उच्चारण मात्रेई शरीर मन आज्ञा पण्डित होइया थाके, एते दृष्ट विश्वासेर बशवर्ती होइया अनेके वेदेर अर्थ बोधेय आवश्यकताओ अनुभव करेन ना। वेदेर प्रकृत अर्थ बोध आज काल दुर्लभ होइया उठियाछे, केन ना, वर्तमान समये अनेके वेदार्थ जानिबार जन्य प्रगत शीरे पाश्चात्य पण्डित गणेर शरणागत होइतेछेन। ताँहारा व्याकरण ओ शब्द शास्त्रेय साहाय्य मात्र लईया वेदेर एक एक प्रकार अकण्ठ कल्पित विचित्र व्याख्या करिया

जाताहो का अधिकार समस्त विषयी में स्वाभाविक रीति से समान है, उन्हीं का सिद्धान्त विद्युत् वहि का उपजाउ नहीं है। स्त्री जाति स्वाभाविक क्षीण भेद करके पुरुष से अत्यन्त निम्न श्रेणी का है। मांसी को कोमल प्रकृति जगत का कल्याण साधन करती हुई पुं प्रकृति को और आगे बढ़ जाती है, और धीरे २ पुन प्रकृति से बना हुआ स्त्री शरीर विनष्ट हो जाता है वो पुरुष भाव का आविर्भाव होने पर पुं देहका संचार हुआ करता है। स्त्री जाति मानवीय क्षति समूह को संकुचित अवस्था का जीव है। वह प्रकृति उन्नत भाव धारण करने पर स्त्रीत्व वा स्त्रीत्व को चरम उत्कृष्ट होने पर पुरुषत्व मिलता है ; अतएव प्रकृत रूप पुरुष-प्रकृति लाभ करना मानो निपट दुर्लभ है।

जिम भांति के मनुष्य बनने पर जन्म सफल होता है, पुं देह धारी मात्र ही विसा नहीं है, क्योंकि अनेक पुरुष पूर्व संस्कारों के बस हो कर बहुतेरे तथा कार्य कलाप में फंस कर पुरुष के योग्य कामों से दूर रहते हैं वो सामान्य नीच कुल में जन्म लेकर आहार, निद्रा वो भांति २ के व्यसन में आसक्त रहकर मनुष्य समाज कलङ्कित करते हैं। मनुष्य देह धारियों में फिर वेदाध्यायी ब्राह्मण बनना और भी कठिन है। अर्थोपार्जन के अर्थ शिल्प चातुरी सिखने के लिये वो सभा विजयी हो कर मर्यादा लाभ के आशय से शास्त्रादि अध्ययन करना प्रायः ही लोगों में देख पड़ता है, किन्तु आज्ञा शब्द के कारण परमार्थ विद्या के अभ्यास करने में कितने मनुष्य को प्रवृत्ति होती है ? होने पर भी बहुतेरे जन वेद शास्त्र की कण्ठस्थ कर लेते हैं किन्तु आचार्य के समीप उन सब मन्त्रों के अर्थ समझ बुझ नहीं लेते हैं। यदि किसी किसी ने साधारण रीति से भाषा भी समझ ले किन्तु उन्हीं के गम्भीर तात्पर्य समझने की सामर्थ्य नहीं होती है। इसही विश्वास से कि वेद वाक्य उच्चारण करते ही शरीर, मन, आत्मा पवित्र होते हैं, वेद के अर्थ ज्ञात होने की कुछ आवश्यकता बहुतेरे मनुष्य का अनुभव नहीं होता है। वेद का प्रकृत अर्थ ज्ञात होना आज कल तो बड़ा ही दुर्लभ हुआ क्योंकि बहुतेरे मनुष्य शीर भुंका २ कर वेदार्थ ज्ञात होने के लिये सु-

वेदों की प्रति लोकोत्तर अथवा उत्पत्ति का रस दिते हैं। वेदों की ईश्वर कदर्या व्याख्या करना करिया वरुं यौहारा वेदके परम पावक बोधे ताहा आरुति मात्र करिया थाकेन, ताँहारा धन्य ताही बलिताहि, आज काल वेदार्थ प्रकृत रूपे बोध होया नितांत दुर्लभ। वेदार्थ विदित होले ओ तदनुसारिणी कार्य प्रवृत्ति आरु दुर्लभ।

विकाराच्छ्रित सहाजेई धर्म कर्म कविते चाहै ना, ताहाते आवार ये वैदिक कार्य कलापे कठोर व्रत नियम, संयम, आदिर नितांत प्रयोजन, ताहाते मन कोन क्रमेई धावित होले चाहै ना। देशकाल पात्रादिर अवस्था विचार करिले साधु कार्य प्रवृत्ति होया नितांत प्रकृति बलिता होले। यदि वा मानवीय कर्तव्य बुद्धि वशवर्ती होया केह २ वैदिक धर्माचारे प्रवृत्ति ओ थाकेन, तज्जनिता ज्ञानेन उदय होया सकलें भाग्य घटिया उठै ना। कर्मानुष्ठान काले शास्त्र विधि यदि किछु मात्र वातार हय तबे विशेष प्रतावार घटिवार सतावना। कृति मनुष्ये पदपेदेई होया थाके, एजना कर्मानुष्ठानेन फल लाभ वा ज्ञानोदय होया अतीव दुर्लभ। पुण्यानुष्ठानेन द्वारा मन निर्मल होले ओ आत्माना विचारणा सहाज उदय हय ना, एही रुना महात्मा गण होके अतिशय दुर्लभ बलिया हिर करियाहैन। यदिई वा शास्त्रादि पाठ, महात्मा गणें चरित्र चिंतन, ओ सत्कार्य कलाप अनुष्ठान करिते २ समये २ आत्माना बुद्धि विकास हो हय, किन्तु आत्माके अनुभव करा आरु कठिन ओ दुर्लभ। समस्त विषय व्यापार होले चित्त एकान्त प्रताकृत ना होले ओ आज मध्ये दीक्षित होया एकाग्रता पूर्वक समाधि ना करिले आत्मा अनुभव किछुतेई संभव नहै। एहीरूपे निर्विकल्प समाधि साधन द्वारा चिद्रूप परमात्माते नित्य सत्प्रति रूप परावृत्ति लाभ सकल अपेक्षा दुर्लभ केनना उहा शत कोटी जन्म सदाचार सत्क्रिया ओ तपस्या भिन्न किछुतेई लाभ होले पावै ना।

क्रमशः।

रूप के पद्धति के ग्रहण ले ली है। व्याकरण वा शब्द शास्त्र को सहायता ले ले कर साहस ने निज निज कल्पना अनुसार एक एक प्रकार की विचित्र व्याख्या कर वेदों पर लोगों को अश्रद्धा की संगत डालवा देते हैं। वेदों की इस भांति कदर्य व्याख्या न सिख कर जो लोग वेद की केवल परम पवित्र समझ के उस को आरुति मात्र किये करते हैं वे बलक धन्य हैं। इसी लिये कहा गया कि आज काल वेदार्थ प्रकृत रूप ज्ञात होना सुदुर्लभ है। वेदार्थ विदित होने पर भी तदनुसार कार्य में प्रवृत्ति होना और भी दुर्लभ है। विकारों में भरा हुआ चित्त तो धर्म कर्म करने की नहीं चाहता है, तिस पर फिर जिन वेदोक्त कार्य समूह में कठोर व्रत, नियम, संयम आदि का नितांत प्रयोजन है, उधर जाने की इच्छा मन की क्यों होगी। यदि किभी २ पुरुष ने अपनी कर्तव्य बुद्धि के बस होकर वेदोक्त क्रिया कांड में प्रवृत्त भी रहें, परन्तु उन कर्मों से कुछ ज्ञान मिलना सब के भाग्य में नहीं होता है। कर्मानुष्ठान काल में यदि शास्त्र विधि का कुछ भी उल्टा पुल्टा हो तो उससे विशेष हानि पहुचती है। कृति मनुष्य की प्रतिपद क्षेप में होती है, इस लिये कर्मानुष्ठान का फल मिलना भी ज्ञानोदय होना अतीव दुर्लभ है। पुण्य अनुष्ठान के द्वारा मन निर्मल होने पर भी आत्मानात्म विचार महज्जेही उदय नहीं होता है, तन्निमित्त महात्मा गण इसको दुर्लभ से दुर्लभ कर मान लिये। यदि शास्त्र आदि पठन, महात्माओं के चरित्र चिन्तन वा सत्कार्य कलाप अनुष्ठान करते समय पर आत्मानात्म बुद्धि का विकास भी होता है किन्तु आत्मा की अनुभव कर लेना और भी कठिन वा दुर्लभ है। समस्त विषयों से चित्त को एकबारगी प्रत्याहार किये बिना वा आत्म मंत्र से दीक्षित होकर एकाग्रता पूर्वक समाधि किये बिना आत्मानुभव को कभी संभावना नहीं। इस रीति निर्विकल्प समाधि साधन से परामृति अर्थात् चिद्रूप परमात्मा में नित्य संस्थिति, जोना सब से दुर्लभ है, क्यों कि शत कोटी जन्म पर्यन्त सदाचार, सत्क्रिया वा तपस्या किये बिना मुक्ति किसी प्रकार से मिलनेवाली नहीं।

शेष भाग।

## योगी माणिक्य प्रभु

महात्मा माणिक्य प्रभु नियोगी ब्राह्मण कुल  
जन्म ग्रहण करिया छिनेन । एउ रूप प्रवाद ये  
तिनि सामान्य विद्याभ्यास करिया जानिदारी  
सरकारे मुहुरीर काय्य करितेन । साधु दिनेर  
मठे यातायात करी तँहार बहिन इहेते अतास  
छिल । ये सकल परिब्राजक भ्रमण करिते २ ए  
मठे समागत इहेतेन माणिक्य प्रभु तँहारिनेर  
यथोचित सेवा सुश्रमा करिया आपनार जावनके  
पवित्र बोध करितेन ओ तँहारिनेर सेवार्थ गँजा  
आदि आनिया दितेन । एकदिन मझा काल  
एवन मारय रुकि इहेतेछे, एगन समये जनेक  
सम्यामी उक्त मठे आगिया उपहित, तँहार पार  
मेय ओ गाऊ बस्त्र समस्तुई आद्र, शीते कलेवर  
विकम्पित, मानिक्य प्रभु तँहार यथायोग्य सेवार  
छूटी करिलेन ना । आद्र वसन गुलि शुकाहेते  
दिलेन ओ धूम पानार्थ गँजा आनिया दिलेन । एक  
जन अपरिचित पुरुषके ईदृश सुश्रमा करिते  
देखिय! सम्यामी अर्थाव प्रसन्न इहेलेन एवं  
तँहाके योग तत्त्व ओ गुरु मन्त्रे दीक्षित करिलेन ।  
माणिक्य प्रभु एहे शुभ क्रमे गुरु दत्तात्रेयेर  
प्रदर्शित योग शिक्षा प्रणाली अवलम्बन करिलेन ।  
गुरु दत्तात्रेयेर शिक्षा प्रणालीकेई साधक गण  
योगतत्त्व सुगम ओ सरल बन्न बलिया अवधारण  
करियाछेन ।

ये सकल योगी निज २ साधन सिद्धि अलौकिक  
व्यापार लोक सकलके प्रदर्शन करेन, तँहारा  
सन्तोष भोगीर योगी नहेन । माणिक्य प्रभु  
योगाभ्यास विशेष उन्नति लात करिले तिनि  
हमनावादे समाधि करिया छिलेन । तँ पृथक्,  
तिनि निज सिद्धि बले अनेक समये लोक दिगके  
अनेक अलौकिक व्यापार देखाइतेन । पाठक  
महात्मा गणेर विदितार्थ कतिपय व्यापार निम्न  
एकटित इहेन ।

मृत मार्ग सगर जङ्ग ईहाँके हाइद्राबाद  
आनिवार जन्य मध्ये २ शिविका प्रेरण करितेन ।  
माणिक्य प्रभु सकलैर समकेई तथाय याइवार

## योगी माणिक्य प्रभु ।

महात्मा श्रीमाणिक्य प्रभुजी ने एक नियोगी  
ब्राह्मण के घर जन्म लिया था । परम्परागत यह  
वार्ता सुनी जाती है कि प्रथम अवस्था में सा-  
मान्य विद्याभ्यास करके उनने किसी जमींदारके  
कचहरी में माहरेर का काम करता था । साधुओं  
के मठ में जाना आना उनका बहुत दिनों से  
अभ्यास था । जितने साधुजन रमते हुए मठ में  
आजाते, मानिक्य प्रभुजी ने उन सब को यथा  
योग्य सेवा में तत्पर रहते वो उस से अपने  
जीवन को पवित्र कर मानते श्री उग्यों के अर्थ  
गंजा आदि भी मंगा दिया करते थे । एक दिन  
सम्या के समय प्रबल धारा से जल वर्षने लगा,  
इस अवसर में एक सम्यामी उस मठ में आ  
पहुँचे, । उन के पहरने का वो छोड़ने का कपड़े  
सब भींग गये, ठंडे से कलेवर विकम्पित रहा  
मानिक्य प्रभु ने उन को यथा योग्य सेवा में  
बूटो न करी । भींगे कपड़े को सुकने के लिये  
टाँग दिये श्री गंजा भी कुछ सेवार्थ पहुँचाय  
दिये । एक अनजाने मनुष्य को इस भाँति सेवा  
करते हुए देख कर सम्यामी अतीव प्रसन्न हुए श्री  
उन को योग विद्या के गुप्त मंत्र से दीक्षित किये  
माणिक्यप्रभु इस शुभ अवसर में गुरु दत्तात्रेयजी  
को योग शिक्षा पद्धति को अवलम्बन किये । सा-  
धक गण गुरु दत्तात्रेयजी को शिक्षा प्रणालीही  
को योग तत्त्व को सुगम वी सरल पथ मानते हैं ।

जो योगी लोग निज २ साधन सिद्धि के अद्भुत  
व्यापारों लोगों को देखलाये फिरते हैं, वह सब  
योगी सर्वोच्चयोगों के नहीं हैं । मानिक्य प्रभु  
योगानुष्ठान को विशेष रूप उन्नति लाभ करने पर  
हमनावाद में समाधि लगाये । तत्पूर्व में वे निज  
सिद्धि केवल से अनेक समय लोगों को अनेक  
अलौकिक व्यापार देखला करते थे । पाठक म-  
होदयों के विदितार्थ थोड़ीसी बातें नीचे प्रगट  
की जाती है ।

निजाम के मृत मंत्री सर सलारजंग ने इनको  
हैदराबाद में लाने के लिये बीच २ में पालक्री  
भेज दिये करते थे । मानिक्य प्रभु सब जनों को

जन्य शिविकार आरोहण करितेन, किन्तु बाहक गण यमन शिविका मार्ग सलार कुंज गृह द्वारे आनिया उपस्थित करित, तखन योगीवर दे केहई देखिते पाईतना, एमन कि तनि कथन शिविका त्राग पूर्वक गमन करियाहेन, ताहा बाहक गण वक्षिते पारित न । मध्ये २ तनि शान्काय शिर भाव बगिरा क्रमशः एत श्रुतार हईतेन ये बाहक मथ्या रुक्मि ना हल्ले आर ताहाके पूर्व बाहक गण लईया याईते मथ हईत ना । कथन २ तनि भयानक काल भुजङ्ग मूर्ति धारण करितेन, तददर्शने बाहक गण तये शानका फेरिया पलायन करित । तनि पुनः पूर्व देह धारण करिले ताहारा प्रताप हईत । माणिक्य पुत्रुर मण्डे प्राय सर्वदाई कति य गायक थाकित । प्रात गीतेर शेषे “माणिक्य पुत्रु मन्त्र धारक” एइरूप भनिता थाकत । “मन्त्र धारक” त्रिश राचारी ओ ताहार अनुवर्ती गणेर उपाधि । तत्काले त्रिशकराचारी पाठे यनि महान्त छिलेन, तनि माणिक्य पुत्रुर एतदुपाधि धारणे आपत्ति उत्थापन करेन, ताहाते माणिक्य एतु बलेन ये आम्हि त्रिशकराचारी, माणिक्य एतु रूपे अवतीर्ण हईयाछि, यदि प्रमाण देखिते चाओ, ताहाओ देखाईते पुस्तत आछि । महान्त निदर्शन देखिते चाहिले तनि महान्तके नगरेर प्राप्त भागे एकरी पर्वत कन्दरे लईया गेलें एत तथाम ताहाके एतादृश निदर्शन देखाईया दिलें ये एते अवधि महान्त उक्त उपाधि धारण जनः माणिक्य एतके आर निछुई बलिहनेन । तनि आचार्या श्रीरामानुज स्वामीर कोन उपाधि धारण कराय एइ रूप त्रिरङ्ग निवासि जनैक देवदूत ओ ताहार प्रति आपत्तिवाद करिया छिलेन । एत ताहाके ओ उक्त गिरि कन्दरे लईया गिया । तैयन सम्प्रदायेर एतेष्टाक्त अष्ट द्वादश वैष्णव चिह्न देखईलेन ओ तनि ई ये रामानुज स्वामीर अतिरूप ताहा बुझाईया दिलें । ईहाओ एथाने बला आपत्तिक ये यथनई कोन आश्चर्य अलौकिक कार्या देखाईते हईत तथनई तनि उक्त गिरि श्रृंग गमन करितेन ।

सामहनेही वहां जाने के लिये उस पर चढ़ाते किन्तु जब कहार लोग सर मलारजंग के दरवाजे पर पाखौ उतारते तब योगीराज को कोई नहीं देखने पाता, वे किस समय पाखौ से उतर गये भी कहारों भी नहीं बता सकते । कभी २ वे पाखौ पर स्तम्भित हो बैठकर निज शरीर का भार हतना बढ़ाते कि कहारों को संख्या बिन बढ़ाये वे लोग पाखौ लेही नहीं जा सकते थे । कभी २ वे भयंकर काल भुजंग मूर्ति बनजाते, उसे कहार लोग डर से पाखौ फेंक भाग जाते थे, पुनः पूर्व शरीर धारण करने पर वे सब लोट आते । मानिक्य प्रभु के संग प्राय सदाई केक जन गाने वाले रहते थे । प्रति गान के अन्त में “मानिक्य प्रभु, वरमत धारक” ऐसा उपनाम दिया रहता । “वरमत धारक” यह उपनाम श्रीशंकराचारी वो उस सम्प्रदायियों का है । तत्काल श्रीशंकराचारी को गद्दी पर जो महान्त थे, उन्हीं ने मानिक्य प्रभु को इस उपनाम धारण करते हुए देख कर वाधा डाला । उस पर मानिक्य प्रभु ने बोला कि “मैं ही श्रीशंकराचारी हूँ, मानिक्य प्रभु बन अवतीर्ण हुआ, कुछ प्रमाण देखने चाहती देखलाने में मैं प्रस्तुत हूँ । महान्त कुछ निदर्शन चाहने पर उनने महान्त को नगर के प्रान्त में एक पर्वत के कंदर में ले गया श्री ऐसा कुछ देखलाया मानो उसी दिन से उस उपनाम धारण के कारण महान्त ने मानिक्य प्रभु को कुछ भी नहीं बोला । आचार्य श्रीरामानुज स्वामीजी के कोई उपनाम धारण करने के हेतु से श्रीरंगवामी एक वैष्णव ने उनका प्रतिबंधक हुआ । प्रभुजी उन को भी उस गुफे में ले जाकर वैष्णव सम्प्रदाय के शास्त्रोक्त शरीर में बारह प्रकार के चिह्न देखलाये और वही जो स्वयं रामानुज स्वामी के रूप है, यही समझा दिये । यहां यह भी कहना आवश्यक है कि जब जब कुछ प्रभुत देखलाना पड़ता, तबही उस गुफे में वे रुखी जाते ।

अनेक एतद्महात्मार निकट बाधि शान्तिरु जना  
 त्रैषम अनिते ओ निदिनता ओ गाने शान्तिरु जना  
 उपाय जानिते यईत । माहादेर पीड़ा आ-  
 रोगा हईगा मम्यन । ताहाई तांहार दर्शन  
 पाईत ओ अपरापरा बाधि तांहार मनीषवती  
 :ईया ओ तांहाके देखिते पाईतना । तनि बलिया  
 दिनेन ये पुन्यजन्मर कर्मफल तोमादेर  
 आरोग्यर बाधा करितेछे । धना गण तांहाके  
 धन दान करिले, तनि ताहा एहण करितेन ओ  
 ततावने दरिद्र दिगके वितरण करितेन । समये २  
 अनेक तांहार निकट आरोग्य लाभेर जन्य  
 यईत, एते अर्धांटे सिद्धि हईया गेलें ओ केह २  
 तांहार निकट थाकित, एजना तांहादिके तनि  
 बलितेन, तोमरा बाड़ी या ओ, तोमादेर पिता  
 माता परिवारादि अनेक दिन तोमादिगके ना  
 देखिया अतान्त कातर आछेन । अथवा समये २  
 बलितेन, तोमादेर गृहे अनुक कार्य उपस्थित,  
 वज्जना तोमादिगेर याओरा निताल आवश्यक ।  
 तांहार बाटी गिया देखित महात्मार विषयादानी  
 समस्तुई मता । तांहादेर गृहे यईवार समय  
 असम रूप तांहादिगके क्रुद्ध २ एक २ थो  
 बांश ओ एक एकटी तने सामयिक फल दान  
 करितेन । एतावने सत्सदाई तांहार भाँउरे  
 थाकित । एहक गण ए ठुलिके तांहादेर देवा-  
 र्छना आने रक्षा करिया पूजा करित । बहुदिन  
 रक्षा करिते ओ से ठुनि पछिया यईतना ।

एकदिन तनि गायक रान्दर सहित गान गीहते  
 हिलेन, अकस्मात् रुद्ध हईया उर्द्धे हस्तोत्थलन करि-  
 लेन, देखिया बोध हईल येन कोन द्रव्यतुलिया  
 भरितेछेन । नवीनवर्गण ईशर ठुह कारण  
 कि किञ्चाय करिय तनि बलिलेन ये एकथनि  
 देखि बाँझाय पोत एवल वायुवेगे बन्धोप-  
 सागरे मग्न प्राय हईयाछिल, तांहार कर्णधार एही  
 बलिया आमार शरण लईल, ये यदि एही दूयोग  
 हईते पोत थान मागिक्य आँडु रक्षा करेन,  
 तवे तांहार आश्रमे एत टांहार पूजा दिव ।  
 कोन दिवसे ओ कत टांका दिवे, ताहा तथनई  
 लिखित हईल । निरूपित दिवसे यथन कर्णधार  
 आगिल तथन महात्मार समस्त कथाई-परिपूर्ण ओ  
 प्रमाणोरुत हईल । योगीवर सेई मय्ये हस्त

बहुतेरे काम पीड़ा आरोग्य के अर्थ इस म-  
 हात्मा के निकट प्रोषध लाने को प्रो दारिद्र्य दुःख  
 वो आपत् शान्ति को विधि जानने के लिये  
 जाया करते थे । जिन्हों को धिमारी छुटनेवाली  
 होती, उन्हो सब को वे दर्शन देते ओ अन्यान्य  
 मनुष्य उन के समीप आए भी उनका दर्शन नहीं  
 पाते । वे इसना कहते कि तुम्हारे पूर्व जन्म  
 का कर्म आरोग्य में बाधा डालता है । धनाध्य  
 लोग उनका धन देने पर वे ले लेते वो दरिद्री को  
 बांट देते थे । समय २ में बहुत मनुष्य आरोग्य  
 के अर्थ उनके समीप जाते वो अभीष्ट सिद्ध हो  
 जान पर भी मत्संग के लिये कुछ दिन फिर ठ-  
 हरते । तन्निमित्त वे कह देते कि तुम सब घर  
 चले जाओ क्योंकि तुम का बहुत दिन देखे बिना  
 तुम्हारे पिता माता, परिवारादि अत्यन्त खेद युक्त  
 है अथवा कभी २ यह भी कह देते कि तुम्हारे  
 घर में फलाना काम है, तुम को इस समय जाना  
 अत्यावश्यक है । वे सब घर जाकर देखते कि  
 साधु की बताइ हुई समाचार समस्तही सत्य है ।  
 घर जाने के समय सब की प्रमादी की रीति से  
 एक २ टुकरा बांस वो एक एकठी फल देते । यह  
 सब सर्वदा उनके भंडार में मद्धुद रहते थे । पाहक  
 गण इन सब की पूजा के स्थान पर रखते व  
 नित्य पूजन करते । बहुत दिन रहने से भी वह  
 सब नहीं मद्ध जाते ।

एक दिन वे गानेवाली के साथ भजन गा रहे  
 थे, अकस्मात् चुप हो कर अपना हात उठाये, मानो  
 जैसा कि किसी द्रव्य को खींच उठाने लगे ।  
 समीपवाले सब पूछे कि यह आप क्या कर रहे हैं ?  
 प्रभुजीने बोला कि प्रचंड वायु के मारे एक देशी  
 जहाज बंग सागर में डुब रही थी, उसके नाविक  
 मेरे शरण आकर संगोकार किया कि यदि  
 मानिक्य प्रभु इस दुर्हिन में जहाज को बचादे तो  
 उनके आश्रम में इतना रुपये की पूजा में पहुँच  
 दुंगा । किस दिन की वो कितने रुपये देंगे व  
 भी उसी समय लिख लिया गया । फिर निरूपित  
 दिन में जब नाविक आश्रम में आ पहुँचा तब  
 महात्मा को समस्त बातें पूर्ण हो गयीं वो प्रभु



निष्पेक्षण पृथक् कियं पारमाणे जल बाहिर करिलेन, आश्वादे बोध हईल ताहा समुद्र वारि ।

एक समये एकटी विधवा बगिक बधू प्रचार करिल, ये मागिका प्रभु सहित ताहार विवाह हईवे, विधवार याहा किछु धन छिल, से समस्त हे प्रभु आश्रमे पाठाईया दिल अतःपर विधवा आसिया उपस्थित हईल । से आगिवा मात्र प्रभु ताहाके लईया कुटीरे प्रवेश करिलेन ओ उठयेई क्षण बिलम्बे विवाह परिच्छद परिग्रा बाहिर हईलेन । सेई दिन हईते विधवा पृथक् स्थाने धाकित ओ तथाय योगाभ्यास करित ।

एकटी स्त्रीलोक एकदिन आसिया तांशारानिकट सन्तानेन वर चाहिल । तिनि जिज्ञासा करिलेन, तोमार कत गुल सन्तान आवच्छक ताहाते से बलिण, ये यतदिन बांछिब येन वर्षे २ त्रकटी २ पुत्र हर । तिनि तथास्तु बलिग्रा तांशारके विदाय करिया दिलेन । कतक गुल सन्तान हईले से एकदिन आसिया बलिण, प्रभो ! यत प्राचीन हईतेछि, ततही प्रसव करिते बड़ कछे बोध हईतेछे अतएव आर सन्तान नाहर अरूप वर दान कर । तिनि एवर लईते ताहाके वार २ निवारण करिलेन, किन्तु ताहा से शुनिल ना, अवगेषे अनिच्छा "पूर्वक अतीर्षे सिद्धिरस्तु" बलिग्रा विदाय करिलेन । किन्तु हा ! स्त्री लोकणी ग्रामे प्रवेश करिते ना करिते संवाद पाहेन ये ताहार पतिर मृत्वा हईयाछे ।

मागिका प्रभु १०१५ वत्सर हईल संसार हईते अवसर ग्रहण करियाछेन । तूनिसे एकटी मन्दिर निर्माण कराईया तन्मध्ये समाधि करिलेन । बलिग्रा गेलेन येन मन्दिर द्वार एहेक्षणै अवबुद्ध हया एहेरूप समाधि मन्दिर तांशार दुहे तिन स्थाने निर्मित आछे । लोक एखनओ तथाय पूजा ओ स्तुति गान करिया थाके । प्रवाद एहेरूप ये एखनओ सेखाने प्रणव शब्द सुनिते पाओया यय । एवं शिष्य गण एखनओ तांशार निकट हईते आदेश लाठ करिया थाकेन ।

एही महाअर निकटे कृष्ण विभागेर ओ निजाग राजेजर अनेक लोक अगण्य उपकार लाठ करियाछे । माधो ! तोमार जन्म ओ जीवन धन्या ! !

मृत हुइ । यागी राज ने उसी समय हात टटकाकर थाड़ा सा जल निकालवाहर किया, स्वाद लेने पर अनुभव हुआ कि वह जल समुद्र का है ।

एक समय एक विधवा बनीयाइन ने शीर सचायो कि मानिक्य प्रभु मे उसका विवाह होगी । विधवा का जितना वित्तविभव था समस्त प्रभु के आश्रम में भेजा गया, अनन्तर विधवा स्वयं आ पहुँची । वह आतेही प्रभुजी उस की संग ले आश्रम के भीतर पैठे वो अण बिलम्ब में विवाह के कपड़े पहरे हुए दोनोंही बाहर निकल आये । उसी दिन से विधवा किसी भिन्न स्थान में रहने वो योगाभ्यास करने लगी ।

एक स्त्री एक दिन आकर उन से पुत्र होने का वर मांगी । प्रभु जी ने पूछा तु कितने लड़के मांगती है ? उसने बोला कि जब तक मैं जीउंगी तब तक प्रति वर्ष एक २ पुत्र हो । महात्मा तथास्तु कह कर उस को विदाय किये । कितने से पुत्र होने के अनन्तर वह एक दिन आकर बोली कि हे प्रभो ! अब प्रवस्था मेरौष्ठ होती जाती है, प्रसव करने का क्लेश फिर मुझ से सहा नहीं जाता है । अब ऐसा कुछ वर दीजिये कि लड़का होना बंध हो जाय । इस पर साधुजी वर २ माना किये किन्तु वह न मानी, अन्त में 'अभीष्ट सिद्धिरस्तु' इतना कहकर महात्मा ने उसको विदाय किया किन्तु हा ! स्त्री गांव के भीतर पैठने के पक्षलेही समाचार पाइ कि पति उस का परलोक को सिधारा ।

१० । १५ वर्ष गत हुआ कि मानिक्य प्रभुजीने संसार से प्रवसर लिया, भूमि के नीचे एक मंदिर बनवाकर उस के भीतर समाधि किया वो शीघ्रही द्वार बंध करने की आज्ञा दी । इस भांति समाधि मंदिर उन के ओर भी दी तीन स्थान में है । लोग सब अब तक वहाँ पूजा चढ़ाते हैं वो स्तुति पढ़ते हैं । ऐसी संवाद है कि अबलो वहाँ प्रणव शब्द सुनी जाती है ओ शिष्य गण को अब तक आदेश वाणी मिलती है ।

क्षणा विभागके वो निजाम राज्य के बहुतेरे लोग इन महात्मा से अगण्य उपकार पाये । साधुजी ! अहो ! धन्य तैरा जन्म बोधन्य तेरा शरीर धारण ! !

## प्राप्ति ।

(नास्तिक ध्वान्त निवारिणी, वैदिक मङ्गल मन्त्र) ।

देवदेव मङ्गल मन्त्र आस्तिक मूल ओ प्रमाण है। अनादि ओ मनातिन। देव मन्त्र ओ ब्राह्मण एहे छै भोगे निडक। मन्त्रभूत विदामान परब्रह्मण अपार मक्तिग मन्त्र भागे परिकीर्तित ओ कर्म, उपासना ओ ज्ञान एहे तिन काओ बाधात हईयाछे। भगवद्वाक्य यथा ।

“ ब्रह्मार्पणं ब्रह्म भुवि ब्रह्माग्नौ ब्रह्माहुतः ”

ब्रह्मण तेन गन्तव्यं ब्रह्म कर्म समाधिना ॥

ब्राह्मण भागे मन्त्र मन्त्रभूत मन्त्र ओ शक्तिकर उप-  
पत्ति लिखित हईयाछे। एहे ब्राह्मण भाग ओ  
अनादि ओ अपौरुषेय। अति मन्त्रभूत ईश ओ  
गुरु शिष्य परम्पराय ब्रह्म हय एजया एतावत्  
मन्त्रहै अति। रावण, उभय, महाधर ओ गान्धारी  
आचार्य गण ईश्वर उभय बाध्या करियाछेन।  
किन्तु शत पथ ब्राह्मण ओ महाधर भाष्य देखिले  
बोध हय तेन १०७ अध्याय १८ श मन्त्र हईते  
७१ श मन्त्र पथान्त ब्राह्मण विपरीतार्थ लिखित  
आछे। अनुमान हय महाधर भाष्य परिवर्तन  
करिय। अन्य केह ईश्वर अथवा अर्थ आवेश  
कराईया दियाछे। एहे सुयोगे अनेक भाष्य  
कार दिगके निन्दा करिते आरम्भ करियाछेन  
एवम् ब्राह्मण भागे गुरु शिष्य सम्वाद जन्य प्राय  
दिगेर नाम थाकाय उह आधुनिक बनिया प्रतिपन्न  
करिते चाडितेछेन। मानव मूलतः मानव बुद्धि  
द्वारा ऐश्वर्य वाणीके तात्पर्य करिते विपरीत अर्थ  
करिते अतिष्ठा मने करितेछेन। एहे अति  
विरुद्ध असत्यार्थ पाठे कत लोक तीन ज्ञान,  
अवतार वाद, देवार्चना, स्वर्ग नरक, आदि-  
तर्पणादिक विधि ओ विश्वास परित्याग करितेछे,  
शुद्धगण वेदीत उपविष्टे हईया एहे असत्यार्थ  
एकाग्र पृथक ब्राह्मण, ऋषिय ओ देवता नामक  
द्विज वर्गके उपदेश दान करितेछे, अनादिवादी  
गण आर्षात्वाभिमानो हईतेछे। एहे रूपे मन्त्र  
भाष्यके अर्थ राख अन्त देखिय। एहे मन्त्र पुतिष्ठित  
हईयाछे। एहे मन्त्र हईते वैदिक भाष्य पुकाशित  
हईतेछे। ईश्वरके ब्राह्मण विरुद्ध कथा ओ कोन

## प्रतिज्ञा पत्र ।

(नास्तिक ध्वान्त निवारिणी, वैदिक  
मङ्गल सभा)

प्रगट हो कि सब शास्त्रों में मुख्य वेद है जो  
कि अनादि ईश्वर का वाक्य होने से अनादि  
और सनातन है। उसके दो भाग हैं, पंचिना  
मंत्र, दूसरा ब्राह्मण। मंत्र भाग में सब पदार्थों  
के मध्य उम सर्व व्यापी ब्रह्म की महिमा का  
वर्णन किया है इस मंत्र भाग में कर्म, उपास-  
ना, ज्ञान नाम त्रिकांड की दरमाया है जिस का  
सार अयोक्त भगवद्वाक्य है, ब्रह्मार्पणं ब्रह्म भुवि-  
ब्रह्माग्नौ ब्रह्माहुतं ब्रह्म तेन गन्तव्यं ब्रह्म कर्म  
समाधिना ॥ १ ॥ दूसरे ब्राह्मण भाग में उन  
मंत्रों की विधि और शब्दों की उपपत्ति लिखी  
है, यह ब्राह्मण भाग भी अनादि और सनातन  
है। प्रत्येक मन्वन्तर में गुरु शिष्य द्वारा लब्ध  
होता है, इसी कारण उसकी श्रुति कहते हैं,  
रावण, उवट, महीधर और सायन आदि आ-  
चार्यों ने उनकी वज्रत अच्छी व्याख्या की है  
परन्तु शत पथ ब्राह्मण और महीधर भाष्य के  
देखने से विदित हुआ कि अध्याय २३ में १८ वें  
मंत्र से लेकर ३१ वें मंत्र तक ब्राह्मण के विपरीत  
अर्थ लिखा है बुद्धि विचार से निश्चय हुआ कि  
यह अर्थ महीधरजी का नहीं है कि जो नवदत्त  
दिया है। प्राकृत पुरुषों ने अवसर पाकर पूर्व  
भाष्यों की निन्दा करना आरम्भ किया किन्तु  
गुरु शिष्य संवाद के कारण ब्राह्मण में जो  
व्याप्यों के नाम युक्त हो गये हैं उनकी आधु-  
निक ठहराया और मानुष्य बुद्धि से दैव अर्थ  
का तिरस्कार कर विपरीत अर्थ का लिखना अप-  
नोपनिष्ठा का कारण समझा। उस श्रुति से विरुद्ध  
मिथ्या अर्थ को देख कर मछरी मनुष्यों ने ती-  
र्थ स्नान, राम कृष्णादि अवतारों में ईश्वर भाव-  
ना, देवता स्वर्ग नरक का मानना और तर्पण आहु  
आदि को छोड़ दिया और असंस्कारी शूद्र जन  
चोकिरी पर बैठ कर वही मिथ्या अर्थ ब्राह्मण  
क्षत्री वैश्य नाम द्विजों को उपदेश करने लगे  
और अनार्य हीकर अपने को आर्य माने लगे  
जब धर्म रूप धर्म्य को अधर्म रूप राज से  
ग्रसित देखा तब यह (नास्तिक ध्वान्त निवारि-  
णी वैदिक मङ्गल सभा) नियत की, यह भाष्य  
ब्राह्मण से विरुद्ध नहीं है और इसमें किसी प्र-  
कार की शंका का सम्भव नहीं है, वेद का नाम  
ब्रह्म है क्योंकि वेद में केवल ईश्वर का ही निरु-  
पण है परन्तु प्राकृत पुरुषों ने मंत्रों के मध्य



तथाकार मान्यवर मुन्सिफ द्वय, उकिन ओ गन्याना कृतविद्या महाशय गणेश ईशान्त विशेष यत्न ओ उ२ माह आछे । मभार प्रति मासिक आभिवेशन अनेक भनि पाँउठ ओ सशक्तित पुरुष मभार आर्य शास्त्राय उपदेश दान ओ वक्तृतादि करिय । थाकेन । भगवत् कृपाय एत२ मभार दीर्घजीवन लाभ करिय । जन मभाकेर गलिन प्रकृतिर संशोधन ओ समर्थेय विगल प्रतिभा विस्तार करिते थाकून ईशान्त आभादेर आर्थनीय ।

२ रा ओ ३ रा भाद्र, बहरम्पूर सुनोति मकारिणी मभार द्वितीय वार्षिक उ२मय सम्पन्न हईया भिषाछे । उ२मय काले पाँउठ दिनेर विदाय, पाँउठ गण कर्तक वक्तृता ओ मभार गण कर्तक सुललित रचनादि पाँउठ हईयाछिन । एतदुपलक्षे भा, आ, ध, प्र, मभार सुयोग्य धर्माचार्य ओ कार्य सम्पादक महाशय ओ उपस्थित छिलेन । तांकादेर उतेजना ओ विज्ञानपूर्ण मारगर्भ वक्तृता समूह मभार शत २ श्रोताके विशेष उपकृत ओ आनन्दित करियाछिन । सुनोति मकारिणी मभार समूह मज्जन गणेश महाशय भूति लाभ करिय । उन्नति मार्गे अग्रसर हईयेछे देखिया आभरा परम सुखी आछि ।

भा, आ, ध, प्र, मभार सम्पादक महाशय गत मासेर धर्म पुचारार्थ पराटन काले मुरशिदाबाद, बहरम्पूर आशिम गङ्ग, बाँकीपूर आदिर कार्य समापन पुरुष गुणुपाड़ा गमन करियाछिलेन । तथाकार धर्म मभार त२ कर्तक कयेक दिन वक्तृता ओ प्रपञ्चित अधिका चरण विद्वान् महाशय कर्तक श्रीमद्भागवत पाथात हईयाछिन ।

गोवरडाङ्गा सु. सं. मभार कर्तक आहूत हईया उक्त सम्पादक महाशय गुणुपाड़ा हईते तथाय गमन करेन । तत्र मभार सुयोग्य सम्पादक ओ मभार गण एतद्विषयके नाना मङ्गलाचरण मह मन्त्रना पुरुषक आचरण करियाछिलेन । वि. नि. गोवर डाङ्गा, ईशपूर, गैगपूर, खाँटुरा आदि स्थान समूह क्रमाश्वे छयटी भाव ओ उद्घोषना पूर्ण सनातन धर्म सधर्यो वक्तृता करिया तथाकार सर्व माधारण

माननीय दो मुनिसिफ, वकील और कई एक विद्वान महाशय लोगों का इस विषय में अधिक यत्न और उत्साह है । सभा के प्रति मासिक अधिवेशन में बहुत से पण्डित और सुशिक्षित पुरुष सभा में आर्थ शास्त्रीय उपदेश और वक्तृतादि करते हैं । भगवत् कृपा से यह सभा चिरस्थायी होकर समस्त जनों की मलिन प्रकृति को निर्मल और स्वधर्म की विमल प्रतिमा का विस्तार करती रहे यह हम लोगों की प्रार्थना है ।

बहरम्पूर सुनोति मकारिणी सभा का द्वितीय वार्षिक उत्सव उत्तम रीति से सम्पन्न हुआ है । उत्सव के समय में मत्कार पूर्वक पण्डित लोगों को विदा किया । पण्डित लोगों ने वक्तृतादि और सभासदों ने सुललित रचना आदि को पढ़ा । इस उत्सव के समय भा: आ: ध: प्र: सभा के प्रति योग्य धर्माचार्य और कार्य सम्पादक महाशय भी उपस्थित थे । उन लोगों का उभाह से और विज्ञान से पूर्ण वक्तृता समूह ने, जो कि परम सार गर्भित था, सभास्थित समस्त श्रोता जनों को विशेष उपकृत वो आनन्दित किया । सुनोति मकारिणी सभा समूह मज्जन लोगों की सहानुभूति की पाकर उन्नति मार्ग में अग्रसर होतो यह देखकर हम लोग परम सुखी हो रहे हैं ।

भा: आ: ध: प्र: सभा के सम्पादक महाशय धर्म प्रचार के निमित्त गत दो मास में पर्यटन के समय मुर्शिदाबाद, बहरमपूर, आजिमगंज, बाँकीपूर आदि स्थानों में कार्य को समाप्त करते हुए गुणुपाड़ा में गये । वहाँ की धर्म सभा में उनका कई एक वक्तृता हुई थी और ओ पण्डित भूमिका चरण विद्वान् महाशय ने श्रीमद्भागवत व्याख्यान किया था ।

गोवरडाङ्गा सु: सं: सभा ने बुलाये हुए उक्त सम्पादक महाशय गुणुपाड़ा से वहाँ सिधारे । तत्र सभा के सुयोग्य सम्पादक और सभासद लोगों ने इन महाशय को नाना मङ्गलाचरण के सहित सम्मानना पूर्वक स्वीकार किया । उन्हीं ने गोवरडाङ्गा, इच्छापूर, गईपूर, खाँटुरा आदि स्थानों में क्रम से भाव और उद्घोषना से पूर्ण सनातन

लोकके अत्यन्त उद्भूत हित कार्यार्थिलेन एषः  
तथाय पुनर्गमनेन जना तद्वेश बाभो वर्ग कर्तृक  
नितास्तु अनुरक्त हईयाछैन ।

गोवरडागा हईते तनि ७गयादागे आगमन  
करेन, तथाय ७ जनाभ्ये हिन्दो भावः ५७ टी  
बहुता हईयाछिन । बहुतादि अरणे हिन्दु श्रोता  
गण विशेष रूप उपकृत हईयाछैन । अनिम  
आक्रमण किछु हृदये बाधा पाईयाछैन । निरपेक्ष  
भावे अरण करिले नोष हय आक्रमण ७ हिन्दु  
निगेर नाय अथवा अपेक्षाकृत अधिक उपकृत  
हईतेन ।

बालुचरेर धर्मात्मा श्रीबाबू धान सिंह वयेर  
महाशय भः आः धः प्रः सभा के कार्यार्थ एक कालीन  
२०० टीका दान करिआछैन । धन्य

स्थान २ ये सनातन धर्म सभा सकल स्थापित  
हईतेछे, उपयुक्त आचार्यो अभाव अनेक  
सभार उन्नति हईतेछेना । एई जन्य कतक गुल  
मेधावी ७ साधु अकृतिर लोक ७ कानिधामे  
थाकिरा आचार्योचित आर्य शास्त्र शिक्षा लाभ  
करेन, ईहा भा, आ, ध, प्र, सभार अभिप्राय ।  
एई अभिप्राय साधनार्थ अथा २ यौहारा शिक्षा  
करिबेन, उहादेर भरण पोषणार्थ अर्थे  
आवश्यक । सभा समूह ७ धर्मात्मा गण ए विषये  
पुनिधान करेन, ईहाई प्रार्थनीय ।

आगरा कृच्छता सह प्रकाश करितेछि ये  
गयार डे: माजिफेट ७ कलेक्ट्रर धर्मात्मा  
श्रीमान् बाबू राज किशोर नारायण महाशय एत  
कार्यार्थ मासिक १०० दश टीका दान स्वीकार  
करिआछैन ।

आगरा आह्लादेर सहित प्रकाश करितेछि ये  
गठवारे सुनोति सफारिणी सभार ये संस्था  
प्रदर्शित हईयाछिन तएपरे ईहापुर, माधुबनी ७  
टाकी-सैदपुर, एई तिगटी स्थाने आर तिनटी  
सभा संग्ठापित हईयाछे । सु. स९, सभा गुलिर  
समवेत यत्र “सुनोति” न स्त्री एकथानि पात्रिक  
पत्रिका वाराणसी धर्माभूत यज्ञालये मुद्रित हईया  
प्रकाशित हईते आरम्भ हईयाछे । सभा ७  
पत्रिकार उन्नति भगवत् समीपे प्रार्थनीय ।

धर्मात्मा छः बहुता देकर वहां के सनातन साधारण  
लोगों को अत्यन्त उत्साहित किया । और वहां  
फिर जाने के निमित्त उस देश बाभो वर्ग से अ-  
त्यन्त अनुरक्त हुए ।

गोवरडागा से उन्होंने ने बलाए हुए योगयाधाममें  
आये वो वहां भी कम से ५६ बहुता दी । बहुता  
आदि के अरण से हिन्दु आता जनीं न परम  
उपकृत हुए । सुना जाता है कि केवल ब्राह्म समा-  
जो लोग हृदय में कुछ कोश अनुभव किये । यदि  
ब्राह्म गण उदार चिन्ता से अरण करते तो वे  
हिन्दुओं के समान अथवा उन्हीं से भी अधिक  
उपकार पाते ।

बालुचर के धर्मात्मा श्रीबाबू धानसिंह बैयेर  
महाशय ने भाः आः धः प्रः सभा के कार्यार्थ  
एकवारगी २०० रुपये दान किया । धन्य है !

स्थान २ में जो सनातन धर्म सभा सब स्थापित  
होती जाती है, योग्य आचार्य के न रहने से अनेक  
सभा उन्नति नहीं होती है, इस से भाः आः धः प्रः  
सभाका अभिप्राय यह है कि केएक बुद्धिमान वो साधु  
अन्तःकरण के ब्राह्मण ओ काशो जो में रहकर  
अचार्य के योग्य आर्य शास्त्रादि में शिक्षा लाभ  
करें । इस अभिप्राय साधन के पर्थ अर्थात् शिक्षार्थि-  
यों के भरण पोषणार्थ द्रव्य को विशेष आवश्यकता  
है । सभा समूह वो धर्मात्मा गण इस विषय पर  
दत्त चिन्त हो यही प्रार्थना है ।

हम क्षतश्रुता के सहित यह प्रगट करते हैं कि  
गयाजो के डिपुटी मजिस्ट्रेट वो कलेक्टर धर्मात्मा  
श्रीमान बाबू राजकिशोर नारायण महाशय ने  
इस कार्य की सहायता के लिये मासिक १० दश  
रुपये देना स्वीकार किया ।

हम बड़े आनन्द से प्रगट करते हैं कि गत मास  
के पञ्च में जो सुनोति सफारिणी सभा की संख्या  
दी गयी थी, इसके अनन्तर इच्छापुर, माधुबनी,  
टाकी-सैदपुर, इन तीनों स्थान में तीन सभा  
स्थापित हुई हैं । सुः संः सभा समूह के प्रयत्न से  
“सुनोति” नाम एक पात्रिक पत्रिका, वाराणसी  
धर्माभूत यज्ञालय में छपी हुई प्रकाश होने लगी ।  
भगवत के निकट सभा वो पत्रिका की उन्नति प्रार्थ-  
नीय है ।





“ একএব সুহৃদ্বর্ষো নিধনেপানুযাতি যঃ ।  
শরীরেণ সমম্মাণং সসমন্যতু গচ্ছতি ॥ ”

“ एक एव सुहृद्वर्षी निधनेऽप्यनुयाति यः ।  
शरीरेण समं नाशं सर्वमन्यतु, गच्छति ॥ ”

৬ষ্ঠ ভাগ । { শকাব্দা ১৮০৫ ।  
৭ম সংখ্যা । { কার্তিক—পূর্ণিমা ।

৬ষ্ঠ ভাগ । { শকাব্দা ১৮০৫ ।  
৭ম সংখ্যা । { কার্তিক পূর্ণিমা ।

### সংসার ।

বোজং সংসৃতি ভূমিজস্য হু তমো  
দেহাঙ্গদারকুরো  
রাগঃ পদ্মবম্ভু, কাম্যতু বপুঃ  
কক্কোঃসবংশাধিকাঃ ।  
অগ্রানোদ্ধ্রিয় সংহাতন্ত বিমগ্নাঃ  
পুষ্পাণি দুঃখং কুলং ।  
নানা কাম্য সমুদ্ভবং বহুবিধং  
ভোক্তব্য জীবৎখণঃ ॥

“ অহং, মম ” ইত্যাকার অভিমানই সংসার রূপ  
মহা পাদপের বোজ স্বরূপ । এই বোজ হইতে  
পাক ভৌতিক কণ বিদ্বংশী শরীরে আত্ম বুদ্ধি  
রূপ অকুরের উৎপত্তি হয়, তৎপরে রূপ, রস, গন্ধ,  
স্পর্শ এবং এতৎ পক্ষ প্রাপক বিষয়ে অনুরাগ রূপ  
পদ্মবম্ভু স্বরূপ হইয়া থাকে । পুষ্প জন্ম কৃত

### সংসার ।

বোজং সংসৃতি ভূমিজস্য তু তমো  
দেহাঙ্গদারকুরো  
রাগঃ পদ্মবম্ভু, কাম্য তু বপুঃ  
কক্কোঃসবঃ শাখিকাঃ ।  
অগ্রানোদ্ধ্রিয় সংহতিষ বিমগ্নাঃ  
পুষ্পাষি দুঃখং কলং ।  
নানা কাম্য সমুদ্ভবং বহু বিধং  
ভোক্তব্য জীবঃ খণঃ ॥

“ মে ধো-মেরা ” ইম ভাতি অভিমানহী সংসার  
বপ মড়া পাদপ কা বোজ হৈ । ইম বোজ সে খণ মর  
মে নাশ হোনেবালী পঞ্চ ভূতময় শরীর মে শাক  
বুদ্ধি রূপ অকুর কী উৎপত্তি হোতৌ হৈ । ইমকে অন-  
ন্তর রূপ, রস, গন্ধ, স্পর্শ বৌ শব্দ ইন পাঁচৌ ভুতে  
বিষয় পর অনুরাগ রূপ পদ্মবম্ভু নিকল খোতা হৈ ।

हय । देह धारण এই विशाल ब्रह्मের ক্ষমতা ও প্রাণ, অপান, ব্যান, সমান, উদান বায়ুর সঞ্চারণে উহাৰ শাখা বিস্তৃতি, চক্ষু, কর্ণ, नासा, जिह्वा ও त्रुक एतद्ब्रह्मের पञ्चवायुभाग, अगद्वस्तुते आमातु समूह है ईहारे दूयुन कदम एवम् शोक, रोग, ताप कर्म मरण आदि दुःख है ईहार फल । এই कलेर रगाद्यादे लोलुप है। जीव रूप पक्षी এই पाद-पके आश्रय करिया रिया है ।

नास्ते र्ण गन्धै रनिलेन बाह्जना  
छेत्तुं न शक्यो न च कोटि कर्मभिः ।  
विवेक विज्ञानमहासिना विना  
धातुः प्रमादेन शीतेन मञ्जना ॥

এই সুশোভিত সংসার রূপ বিশাল ব্রহ্মকে ছেদন করা অতীব কঠিন। ইহা অস্ত্র শস্ত্র দ্বারা ভিন্ন হয় না, বায়ুর এতল তাড়নায় ইহা উৎপাটিত হয় না, অগ্নি সংযোগে ইহা ভস্মীভূত হয় না, বাহুবলীয়া বিক্রম ইহাকে নিপাতিত করিতে পারেনা, অথবা সহস্র ২ উপায় অবলম্বন করিলেও ইহার ক্ষয় করিতে পারা যায় না। বিধাতার প্রসাদ মন্ধ সুশোভিত বিবেক বিজ্ঞান রূপ অচও খড়্গেই কেবল ইহা ভিন্ন হইয়া থাকে ।

শ্রুতি প্রমাণৈকমত স্ব ধর্ম  
নিষ্ঠা তয়েবাত্ম বিশুদ্ধিরস্য ।  
বিশুদ্ধ বুদ্ধিঃ পরমাত্ম বেদনঃ  
তেনৈব সংসার সমূল নাশঃ ॥

শ্রুতি প্রমাণানুসারে নিজ বর্ণাশ্রমোচিত ধর্মে নিত্যন্ত নিষ্ঠা রক্ত হইতে হয়, তাহাতে আত্ম শুদ্ধি হইয়া থাকে। এই রূপ বিশুদ্ধ বুদ্ধি পুরুষের আত্ম জ্ঞানের উপলব্ধি হয়। আত্ম জ্ঞানোদয় মাতেই সংসার সমূলে বিনষ্ট হইয়া যায় ।

## মরণ ।

মারু গণ সর্বদা যত্নকে অরণ রাখিবার জন্য ভূয়ো ভূয়ঃ উপদেশ দিয়াছেন। যত্নকে নিকট বর্তী মনে হইলে পাপে মতি হয় না ও ভগবদ্ররণে ভক্তি ও রতি বৃদ্ধি হয়। কোন মহাত্মা বলিয়াছেন জীব জাতি হও, শমন তোমার শিরে বসিয়া বহিয়াছে। কেহবা বলিলেন, মৃত্যু তোমার দেহা-

কী পাশ বা হস্তী হইতে। দেহ ধারণ করা ইম বিশাল ব্রহ্ম का स्तम्भ है भी प्राण, अपान, व्यान, समान वा उदान वायु की फैलनाही इस ब्रह्म का शाखा विस्तार है। चक्षु, कर्ण नासिका, जिह्वा, त्वच् इमको फुनागया है, मिथ्या वस्तुओं में आसक्ति समूह ही इस ब्रह्म के फल है भी शोक, रोग, ताप, जनन, मरण आदि दुःख इसके फल है। इन सब फलों के समाप्ताद के अभिलाष से जीव रूप पक्षी इस पादप की आश्रय कर रहे है।

नास्ते र्ण गन्धै रनिलेन बाह्जना  
छेत्तुं न शक्यो न च कोटि कर्मभिः ।  
विवेक विज्ञान महासिना विना  
धातुः प्रमादेन शीतेन मञ्जना ॥

इस गोभायमान संसार रूपी विशाल ब्रह्म का छेदन करना अत्यन्त कठिन है। यह अस्त्र वा शस्त्र से नहीं काटा जाता, प्रबल वायु के धमक से नहीं उखड़ गिर पड़ता, अग्नि से भस्मीभूत नहीं होता, बाहु के बल से विक्रम से यह नहीं गिराया जा सक्ता है अथवा सहस्र सहस्र उपाय करने पर भी इस को नष्ट नहीं किया जा सक्ता है। यह केवल विवेक विज्ञान रूपी प्रचण्ड चाखे खड़ग ही में, जो कि विधाता का कृपा से मिलनेवाला है, काटा जाता है।

श्रुति प्रमाणैकमत स्वधर्म-  
निष्ठा तयैवात्म विशुद्धिरस्य ।  
विशुद्ध बुद्धिः परमात्म वेदनं  
तेनैव संसार समूल नाशः ॥

श्रुतियां के प्रमाण अनुसार নিজ বর্ণাশ্রম के योग्य धर्म में निपट निष्ठा युक्त होना चाहिये उस से आत्म शुद्धि होती है। इसी रीति विशुद्ध बुद्धि पुरुष का आत्म ज्ञान उपजता है। आत्म ज्ञान उपजनेही से संसार मूल सहित विनष्ट हो जाता है।

## मरण ।

सर्वदा मृत्यु को स्मरण रखने के लिये साधु जन बारम्बार उपदेश कर चुके। मृत्यु की समीप आया हुआ समझने पर पाप की इच्छा घट जाती वो भगवत् के चरण में भक्ति से रति बढ़ती है। किसी महात्मा ने कहा कि जीव सदैव जाग्रत रहा, काल तेरे सौरहात पर बैठा हुआ है। किसी ने बोला कि मृत्यु तेरे कंधे पर चढ़ कर खींच रहा है,

कमल करिउतेह, सोइ तोमार माधु अडोये सकल  
साधन करिया लो । कोन महात्मा उठैउतेहरे  
डाकिया बलि लैन, जाय सावधान ! तोमार  
पञ्चाङ्ग २ काम गमन करिउतेह । कोन माधक  
बलि लैन, तुमि मृदु मृथे पठित हईवार पुन्य  
वारिहार जनन मरण निवारणेर सदावडा कर ।  
कोन माधु एकपु वसिन्नाछैन डुङ्गा येमन  
भेदके भोजन करे मृदु तोमाके मेई रूप  
आस करिउतेह, इथा विमयेर अङ्गियान करिउना ।  
केह बलैन, मृदु तोमार सहज, नेदिन तुमि  
जन्म ग्रहण करियाछ, मृदु मेई दिन हईउतेह  
तोमार सङ्ग २ करिउतेह ७ क्रमशः तोमाके  
आन करिउतेह, तुमि परकाले मृदु हईवार  
उपादान संग्रह कर ।

महात्मा गणेश मार गर्भ कथा गुलि विशेष प्रणि  
धान करिया देखिलान, ये मरण आमार समुत्थे  
क्रोडा करिउतेह, मरण आमार मरुतेर उपर  
बिराज करिउतेह, मरण आमार पदमेर निके  
दाँडाईरा आछे, मरण निद्रितावडार आमार निकट  
उपस्थित रहियाछे, मरण आमि जाग्रत हईलेउ  
आमार सङ्ग २ करिउतेह । आमि ताकाईरा  
देखिलान मरण आमाके चारिदिके घेरिया  
फेलियाछे । ये निके देखि मेई निकेई मरण ।  
आमि मरणेर मध्ये जीवित रहियाछि ! आमि  
मरणेर सङ्गै सदा क्रोडा करिउतेह । मरण आमार  
सहचर, मरण आमाके सग जन्य ७ परित्याग  
करेना ।

एकि ! जगते ये आर किछुई देखिते पाईना !  
याहा देखि ताहाई मरण । आकाशे राशि २ मरणेर  
तारा उठितेह ७ मिटितेह, मरणेर सौगन्ध लईरा  
फूल गुलि एकटा २ करिया फुटितेह, मरणेर मरुत  
काहाके ७ किछु ना बलिया उर्कशामे छुटितेह,  
मरणेर धनि जग ७ डुडिग गगन भेद करिय ! उर्के  
उठितेह । जग ७ मरणेर राज्य । ईहा मरणेर मरण  
णेर पण विमलमे ७ किछुई देखिते पाईना ।  
आमि मरण माला गलार परिया मरणेर ताले २ मरण  
नाच नाचितेह । प्रति ताले आमि नूतन २ मरण  
भोग करिउतेह । आमार जीवन मरणे परिपूर्ण ।  
मरण आमार सगही लईराई आमार दीर्घ जीवन ।

गोघ तेरो साधु कामना आदि को पूरी करले ।  
किमी महात्मा ने उँचो स्वर से पुकार कर बोला,  
जोष सावधान रह, तेरे पाछे काल जा रहा है ।  
किमी माधक ने बोला कि मृत्यु के सुँह में गिरने  
के पहलेंही ऐसी सद्व्यवस्था करले जिसे कि जनन  
मरण से छुट्टी मिले । किसी साधु ने ऐसा भी  
कहा कि सपं जेसा भेडक को भोजन करता है,  
मृत्यु भी तुम्हे वैसही घाम कर रहा है, विषय का  
मथा अभिमान छोड़ देना । किसी किसी ने कहता  
है, कि मृत्यु तेरा सहजात है, जब तुने जन्म लिया,  
मृत्यु उसही दिन से तेरे संगही संग फिरता है  
वो क्रमे क्रम तुम्हे घाम कर रहा है, तु परलोक के  
सुख के पर्थ यथायोग्य द्रव्य संग्रह कर ले ।

महात्मा जर्मों को मार गर्भित कथनों पर ध्यान  
देने से यह देख पड़ता है, जो मरण मेरे सम्मुख में  
कोड़ा कर रहा है, मरण मेरे पोछे भी विद्यमान  
है, मरण मेरे सिर पर विराज कर रहा है, मरण  
मेरे पैर के ओर भी खड़ा है, मेरी निद्रितावस्था  
में भी मेरे समीप उपस्थित है, मैं जाग्रत होने पर  
भी मरण मेरे संग संग फिरता है । मैं ने ताक कर  
देखा कि मरण मुझे घेर लिया है । जिधर देखूँ  
उमो ओर मरण विराजमान है । मैं मरण के मध्य  
में जीवित रहा हूँ ! मैं ने मरणही के संग सदा  
कोड़ा की करती हूँ । मरण मेरा सहचर है, मरण  
मुझको जन भर के लिये भी नहीं छोड़ता है ।

यहाँ यह क्या है ! जगत में ओर कुछही देख  
नहीं पड़ता है ! जो कुछ देख पड़ता वह मरण  
छोड़ के ओर कुछ नहीं । आकाश मार्ग पर मरण  
के कितने राशि राशि नक्षत्र उठते हैं फिर मिट  
जाते हैं, मरण के सुगन्ध लेकर फुलों की गुच्छा  
एक एक करके फूल रही है, मरण का मरुत किसी  
को कुछ कह बिना बड़े बेग से दोड़ रहा है, मरण  
की ध्वनि भर संसार में फैल कर गगन भेद करके  
उँचो ओर बढ़ जाती है । जगत मरण का राज्य  
है । संसार मरण मय है । मरण के मार्ग बिना  
यहाँ ओर कुछ नहीं देख पड़ता है । मैं मरण के  
हार गले में पहन कर मरण के तान से मरण-  
नाच नाच रहा हूँ । प्रति तान में मैं नवीन २  
मरण भोग करता हूँ । मेरा जीवित काल मरणों  
से परिपूर्ण है । मरण राशि को जोड़ कर मेरे  
जीवन को कलता है ।

जीवन कै ? प्राण कै ? यहट्टकू वर्तमान ताहाई  
 १।क जीवन ? तबे जीवन पलक मात्रा याहा अतीत,  
 ताहाई मृत । आमार देशव नग मागरे डुनिया  
 गिराछे, आमा बाग काले हासा, फाँड़ा कोतक,  
 समस्तई मरण हाणिते मि-हैया गिराछे । आमार  
 जन्मदिन २हेते एही पयान्त समस्त वंसर गुलि  
 एमन कि एक एकटी दिन, पल, मूर्त गुलि मरण  
 गय हईया आमार जीवनेर पृष्ठभार हईराछे ।  
 आमार कत भा-वास, कत श्रुत, कत मेह,  
 कत आशा, कत चिन्ता, कत हाँसि, कत रोदन,  
 कत कार्या, कत कथा हईयाछिल हा ! सकलैरई  
 मरण हईराछे । मरण भिन्न आमाते आर किछुई नई  
 आमा एकटी जीवन्त मरण, एकटी २ करिया आमार  
 कत गुलि दिन ये मरिया गेल, ताहा बला यायना  
 जीवनेर मरण आछे किन्तु मरण गुलिर मरण नई ।  
 मरण स्तेपर उपर निता २ कत मरण सकित  
 हईतेछे ताहा बला यायना । एक निमेषे यत  
 मरण हय, समस्त एकज करिले राखिवार ज्ञान  
 पाओया बार ना । मरणेर कलेवर क्रमेठ खूल  
 हईतेछे ; मरणके आधार मरण राशि आलिङ्गन  
 करितेछे । मरणेर घाटे अवतरण कर, अवगाहन  
 कर, मरणेर गङ्गा जल डुबिया याओ, देखिते  
 पाईवे मरणेर मध्ये समस्त जीवित रहियाछे ।  
 मरणेरमध्ये युग युगांतरेर शया विस्तृत रहियछे  
 मरणेर भितर योगासन बसिया कपिल, कणाद,  
 कश्यप, केन, गर्ग, गौतम, चानन, जाबाली, व्यास,  
 वाल्मीकि, वशिष्ठ, भृगु, भरद्वाज, माण्डव्य,  
 मंडूक, शमीक, शुक आदि तपस्या कर रहे है,  
 मरण के मध्य में पत पत शब्द से आर्य महात्माओं  
 की विद्या विजय पताका उड़ रही है, मरण के  
 मध्य में वेदों की प्रकृत रूप अर्थ बाद उज्ज्वल अक्षरों  
 से लिखी हुई है ।

मरणेर मध्ये धर्मात्मा गणेर आनन्द श्रोत,  
 ओ तत्त्व रन्देर अङ्गनारा बहिया याईतेछे । मरणेर  
 मध्ये राम रावणेर युद्ध, भोगार्जुनर लोमहर्षण  
 संग्राम, ओ कत याग यज्ञ हईतेछे । मरणेर मध्ये  
 सीता, सावित्री, दमयन्तीर विलाप धनि सुनिते  
 पाओया याईतेछे । जीव ! तूमि रोदन करितेछ  
 केन ? तोमार याहा हाराईराछे, समस्तई मरणेर

जीवन कहाँ ? प्राण कहाँ ? जो टूटतम वर्त-  
 मान है वही क्या जीवन है ? तब तो जीवन पलक  
 भर है । जो कुछ गत हुआ वह मृत है । मेरा  
 बालकपन मरण समुद्र में डूब गया, मेरी लस समय  
 की हँसी, खेल, कोतुक आदि सब कुछ मरणों की  
 डेरी में मिल गये । मेरे जन्म दिन से लेकर आज  
 तक के वर्ष समूह, वर्ष क्यों, एक एक दिन, पल,  
 मुहूर्त सबही मरण मय हो कर मेरे जीवन के पीठ  
 का बोझ बन गये हैं । मेरे कितने प्रेम, कितने  
 सुख, कितनी खेद, कितनी आशा, कितनी विन्ता,  
 कितनी हँसी, कितनी रोदन, कितने कार्य, कितनी  
 कथन की उत्पत्ति हुई थी, किन्तु हा ! सब किसी  
 का मरण हुआ । मरण बिना मेरा कुछही नहीं है ।  
 मैं एक जीता हुआ मरण हूँ । एक २ करके गोनती  
 में जो मेरे कितने दिन मर गये सो वर्षन के बा-  
 हर है । जीवन का मरण है परन्तु मरणों का  
 मरण नहीं । मरणों की डेरी पर दिनोंदिन कितने  
 मरण आ जमते हैं, सो अकथनीय है । निमेष मात्र  
 में जितने मरण होते हैं, समस्त एकट्ठे करने  
 पर रखने का स्थान नहीं मिलता है । मरण का  
 शरीर क्रम क्रम स्थूल होता जाता है । मरण की  
 फिर मरण समूह जा कर आलिङ्गन करते हैं ।  
 मरण के घाट पर उतरी, वहाँ स्नान करो, मरण के  
 गंभीर जल में मग्न हो जाओ, देख लो वहाँ मरण  
 के मध्य में समस्तही जाते विद्यमान है । मरण के  
 मध्य में युग युगांतर की विद्यावन पसारी हुई है ।  
 मरण के भीतर योगासन पर बैठके कपिल, कणाद,  
 कश्यप, केन, कठ, गर्ग, गौतम, अयन, जाबाली,  
 व्यास, वाल्मीकि, वशिष्ठ, भृगु, भरद्वाज, माण्डव्य,  
 मंडूक, शमीक, शुक आदि तपस्या कर रहे हैं,  
 मरण के मध्य में पत पत शब्द से आर्य महात्माओं  
 की विद्या विजय पताका उड़ रही है, मरण के  
 मध्य में वेदों की प्रकृत रूप अर्थ बाद उज्ज्वल अक्षरों  
 से लिखी हुई है ।

मरण के मध्य में धर्मात्माओं के आनन्द प्रवाह  
 वो भक्त जनों की आसुओं की धारा बही जाती  
 है, मरण के मध्य में रावण से श्रीराम चन्द्रजी  
 का युद्ध, मोठमार्जुन का लोमहर्षण संग्राम वो  
 कितने याग यज्ञ हो रहे हैं, मरण के मध्य में  
 सीता, सावित्री वी दमयन्ती की विलाप धनि सुनने  
 में आती है । जीव ! तूम रोते हो क्यों ? जो कुछ

ये आनादेर परम मन्त्र । मरण मन्त्र । वास कः ।  
मरणे भय केन ? मरणे हात भरिया भीरे २  
मरणे मन्त्र २ मरणे मन्त्र २ हैरा या ७, अतोत  
मन्त्र ७ होयार पुत्र्यक हैदेव, वर्तमान ७  
तनिय ७ क्रमे मन्त्रे गते प्रवेश करिवे ।  
मरण है निता, मरण है मन्त्र, मरण है मन्त्र । जीव !  
मरणके भालवास, मरणके आनिजन कर ।  
जीवित थाकिते इच्छा करिना, केनना थाकिते  
पारिवेना ! जीवित थाकिते चाहिले है मन्त्रिया  
या हैवे । मन्त्रिया या ७, मन्त्र मन्त्रे ना ।

### दुर्लभ कि ।

( पूर्व आनादेर मन्त्र )

“ दुर्लभं त्रयमेवैतद्देवानुग्रहहेतुकं ९

मनुष्यान् मुमुक्षुन् महापुरुष संश्रयः ” ॥

अथेन पराकाष्ठा लाभ करिवार जन्य जावेर चित  
अनिवाय वेगे धावित । आमरा माधारगतः  
विषयेर आनाद करिया यादृश सुख अनुभव करिया  
थाकि ताश प्रकृत सुख नहे । केन ना विषय अथे  
सुखी हैरा ७ आमरा दरिद्र, पीडित, दांष्ट, विपद  
अथ, अथ जीवनेर अनन्त, दर्शन, मन्त्र २ दुःखानुभव  
करिया थाकि । दुःखेन अतास्ताभाव है परम सुख ।  
नदि अनेनर दुःखे दुःखानुभव अथवा अनन्त  
वैकुण्ठ निजे है शोक रोग, ताप, जरा, जन्म  
मरणदि जना दुःख भोग करिनाम, तवे आमार  
सुख कोषाय ! एहे जना महात्मा गण वैषयिक  
सुखके सुख बलिया गणना करेन नाहे । सर्वथा  
दुःखेन अतास्ताभाव हैले है परम सुखेन उदय  
हैरा थाके । एहे सुखेन है नाम शान्ति, हैरा है नाम  
मुक्ति । हैरा है जीव परमार्थ बोधे सेवा करिया  
थाके । एहे परमार्थ नितास्त प्रार्थनीय हैले ७,  
अकृत मनुष्या लाभ ना करिते पारिवेना ताश  
मन्त्रे केही प्राप्ति है ना ।

पूर्व है उक्त हैरा है ये पन्नादि देह हैते  
मनुष्य देह लाभ करिते हैले अकृत परिवर्तन  
जन्य अतीव तीव्र चेष्टा करिते हैर किन्तु पशु  
हैते मनुष्य हैरा यत कठिन, मनुष्य हैरा मनुष्य

आना, मरण को उरी मत, मरण तो हमारे परम  
सखा है । मरण के मध्य में निवास करके मरण  
को क्यों डरते हो । मरण के हात प्रकड़े हुए मरण  
के संगे संग मरण में मग्न हो जाओ । अतीत काल  
के समस्त हौतुम्हारे प्रत्यक्षीभूत होंगे । वर्तमान वो  
भविष्यत भी क्रमे क्रम मरण के गर्भ में प्रवेश करेंगे ।  
मरण ही नित्य है, मरण ही सत्य है, जो कुछ है सो  
मरण ही है । जीव मरण को प्रेम करो, मरण को  
आलिंगन करो । जीते रहने को इच्छा न करो,  
क्यों कि वह इच्छा सम्पूर्ण होने वाली नहीं ।  
जीते रहने चाहो तो मर जाओगे, मर जाओ तो  
फिर न मरोगे ।

### दुर्लभ पदार्थ क्या है ।

( पूर्व का अवधिष )

“ दुर्लभं त्रयमेवैतद्देवानुग्रहहेतुकं ।

मनुष्यत्वं मुमुक्षुत्वं सच्च पुरुष संश्रयः ॥ ”

सुख को शेष सौमा तक प्राप्त होने के अर्थ  
मन आनवाय्य वेग से धावमान है । हम सब  
सर्वदा विषय रस को स्वाद ले ले कर जिस  
भांति सुख का अनुभव करते हैं वह प्रकृत सुख  
नहीं है । क्यों कि विषय सुख से सुखी बन कर  
भी दरिद्र, पीडित, दांष्ट, विपद ग्रस्त, वो जी-  
वों की भय प्राप्त अवस्था देख कर हम दुःखी  
होते हैं । दुःख का अत्यन्त अभाव होने से  
परम सुख उपजता है । यदि दुःख से  
दुःख अनुभव अथवा निज दुरवस्था आजाने पर  
शोक, रोग, ताप, जरा, जन्म, मरणादि को किसी  
हेतु से हम दुःख भोग करना ही पड़ा तो फिर  
हमारा सुख कहाँ ? इस लिये महात्मा जनों ने  
वैषयिक सुख को सुख करके न माना । सर्वथा  
दुःख का अत्यन्त अभाव होने ही पर परम  
सुख का उदय होता है । इसी सुख का नाम  
शान्ति, इसी का नाम मुक्ति है । परमार्थ मान  
कर जीवों ने इस ही को सेवा की करती है ।  
यह परमार्थ निपट प्रार्थनीय होने पर भी प्रकृत  
मनुष्यत्व लाभ किये बिना सचजे हो मिलने वा-  
ली नहीं है ।

पूर्व में कहा गया कि यदि पशु आदि देह  
से मनुष्य शरीर लाभ करना चांता प्रकृत के  
परिवर्तन के निमित्त बड़ी तिव्र चेष्टा करना  
पड़ती है । किन्तु पशु से मनुष्य बनना यादृश  
कठिन है, मनुष्य देह पाकर मनुष्यत्व लाभ  
करना जहाँ से अधिकतर सुकटित है । मनुष्य



देवता इत्यादि यत् कठिन, मनुष्या इत्यादि, मनुष्यात् लाभ करा तदपेक्षा आरु कठिन। मनुष्या देह ७ तत्प्रकृतिर एकात्तु चित्तुन द्वार, पञ्च प्रकृतिर अस्मिन्मन इत्यादि मनुष्या देह नाभेत्तु मनुष्यात् लाभ किञ्च मनुष्य इत्यादि मनुष्यात् अकृत प्रकृति लाभ करा नाभेत्तु मनुष्यात्। शुभ कार्यात् अनुष्ठान द्वारा मनुष्या देह पञ्च पञ्चैते पात्रे, किञ्च अनायास प्रकृत मनुष्या इत्यादि पात्रे ना। केनना मनुष्य भोगाणां दञ्जन करिते ना पारिते मुक्तिर द्वार उन्वाचित इत्यना। मन्त्राग शुभकार्या साधन द्वारा मुक्तिर पञ्च आरु दुर्गम इत्यादि उठे। देव लोके ऐश्वर्या भोग मनु इत्यादि भोगावसाने मनुष्यात् लाभ आनि-वार उन्वाचित इत्यादि पात्रे शुभकार्या साधन प्रकृत वरुण ७ देवधाम कामना करेन ना। मनुष्या देह प्रकृत मनुष्यात् लाभ करिते पारिते जीव अनायास लाभ पद प्राप्ति इत्यादि पात्रे। ऐश्वर्य मन्त्रेण वेग मन्त्रेण, रिपु वर्गेन वञ्चिकरण, अन्तःकरणेन विमुक्ति साधन, मन्त्रभूते मन्त्र दर्शन, अभि-मानेन परिहार आदि मनुष्यात् लाभेन प्रधान उपा-दान। एतावत् देवानुग्रहेन अतीत अर्थात् (निज अहं दृष्टिस्तु मानवेन) आग्रहातीत वनिश्या नितात्तु दुर्गम। एते मनुष्यात् उपाञ्जन काले नाना विघ्न विद्वन्ना आगिया उपार्जित इत्य, देवानु-ग्रह विघ्न तत्तावत् विनष्टे इत्य ना।

मनुष्यात् लाभ करिते ७ मुक्तिर अतिनास महज्ज अज्ञात इत्यना। विषय भोगे क्रेशानुभव ७ विषयानुराग निहृदिहे परम सुखेन साधनी इहा यत्तदिन ना उन्वाचित इत्य, तावत् जीव महाजितेन्द्रिय योगीन्द्र इत्यादि मुक्ति लाभ करिते पात्रे ना। योगे आगियादि अष्टे सिद्धि लाभ करिते अहं मन्त्रादि अभिमान बाधिते ७ बाधिते पात्रे, एतन्ना अनेक योगी ७ मुक्ति लाज्जन इत्यादि पात्रेन ना। विषय विराग वा वासना त्यागहे मुक्तिर प्रधान उपाय। विनिहे मनुष्य विनि पार्थिव वासना एकेनादे जलाञ्जलि निदत्त मन्त्रे। साधन दले ऐश्वर्येण शुभदृष्टिके आकर्षण करिते ना पारिते महज्ज मुक्तिर जना चित्तुन विनष्ट इत्यना। मुक्ताञ्जलि उग्रवेन साधना मादपेक्षा, एते जना इहा पञ्च दुर्गम।

मे देवता होना जैसा कठिन है, मनुष्य बन कर मनुष्यत्व लाभ करना उस बड़ कर कठिन है। मनुष्य देह ही उसकी प्रकृति के एकान्त चिन्तन के द्वारा पञ्च प्रकृति के बदले मनुष्य देह मिलने की सम्भावना है, किन्तु मनुष्य होकर मनुष्य की प्रकृत प्रकृति लाभ करना अत्यन्त दुःख साध्य है। शुभ कार्य के अनुष्ठान के द्वारा मनुष्य को देवत्व मिल सकता है, किन्तु प्रकृत मनुष्य बनना अनायास नहीं है। क्योंकि समस्त भोग की आशा वर्जन किये बिना मुक्ति की दरवाजा खुली ऊँह देख नहीं पड़ती है। मन्त्राग शुभ कार्य साधन से मुक्ति मार्ग अधिक दुर्गम हो जाता है। देव लोक के ऐश्वर्य भोग से जीव प्रसन्न हो जाते वो भोग काल के अन्त ही फिर उनको मर्त्य धाम में आना पड़ता है। अतएव धीमान् पुरुष देव धाम की कामना कभी नहीं करते हैं। मनुष्य शरीर में प्रकृत मनुष्य भाव प्राप्त होने ही से अनायास जीव की मुक्ति पद मिल सकता है। इन्द्रियों की गति की रोकना, रिपुवर्ग को वश करना, अन्तःकरण की निर्मलता साधन करना, सर्व्व भूत में समदर्शन होना अभिमान की छोड़ना इत्यादि मनुष्यत्व प्राप्त होने के प्रधान उपादान है। देवताओं के अनुग्रह बिना ये सब नहीं मिलते हैं अर्थात् निज (अहं बुद्धि यत्त मनुष्य को) सामर्थ्य के अभाव है, इसे नितान्त दुर्लभ है। इस मनुष्यत्व के अर्जन काल में भाँति भाँति के विघ्न विद्वन्ना आजाते, देवानुग्रह बिना ये सब नहीं मिलते हैं।

मनुष्यत्व मिलने पर भी मुक्ति की कामना अनायास नहीं होती है। जब तक विषय भोग से क्रेश का अनुभव ही विषयानुराग की निवृत्ति ही परम सुख है बुझ नहीं पड़ेगा, तावत् पथ्यन्त चाहे जीव महा जितेन्द्रिय योगीन्द्र क्यों न हो, मुक्ति नहीं पा सकता है। योग कर-के अणिमादि अष्ट सिद्धि मिलने पर अहं मम इत्यादि अभिमान चाहे बड़ भी सकता है। इसे अनेक योगी ७ भी मुक्ति भाजन नहीं बन सकते हैं। विषय विराग या वासना का त्याग ही की मुक्ति का प्रधान उपाय कर जानना। वे ही सुमुक्त हैं जो कि पार्थिव वासना की एकवारगी विसर्जन कर सकें। साधना के बल से ईश्वर की शुभ दृष्टि यदि आकृष्ट नहीं तो चित्त सचजे ही मुक्तिके निमित्त नहीं व्याप्त होता है। भग-

मनुष्य मनुष्य कहलैहै ये मुक्तिपद लाठ काँटे  
पारिबै जानै नहै । महापुरुष दिगे मरित  
महा मरणा कहलैहै मुक्ति पथ प्रदर्शन करिबै के ?  
इहः एकपोल कलनास लक्ष कहैत पारै ना ।  
मं प्रकृत महासम जाँवर मोनाग सापेक ।  
इहः करिबैहै माधु दर्शन रहना । माधुगण साँदे  
निष्ठुर आन थाकेन, कथन दृष्टि गोचर कहैत  
प्रखर भाव उद्वेग करिया मरुज ठाँसनिगके  
ठिनिया लउया यायना । ठिनिते पारिबै मरुज  
निकटे राबिबै चाहेन ना, निकटे बनिवार  
अधिकार पाहैत उँहावेन निरल अनय  
निगड़ नख आगरी उँपलक्ष करिबै पारि न ।

“ महा पुरुष सम्पर्कात् संसारान्व लज्जने ।

युक्ति सं प्रापात् राम यथा नौविर नाविकात् ॥”  
अर्थात् नौविर बलियाहिलेन मरुज नाविकात् । येमन  
नदी पारैर जन्य नाविके निकटे नौका कहैत  
हय, तद्रूप संसारान्व उँगीर हईवार जन्य महा-  
पुरुष संसर्ग करिया उँपाय लाठ करिबै हय ।  
अतएव मज्जन मरु निताउ अरुजनीय, केनना  
इहाते मनुष्य माधु कामना पूर्ण हय । मरुजनीय  
अनुष्ठान करिबै ये कलनास हय, मरुजनीय  
मरु करिबै तदपेक्षा अधिक कर हईया थाके ।  
केनना मं पुरुष निकटे थाकिले आहार विशुद्ध  
उ वलवती प्रकृति स्फुरित हईया आहार भनिन  
उ दुर्बल प्रकृतिके अति हृत करे उ हृदय निज  
प्रतिकृति अक्षित करिया देय । अतएव माधु  
मरुहै मरुतोभावे कौनेर प्राप्तीय । यत  
किछु दुर्लभ बनिग उँक हईयाछे मरुज द्वारा  
मनुष्य सुलभ हईया पड़े ।

## छुरि करा पाप केन ?

अन्यत्र द्रव्य अपहरण करा महापाप इहा  
जगते चिर विद्योपि । पर-पदार्थापहारीके  
अनख नरकागिरे विदग्ध कहैत हईबै इहा मरु  
साधारण चिरसंस्कार । ये अन्यत्र धन ताहार  
अगोचरे वा विनाभुगतिरे अहण करे, यमराज  
ताहार प्रतिपत्ता करै न । चौथी वृत्ति छुरि

है । इस लिये मुमुक्षुता परम दुर्लभ है ।

मुमुक्षु होने ही से मनुष्य को मुक्ति नहीं  
मिलती है । सदा महापुरुषों के सत्संग बिना  
मुक्ति मार्ग की देखावे कौन । निज कपोल क-  
ल्पना से यह मिलनेवाली नहीं है । सौभाग्य  
बिना जीवों का मत्पुरुषों का सत्संग नहीं  
होता है । जब चाही तबही माधु का दर्शन नहीं  
मिलता है । माधु लोग प्रायः किये ऊँह स्थान में  
रहते हैं । भाग्य वसने यदि दर्शन भी मिले तो  
उनके अप्रगट भाव की अनायास सभझ लेना  
अत्यन्त कठिन है । कोइ पहचाने भी ती  
उमको अपने समीप रहने भी नहीं देते, दें  
भी तो हम इतनी सामर्थ्य कहाँ जो उनके  
निर्मल हृदय का निगूढ़ तत्व को भलो भाँति  
समझ लें ।

“ महा पुरुष सम्पर्कात् संसारान्व लज्जने ।

युक्ति संप्राप्यते राम यथा नौविर नाविकात् ॥

ब्रह्मर्षि वांछजी ने बोला, कि हे रामचन्द्र !  
जैसे नदी के पार उतरने के लिये नाविक से  
नाव मिलती है, उसी रीत समार रूप समुद्र  
उतरने के अर्थ महापुरुष के सत्संग से उत्तम  
प्रवन्ध होजाता है । अतएव मज्जनों से सत्संग  
करना अत्यन्त आवश्यकोर्थ है । क्योंकि इस से  
मुक्ति चाहनेवालों की साधकामना पूर्ण हो  
जाती है । सत्कार्य के अनुष्ठान करने पर  
जो फलोदय होता है, मज्जनों से संग करने  
पर उस से अधिक फल मिलता है । क्योंकि सत्  
पुरुषों के समीप रहने पर उन्हीं की विशुद्ध  
वो वलवती प्रकृतिने असर करके मेरी मलिन  
वो दुर्बल प्रकृति को अभौभूत कर डालती औ  
हृदय में निज स्वरूप को चित्र करदेती है ।  
अतएव मज्जनों के सत्संग सब से परम दुर्लभ  
है । सत्संगही सर्वथा जीवों का प्रार्थनीय  
है । पूर्व में जितनेही कुछ दुर्लभ कर वर्णन  
किये गये सत्संग के द्वारा सबही कुछ सुलभ  
हो जाते हैं ।

चोरी करना क्यों पाप है ।

संसार में चिर काल से यह प्रकाशित है कि पर-  
द्रव्य अपहरण करना महा पाप है । पर पदार्थाप-  
हारी को प्रचण्ड नरकाग्नि में विदग्ध होता है, य-  
सर्व साधारण का चिर संस्कार है । जिसने दुर्मा-  
का द्रव्य स्वत्वाधिकारी के अगोचर में अथवा अन-  
की परमात्मा प्रिया ग्रहण करता है यमराज उस पर

करि । सकल मिलिआ दल बद्ध रहैय । "चुर करी पाप" এই কথা বলিয়াছ বলিয়া চুরি করা পাপ বলিতে পারি না । পাপের বিচার ঐশ্বরের নিকটে, মানবের সম্মুখে নাই । চুরি করা যদি ঐশ্বরের সম্মুখে অপরাধ বলিয়া স্থিরীকৃত হয়, তবে নিশ্চয়ই চোর নরক যাতনা ভোগ করিবে । হরি রামের একটি ঘড়ী চুরি করিয়াছিল, এখন হরি ও রাম উভয়েই পরলোক গমন করিয়াছে । মনে কর রাম ঐশ্বরের নিকটে হরি তাহার ঘড়ী চুরি করিয়াছে বলিয়া অভিযোগ করিল । হরি "সমর্থ নাথ" বলিল, স্বামিন্ ! আমি রামের ঘড়ী চুরি করি নাই । আমি জানি জগতের কোন দ্রব্য কাহারই নহে, সমস্তই তোমার, লোকে অজ্ঞানতা বশতঃ আমার ২ বলিয়া থাকে নাহ । তোমার দ্রব্য চুরি করিব কিরূপে ? তোমার দ্রব্য তোমার পৃথিবীতে রাখিয়া আসিয়াছি । রাম তোমার দ্রব্যকে তাহার নিজের বলিয়া আমার নামে অভিযোগ করিয়াছে । আমি যে ঘড়ীটা লইয়াছিলাম, তাহা তোমার, তোমার সমক্ষেই তাহা লইয়াছিলাম, লুকাইয়া লইনাই, কারণ তোমাকে লুকাইয়া লইবার উপায় নাই । অতএব আমি চোর নহি, রামই চোর, কেননা রাম তোমার দ্রব্যকে আপনার বলিয়াছে । রামই বন্ধন দশাশ্রয় হইল ।

"কর্তৃত্বাঘ্রকার সংকল্পোবন্ধঃ" ইতি শ্রুতিঃ ।

"আমি এই কার্য করিতেছি, এই দ্রব্য আমার" ইত্যাকার অভিমানই বন্ধনের কারণ । ঐশ্বরের দ্রব্য চুরি হয় নাই সুতরাং ঐশ্বর হরিকে মুক্তি দান করলেন । ঐশ্বরের দ্রব্য হরি আত্মসাৎ করে নাই তবে ঐশ্বরের বিচারে হরি দোষী প্রমাণীকৃত হইবে কেন ? বড় বিষয় সমস্যা আসিয়া পড়িল । চোর বর্ণ ভাবিতেছে হয়তো তাহার অব্যাহতি পাইল । মুক্তি বৃদ্ধির অশুভত, সুতরাং বৃদ্ধি পবিত্র ও নির্মল নাহিলে মুক্তিও সর্বত্র প্রকৃত তত্ত্ব নিরূপণে সমর্থ হয় না । এই জন্য স্মান ও বিজ্ঞানের শরণাগত হইয়া এক্ষণে প্রকৃত সিদ্ধান্ত স্থির করিতে প্রবৃত্ত হইব ।

মনের বহু বিধ সূক্ষ্ম ২ শক্তি আছে । তন্মধ্যে স্মৃতিশক্তি, সঞ্চারিকা, সংগ্রাহিকা, ও সম্পাদিকা এই চতুর্বিধ শক্তিই প্রধান । মনের যে শক্তি

কখনে লগা কি খোঁজী করনা পাপ হৈ, इसीमें खोरी को हम "पाप" नहीं कह सके हैं । पाप का न्याय ईश्वर के समीप होता है, मनुष्य के सम्मुख नहीं । खोरी करना यदि ईश्वर के सम्मुख अपराध ठहरता तो खोर को अवश्यही नरक यातना भोगना हीगा । हरि ने राम की एक जेब घड़ी चोरी लिया था । अब हरि वो राम दोनोंही परलोक को चले गये । मानो कि राम ईश्वर के समीप यह अभियोग किया कि हरि न उसकी जेब घड़ी चोरी लिया । हरि ने अपने पक्ष पुष्ट रखने के लिये बोला, हे स्वामिन ! राम की घड़ी में तो न लिया । मैं मानो भांति जानता हूँ कि संसार के किसी द्रव्य का स्वामी कोई नहीं है, जो कुछ है भा पापही का है । लोगों ने अज्ञानता से "हमारा" कहा करता है । आप के द्रव्य में कैसे चोराउगा ? आप के द्रव्य आपही को पृथ्वी पर रख छोड़ आया हूँ । राम ने झूठे आप के द्रव्य को अपना मान मेरे नाम से अभियोग किया । मैंने जो घड़ी ली थी, वह आप की है, आपही के मालिकने में ले लिया था, आप से छिपाया नहीं, क्योंकि आप से छिपावने का कोई उपायही नहीं है । अतएव मैं खोर नहीं हूँ, रामही खोर है, क्योंकि राम आप ने जिस द्रव्य के स्वामी हैं, उसको अपना मान लिया । रामही ने बंधन दशा की प्राप्त हुई ।

"कर्तृत्वाघ्रकार संकल्पोबन्धः" इति श्रुतिः

"मैं यह कार्य करता हूँ, यह द्रव्य मेरा है," इस भांति अभिमान ही बंधन का कारण होता है । ईश्वर का द्रव्य खोसा नहीं गया, अतएव ईश्वर ने हरि को मुक्ति दी । हरि ने ईश्वर के द्रव्य को 'आत्म सात्' नहीं किया, ईश्वर के न्याय से हरि निरर्थक क्यों अपराधी प्रमाणित होगा ? अब बड़ी कठिन पहेली आ पड़ी । खोरों ने सोचता है कि हम तो बंध गये । युक्ति बुद्धि की अनुगामिनी है, अतएव बुद्धि यदि पवित्र वा निर्मल नहीं तो युक्ति सर्वत्र प्रकृत तत्व स्थिर करने में समर्थ नहीं होती है । इसी लिये ज्ञान वी विज्ञान के शरणागत हो कर अब प्रकृत सिद्धान्त करना चाहते हैं ।

मन की नामा भांति सूक्ष्म शक्ति है । उन्हीं में स्मृतिका, संचारिका, संग्राहिका वी सम्पादिका वी आरम्भ की शक्ति प्रधान है । मन की जो

मनस हईने मनोर भाव वृत्ति आशु पथ निशा  
ईन्द्रियादिस माहावो बाहिरै अकाशित ०२, ताहार  
नाम सम्प्रकाशिका । एहे सम्प्रकाशिका शक्तिर  
सहित ये शक्ति मिश्रित থাকिले मानवोर मनोर  
भाव भाषा वा अन्य कोन सक्रेत द्वारा अन्य  
वाक्य मन धारणा कराहेरा निते पाऐर, ताहार  
नाम सम्प्रकाशिका । मनोर ये शक्ति अन्य वाक्य ना  
विवर्य हईते भाव वा गुण किंवा शक्ति ग्रहण  
करिते पाऐर, ताहार नाम संग्रहादिक एतए ये  
शक्ति संग्रहात भाव, गुण वा शक्तिके मनोमग्न  
रक्षा करिते पाऐर ताहाई मनोमग्न शक्ति ।  
मन यथन भगवदाराधना, माधु काग्योर अनुष्ठान,  
ईन्द्रिय विकार वज्जिन आदि द्वारा निग्रह हय एतए  
क्रमे चिंत्यकृत मान निग्रह हईते থাকे  
तथन प्राकृतिकी शक्ति निचय क्रमशः क्रिया  
वज्जित हईरा पाऐर । गेहे समये मानव प्राकृतिके  
“ संयमनी ” नामी एक अपूर्व शक्तिर अहूर हय ।  
एहे शक्ति परिवर्द्धित हईले प्राकृतिकी शक्ति  
आन ताहार उपर आधिपत्य करिते पाऐर ना,  
एतए संयमनी शक्ति ओ मनोप्राकृतिके बाह्य  
जगतोर शक्तिर संचित मिश्रित हईते देय ना ।  
एहे समये मोहोत्थाप जना क्रियादिस अनुभव  
हय ना, सुख दुःख, मान अपमान समान हईरा  
आगे, विष्ठा चन्दन आतेन वृद्धि उदय हय,  
क्रुद्ध वृद्ध, विष अमृतानि रैषमा वृद्धि विनये  
हईरा याय । तथन तूयि, आगि, ईनि, त्रिनि, ज्ञान  
पाऐर ना । आपनाय ओ पर एतेन ज्ञान टूरे  
पलायन करे । मन संयत अर्थात् क्रिया रहित  
हईलेई भेदाभेद तिरोहित हय । केनना

“ मन एव मनुष्याणां भेदाभेदस्य कारणम् ”

मनईमनुष्या गणेर भेदाभेदरूप द्वैतज्ञानेर  
उदय करिया देय । मन संयत हईलेई समस्त  
जगत् चिन्मय बलिया बोध हय ।

“ ननु भूते हितं ब्रह्म भेदाभेदो न विद्यते ।

जावन्मुक्ति गीता ।

सर्वभूतेई एक सच्चिदानन्द ब्रह्म विराजित,  
ताहार कोथाओ भेद-भाव नाई । योगीन्द्र गण  
तिम ए अवस्था अन्य केह नाउ करिते पाऐरन ना ।  
वत दिन पर्याप्त अवतिर करण हय ततदिन ये

शक्ति प्रवल होने पर मन की भाव वृत्ति आशु मार्ग  
हो कर इन्द्रियादि की सहायता से बाहर जा प्रका-  
शित होती है, उसका नाम सम्प्रकाशिका है । इस  
सम्प्रकाशिका शक्ति से जो शक्ति मिलने पर मनुष्य के  
अस्तःकरण का भाव भाषा या और किसी संकेत से  
दुसरे मनुष्य के मन में धारणा करा दे सकती है उसी  
का नाम संचारिका है । मन की जो शक्ति दुसरे  
किसी व्यक्ति या वस्तु से भाव या गुण वा शक्ति ग्रहण  
कर सकती है, उसी का नाम संग्राहिका । जो जो  
शक्ति संग्रह किये हुये भाव, गुण वा शक्ति को मन के  
भीतर पोषण या रक्षा कर सकती है, उसी को  
मनोपिका शक्तिकही जाती है । मन जब भगवत् की  
आराधना, माधु कार्य के अनुष्ठान, इन्द्रिय विकारों  
का वज्जिन आदि से निर्मल होता है वो धीरे-धीरे चित्-  
शक्ति के ध्यान में मग्न होता रहै उस समय पूर्वी-  
ज्ञ प्राकृतिकी शक्ति समूह क्रमे क्रम क्रिया रहित  
हो जाती है, उस समय मानव-प्रकृति में “ संयमनी ”  
नाम एक अपूर्व शक्ति का संकुर होता है । उस शक्ति  
को संचित भाव पर प्राकृतिकी शक्ति फिर उस पर  
पशुता नहीं कर सकती है जो संयमनी शक्ति भी मन  
की प्रकृति की बाह्य जगत से मिलने की नहीं देती  
है । इसी समय में महात्माओं की श्रोत, उत्थापादि  
के लिये जगत् अनुभव नहीं जाता है, सुख दुःख,  
मान, अपमान सब समान बोध होता है, बिष्ठा  
चन्दन में अभेद बुद्धि होती है, सुद, लहत्, विष  
अमृत आदि की वैषम्य बुद्धि विनष्ट हो जाती है,  
उस समय “ तू, मैं, यह, वह ” आदि ज्ञान नहीं  
रहता है । अपना वो बेगाना यह हैत बुद्धि दूर भाग  
जाती है । मन संयत याने क्रिया वज्जित होने हो से  
भेदाभेद ज्ञान तिरोहित हो जाता है क्योंकि  
“ मन एव मनुष्याणां भेदाभेदस्य कारणम् ” । मन ही  
से मनुष्यों की भेदाभेद यह हैत बुद्धि उपजती है ।  
मन संयत होने हो से समस्त जगत चिन्मय ब्रह्म  
पड़ता है ।

“ सर्व भूते स्थितं ब्रह्म भेदाभेदो न विद्यते ”

जीवन्मुक्ति गीता ।

समस्त भूतों में एक सच्चिदानन्द ब्रह्म विराजित  
है, कहीं भेद भाव नहीं ।

योगीश्वरों की छोड़ के और किसी ने इस अव-  
स्था की प्राप्त नहीं होती है । जब तक संकल्प

संयमनो शक्तिर उदय इयना, ईश स्वतः सिद्ध सिद्धान्त । प्रवृत्ति थाकिसेई कायेर आरम्भ ओ फल प्राप्ति हईलेई कायेर अवसान इईया थाके । संयमनो शक्तिर सत्कार इईलेई रुदयेर कायारम्भ प्रवृत्ति विनष्ट इईया याय । एई संयमनो शक्तिर अद्भुत इईले संयमनो पुरीर (यमालय) अधीश्वर इईते पारा याय । अर्थात् समस्त जगतेर शासन करिबार सामर्थ्य इय । छुप्पु कृति दमन करिबार अधिकार जन्मे ।

याहा इउरु एकणे विचारि एई ये लोभके चोया रति परायण इय केन ? देखिते पाओया याय ये अभाव ओ लोभइ चोयेर प्रवर्तक । आकाङ्क्षा अभावेर प्रवृत्ति ओ अभाव इईलेई लोभे उदयति मन यतई बहिर्मुख इईवे, ततई ताहार प्रवृत्ति ओ छुःख बुद्धि इईवे । अन्तर्मुख इईलेई संयम ओ मत्तोवेर उदय इईते थाकिवे । लोभ ये पदार्थके आकर्षण करे, सेई पदार्थेर शक्ति संग्राहिका शक्ति मई मने आगिरा उपस्थित इय एवं सम्पत्तिक ताहाके रक्षा करे ईहाते मन कलुषित ओ आत्मा वैमयिक धूमे अन्धकाराच्छन्न इईया याय । ये द्रव्यो लोभवा प्रवृत्ति इय, मन ताहातेई रति करिसे थाके सुतरां अन्तर्मुखीन इईते छाटै ना ; ईहाते मनर संयम इईहार ओ सम्भव नाई । निजेर बाधा द्रव्य आदे, ताहार ओ “वासना” त्याग करान उरे थाकुक आर ओ प्रिय व मनार बुद्धि करिया देय, ताहाते जीव मुक्त इईते पारे ना

“वासना द्राघता राम वद्ध ईति भाष्यते” ।

वशिष्ठ देव वसिष्ठऋषिने ये छे राम चन्द्र वासनार दुष्टताई बतान जानिबे । समस्त जगते आत्मभाव बुद्धि करिई मुक्ति साधनेर उपाय, दयालू पुरुष गण एई आत्मभाव जनई निरु भोग्य पदार्थ अनारके भोग्य पदार्थ दान कनेन, किन्तु चोया रति एई आत्म भाव निदान्त संकुचित करिया जावके अभाव कुदराशर करिया देय । चित्त चिन्त शक्तिर निके गावित इईवे ईगई विधातार निम्न विधि ; चोया रति ताहार बाधा उदय पानन करिया इउके बाह्य जगते आकर्षण करिउतेछे, चोयेर ईहा विधातार विधि विरुद्ध एषम देय । सम्प्रकाशिका

विकल्प बने रहते है तब तक संयमनो शक्ति का उदय नहीं होता है यन् स्वयं मित्र मिहान्त है ! प्रवृत्ति रहने ही से कार्य का प्रारम्भ वो फल प्राप्त होने ही पर कार्य मा शेष होता है संयमनो शक्ति का संचार होने ही पर हृदय को कार्यारम्भ प्रवृत्ति विनष्ट हो जाती है । इस संयमनो शक्ति का उदय होने से मनुष्य “संयमनो पुरि” (यमालय) का अधीश्वर बन सक्ता है याने समस्त संसार शासन करने का सामर्थ्य होता है वो दुष्ट प्रवृत्ति को दमन करने का अधिकार मिलता है ।

जो हो, अब विचारना गहरी चाहिये कि लोगोंने चोख्य हृत्ति की क्यों पबलम्बन करती है ? देखा जाता है कि द्रव्य का अभाव वो लोभही चोख्य का प्रवर्तक है । आकांक्षा धनाभाव की माता है वो अभावही से लोभ को उत्पत्ति होता है । मन जितनाही बहिर्मुख बना रहेगा उसकी प्रवृत्ति वो दुःख भी उत्पन्न ही बढेंगे । मन अन्तर्मुख होने ही से संयम वो मन्तोष का उदय होता है । लोभ जिस पदार्थ को आकर्षण करता है, उस पदार्थ की शक्ति संग्राहिका शक्ति करके मन में आजाती है वा सम्पत्तिका शक्ति उसकी रक्षा करती है । इसे मन कलुषित वो आत्मा वैषयिक धूम के अन्धकार में छाग जाता है । जिस द्रव्य धर लोभ वा प्रवृत्ति होती है, मन उसी में रमा करता है, तस्मात् अन्तर्मुखी न होने की नहीं चाहता है, इसे मन का संयम होने का भी सम्भावना नहीं । अपना जो द्रव्य है, उसकी वासना तक भी छाड़ना चाहिये किन्तु चोख्य हृत्ति से वासना त्याग तो किनारे रहो वर अधिक वासना की वृद्धि कर देती, उसे जीव मुक्त नहीं हो सक्ता है ।

“वासना द्राघता राम वंध इत्यभि धियते”

वशिष्ठजी ने बाला किहे रामचन्द्र वासना को हटाने की वधन जानना सारे संसार में आत्म भाव का बढावना मुक्ति साधन का उपाय है । दयालू मनुष्यों ने इस आत्म भावही को बढावने के अर्थ निज भोग को सामग्री दूसरे की भोगार्थ दान कर उता है । किन्तु चोख्य हृत्ति इस आत्म भाव को निपट संकोच कराकर जीव को अतीव सुदराय बना डालती है । चित् शक्ति के ओर चित्त को धावमान होना चाहिये, यही विधाता की निर्धार विधि



चाहिँ प्रकृतिकी शक्तिके उद्भित करिया संयमनी शक्तिर आविभाव ओ चित्तार शक्ति ठैवे ईहाई विधातार उन्नत विधि, चोखारुति "वासनार" बुद्धि करिया जीवके वस्त्रन दशा एस्त करितेछे चोखोर ईहा विधातार सुन्दर विधिर विरुद्ध द्वितीय दोष । प्रकृति ठैते आग्यार विमुक्त भाव थाकाई विधातार नित्य नियम, चोखा विषयाभूराग वस्त्रन करिया विधातार निरुद्धे ज्ञीय दोषर सफार करे । आग्य दृष्टिसे संयम अतिश्र बुद्धिसे देखाई विधातार उच्चतम विधि किन्तु चोखा तद्विरोधे तेद बुद्धिर बुद्धि करे, ईहा तहार चतुर्थदोष ।

वासना द्विविधा प्रोक्ता शुद्धा च मलिना तथा ।  
मलिना जन्मनो हेतु शुद्ध जन्म विनाशिनो ॥

वासना द्विविध, शुद्धा ओ मलिना । मलिना वासना जन्म मरणेर हेतु ओ शुद्धा जन्म मरण ठैते मुक्त करे । दुराकाङ्क्षा दुष्प्रवृत्तिई यथन जावेर जन्म मरणादि दुःख भोगेर कारण तथन एतन्मूलक चोखा नितान्तई विधातार मद्धि विर विरोधी अतएव चूरि करी महापाप ।

एतने ईहाओ श्रवण राखिते हईवे ये यदि कोन मुक्त (संयमनी शक्ति वा शक्ति) प्रकृव अनोर द्रव्य ग्रहण करेन, ताहा चूरि नहे । कारण तिमि समस्त आत्मवेद दर्शन करेन, "तोमार" "आमार" इत्याकार बुद्धि तहार नाई । यत दिन "प्रवृत्ति" थाकवे ततु दिन परेर द्रव्य ग्रहणेर नाम "चूरि" ओ चूरि कराय महापाप किन्तु सम्पूर्ण निवृत्तिर उदय हईले चूरिकराय पाप नाई किन्तु तथन गरद्रव्य ग्रहणे प्रवृत्ति ओ छय ना ।

चूरि करी महापाप कारण ईहाते प्रकृति कलुषित छय ।

## विवर्ण सूर्य मण्डल ।

(आद्य)

द्विवेदी ज्योतिस्तन्त्र सभा ठैते जनैक मध्याह्न निम्न लिखित विवरणटी लिथियाछेन ।

किरदिबस हईते सूर्येर आभाषिक कान्तिर किञ्चिद शक्तता दृक्ते हईतेछे । से दिन प्रातः काले दूरवाक्छा यज्ञेर साहाये परीक्षा करिया देखियाछि ये सूर्य मण्डलेर दक्षिणामोनागे एकटी प्रकाश चिह्न देखा दियाछे । अनारुत चक्के ओ ए चिह्न दर्शन करियाछि । एरूप चिह्न सफारे अनेक पाण्डित्य दुर्घटना घटिय थाके ।

बराह महिर् छय अध्याये लिथियाछेन,

"तेषामुदयेरूपगण्यस्तुःकलुषं रजोवृत्तं व्योम ।  
नगतरु शिखर मदीं सर्करो मारुतः ॥

अत विपरीतार्थवद्भाषा यथा पाणिनीयविरचिते ।

जगत् के घोर प्रकर्षण कर रहा है, चोरो करने से विधाता की विधि विरुद्ध यह प्रथम दोष है । सम्प्रकाशिका आदि चार्गी स्वभाविकी शक्तियां की स्तम्भित करके संयमनी शक्ति का आविर्भाव वा धि दाया की मूर्ति होगी यहा विधाता की उत्तम विधि है, नीय्य प्रतिवासना को बड़ा कर जीव की वधन दशा प्राप्त कराती है, विधाता की सुन्दर विधि का विरुद्ध चोरो करने का यह द्वितीय दोष है । प्रकृति से आत्मा मुक्त वा भलग रहै, यही विधाता का नित्य नियम है, नीय्य प्रति ने विषय का अनु-राग बढ़न पर विधाता के विरुद्ध तीसरा दोष उत्पन्न होता है । आत्म दृष्टि से सर्वत्र समान देखना यही विधाता का बड़ी उंची श्रेणी की विधि है किन्तु नीय्य नमके विरुद्ध भेद बुद्धि की बढ़ाती है, यह चतुर्थ दोष है ।

"वासना द्विविधा प्रोक्ता शुद्धा च मलिना तथा ।

मलिना जन्मनोहितु शुद्धा जन्म विनाशिनो ॥"

वासना, शुद्धा वा मलिना, दो प्रकार की होती है । मलिना वासना जनन वा मरण का हेतु है वा शुद्धा जनन मरण से मुक्त कर देती है । जब देख पड़ता है कि दुराकाङ्क्षा वा दुष्ट प्रवृत्ति की जीवी के जन्म मरण आदि दुःख का मूल है तो इसी से उत्पन्न होता हुआ नीय्य प्रति विधाता की सुन्दर विधि का नितान्त विरोधी है, अतएव चोरो करना महा पाप है ।

यहां यह भी स्मरण रखना चाहिये कि यदि किसी मुक्त (संयमनी शक्ति से पूर्ण) पुरुष ने अन्य व्यक्ति का द्रव्य ले ले तो वह चोरो नहीं कहा तो है । क्योंकि उन्होंने ने सब को आत्मवत् देखता है । "तुम्हारा" या "हमारा" यह भेद बुद्धि उनको कहाँ? जब तक प्रवृत्ति बनो रहगी तब तक किसी के द्रव्य बिना अनुमति से लेना ही "चोरो" है । वा चोरो करने से महा पाप होता है । किन्तु सम्पूर्ण निवृत्ति आजाने पर चोरी से पाप नहीं लगता किन्तु उस समय परद्रव्य लेने में प्रवृत्ति कहाँ होती है ?

चोरो करना महा पाप है क्योंकि इससे प्रकृति मलिन होता है ।

## विवर्ण सूर्य मण्डल ।

(प्रातः)

द्विवेदी ज्योतिस्तन्त्र सभा से एक महात्मा ने निम्न प्रकटित विवरण लिख भेजा है :—

याहँ दिनों में सूर्य की व्याभावृक्त कान्ति का कुछ न्यूनता देख पड़ती है । एक दिन प्रातःकाल की मैं दूरबीक्षण यंत्र की सहायता से परीक्षा कर देवी उसे सूर्य मण्डल के दक्षिण अर्धो भाग में एक बड़ा भारी बिज्र देख पड़ा । इस भाँति बिज्र का

सूर्या मण्डले चिह्नचय दृष्टे रहैले जग राशिनिष्कृष्ट, ओ आकाश रज्जोरशिथिले आच्छन्न रहैला याय एवम् पर्वत पादप शिखर विमर्दी प्रचण्ड पवन एवाहं कर्कर ओ बालुकाराशि उडिते থাকे । यथासमये वज्रगण कण दाने अशक्त हय, शक्ती ओ अन्यान्य प्राणीगण विकट शब्द करिते থাকे, चारि दिके अग्नि दाहेर नाय एव दृष्टे हय, एवं वज्राघाते ओ भूमि कम्पे मानव गण विव्रस्त रहैला उठे ।

एकमे सूर्योदय वर्ण कोन ज्योतिषेष्ठार म त नील, काहार ओ हरित, काहार ओ मते ताव्रात, केह वा भयूर पुच्छेर वर्णेर नाय ओ अनुमान करि-  
तेछेन । सूर्योदय अरुत वर्ण नीलात बलिया बोध हय । तिम्र २ समये सूर्योदय परिवर्तन रहैला ओ किछु आश्चर्या नह । बराह मिहिर सूर्या वर्ण ओ तदनुसारे पाथिब घटनार विषय लिखियाछेन ये,  
“उक्ते करेः दिवस करस्तात्र सेनापति विनाशयति पीतो नरेन्द्रपुत्रं श्वेतस्तु पुरोहितं हस्ति ॥”

सूर्या उक्तराशि रहैले ताव्रवर्ण देखाय, ताहाते सेनापतिर मृत्यु हय । हरित वा पीत वर्ण रहैले राजपुत्रेर एवम् श्वेत रहैले पुरोहितेर पर-  
लोक लात हय ।

“चित्रोत्थनाप धुस्त्रोरविराश्वि बा।कुलांकरोति महीः ।

तत्कर शत्रु निपाते हय न मिले नानु पातयति ॥”

सूर्या वर्त नानावर्ण वा धुस्त्रवर्ण हय, ताहा रहैले शीघ्र वृष्टि किय अनुस दस्य वा अत्र शत्रु रहैले क्षीर रहैले ।

“रक्तश्वेतोपि शत्रु रक्तवर्णं क्रियान् विनाशयति ।

पीतो वैश्यान् कृषिस्ततो परान् शुभकरं स्निग्धः ॥”

वर्षाकाले सूर्योदय तीव्र ओ श्वेत रहैले तबे

त्रैलोक्य गण, रक्त वर्ण रहैले क्रिय गण, पीत वा

हरित रहैले वैश्यावर्ण एवम् कृष्यवर्ण रहैले शूद्र

ओ अन्यान्य अनुस नाना क्लेश भोग करिबे ।

“वर्षासमितः करोतानावृष्टिः ”

वर्षाकाले सूर्योदय कृष्य किरण रहैले उनावृष्टि हय ।

“प्रावृट् काले मद्याः करोति विमलद्युति हृष्टिः ॥”

वर्षाकाले सूर्या मण्डल निम्नल थाकिले मद्या वृष्टि रहैला থাকे ।

वर्षाकाले वृष्टिः करोति मद्याः शिरसि पुष्पाः ।

शिथिलपत्र निभः मिले न करोति द्वादशाब्दान् ॥”

वर्षाकाले सूर्या मण्डल शिथिलपुष्प वर्ण रहैले

वृष्टि हय, यदि आवार सूर्योदय अपरांशे शिथी

पुच्छेर वर्णदृष्टे हय तबे १२ वंसर अनावृष्टि

रहैले ।

“श्रावणहर्क कोटि त्रयं भयनिर्भयगुणास्ति परचक्राः ॥”

वर्षाकाले सूर्या नीलवर्ण रहैले, मयस्योदय कीट ओ

निषासुदयकपायस्यः बालुष रजा वृत्तं व्योम ।

नगतक गिबुर मर्ही मशकरी भाकृतयण्डः ॥

सूर्यामण्डलान्तरादीमा मृग पांशुणी दिशां दाहः ।

निर्वीत मही कम्पादयो भयस्त्वय चात्पताः ॥”

सूर्य मण्डल में विरक्त मसूर हृष्ट होने पर जन-  
राशि विक्षोभित हो आकाश मण्डल धूम में आवृत  
हो जाता है ओ पर्वत वी वृक्ष आदि की तीक्ष्णता  
प्रचण्ड पवन कर्कर वी बालुष यदि लेता हया बहता  
है । उचित समय में वृक्ष गण फल नहीं दे सके हैं,  
पक्षी वी अन्योन्य प्राणी गण विकट शब्द क्रिय  
करते हैं, चारी चार अग्नि के दाह के समान वर्ण देख  
पड़ता है ओ विजली वी मुकम्प में मनुष्यगण विव्रस्त  
होते हैं ।

आज काल सूर्य का वर्ण किसी ज्योतिषी के मत  
से ताम्र वर्ण है, किम ने अनुमान करता है जैसा  
कि मयूर पुच्छ के समान है । सूर्य का प्रकृत वर्ण  
खल्व नील वर्ण है । तिम्र २ समय में सूर्य का वर्ण  
बदल जाना भी कुछ आश्चर्य नहीं । बराहमिहिर ने  
सूर्य का वर्ण वी उभे संसार में वी २ आपत् आ-  
जाति है इस पर लिखा है :—

“उक्ते करो दिवसकरस्तात्र सेनापति विनाशयति ।

पीतो नरेन्द्रपुत्रं श्वेतस्तु पुरोहितं हस्ति ॥”

सूर्य के किरण की गति उपर के ओर होने पर  
ताम्र वर्ण होय होता है, उभे सेनाध्यक्ष का मरण  
नियय है । हरित वा पीत वर्ण होने पर राजपुत्र  
का वी श्वेत होने से पुरोहित का मृत्यु जानना ।

“चित्रोत्थनाप धुस्त्रोरविराश्वि करोति महीः ।

तत्कर शत्रु निपाते हय न मिले नानु पातयति ॥”

सूर्य यदि नाना वर्ण वा धुस्त्रवर्ण हो तो शीघ्र  
वृष्टि होगी अथवा दस्य वा अत्र शत्रु से मनुष्यगण  
भय प्राप्त होंगे ।

“रक्तश्वेतो विपान् क्लामः क्षत्रियान् विनाशयति ।

पीतो वैश्यान् कृषिस्ततो परान् शुभकरं स्निग्धः ॥”

वर्षाकाल में सूर्य के किरण तीव्र वी श्वेत होने  
पर त्राह्य गण, रक्त वर्ण होने पर वैश्य गण वी  
कृष्य वर्ण होने से शूद्र वी अन्योन्य मनुष्य गण नाना  
क्लेश भोगेंगे ।

“वर्षासमितः करोत्यानावृष्टिः”

वर्षा काल में सूर्य के किरण कृष्य वर्ण होने से  
अनावृष्टि होगी है ।

प्रावृट् काले मद्याः करोति विमलद्युति हृष्टिः ॥”

वर्षा काल में सूर्य मण्डल निर्मल रहने पर शीघ्र  
मेघ बरसता है ।

वर्षाकाले वृष्टिः करोति मद्याः शिरसि पुष्पाः ।

शिथिलपत्र निभः मकरोति द्वादशाब्दान् ॥”

वर्षा काल में यदि सूर्य शिथिल पुष्प के वर्ण  
हो, तो द्वादश वर्ष होंगे है किन्तु यदि सूर्य

सिंहामन दूत हयन ३ अनाराध्या अधिकार हय ।  
“अश कपित निदे भानो न भुल्लेखे भवति संशयः  
आश मनुशान्तिवधः कि प्रचानेनो नृपो भवति ।”

गान्ध रवि शशकृष्णवर्ण विभिन्ने हयन ताश  
हटले झुटले संशय उपरिष्ठ हवे सूचक  
यानि चलेन न्याय बोध हय, तवे मयुटे  
निह ३ हटलेन ३ निदेशार राजा सिंहामन आध-  
कार करिनेन ।

इहा वेष हय चकनेडे अगर्भ आछेन ये सयने  
चिह्नविशेष लक्षित हईएर पडे ई भारववेष  
हाने २ कयक बार भूमिकम्प एवं जावादापे  
आवेगगिरि विषय उन्पात हईरा गिराछे ।  
पाश्चात्या ज्ञेयतिदितागण एथन ३ ये मक  
गुणवत्त्व स्पर्ण ३ करिने पादनेन नाठ, आमागण कत  
दिन पृथक् काकार छुडाउ सिक्का करिआ गिराछेन ।

### पण्डित दयानन्दसरस्वती ।

दयानन्द उग्रच्छादित कलेवर सश्यामी वेष  
हिन्दु समाजकेर कल्याण करिब बलिआ वैदिक विजय  
पताका हडे समाजे प्रवेश करिआ छिनेन ।  
हाने २ वैदिक विद्यालय स्थापन करिआ आया कुल  
निर्वाह कोर्ति छडे । पुनः संस्कार करिनेन, एहे  
समयुर मसीतर हाने भारतेक प्रगत करिने  
लागिनेन । तार उर्केश्वर ताराश्वर वर भूमि वर  
देश आगिरा तनि निज अभीष्ट साधने ३ नाश  
हईलेन एवं पञ्जाव ३ वकिण भारतवर्ष आश्रय  
ग्रहण करिनेन । आया शास्त्र वेद अध्यापक गणके  
नौरव-निष्ठ वैशिष्टा, आनिनेन एहे अवकाश  
आर्या दिशेर नाये उन्नत करिआ आगिरा एहे  
नवीन मतेर प्रचार करिआ गडे । दयानन्द गुरु  
तागी हईरा छिनेन किन्तु यदि वराव साधन शील  
थाकिनेत पारिनेन ताश हईले आनिचित छिने  
शास्त्रेर यथार्थ तात्पर्य बोधे समथ ३ लोकहित  
साधने सिद्ध मनोरथ हईलेन । तनि निज विद्या,  
वृद्धि ३ पाण्डित्यादिमानेर कुञ्जकटिकार आपनोके  
आपनि आर देयिते पाईनेन ना । निधन नौर  
वर्ष करिनेन बलिआ ये निष्ठ नौरव एहे मात  
गर्जन करिने छिल, भारतेर भाग दोषे  
अकथा-ताश हईते शिनाबूछि हईते लागिल ।  
दयानन्देर विनय, शास्त्राव आदि तिराहित हईते  
छिल, अश्या कट कथा सश्यामीर मुखेर मडावण  
हईरा दाड़ाईल, धृक्ता ३ लक्ता ठाहार पार-  
चारिणी हईर उठिल एवं अनेर प्रति आनाश ३  
अवस्था प्रकाशई ठाहार गोरवेर पक्ष समथन  
करिने लागिल । तनि बलिनेन पुराण अणेतारा  
धृक्, पुराण वक्तारा मूर्ध, वेदेर पूर्वभाषाकार गण  
निताउ अनभिज्ञ छिलेन । दयानन्दके निज मुखे

तो बारह वर्ष अनादृष्टि होगो ।

“श्रमेर्कोट भयं भस्मनिभेममृगान्ति पर चक्रात् ॥”

वषा कृत्वा मं मूर्ध नील वर्ण होने पर, राजा  
सिंहामन मयुत होत है श्री दुमरा राजा का  
अधिकार जाता है ।

“अगर्भधिर निभेमानो नभ स्थलजे भवति संशयः  
यसि महगा नृपतिवधः क्षिप धान्यो नृपो भवति ॥”

गान्ध रवि शशकृष्ण क रत्न के समान वर्ण युक्त श्री  
ती पृथ्वा पर संशय मयुता है, सूर्य यदि चन्द्र के  
समान सुभ पडे तो सम्राट मार जाते है वो परदे-  
शो किसी राजा ने सिंहामन अधिकार करलेते है ।

बोध होता है कि सब किसी ने विदित है जो  
सूर्य मण्डल में कोई चिन्ह देख पड़ने के अनन्तर  
भारत वर्ष के स्थान स्थान में के वेर भूकम्प हुआ  
वो जाया हीप में ज्वाला मुखी पहाड़ का बड़ा  
भारी उपद्रव हुआ । युरोप के जोतिषी लोग अब  
तक जिस गूढ़ तत्व का स्पर्श भी नहीं सके, हमारे  
आर्यगण कितनेही दिन पहले इसका चरमसिद्धान्त  
कर गये ।

### पण्डित दयानन्द सरस्वती ।

दयानन्द न भस्माच्छादित कलेवर सश्यामी बन  
कर सुभे हिन्दु समाज का शुभ करना है, एमे  
पुकारते वो वैदिक विजय पताका हात में लेते हुए  
समाज के भीतर प्रवेश किया था । स्थान स्थान में  
वैदिक विद्यालय स्थापन करके आर्य कुल के कलंक  
रहित कोर्ति स्तम्भ पुनः संस्कार करेंगे, इस समयुर  
मसीत के तान से भारत को प्रमत्त करने लगे ।  
तोत्र तर्क शास्त्र के तरंग की रंग भूमि बंग देश में  
आकर उन्हीं ने निज अभीष्ट साधन में हताश  
हुआ श्री पंजाव वो दक्षिण भारतवर्ष का आश्रय  
लिया । आर्य शास्त्रवेत्ता अध्यापकों की नौरव—  
निष्ठ देख कर मोचा कि इस अवकाश में आर्य  
महात्माओं के नाम से अपनेही एक नवीन मत की  
प्रचार करे । दयानन्द गृहत्यागी हुए थे किन्तु यदि  
वरावर साधन शील बने रहते तो निश्चल चित्तता  
से शास्त्रों के यथा रीति अभिप्राय समझने में समर्थ  
वो लोगों के हित साधन में सिद्धकाम होते । उन्-  
हीं ने निज विद्या, बुद्धि वो पाण्डित्य के अभिमानके  
कुहारे में अपने को पापही देख नहीं सके थे ।  
निश्चल नौर वरसने के लिये जो घन घोर घटा  
अभी गरज रहे थे, भारत के मन्द भाग्य से अकस्मात्  
उन्ही में से पराधर वरसने लगे । दयानन्द का  
विनय, शास्त्र भाव आदि तिराहित होने लगे,  
सुनने के अयोग्य बुरी भाषा सश्यामी के मुंह की  
सन्धावण हुई, धृक्ता वो लक्ष्मता उनकी परिचारिणी  
बनी, श्री दुसरे के ओर अनास्था वो अवस्था प्रकाश  
होने लगी तो एहे साधक हुआ । उन्हीं ने पुराण

गण तेजहार दल ओ केशव बाबू ओ ताहार अनुगामी वर्ग बाबुल। राजा राम मोहन रायेर सगळे बलिबेन ये तिन बुद्धिमान छिलेन केनना बुद्धि बले श्रीकृष्ण ओतेर वेग रोम करिया गियाछेन, केनना आभितो एत दिन परे आसनाम ।

पाछे पराभूत हईले निज मयादार कृष्ण ओ स्वमत प्रचारेर बाघात जन्मे एठे ऊँच यूयोग्य पाण्डित दिगेर मति सन्मुख पिछाटे सहजे अग्रसर हईतेन ना । तिन बावहारे अनेक समये कपट बलिया परिचय पाँउरा गियाछे । डेरा दुने जनेक मर्स्या भोजी जास्कर बाघिते २२९ प्रवृत्त हईया भोजन करिया छिलेन यथन देखिलेन अनुगामीगण विरक्त हईयाछे, तथन बलिबेन ओ व्याक्त आमाके परिचय ना दिया थाँराईया दियाछे, अथत तं पुरे तिन समस्त परिचयई बाबूटी प्रमुखाँ सुनिग्याछिलेन । ईनई आबार आश्वगणके धूर्त बलिबेन !! ताँहार उँसाह, उँदाम, कायतं परता नितान्त प्रशंसनीय अनुकरणीय छिल । व्याकरणे ताँहार व्यापति छिल । एही व्याकरणे माहाय नईयाई तिन वेदेर अर्थ विपर्याय करितेन । आध्यात्मिक विज्ञाने अपटुता बशतःई ताँहाके शब्द शास्त्रे पदानत धाकिते हईयाछिल । वेथानेई ताँहार निज मतेर विरोध दृष्टे हईत, शास्त्रे मेई अंशटुकुई ज्ञान बोधे परिहार करितेन । ताँहार मते तिनई माह बुझितेन ताँहाई अज्ञान अनेर मत्त प्रमाद पूर्ण ।

तिनि सकल धर्मई निन्दा पुस्तकाकारे प्रकाश करितेन । अनेक मतावलम्बीरा ताँहाके क्रमा करियाछिल, किन्तु तेजनगण क्रमा ना करिया राजा द्वारे आभयोग करिबार उँदोगी हईले दयानन्द क्रमा प्रार्थना करिया निज मयादा रक्षा करिया छिलेन । दयानन्द हिन्दू समाजेर विश्व किछुई उँकारे समर्थ हईयेन नाँटे वरं हिन्दू समाजे वक्तव्य कलि कदम्य बनेहारैर ईश्वर करिया गियाछेन ।

यिनि क्रोष, मोह, मददि रिपु वर्गके निज अर्पाने राखित समर्थ नहैन तिन "स्वामी" पद वाचा हईते पारेन ना, उँजना दयानन्द "स्वामी" ना बलिग्या सामान्य अर्थ "पाण्डित" बलिनाम ।

दयानन्द युत, ताँहार बन्धु वर्ग दुर्धर्षित एजना ताँहार जावनौर समालोचना एक्के निष्पुयोजन । जावनेर शेष भागे दयानन्द राजा दिगेर द्वारे २ उँमग करिते छिलेन । अवशेषे अनेक कष्ट पाईया, कुतिथि, कुँगे दयानन्द आजगीरे भारत रत्न छुमि हईते अपसर नईयाछेन उँगवान निज कुपाण्डे दयानन्दे पारलौकिक कल्याण साधन करन हईया आधमीरा ।

रवनेहारी का धूर्त, पुराणी का कथा बचनेवाली का मूर्ख विवेक के प्राचीन भाष्यकारों का निपट अनभिन्न कर बखान करता था । हमने दयानन्द के अपने मुँह से बखानने सुना कि साधारण ब्राह्म समाज के सभी लोग भेड़ों के भुँड हैं और केशव बाबू ही उनके अनुचर गण बाबली हैं । राजा राममोहन राय के विषय में इतना कहते थे कि वे कुछ बुद्धिमान रहे क्योंकि उन्होंने निज बुद्धि बल से भारतवर्ष में इसाईयों का प्रबल वेग को घटा दिया क्योंकि मैं तो इतने दिन के अनन्तर आये ।

परास्व ज्ञान से निज मयादा को ज्ञान ही निज मत प्रचार के व्यापार होने के भय से दयानन्द ने किसी सुयोग्य पाण्डितों में सम्मुख शास्त्रार्थ करने में आग न बटने । लाकड़ व्यवहार में भी अनेक समय उनकी कपटाई देख पड़ा । देरादुन में सर्व वर्ण का अन्न भी तो किसी ब्राह्म समाजों के घर में खय प्रवृत्त होकर उन्होंने भोजन किया, किन्तु इसे जब देखा संगो सब अत्यन्त अमन्तुष्ट हुए तब वीला कि वाव ने मुझे विना परिचय दिये खिलाय दिया किन्तु उनके पहलेही स्वयं समस्त परिचय लेके खाने की सम्मति दी थी । यही फिर कठिपियों का धूर्त कर बखानते थे !! दयानन्द जी का उँसाह, उँदाम, कायतत्परता आदि गुण अत्यन्त प्रशंसा योग्य वा अनुकरणीय था ।

व्याकरण शास्त्र में वे व्युत्पन्न थे । व्याकरणही को सहायता लेके उन्होंने वेद का विपरीत अर्थ किया करते थे । आध्यात्मिक विज्ञान में उनको पटुता नहीं, इसी इत से शब्द शास्त्र के पदानत रहे । जहाँही निज मत का विरोध देखते, शास्त्र के उसी अंश को अम मान कर त्याग कर देते थे । उनका यह मत था, कि वेदों जो कुछ समझते सोही सत्य है, और सब प्रमादों से पूर्ण है ।

उन्होंने सकल धर्मही को निन्दा पुस्तक में चपलाते थे । मतमतान्तर वाले उनकी चमा करते गये, किन्तु जैनों ने चमा न की वर कचहरी में नालिश करने की तैयार हुए, इसे दयानन्द ने चमा प्रार्थना की निज मयादा की वंशा ली । दयानन्द हिन्दू समाजका कुछ विशेष उँकार नहीं कर सके वरं थोड़ी बहुत बुरी रीति नीति का संकेत करेगये ।

जिमने क्रोष, मोह, मद आदि रिपु वर्ग को अपने वग में रखने की प्रममर्थ है, वह "स्वामी" इस पवित्र पद के योग्य नहीं बन सके हैं तन्निमित्त दयानन्द को "स्वामी" की बदली सामान्य अर्थ से पाण्डित कहा गया ।

दयानन्द अब मृत है मित्र गण उनके सब दुःखी हैं । इस लिये उनकी जीवन मत्त को समालोचना करना अब न चाहिये । जीवनके अन्त भाग में दयानन्द राजाओं के द्वार में रमते रहे अन्त को बहुत कष्ट भाग करके कुतिथि में कलस में दयानन्द ने आजमोर में भारत रत्न भूमि में अवसर किया । अब भगवत के समीप प्रार्थना यही है कि निज





“ एक एव सुहृद्वर्मी निधनेऽप्यनुयाति यः ।  
शरीरेण समं नाशं सर्वमन्यत्, गच्छति ॥ ”

“ एक एव सुहृद्वर्मी निधनेऽप्यनुयाति यः ।  
शरीरेण समं नाशं सर्वमन्यत्, गच्छति ॥ ”

१म भाग । { शकाब्द १८०५ ।  
८म संख्या { अग्रहायण—पूर्णिमा ।

७म भाग । { शकाब्द १८०५ ।  
८म संख्या { अग्रहायण पूर्णिमा ।

### तत्त्व भूमिका ।

गुरु पादाश्रयं सुखां कृष्ण दीक्षादिशिक्षणम् ।  
विश्वेन्द्रेण गुरोः सेवा साधु वर्त्मनानुवर्त्तनम् ॥  
अपमृतः अहमन्याता, अतिमानादि परित्याग  
पूर्वकं भगवान्के लाभ करिबार जन्य नितान्त  
विनोदित तावै औमदगुरु देवके संसार समुद्रे  
पारकाशी हिर जानिया उहासर चरणे आश्रय  
लहेते हहेवे । द्वितीयतः औमद समापे भगवद्वो-  
क्तादिशिक्षा नितान्त आवश्यक । तृतीयतः अनु-  
रागेर सहित गुरुदेवेर सेवा पूजवा करिते  
हय । चतुर्थतः ये सकल महात्मा भगवत्पद आरा-  
धना करिशां जन्म मरणदि संकल संसार हैते  
विश्रान्ति लाभ करिवाहेन, उहादेर अदर्शित  
गन्हा अवलम्बन करिवे ।

सद्धर्म पूजा भोगादि त्यागः कृष्णस्य हेतवे ।  
निवासो द्वारकादौ च गंगादेरपि सज्जिधौ ॥

### भक्ति भूमिका ।

गुरुपादाश्रयस्तस्मात् कृष्ण दीक्षादि शिक्षणम् ।  
विश्वेन्द्रेण गुरोः सेवा साधु वर्त्मनानुवर्त्तनम् ॥

प्रथम दम्भ. अभिमानादि छोड़ के भगवान्  
को प्राप्त करने के अर्थ निपट विनोद भाव से  
श्री गुरुदेव को संसार समुद्र के पार उतारने  
वाले मान कर उनके चरण का आश्रय लेलेना  
चाहिये । तदनन्तर श्रीगुरुदेव को निकट भगव-  
दीक्षादि की शिक्षा लेनी अत्यन्त आवश्यक  
है । तत्पश्चात् अनुराग बस होकर गुरु देव  
की सेवा करनी चाहिये । अन्तर उन महा-  
त्माओं के, जिन्होंने भगवत् की चरण की आ-  
राधना करके जनन मरण आदि से व्याकुल  
संसार से विश्रान्ति लाभ करी है, देखाई ऊह  
मार्ग को अवलम्बन करना उचित है ।

सद्धर्म पूजा भोगादि त्यागः कृष्णस्य हेतवे ।  
निवासो द्वारकादौ च गंगादेरपि सज्जिधौ ॥







प्रकार नाना विध पदार्थ समष्टि मध्ये उत्तेजित  
है। तार प्रभृति सकलक पदार्थ द्वारा प्रवाहित  
हय, सेहै रूप उत्तम समस्त प्रकार क्रिया है मस्तिष्क  
मध्ये उत्तेजित है। आयु द्वारा प्रवाहित है।  
त९ त९ क्रिया कारक शारीरिक यन्त्रों परितः  
करे। सेहै सकल क्रिया उत्तेजना द्वारा तापादि  
उत्पन्न होता है। हेतु मस्तिष्क ७ आयु मन्त्रों पर  
हय। किन्तु क्रय होता है ७ जीवनी शक्ति वनवतः  
था। पर्याप्त कोन अनिष्ट है ना। आमादि गुरु  
पोषण क्रिया प्रभावे भूत, पीत पदार्थ द्वारा  
आवार ए क्रय प्राप्ति अंशों पुष्टि है। कोन  
वस्तु शरीरों अत्यन्त है। मात्र है पोषण  
शक्ति ताहाके आत्मसात् करार चेष्टा करे, सेहै  
चेष्टा रूप क्रिया द्वारा सकलित है। पाकशुद्धी  
प्रभृति आहत ७ पीत वस्तु उपर टाप दिते  
थाके, ताहाते ए वस्तु सकल यत्न आदि द्वारा  
उत्पन्न नानाविध जावके क्रिया, विभिन्न ७ द्रव  
है। प्रथम कतक अंश एक प्रकार रसे परिणत  
हय। पारे ए रस नाड़ी द्वारा प्रवाहित है। २  
कूस, कूसों कार्य द्वारा रक्तकारे परिणत है।  
सेहै रक्त मध्ये धातु वस्तु है। संगृहीत नाना  
विध पदार्थ थाके एवं उहा नाड़ी पथे सकल  
समस्त शरीरों अत्यन्त परितः करिते थाके।  
तबन मस्तिष्क, आयु, अग्नि, मांस, धमना, शिरा,  
अन्त, तन्तु, चर्म प्रभृति शरीरावरण सकल ए  
प्रवाहित रूपि है। आपन २ आवश्यक  
पदार्थ सकल (यद्वा निज निज उपेक्ष है। तै  
पाते) ग्रहण करिया शरीर २ अकृति पुष्टि बर्द्धन  
७ संरक्षण करे। ये ये पदार्थ द्वारा मस्तिष्क  
संगठित है मस्तिष्क केवल तत्वाव है संग्रह करे।  
ऐहै रूप आयु आयु उपेक्षगी पदार्थ, अग्नि अग्नि  
उपेक्षक पदार्थ, मांस मांसों उपेक्षक पदार्थ  
संग्रह करिया थाके इत्यादि।

भूत, पीत वस्तु अंश सकल शरीरों सहित  
समवेत है, किन्तु ताहा सकल शरीरों एक प्रकार  
हय ना। तिन २ शरीरों तिन २ प्रकार है। थाके।  
ये २ पदार्थ ये शरीरों क्रिया उपेक्ष ७ अनु  
कूल सेहै शरीरों, भूत पीत वस्तु है। विभिन्न  
है। सेहै २ पदार्थों अकृत अंश है समवेत

विजली को शक्ति जैसा नाना प्रकार के पदार्थों  
में उत्पन्न होकर तार आदि संचालक पदार्थों से  
प्रवाहित होता है उसी रीति पूर्वोक्त समस्त क्रियायें  
मस्तिष्क या बुद्धि स्थान में उत्तेजित होकर रंगों में  
से प्रवाहित होकर तत्तत् क्रिया कारक शारीरिक  
यंत्रों की चलाती हैं। उन सब क्रियायें जो  
उत्तेजना से तापादि उत्पन्न होने के हेतु मस्तिष्क  
वा रंगों का प्रयोजन है। किन्तु प्रयोजन पर  
भी जीवनी शक्ति का बल जब तक रहे तब तक कुछ  
हानि नहीं होती है। हमारी पोषण क्रिया के  
प्रभाव करके खावे हुए या पीये हुए पदार्थों से  
फिर विनष्ट अंग को पुष्टि होता है। कोई वस्तु  
शरीर के भीतर पैठते ही, पोषण शक्ति ने उसको  
आत्मसात् करने की चेष्टा करती है, वही चेष्टा  
रूप क्रिया करके संचालित होकर पाकाशय प्रभृति  
ने संगृहीत वो पोया हुआ वस्तु को दबाने लगते हैं,  
उससे वे वस्तु सब कलेजा आदि से उत्पन्न हुए नाना  
प्रकार अन्न द्रव्य से क्रीम, विच्छिष्ट वो द्रव होकर  
प्रथम थोड़े से अंग तो एक प्रकार का रस बन जाता  
है। फिर वही रस नाड़ी करके प्रवाहित होते २  
फेफड़े की क्रिया से रुधिर बन जाता है। उस  
रुधिर में भोजन द्रव्य से संगृहीत नाना विध  
पदार्थ रहते हैं वो वही रुधिर नाड़ी मार्ग करके  
सर्वदा समस्त शरीर के भीतर घुमता फिरता रहता  
है। उस समय मस्तिष्क, रंग, हड्डी, मांस,  
नाड़ी, शिरा, अंग, तंतु, चर्म आदि शरीर के अव-  
यव सब रुधिर से निज २ आवश्यक पदार्थ  
( जिन्हों से निज २ पुष्टि हो सके ) ले ले कर निज २  
रूप को बहिर्गो रक्षा करते हैं। मस्तिष्क तो वे  
सब पदार्थ को संग्रह करता है, कि जिन्हों से,  
उसका बनावट है। उसी रीति रंग अपने अनुकूल  
पदार्थ, हड्डी हड्डी के अनुकूल पदार्थ, मांस  
मांसके उपयोगी पदार्थ को संग्रह किया करता है।

भोजन किया हुआ वो पोया हुआ वस्तु के अंग,  
जो कि शरीर से मिल जाते हैं, सब शरीर में एक  
रीति फल नहीं देते हैं। वे भिन्न २ शरीर में भिन्न २  
प्रकार के हो जाते हैं। जो जो पदार्थ जिस शरीर  
के उपयोगी वो अनुकूल है, उस शरीर में, भोजन  
किया हुआ वो पोया हुआ वस्तु से विच्छिष्ट

हय, आर अवाण्ट अंश नित्य मल युद्धाद आर्किरे रेचित हय ।

एतेक मनुष्य शरीर तेल, लवण, शर्करा, आर्क्रेट, अस्फुरक, फार, चूर्ण, मोह, मोनक, तात्र, रज्जत, शर्वादि विविध पदार्थ द्वारा विरचित । अत्रां शरीरर पुष्टि निमित्त निश्चित परिमाणे ए गकल वस्तु आवश्यक हय, किन्तु गकल शरीरे ए गकल वस्तु समान परिमाणे থাকेना । ए जन गकल शरीरे ए गकल पदार्थ समान परिमाणे आवश्यक हय ना । कोन शरीरे हयत तेलर आवश्यक अधिक, कोन शरीरे लवणर आवश्यक अधिक, कोन शरीरे वा शर्करार आवश्यक अधिक हेत्यादि । आवार कोन शरीरे २ टार अधिक प्रयोजन, कोन शरीरे वा ४ टार अधिक प्रयोजन हत्यादि । खाद्य वस्तु गण्ये ए गकल पदार्थ विद्यमान आछे । एतेक शरीर ताहा हईते आपन २ उपरुक्त अंश ग्रहण करिया থাকे । अतएव ये शरीरे तेलर आवश्यक अल्प, लवण ओ शर्करार आवश्यक अधिक, सेई शरीरे खाद्य वस्तु हईते तेल अल्प एवं लवण शर्करा अधिक परिमाणे ग्रहीत हय हेत्यादि । किन्तु ये शरीरे तैलादिर आवश्यक अल्प सेई शरीरे केवल तैलादि वा अधिक तैलादि युक्त वस्तु खाईले शरीर ताहा अधिक परिमाणे ग्रहण करिबे, ताहार विशेष कारण आछे । ये वस्तु से कोन विशेष पदार्थ अतस्तु अधिक परिमाणे ना থাকे सेई वस्तु सम्बन्धे उक्त नियम निरूपित आछे । भिन्न २ शरीरे भिन्न भिन्न पदार्थर आवश्यक हईवार कारण एई ये पूर्व उक्त हईयाछे ये शरीरर विविध क्रिया एक प्रकार पदार्थ हईते निष्पन्न हय ना । एक एक प्रकार पदार्थ वटित मस्तिष्कर अंश विशेषे वा आयुते एक एक प्रकार क्रियार निष्पत्ति ओ एवाह हईया থাকे । पोषण क्रिया निर्याह हईवार निमित्त ये भावे समवेत ये-ये परिमाण विशिष्ट ये २ जातीय पदार्थर आवश्यक, सकलन वा ज्ञानक्रिया निर्याह र निमित्त सेई भावे समवेत सेई परिमाण विशिष्ट सेई २ जातीय पदार्थर प्रयोजन

मिलते हैं । बांका अन्यान्य अंश सब मल मूत्र हो कर निकल जाते हैं ।

प्रत्येक मनुष्य देह तेल, लवण, चिनी, आर्क्रेट, अस्फुरक, खारा, चूना, सोसा, तांबा, रूपा, सोना आदि भांगिर के पदार्थों से बना हुआ है । अतएव शरीर की पुष्टि के अर्थ नियमित परिमाण उन सब वस्तु की आवश्यकता है । किन्तु प्रत्येक शरीर में वे सब पदार्थ सम-परिमाण नहीं रहते हैं । इस लिये सब शरीर में सब पदार्थों का प्रयोजन समान नहीं होता है । किसी शरीर में तो तेल की आवश्यकता अधिक है, किसी शरीर में लवण की आवश्यकता अधिक, किसी शरीर में तो चिनी का प्रयोजन अधिक होता है । फिर किसी शरीर में दी वस्तु का वा किसी शरीर में चार वस्तु का भी प्रयोजन पड़ता है । भोजन सामग्रियों में वह सब अंश विद्यमान हैं, इसे प्रत्येक शरीर निज २ यथा योग्य अंश ग्रहण कर लेते हैं । अतएव जिस शरीर में तेल की आवश्यकता अल्प है ओ लवण वा चिनी की अधिक है, उस शरीर में भोजन सामग्रियों से तेल का अंश अल्प वा लवण वा चिनी का अंश अधिक परिमाण लिये जाते हैं, किन्तु इस से यह प्रमाण न मानना कि जिस शरीर में तेल का अल्प आवश्यक है, शरीर में केवल तेल वा तेल संयुक्त सामग्रियों भोजन करने पर अल्प ही अंश लिया जायगा । इस अवस्था में अधिक परिमाण ही ले लेगा । जिस पदार्थ में कोई विशेष द्रव्य अधिक परिमाण न रहे उसी वस्तु में पूर्वीत नियम काम करता है । भिन्न २ शरीर में भिन्न २ पदार्थ का आवश्यक होने का कारण यह है, कि पहले ही विवृत हुआ जो शरीर की विविध क्रिया एक रंग के पदार्थ से सम्पादित नहीं होती है । एक २ प्रकार पदार्थ से उत्पन्न हुआ मस्तिष्क के किसी विशेष अंश में या रंग में एक २ प्रकार की क्रिया वा उसका प्रवाह होता है । पोषण क्रिया के अर्थ जिस भाव से मिले हुए जिस परिमाण से जिस २ पदार्थ की आवश्यकता होती है, संचलन वा ज्ञान क्रिया के निमित्त उसी रीति से मिले हुए उस परिमाण उस उस प्रकार पदार्थों का आवश्यक नहीं होती है । इस लिये तीन प्रकार

तिन प्रकार पदार्थों के समष्टी द्वारा उपाचित तिन प्रकार का है। पोषण क्रिया के निर्याहक स्नायु, (Vital nerves) सकलन क्रिया के निर्याहक स्नायु, (Moter nerves) ज्ञान क्रिया के निर्याहक स्नायु (Centre nerves) এই त्रिविध स्नायु আছে, এবং উক্ত ত্রিবিধ স্নায়ুর মধ্যেও ধূসর, পাণ্ডুর ও শুক্ল (Grey, Red, and White matter) এই তিন প্রকার বিভাগাপন্ন পদার্থ আছে। (পূর্বে উক্ত হইয়াছে যে) মস্তিষ্কের সমস্ত ক্রিয়াই উক্ত তিন জাতীয় ক্রিয়ার অন্তর্গত অতএব মস্তিষ্কের পদার্থ ও উক্ত তিন প্রকারেই বিভক্ত। তন্মধ্যে প্রত্যেক ক্রিয়ার পরস্পর কিছু ২ পার্থক্য থাকাতঃ মস্তিষ্কের ৪২ অংশের মধ্যেও পদার্থ সংগ্রহের অতি সূক্ষ্ম কিছু ২ ভেদ আছে। এ নিমিত্ত স্নায়ুর ন্যায় মস্তিষ্ক নানা প্রকার বা তিন জাতীয় পদার্থ সংগঠিত বলিয়া সূক্ষ্মকে লক্ষিত হয় না। প্রত্যেক মানুষের মস্তিষ্ক বা মনের ক্রিয়া এক প্রকার নহে। কাহারও পোষণ ক্রিয়া কিছু অধিক কাহারও মকলন ক্রিয়া, কাহারও বা জ্ঞান ক্রিয়া অধিক, কাহারও কাম ইতি, কাহারও কোপ কাহারও তিৎতা, কাহারও দয়ার ভাগ অধিক ইত্যাদি কিছু না কিছু পার্থক্য আছেই আছে। অতএব ভুক্ত পৌরুষ সমগ্রোও কিছু না কিছু ভেদ আছেই আছে। সুতরাং প্রত্যেক শরীরে বিভিন্ন মত পদার্থের আনন্দক।

ক্রমশঃ

## আর্য্য বিগের উপাসনা প্রণালী।

যদ্বারা বিকৃতভাব গ্রস্ত আত্মা স্বকীয় প্রকৃতিবশত লাভ করিতে পারে তাহারই নাম ধর্ম্ম। আত্মার দশটি অবস্থা আছে। প্রথমাবস্থা অতিক্রম করিয়া গেলে অপর নয়টি অবস্থা ক্রমশঃ সূক্ষ্ম ২ অবস্থার পরিচয় দিয়া থাকে। দশমানবতাই আত্মার চর মোক্ষতির স্থল। এই অবস্থাতেই আত্মার মহিত নির্দিকার পরমাশার সমাগম বা যোগ হইয়া থাকে, এই অবস্থারই নামান্তর সমাধি। এই অবস্থারই পরিপাক হইলে আত্মার মহিত পরমাশার অর্চন

হুই তিন প্রকার স্নায়ু তা রম্ভ হই। পোষণ ক্রিয়া নির্যাহক স্নায়ু (Vital nerves) সঞ্চলন ক্রিয়া নির্যাহক স্নায়ু (Moter nerves) জ্ঞান ক্রিয়া কে নির্যাহক স্নায়ু (Centre nerves) যে তিন প্রকার কে স্নায়ু হই। কিন্তু এই তিন প্রকার স্নায়ু মে ভৌ ধু ধলা, লাল বা শুক্ল যে তিন প্রকার কে পদার্থ হই। পূর্বে মে লিখা গয়া কি মস্তিষ্ক কে সব হই ক্রিয়া তন তিন জাতীয় ক্রিয়া কে অধীন হই অতএব মস্তিষ্ক কে পদার্থী ভৌ তসী রীতি তিন প্রকার কে হই। তনহী মে প্রত্যেক ক্রিয়া কে পরস্পর কুছ মিশ্রতা হই, ইহী মে মস্তিষ্ক কে ৪২ অংশ মে পদার্থ সংগ্রহ কা ভৌ কুছ ২ সূক্ষ্ম ভেদ হই। ইহী লিখে মস্তিষ্ক জৌ স্নায়ু কে ল্যাং নানা প্রকার বা তিন প্রকার পদার্থী মে নির্মিত হই, ভৌ স্পষ্ট দেখ নহী পড়তা হই। হর মানুষ কে মস্তিষ্ক যা মন কে ক্রিয়া এক রং নহী হই। কিসী কে ভৌ পোষণ ক্রিয়া কুছ অধিক হই, কিসী কে সঞ্চলন ক্রিয়া বা জ্ঞান ক্রিয়া কুছ অধিক হই। কিসী কে কাম ইতি, কিসী কে কোপ, কিসী কে তিৎতা, কিসী কে দয়া বা অংশ অধিক হই, ইহী গীতি কুছ ন কুছ মিশ্রতা হই হী হই। অতএব মৌজন ক্রিয়া হুয়া বা পীয়া হুয়া বস্তু সংগ্রহ মে কুছ ন কুছ মিশ্রতা রহ হৌ জাগী। তন্নিমিত্ত প্রত্যেক শরীর মে বিভিন্ন পদার্থ কে আবশ্যকতা হই।

গ্রন্থ প্রণালী ।

## আর্য্য সজ্ঞনীর উপাসনা প্রণালী ।

জিস মে বিকার যম্ম আত্মা নিজ প্রকৃত অবস্থা কে প্রাপ্ত হৌ সকে তসী কা নাম ধর্ম্ম হই। আত্মা কে অবস্থা দশ হই। প্রথম অবস্থা বীত জানি পর অবশিষ্ট নৌ অবস্থায়ী এক পর এক সূক্ষ্ম অবস্থা কা পরিচয় দেণী হই। আত্মা কে বরম চরতি দগম অবস্থা হী মে হৌতা হই। ইহী অবস্থা মে নির্বিকার পরমাত্মা হৌ আত্মা কা সমাগম বা যোগ হৌতা হই। ইহী কা দুসরা নাম সমাধি হই। ইহী অবস্থা কে প্রাপ্ত হৌনে পর পরমা



भाव रहेगा वाय। उपासनार योग एह नाने आसिग्याई अवकुरुइय।

आज काल “उपासना” बलिले साधारणतः लेखक यो उपासना कह्य, ताका प्रकृत उपासनाई नहै। दुहे एकठो गीत गाईले वा हे ईश्वर भूमि आमार जग्य, बायु दियार, आमार भोजनार्थि योगाईतेह, आमार जन्य जागिया बसिया आह, अतएव तौनाक नमस्कार करि, इत्याकार कृतज्ञता प्रकाश करिसेहै उपासना हनी। ईश्वरर स्रष्टा चिंतन ओ तात्पर्य परम एकाग्र भावहै प्रकृत उपासना ।

विषयी व्याक्त ब्रह्म प्रतिदिन नियमित उपासना काले ये एक प्रकार आनन्द अनुभव करिया पाकेन ताहा योग, समाधि वा आनन्द नहै। उहा उपासनार एवटी साधना छाय। मात्र। ईदृशी उपासना द्वारा निम्न श्रेणीर साधक गण अवच्छेद अनेक परिमाणे कृतार्थ रहेगा थाकेन किन्तु प्रकृत उपासना द्विग परमात्मा उपलब्धि वा तज्जनित निश्चल अपरिच्छिन्न परमानन्द प्राप्त होय। कथनहै सम्भव नहै। जीव विशुद्धावस्था उपस्थित रहैलेहै आनन्द अनुभव करिते समर्थ होयन। मानव उपासना करिते बसिया ताका भाव उद्दीपक संगीत, वा कृतज्ञता प्रकाश वा कोन प्रकार वेदार्थर चिंतन अथवा कोन प्रकार रूपर ध्यान काले कथन २ आश्चर्य, ईन्द्रिय-सक्ति रहित, शरीर वा बाह्य पदार्थ अभिमान विवर्जित रहेगा वाय। ईहाते आत्मार सामाजिक क्षणकाल ह्यो विशुद्धावस्था आर्जित होइते पावै। एह जन्य तः काले आत्मार क्षण काल बापी एक प्रकार अपूर्व आनन्दर ओ उद्भव रहेगा थाके। हा! ईन्द्रियर आसक्ति ओ शरीरर प्रति ममतार अण जन्य अभाव रहेले यदि उक्त अतुल आनन्दर तुरन्त उठिया मानवके माताहिया देय, ना जानि, याहार। एककाले विषय वासना परिहार करिया, ममतार दुःखेय पाष छिन्न करिया, अभिमानके अक्ष स्रष्टा सागरर विसर्जन दिया संसारर प्रति सम्पूर्ण उपेक्षा करिया आत्मार ध्याने एकाग्र निबिडे, तौना कि अपूर्व निष्ठा निरवधार मानवहै कोन करितेहैन।

ने आत्मा का अभिन्न भाव हो जाता है। उपासना की गति यहां ही आ रुक जाती है।

आज काल “उपासना” इतनाही कहने पर, लोगो का जो कुछ सुझ पड़ता है, वह तो प्रकृत उपासनाही नहीं है। दो एक भजन गावने से अथवा ‘हे ईश्वर तू ने मेरे लिये जल, वायु बनाया है, मेरे भोजनार्थ दे रहा है, मेरे लिये मंदिर बनाया है, अतएव मैं तुझे नमस्कार करता हूँ’ इस भांति कृतज्ञता प्रकाश करनेही से उपासना नहीं होती है। ईश्वर के स्वरूप का चिन्तन ही उस चिन्ता के परम एकाग्र भावही को प्रकृत उपासना कहो जाती है।

विषयी लोग प्रति दिन नियमित उपासना के समय एक प्रकार का आनन्द अनुभव किये करते हैं परन्तु वह योग, समाधि वा आत्मानन्द नहीं है। उसको उपासना की एक सामान्य छाया मान जानना। निम्न श्रेणी के साधक गण इसी उपासना के द्वारा अवश्यतो अपने अपने को अतीव कृतार्थ मानते होंगे। किन्तु परमात्मा का अनुभव अथवा उसका निश्चल अपरिच्छिन्न परमानन्द प्राप्त होना प्रकृत उपासना बिना कभी सम्भव नहीं। विशुद्ध अवस्था में पहुँचने ही से जीव आत्मानन्द अनुभव कर सके है। मनुष्य ने उपासना के समय भक्ति भाव को बढ़ावने वाली संगीत या कृतज्ञता स्वीकार वा किसी प्रकार वेदार्थ का चिन्तन अथवा किसी प्रकार रूप के ध्यान काल में कभी अपने की भूल जाते हैं, शरीर या बाह्य वस्तु का अभिमान छोड़ देते हैं, इन्द्रियांसक्ति रहित भी हो जाते हैं। इसी से थोड़ी घड़ी के लिये आत्मा को विशुद्ध अवस्था ही सही है, भी इसी से उस समय क्षण भर के निमित्त कैसा तो एक अपूर्व आनन्द उपजता है। अहो! इन्द्रियों को आसक्ति वी शरीर की ममता क्षण भर के निमित्त छुट जाने ही से यदि पूर्वोक्त अतुल आनन्द का लहर उठ कर मनुष्य को उत्पन्न करे तो न जाने कौन सा अपूर्व वी नित्य विच्छेद रहित आनन्द वे लोग भोग करते हैं जिन्होंने एक बारगी विषय वासना को छोड़ करके, ममता का दुःखेय पाष तोड़ करके, अभिमान को वस्त्र रूप समुद्र में विसर्जन दे करके, संसार को सम्पूर्ण तज्ज करके आत्मा के ध्यान में प्रवृत्त मन

विरले बसिया विचित्र स्थानोभवे पागल हईयाहै कि योगीवर ! तूमि लोक समाज परिहार पूर्वक गिरिर गुप्त गुहाय निवास करितेछ ? संसार तोमार ज्ञान गम्भीर मुखेर दिके तकाईया करने २ कतहै आशा करितेछे, किन्तु तूमि ये शकीर सत्ता कोन् महीयसी अनस्त सत्ताय डूबाईया राखियाछ, ताहा के जाने ! तूमि आमादेर अगोचरे बसिया देव, दानव, मानव सकलर अगोचर पूर्ण शरूपेर सङ्गे आनन्द भोग करितेछ ! बासना, अपवित्रता आदि केह तोमार तेज प्रभावे तोमार निकट याडते पाटेर न ! भो साधो गिरि कन्दरे किमयतस्मिन्निवासि त्रुमेको । (हे साधो तूमि गिरि कन्दरे बसिया कि अमृत पान करितेछ ?)

आत्मार विशुद्धावस्था लाउ करिवार जन्य साधक गण प्ररक, कुल्लक ओ रेचाकायक कूछ साध्य प्राणायाम ओ तक्ति प्ररक, ईश्वरेर आराधना एतद्वयेर अन्यातरटी अवलम्बन करिया থাকेन । “ईश्वर” अर्थ पाठक महोदय गण “ब्रह्म” विवेचना करिवेन ना । आत्मार स्फुटिक शब्द विशुद्ध अवहार ये ब्रह्मेर उपलब्धि हईया থাকे, आत्माके विशुद्ध करिवार समय सेहै ब्रह्मेर सत्त्वानुभव हओर। कथनहै संभव नहै । ईश्वर बलिहै सङ्ग ब्रह्म वा ब्रह्मेर मायावच्छिन्न भावके बुझाईया থাকे । एहै ईश्वरेर आराधना करिते २ मनुष्येर आत्माते निष्कण ब्रह्मेर प्रतिबिम्ब पतित हईते থাকे ।

वर्तमान आर्या धर्मावलम्बी दिगके अनेके “शैथिलिक” बलिया निन्दा करेन । निन्दाकारी गणतो नितासुहै ब्रान्त आचार आर्या धर्मी गण तथोधिक ब्रान्त । केनना निन्दाकारी गण ना बुझिया निन्दा करेन ओ शेषोक्त गण उक्त तिरस्कारके निन्दा बलिया शीकार करेन । हाय ! ये भावे आगापेर देशे मूर्ति पूजार प्रादुर्भाव हईयाछे, से भावे मूर्ति पूजा करिते पागले आचार निन्दा कि । वरन् उहा गौरव बलिया नत मस्तके साधु गण शीकार करिया থাকेन । मूर्ति गण, मूर्तिते ब्रह्मवृद्धि स्थापन कराके दोषावह मने करे, किन्तु ऊड मूर्तिते ब्रह्मवृद्धि करि बाहर बाहर

हुए ह । विरले नै बैठ कर विचित्र सुख हो के अनुभव से क्या, हे योगीवर ! आपने लोक समाज को त्याग करके गिरिवर के गुप्त गुह में जा निवास करते हो ? संसार ने आप के ज्ञान गम्भीर मुँह के ओर ताक के मने मन कितनी हो आशा की करती है, किन्तु आप की निज सत्ता को किस महीयसी अनस्त सत्ता में छिपा रखे है, को कौन विदित है ! आप हमारे अगोचर में बैठ कर देव, दानव, मानव आदि सब के अगोचर पूर्ण स्वरूप के संग आनन्द भोग कर रहे है ! बासना, अपवित्रता आदि कोई भी आप को तेज से समीप जा नहीं सकती है ।

ओ साधो ! गिरि कन्दरे किमयतं पिशसित्वमेको ? हे साधो आप पर्वत के कन्दरे में बैठ कर कौन से अमृत पी रहे है ?

साधक जन आत्मा की विशुद्ध अवस्था को लाभ करने के हेतु कष्ट साध्य प्राणायाम याने प्ररक, कुल्लक वा रेचक अथवा मक्ति पूर्वक ईश्वर की आराधना करते है । “ईश्वर” इस शब्द का अर्थ पाठक गण न सोचें कि “ब्रह्म” है । आत्मा की स्फुटिक शब्द विशुद्ध अवस्था में जिन ब्रह्म की उपलब्धि होती है, आत्मा को निश्चल करने के समय उस ब्रह्म को सत्ता कभी अनुभव होनेवाली नहीं । ईश्वर शब्द का अर्थ सगुण ब्रह्म वा ब्रह्म का मायावच्छिन्न भाव है । इन ईश्वर की आराधना करते २ मनुष्य के आत्मा में निर्माण परमात्मा का प्रतिबिम्ब आ गिरता रहता है ।

आज काल के आर्य धर्मावलम्बी को बहुतेरे लोग मूर्तिपूजक क्षरके निन्दा करते है । निन्दाकारी तो निपट भ्रान्त है, फिर आर्य धर्मी गण भी बहु चढ़ के भ्रान्त है, क्योंकि निन्दाकारी गण बिना समझे निन्दा करते है और शेषोक्त गण उस तिरस्कार को निन्दा करके मान लेते है । हा ! जिस भाव से हमारे देश में इस मूर्तिपूजा का प्रादुर्भाव हुआ है, उस भाव से यदि किसीने मूर्तिपूजा कर सके तो फिर निन्दा क्या, वरं साधु सज्जन गण सिर झुकाकर उस बातको अपना गौरव कर मान लेते है । मूर्ति में ब्रह्मवृद्धि स्थापन करना मूर्ति गण हीच मानते है, किन्तु ऊड पदार्थ में ब्रह्म भाव

हर, तबे शुक, नारद, ऋषि, जनक याज्ञवल्क्य आदिही प्रकृत पौतलिक छिलेन । हा ! आम्हरा दुर्भाग्य क्रमे मूर्तिते नारद, शिला, मुक्तिकादिर अनुभव करिमा थकि, आम्हरा शालग्राम, रुद्र, काली आदि मूर्तिके कै यथार्थ उक्त बोधे पूजा करिते पारि । हा ! ताहा हईले कि ताहादेर भिन्न २ बोधे प्राण प्रतिष्ठा ओ विमर्जन करिताम ? ताहा हईले कि गृहमधे देवताके प्रतिष्ठित जानिमा ओ कुटिछा ओ कुराये रत हईताम ! हा ! से दिन आम्हादेर शुभ दिन, से दिन आम्हादेर मोक्षागार दिन, सेही दिन आम्हादेर मुक्तिर द्वार उद्घाटित, सेही दिन भारते पुनर्भार " एकमेवाद्वितीयम् " ध्वनि एक तान अरे गीत हईवे, ये दिन आम्हरा पुत्राणकाते उक्तबोध करिव, ये दिन आम्हरा प्रकृत पौतलिक हईते पारिव । सेही दिन आम्हादेर विष्ठा चन्दने समभाव, सेही दिन आम्हादेर आपन ओ परे अन्धे बुद्धि विकशित हईवे ! यिनि प्रकृत पौतलिक तिनिही धन्य ! ! !

क्रमशः

कि छिल कि हईल !

मातर्भारतभूमि ! — एक समय तोमारही जैनक पुत्र अश्वमेध गङ्गातम स्थान हईते घोषकार करिमा बगियाछिलेन " जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी " वस्तुतहै ताहार अर्गके ओ तोमार निकट सामान्य ज्ञान करितेन किन्तु सेही महाश्वर वंशधर गणेर मध्ये तमि कि आज से भाव देखिते पाओ ? तोमार पुत्रगणेर मध्ये अनेके तोमार औबद्धि साधन जन्य समरे २ विविध बागाडवर करिमा थाकेन किन्तु कार्य क्रम अनुसन्धान करिले तो आर काशके ओ देखिते पाईना । तोमार स्थान गण एक समय ये सकल कार्य द्वारा तोमाके पृथिवीर सर्वकार आगने बनाईमा छिलेन अधुना कि आर ताहादेर से सकल कार्य यहु आछे ? यहु थाका दूरे थाकुक, आम्हि यतहै उन्न २ करिमा देखिते पाई वरु से सकले ताहादेर ततहै उपेक्षा देखिते पाई । कै भारतीर नीति नीतिसे आर काशके

देव, नारद, ऋषि, जनक, याज्ञवल्क्य आदिही सब यथार्थ मूर्ति पूजक थ । हा ! दुर्भाग्य हमारा ह कि हम मूर्ति को दारु, शिला वा सत्तिका कर अनुभव करते हैं । हम कहा योगालग्रामजी, श्रीकृष्ण, काली आदि मूर्ति को ब्रह्म भाव से पूजन कर सक्त हैं ? नहीं ! यदि सोही होता तो क्या हम फिर उन सबको भिन्न २ भाव से प्राण प्रतिष्ठा वो विमर्जन देते ? फिर यह के मध्य में देवता को प्रतिष्ठित जानकर भी क्या हम कुचिन्ता वो कुकार्यों में प्रवृत्त होते ? हा ! वह दिन तो हमारा शुभ दिन है, वह दिन तो हमारे सौभाग्य के दिन है, उस दिन तो हमारे मुक्ति के द्वार खुल जायगी, उसी दिन भारतवर्ष में पुनर्भार " एकमेवाद्वितीयम् " को ध्वनि एक तान से गायी जायगी, जिस दिन हम सत्यहोमत्व मूर्ति पूजक बन सकेंगे । उसी दिन हमारा विष्ठा चन्दन में समान भाव होगा, उसी दिन अपना वो बेगना यह भेद बुझि उड़ जायगी । वही धन्य है जिन्होंने प्रकृत मूर्ति पूजक बनसुके हैं ।

शेष आगे ।

हा ! क्या था फिर क्या हुआ !

मातर्भारतभूमि ! एक समय में तेरे ही किसी पुत्र ने निज अन्तःकरण के गम्भीर स्थान से पुकार कर कहा था " जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी " । वस्तुतः उन्हीं ने तेरे साम्हने स्वर्ग को भी तुच्छ मानते थे, किन्तु हा ! उन महात्माओं के कुल के किसी पुत्र में वैसा भाव क्या अब तुम्हें देखने मिलती है ? तेरे पुत्रों में बहुतरे व्यक्ति तेरी उन्नति के निमित्त समय २ में भांति २ के बागाडवर मचाते रहते हैं, किन्तु कार्य क्षेत्र में खीजने पर किसी की पता नहीं लगती है । जिस २ दिव्य कार्य से तेरे पुत्र गण एक समय तुम्हको सबसे उची सिंहासन पर सुशोभित कर रखे थे आज कल क्या फिर वह सब कार्य में किसी का धन देख पड़ता है ? धन करना तो किनारे रहा, हम जितने ही भाभी भोति देखते हैं, उन्हीं की उपेक्षा अधिक तर देख पड़ती है । भारतीय नीति नीति पर किसी का आदर नहीं देखा जाता

तो आदर देखिते पाईना। भारतीय भाषा (संस्कृत) सको एकदम बलिग परिगणि हईलेओ ताहार आशानुक्रम अनुशीलन देखिते पाईना केन ? पूर्वैर न्याय आर से भाषाय पुस्तकादि रचित हओया एकबारे बन्ध हईले केन ? विदेशीय भाषा न्याय भारतीय भाषा आर केह बडु सहकारे पड़िते छाय ना। हाय ! एहै जनैहै बोध हय विदेशीय भाषा प्रयोग ना करिने बन्धन विषय श्रोतृ वर्गेर बोध गम्य कराईते बन्धन आज काल एत कष्ट हईया থাকे। समरेर श्रोत के निवारण करिने ? एक्के सामान्य शिषु विदेशीय भाषा परित्याग करिया विदेशीय भाषाय गालि बयन करिया থাকे। आहारि अजनके विदेशीय भाषाय पत्रादि लिखिते लोकैर लज्जा हय। विदेशीय भाषाय कथोपकथन करिते २ विदेशीय भाषाय २४ टा कथा सम्मिलन करिते ना पारिने लोक मूर्ख बलिग थाके एवं संस्कृत भाषाभिज्ञ सुपाठु हईलेओ कृत विद्या बलिग परिगणित हन ना। पूर्वैर न्याय त्रिज्ञान ग आर वेद पाठ करेनना, हिन्दू बलिग परिचय दिसै लोकै योर कुसंस्कार विशिष्ट ज्ञान करे। अपरेर कथा आर कि बलिब कत २ त्रिज्ञान त्रिज्ञानिष्ठ परित्याग करिया ब्रह्म भाव धारण करि राछेन। शास्त्रैर अवगमनना करिया, अथाद्य भोजन करिया लोकै कतई स्पर्द्धा करिया थाके। हाय ! देश, काल, पात्र विवेचना करिया विज्ञान ऐ सकल धाद्य आमादेर अन्वयकर बलिग लोकै आहू करेना। तोमार दुर्दशा देखिया तोमारै पुत्रगण तोमाअपेक्षा तोमार सपत्नीर समधिक समदर करिया थाकेन। तोमा सपत्नी तोमार पुत्रगणके श्रौय अधिकारै पाईया ये कि कुहक जाले मोहित करे ताहा भादिया चिन्तिया स्मिर करिते पाईना। हाय ! बखन ताहारा आवार तोमार निकट प्रत्यागमन करेन तखन तोमाके विमाता ज्ञान करेन, तोमार होनबल पुत्रगणके गृण करेन, तोमार सपत्नीके माता बलिग उल्लेख करेन अधिक कि बलिब पीड़ित हईले आह्वलाभ वासनाय तोमार सपत्नीर निकट

है। भारतीय भाषा (संस्कृत) चाहे सब से उत्तम क्यों न हो, इस की चर्चा यथा रीति कीर भी नहीं करता है। पूर्व के न्याय उस भाषा में ग्रन्थ आदि प्रचार होना क्यों बंध हो गया ? भारतीय भाषा की विदेशी भाषा के समान कीर भी आदर सहित पढ़ने नहीं चाहता है। हा ! अर्थात् व्याख्याता ग्रन्थ को भी इसी लिये निज वक्तव्य विषय के तात्पर्य श्रोताओं को समझाने के अर्थ विदेशी भाषा के थोड़ी बहुत सहायता बिना अत्यन्त असुविधा होती है। काह की गति को कौन रोकें ? आज काल के लड़के भी निज भाषा छोड़ के विदेशी भाषा में गाली बकने लगते हैं। अपने जनों की निज भाषा में पत्र व्यवहार करने में भी लो-गी की लज्जा बोध होता है। विदेशी भाषा में वात्तिलाप करते २ यदि कोई दो चार शब्द विदेशी न मिलादे तो उस को सब कोई मुख मान लेते हैं। यदि संस्कृत भाषा में कोई सुपण्डित भी हो तब भी वे "कृतमिद्य" जनों में नहीं गिने जाते हैं। पूर्व के न्याय ब्राह्मणगण आज कल यथा रीति वेद का पठन नहीं करते हैं। "मै हिन्दू हूँ" इतना कहने पर मनुष्य कुसंस्कारो करके आख्यात होता है। दूसरे की बात छोड़ दोजिये कितने ब्राह्मणही ब्रह्म निष्ठा त्याग करके क्लृप्त भाव धारण कर चुके हैं। शास्त्रों की अमर्यादा कर के, अखाद्य भोजन करके लोगों ने कितने ही फुले फलाये रहते हैं। देश, काह, पात्र को विचार करके विज्ञान शास्त्र उस को शरीर का हानि-कारक मान निषेध करे पर भी लोगों ने कहा मानते हैं। तेरी दुहा देख कर तेरी ही पुत्र गण तुझ से अधिक करके तेरी सपत्नी को आदर करते हैं। तेरी सपत्नी निज अधिकार में तेरे पुर्षों को पा करके कौन सौ माया फैला कर मोहित करती है, यह तो मेरी बुद्धि में कुछ भी न सुझ पड़ती है। हा ! वे सब फिर तेरे समीप लौटने पर तुझ को विमाता कर जाग जाते हैं, तेरे यहां के दुर्बल पुर्षों को घृणा करते हैं, तेरी सपत्नी को माता मान लेते हैं। अधिक का, रोगयुक्त होने पर आ-रोग को चाहना है तेरी सपत्नी ही के पास रही

गमन करेन । किन्तु रहस्योपदेश यह है कि ये तथ्याच-  
तोमार मपत्नी अथवा मपत्नीपुत्रोत्तरा ताहादिगके  
युग। कारते कृष्ण करेनन । सूर्यो येमन कृष्णके  
बलिग्राहिलेन, ये रे कृष्ण ! यदि उतानपाद राजार  
अके उठिबार अतिनाय कर, ताहा इहेने गमन  
बने गमन करिया। এই तपस्या कर येन मृत्यु पर  
आमार गर्ते तोमार जन्म ह्य । এই बाका सुनिया  
कृष्ण अन्तरे ये रूप भिन्न हईयाहिल तोमार  
मपत्नीर अनुगत पुत्रगणेर उहेईरूप हईया थाके।  
“अज्ञानं मय्युतेयु” এই मन्त्रान पवित्र  
श्रेयमन नियमोत्तर आर आदर देगिते पाहना ।  
एकणे मन्मथर श्लाघापूर्ण । जगत् भूषण हईक  
ताहाते कृति कि । आमी ओ आमार परिवार वर्ग  
अथे अछन्दे मन्मथर यात्रा निर्याह करिते पारि  
लेई हईल । ताहाई सुथेर पराकाष्ठा । मात !  
तुमि कि छिले कि हईले । चिरदिन एकरूप यमना ।  
“कृष्ण परिवर्तते सुखानिच दुःखानिच” ।

बाल्यकाले बालकेर वाक्य स्फूर्तिर मन्त्र २  
देशीर वर्ण परिचयेर परिवर्तते तदीय हस्तु ईं राजि  
कार्क्य बुक् अपित ह्य । विदेशीय भाषा पाठेर  
मन्त्र २ विदेशीय भाव सकल बालकेर अन्तरे,  
बद्ध मूल हईया थाके । पाठ समाप्त हईबार समय  
विदेशीय प्रकृति देशीय प्रकृतिर ज्ञान लात  
करिया थाके अतएव तांशरा ये विदेशीय भाषा  
वा विदेशीय विज्ञान अथवा विदेशीय अनुकृति  
गणके आमोदेर बलिग्राहिलेन । उल्लेख करिवेन तांशते  
आश्चर्य कि ? सद्गुण अनुकरण करी महज नहै ।  
ईं राजके अनुकरण करिते गिया गेके ताहार  
अदेश हितैषिता, साहस, एकता अर्थात् साधुभाव  
अलि परित्याग करिया तदीय आधुनिक भाव  
अलि आधुनिक ग्रहण करे आर्य गणेर रीति  
नीति मानिते गेले उदार शिक्षा नीति  
( Liberal Education ) ये कृष्ण आरोप  
करा हर केनना से समस्त ई अति प्राचीन ओ  
कुसंस्कार निशित । यथन ईं राजके अत्यह  
अज्ञान करिते देखा याइतेछे तथन आर्यागण  
अज्ञानके महापातक बलिग्राहिलेन कि रूपे ताहार  
निशान करी यम । आधुनिक एकरूप निर्याह ये

जाते है, किन्तु उस में गृह्य रहस्य तो यह है, जो  
तेरे सपत्नी वी सपत्नी के पुत्रगण इन मातृहत्या-  
ओं को दृष्टा करने में चूटी नहीं करते हैं ।  
सूर्यो ने ध्रुव को उपदेश करो, कि रे ध्रुव ! यदि  
उत्तानपाद राजा के अंक पर उठने का अभिलाष  
रहे, तो गम्भीर वन में जा कर इस संकल्प  
में तपस्या करना कि मृत्यु के अनन्तर मेरे ही  
गर्भ में तेरा जन्म हो । इतना सुन कर ध्रुव महा-  
राज के चित्त में जैसा धिक्कार हुआ था, तेरी स-  
पत्नी के अद्भुत पुत्रों का भी ऐसाही ताप होत  
है । “आत्मवत् सर्वं भूतेषु” इस मारवान पवित्र  
प्रेम से पूर्ण नीति का आदर और अब देख नहीं  
पड़ता है । आज कल संसार तो श्लाघा से पूर्ण  
है । संगीत चाहे रहे या विनष्ट हो, कुछ भी  
चिन्ता नहीं । हम वो हमारे अपने जन सब का  
अनन्द पूर्वक दिन काटने ही में सम्पूर्ण सुख  
है । हे जननी ! तेरी दशा पहले क्या थी अब यह  
क्या हुई ! चिर दिन समान नहीं काटते हैं ।  
चक्रवत् परिवर्तन्ते सुखानिच दुःखानिच ।”

लङ्कपन में बालक को वाणी उच्चारण होते न  
होते देशी पहली पुस्तक के बदले अंगरेजी फाँट  
बुक पढ़ने को दौं जातो है । विदेशी भाषा पढ़ते  
विदेशी भाव राशि भी बालक के चित्त में असार  
कर जाते हैं । पाठावस्था का शेष होते न होते  
उस के ढंग कुछ औरही प्रकार को हो जाता है ।  
विदेशी प्रकृति देशी प्रकृति के स्थान अधिकार कर  
लेती है । अतएव उरहों ने जो विदेशी भाषा, वि-  
देशी विद्या अथवा विदेशी ग्रन्थकारों को अपने  
अरके मानेगे इस में क्या आश्चर्य है ? दिव्य गुण  
को कोइ देखा देखी शोध नहीं सिखता है । लोगों  
ने अंगरेजी का अनुकरण करते हैं सही, किन्तु  
उनकी देश हितैषिता, साहस, एकता आदि साधु  
गुण मण्डलों को छोड़कर उसके आधुनिक भाव  
को आश्रय कर लेते हैं । आर्य महात्माओं  
रीति नीति यदि मानौ जाय तो आज कल के सभ्य  
जनों के मतानुसार ( Liberal Education ) उदार  
शिक्षा नीति पर कलह लगता है, क्योंकि वह  
समस्त अति प्राचीन वी कुसंस्कार से पूर्ण है ।  
अंगरेजी की प्रति दिन तो सुरा पीने की हम  
देखते हैं, अतएव आर्य गण जो मद्यपान को महा



श्राव्य परमाराध्या सहधर्मिणी अपेक्षा शितामाताके परम देवता ज्ञाने पूजा करिते उपदेश देन । देश, काल, पात्र विवेचना करिष्या सकल काय करिते आर्या श्राविगण उपदेश दिराहेन । आज काल ये समय पड़िराहे, विशेषतः आमादेर ये रूप शक्ति ओ साहस ताहाते आश्रय करिते गिया समये समये विपन्न हईया थारि सता, किन्तु यখন ईंराज श्री स्वाधीनतार पक्षपाती तखन कि अश्वदेशीर श्री लोक गणके अलङ्कारे अवगुणनाश करिष्या राधा उचित ? ईंराज समाजे जातिभेद नाई, अथवा ईंरा तथार से श्रीकारे विद्यमान आछे ताहाई आपनार समाजे प्रचलित करिबार जन्य सतत सचेके । मेई विदेशीय बुद्धि परवश हईयाई सिद्धान्त करा हईयाछे ये केवल जाति भेदई आमादिगके एकता सूत्रे बद्ध हईते दितेहेना किन्तु आक्षेपेर विषय एई ये एदेशे रींराई जाति भेद त्याग करिष्याछेन, एकता अपेक्षाकृत ताहादेरई निकट हईते दूरे बास करितेछे । अपरेर कथा दूरे थाकुक, रींरा श्रीर २ आश्रीय अङ्गन अथवा सत्तादेर गणके ओ समये २ अङ्गद्वारे परिगणित करिते पाऐरन ना । पाछे आलस्यार प्रश्रय देओया हर एईठये सामर्थीन आश्रीय अङ्गनेर साहाय करिते अग्रसर हईते कुण्ठित हन । एके मिल, कमटी आदि पाठ करिष्याछेन, ताहाते आचार्यगणेर आलोचना करिले पाछे कृतविद्य समाजे चिह्नित हईते विश्व हर सेई ठरेर धर्म बाधा अवग, धर्म सत्ताय गमने किन्वा धर्म विषयक पुस्तकादि पठने प्रवृत्ति नाई । मोठागा क्रमे यदि काहार ओ धर्म साधने मति हर, तिनि आर्या दिगेर आचरित पथ परिताग करिष्या स्वाधीन तावे ताहा सम्पन्न करिते सचेके हन । आर्या श्रावि गण धर्म साधन जन्य श्री, पूत्र आश्रीय, अङ्गन, धन सम्पत्ति, वस्त्र वान्धव एवं अधिक कि श्रीर प्राण पर्याप्त ओ परि-त्याग करिते कदाच कुण्ठित हन नाई किन्तु ताहा-दिगके श्रेष्ठ ज्ञान करिष्या ताहादेर अदर्शित पथ अवलम्बन करिले पाछे श्रीर बुद्धिमत्तार लघुत्र प्राणीकृत हर एई ठरे ताहादेर प्रचारित

पाप कहते हैं सो हम विश्वास नहीं कर सक्ते । आर्य लाग तो ऐसे मूढ़ थे, कि निज परमाराध्या सहधर्मिणी को छोड़ कर पिता माता को परम देवता मान के पूजा करने कह गये । देश, काल पात्र विचार कर के कार्य करने के अर्थ आर्य लोगों ने उपदेश दे गये । हम मानते हैं कि आज कल जैसा समय आ पड़ा है, वो हमारी बल वो माहस ऐसे हैं कि आज रक्षार्थ भी असमर्थ हैं किन्तु अंगरेज लोग जब श्री स्वाधीनता को पक्ष करते हैं, तो हम क्या हमारी श्रोगण को फिर अन्दर क परदे में डाले रखेंगे ? अंगरेज लोग वष मेद नहीं मानते हैं यथवा जिस रीति से वे मानते हैं उभी रीति यहां भी चलाना चाहिये । विदेशी बुद्धि के वश होकर यह मिहान्त किया गया है, कि हम सब को एकता न होने का बर्ष भेद हो एक मात्र कारण है किन्तु दुःख का वि-षय यह है कि यहाँ जितने लोग वष भेद को नहीं मानते हैं, एकता उन्हीं लोग से दूर भागी फिरतो हैं । दुसरे को बात तो दूर रही, निज २ सम्बन्धो वो भाइयों का भी सुहृदों में नहीं गिनले सक्ते हैं । आलस्य को हाँड न होने पावे इसी युक्ति से सामर्थ्य विहीन अपने जनों की सहायता करने की भी आगे नहीं बढ़ते हैं । मिल, कमटी आदि पढ़ कर यदि धर्म सत्ता में ध्यान धरे तो आज कल के विद्वानों के मध्य में गिने जाना कुछ कठिन है, ईंसी भय से धर्मार्थ वार्ता सुनने की, धर्म सभा में जाने की किंवा धर्म संवन्धो पुस्तकें पढ़ने की प्रवृत्ति नहीं होते हैं । यदि सोभाव्य करके किसी पुरुष को धर्म में मति हो भी तो उन्हीं ने आर्य सज्जनों को आचरित मार्ग को छोड़ कर निज वधि के अनुसार स्वाधीन भाव से धर्मोचार करने लगता है । आर्य ऋषि गण धर्म के अर्थ श्री, पुत्र, आदि स्वर्ग, धन, विभव, वस्तु, वात्सव अधिक करा निज प्राण तक भी छोड़ने में संकोच नहीं मानते थे, किन्तु उन्हीं की चेष्ट मान कर उन्हीं की चल-इ इह पंथ में चलने पर अपनी बुद्धि को बड़ाइने कुछ टुटो आ सक्ती, इसी ठर वे उन्हीं की बसाइ इह पंथ पढ़ने में भी जोर पड़ नहीं करने दे ।



अन्धकार आक शके टाकिया फेनना। आर पा  
चलेना, प्राण वायु आर देह थकिते चाहे ना;  
उं! एतनउ ये कत पथ चलते रहेव, ताहाउ  
जानिना, कत एर गेले ये विश्राम नाला पाईव  
ताहाउ बाबते पारिना। आभि यहन गृह  
हईते निनगउ हई, तथन सूर्योदय मध्य २  
रश्मि माला आनाके पथ देखाईरा दिवार  
ऊन अछे २ मानित हईतेछल, उं! एकटी २  
करिया सकल रश्मि छलिई निरालापत हईया  
गियाछे, किन्तु आमार पथेर आर शेष हईते-  
येना। कत दिना राज गत हईल, कत लोक  
जन्मल, कत लोक मरिल, कत राजा विभव हईल,  
कत देशेर कत अवडा घटिल। कस आमार पथ  
आर फुराईल ना। सूर्य ग्रह उपग्रह एतने  
लईया गगन मार्गे छुटोछुटी करिया वेडाईल।  
मण्डले २ ब्रह्मांड २ कत बार मन्निन हईल,  
किन्तु आमार मन्ने आमार एकटी बारउ देन  
हईल ना। आभि उन्नता पागलेर नाय, लक्ष्मीन  
पथिकेर नाय केवल सूरिया बड़ाईतेह। केह  
यदि निकटे थक, तवे आमाके रक्षा कर।  
सन्मुखे बड़ एकथान गेय देखेतेह, उन्नतर मध्ये  
बज्ज ए ये विद्रातेर ताले २ नाचते २ आ-  
मारई दिके दोड़तेछे, बुझि हई शुन्य भूमि  
शून्य हृदये मारा पाड़िनाम। मरि, ताहाउ  
कति नाई, किन्तु एत दिन ये ऊन्य भ्रमण  
करिनाम, ताहा बुझि सिद्ध हईल ना, एई छुट्टे  
रुझि गेल। आभि आर ए उन्नत दृष्टि नह  
करिते पारिना, नयन मूढ़ित करिल, आमार  
निकटे यदि केह थक, तवे मोरे २ आमार  
हृदयेर कपाट खुलिया आवेश कर, आमार हात  
धरिया निज गृहे लईया याउ, आमार प्राणेर  
आदिपटी जालिया देउ, आभि एकवार पथ देखिया  
अमणेर उन्नतार करि। प्राण गथा! एकवार  
सन्मुखे प्रकाशित हउ, तोमाके देखिलेई आ-  
मार पथाटेन पथ पर्याप्तत हईले। तूनिई  
आमार शेष आश्रय—शेष मयल। तोमारई  
शरणगत हईनाम। जाति गाउ।

### गो वध ।

कसैक वधन हईते गुलमान दिगेर मांति  
गोवध लईया हिन्दू दिगेर अनेक विधान विग्रहाद  
हईया गेल। गो वध ऊन्य हिन्दू दिगेर ये अत्यन्त  
कति हईया थके, ताहा छिडा करिया याहाउ  
गोवध निवारण हर तज्जना भारतेन्दु सकरण भावे  
निधिगाहेन “वर्तिउ भारतेन्दु गोवध हईले हिन्दू  
गुलमान, श्रीफोन आदि सकलेई कति अछ हईले,  
किन्तु उन्धे हिन्दू गणेर विशेष अनिष्ट हईले।

शून्य के समुद्र में शून्यही को लहर खेल रही है।  
देखते देखते घर अन्धकार आकाश को छाग  
लिया। मेरे पंख फिर नहीं चलता है, प्राण वायु  
निकलने वाला है; ओ! फिर भी कितना दूर  
चलना पड़ेगा, सो कुछ भी सचिंत नहीं होता है।  
कितने दूर जाने पर जो विश्राम गृह मिलेगी भी  
भी मुझ नहीं पड़ता है। मैंने जब गृह में मे  
वाहर निकला, उस समय सूर्य को मध्य २ किरणों  
मुझे पथ देखलाने के लिये आगे २ दोड़े थे, हा!  
एक २ करके अब मनुष्य किरण वन गये किन्तु  
मेरी पथ का पार नहीं लगता है। कितने दिन  
रात्रि गत हुए, कितने मनुष्य जन्मे वो कितने  
मनुष्य फिर मरे, कितना राष्ट्र विग्रह हुआ, कितने  
देश की कितनी अवस्था बदली, किन्तु मेरे पथ का  
फिर शेष न हुआ। सूर्य ने यह उपपत्तियों को साथ  
ले ले कर गगन मार्ग में दोड़े फिर, मण्डल  
मण्डल में, ब्रह्माण्ड ब्रह्माण्ड में कितने बेर मिले  
किन्तु मुझ भी मेरी अपनी साक्षात्कार इस अवकाश  
में एक बेर भी न हुआ। मैंने अस्थिर निज पागल  
के न्याइ, लक्ष्य निहीन पथिक के न्याइ केवल घुमा  
फिरता हूं। यदि कोई निकट में मेरे रहे हो, तो  
मुझे रक्षा करी। सारङ्गने बड़ा भारी मेघ देख  
पड़ता है, उस के मध्य में बज्र विजली के ताल में  
नाचता हुआ मेरेही ओर दोड़ चला आता है।  
बोध होता है कि इसी शून्य भूमि में शून्य हृदय  
ही कर में मारा जाउंगा। मारे जाने पर भी कुछ  
हानि नहीं, किन्तु दुःख यही रह गया, कि यदर्थ  
इतने दिन भ्रमण किये, वह सिद्ध नहीं हुआ। मैं  
ओर इस भयंकर दर्शन को सहन नहीं कर सकता  
हूं, नेत्र बंध कर लिया। मेरे निकट यदि कोई रहे  
हो, तो धीरे २ मेरे हृदय की दरवाजा खुल कर  
पेठा, मेरा हात पकर के निज गृह में ले चली;  
मेरे प्राण का दीपक बार दो, मैं एक बेर पथ देख  
कर भ्रमण का उपसंहार करले। हे प्राण-सख! एक  
बेर तो सारङ्गने प्रगट हो दर्शन दो, आप की  
देखते ही मेरी पथेठन-पथ का पथवसान होगा।  
आपको मेरे शेष आयु ही शेष अवलम्ब हों। मैं  
न आपकी का शरण लेलिया। जाई मां।

### गोवध ।

वर्षों से मुसलमानों के साथ गोवध की  
निमित्त हिन्दुओं को अनेक भगड़ा झमेला  
हो चुका। गोवध से हिन्दुओं की बज्जतसी  
हानि होती है, यह सीधे विचार के हमारे  
मध्यगो भारतेन्दु सम्पादक मद्याशय ने यह  
सकरुण वाणी लिखी है—

“यद्यपि भारतवर्ष में गोवध होने से हिन्दु  
संस्कृति का नुकसान नहीं होता, मनुष्य की संस्कृति का नुकसान होता है।”

প্রথমতঃ দেখিতে পাওয়া যায় মুসলমান খ্রীষ্টান গণ মাংস, মাংস, তৈল, জল আদি দ্বারা ও জীবিক। নিবাহ করিতে পারেন, কিন্তু দুগ্ধ, ঘৃত, দধি, তরু আদি ভিন্ন হিন্দুদিগের দেহধারণ নিত্য হইত। দ্বিতীয়তঃ, গোবধের দোষাদোষ চল চালাইয়া বলাবদ্বি পাওয়া যায় যুগ্ম শব্দাদি। পাদনের বিশেষ রূপ ক্রটি হইতেছে। তৃতীয়তঃ গো সংস্থা হাম জন্ম ঘৃত, দুগ্ধাদি অভ্যাস মহাশয় হইয়া উঠিয়াছে, এক্ষণে হিন্দু গণ কি পাঠেয়া জীবিত থাকেন? এতাবৎ হইতে বাক্য হইলে হিন্দু গণ কঠোরানে দক্ষ হইবে ও চিরদিন বিজাতীয় দিগের পাড়কাষাত মুক্ত করিব। এতদ্বিধা মর্মেও অনেক ক্রটি হইতেছে। যথা প্রত্যহ প্রাতঃকালে গোদর্শন, সংকার্য্য মায়েই গোদান, ব্যাঘ্রমর্গ, পক্ষ্মমুদ্রা, গোবর দ্বারা গৃহ লেপন, পক্ষ্মাদি দ্বারা পাতক শুদ্ধি, গোবন্ধন গোপাঠমো আদিতে গো পূজা, আদি পূর্ণ কর কার্য্য। গোমংস্থা হামের মত্রে মত্রেই হাম হইয়া আসিতেছে। অতএব হিন্দু দিগের ধর্ম্ম রক্ষাও ভার হইয়া উঠিয়াছে। লোক বাবচাও বিষম কষ্ট দেখা বাইতেছে। গোসকটে যাঁতায় বা দবাতি বহন অভ্যাস অতি বায় সাধ্য হইয়া পড়িয়াছে। ইত্যাদি ভিন্ন ভিন্ন সামারণেরও হানি দেখিতে পাওয়া যায়। কেন স্থানে গোবধ সম্বন্ধীয় বিবাদ উঠিলেই, হিন্দু গণ নিরস্ত্র নিরাহারে রছিলেন, বাজার বন্ধ হইল যুগ্ম বাণিজ্য হানি, রাজ দ্বারে অভিযোগ হইল তো অর্থের আধিক্য হইতে লাগিল। যদি কেহ কিছু না বলে তো হিন্দুগণের কলঙ্ক রটিল, জাতীয় মর্যাদার ছরণনের মলিন চিত্র অঙ্কিত হইল। বলিতে কি গোবধ জন্ম হিন্দু গণই বিশেষ ক্রটি আস্ত হইলেন। এক্ষণে গবর্ণমেন্ট সম্রাট প্রার্থনা এই যে গোবধ নিবারণের সম্ভাবনা করুন।”

গোবধ নিবারণ হওয়া এক প্রকার অসম্ভব কথা। কেননা মুসলমান গণ নহে হিংস্র গণ তাহার। বিশেষ পক্ষপাতী। গোবধ বন্ধ হইলে খেত কলেকর বর্গের ভোজনই হইবেনা। গবর্ণমেন্টের নিকট বারবার এ প্রার্থনা না করিয়া আমরা বহুদিন পূর্বে “গো রক্ষা” সংকল্পে যে প্রস্তাব করিয়া আসিয়াছি, তাহারই নিকে যত্নবান হওয়া হিন্দু বর্গের কর্তব্য নতুবা এ প্রার্থনা পূর্ণ হইবার নহে, কেননা “-রাজা খড়্গধর স্তথা”।

(চাপরা হইতে প্রাপ্ত।)

আমাদের পরম সৌভাগ্য ক্রমে ও অল্প সময়ের আলোচনায় খ্রীষ্টান বাহাদুরী বাহাদুরের যত্নে বাঃ আঃ ধঃ ধঃ সত্য সংস্থাপিত ও কার্য্য

পর হিন্দুগণের কাঁধে সব সেরা অধিক জানি হই। প্রথমতঃ মুসলমান, কিস্তান, অপনো জীবন যাচা মাংস, মছল তৈল জল আদি সে ভী কর সক্তি হই। পর হিন্দু কাঁধে, ঘৃত, দুগ্ধ, দধি, তরু, আদি হই এক মান অলম্ব হই। গোবধ সে বৈল দুগ্ধ ভঞ্জন ফির অন্ন কঁচা সে হোঁগা? গোবধ ভে ঘৃত, দুগ্ধ আদি তে জঞ্জল, ফির কাঁচ-যে হিন্দু ক্যা খায়ে? যদি যে তিনোঁ চোঁজ কোঁড় দে, তাঁ হিন্দু ভুখী মর, আর পরম দুর্বল হা কর বিজাতীয়োঁ কী জুত্যা খায়ে? দ্বিতীয় ধর্ম কী জানি, নিত্য প্রাতঃ কাল গৌ কী দর্শন, চর এক কর্মে গোদান, হৃদয়সর্গ, পচা-স্বন স্থান, গোবর সে ভুলেপন, পচগব্য সে মহা-পাতকী তক সৌ শুভো, গোবর্দ্ধন, গোপাঠমো আদ মং গোপজা যহ সব ধর্ম কার্য্য গোবধ হানি সে নষ্ট প্রায় হোঁগয়ে, আর আগে হোঁজা-যেই, ফির হিন্দু সন্তান কী পরলোক সে গতি কঁসে ছা? তৃতীয় ব্যবহার সে জানি, ওপলে পরম দুর্মূল্য জানি আনে বা মাল ডীনে কী লিয়ে মাটা বহলো মহা অকরো, খেত জীতনে আর পুর চলান কী অক্কে বৈল হুঁদে নছোঁ মিল-তে, বম গোবধ হোঁনে সে হিন্দু ব্যবহার সে ভী মারে পড়ে। চতুর্থ সর্ব সাধারণ জানি। কিসী শহর সে গৌ কী বিপদ কোঁড় ভগড়া উঠা, জব তক তয় নছোঁ ছোঁতা, হিন্দু নির্জল, নিরা-চার, বাজার বন্দ হুঁয়া তো জীবিকা সে জানি, মুকদ্দমা ছিডা তো রুপয়ে কা সর্ব নাশ কুক ন কিয়া, তো হিন্দু ইম নাম কী কলঙ্ক, আর দেশ দেশান্তরোঁ তক মান সে জানি নিদান সব तरह সে গোবধ হোঁনে সে হিন্দুগণোঁ কী জানি হী জানি হই। হম অপনো ন্যায শালী গবর্ণ-মেন্ট সে প্রার্থনা করত হই কি জিস প্রকরবনে, গোবধ বন্ধ কিয়া জায়। --

গোবধ বন্ধ হোঁনা এক প্রকার অসম্ভব হই জাননা। কেবল মুসলমানোঁ নহো, বরং অংরেজ কাম ইম কী অধিক পছ করত হই। গোবধ বন্ধ হোঁনে সে শ্রীত কলিকারোঁ কী ভোজন কী বড়ো কঠিনতা হোঁগো। গবর্ণমেন্ট সে বারবার এমী প্রার্থনা করত কী বদলে হম জী বহুত দিন পছলে গৌ রক্ষা কী নিমিত্ত প্রস্তাব করে আয়ে, ওসো পর ধ্যান টেনা হিন্দু মানছোঁ কা চচিত হই, নছোঁ তো যহ প্রার্থনা পূর্ণ হোঁনে শালী নছোঁ ক্যোঁকি — “রাজা খড়্গধর স্তথা”।

কাপরা—(প্রাপ্ত।)

হমারে পরম সৌভাগ্য সে বা যহাঁ কী সদর আলোচনা সাহব মাননীয় আমান রায মাতাদীন বাহাদুর কী যত্নে ভারত-মুখ্য আমান আমান প্রসন্ন হেন



सम्पादक भारत दुष्पण श्रमान श्रीकृष्ण-प्रसन्न सेन महोदय अत्र छापराय पदार्पण करियाछलैन । सभार अन्यातर धर्माचार्य अक्षराम्पद श्रीमन् आश्वी तं सन्ध्यामी ७ तौहार सप्ते छिलैन । अथगोक्त महात्मा एथाने दुईटी हिन्दी ७ एकटी बङ्ग भाषार वक्तृता करियाछलैन । वक्तृता सभार प्राय ३००० श्रोता उपस्थित छिलैन । अथ शकट हईते उक्त महात्मा द्वय सभासमीपे अवतरण करिवा मात्र बर्धन वक्तृता अवगोचरक समस्त श्रोता एक काले दण्डरमान हईस । ताहारनेर अभ्यर्थना करिलैन तखन सभा एकटी अपूर्व आभारण करियाछल । प्रधान २ विचार पति, उकिल, कृतविद्या जमीनदार ७ साधारण व्यक्ति समस्त हई वक्तार उद्देजना, प्रेम ७ साधुतावे परिपूर्ण वक्तृता अवग करिया नितान्त विमोहित हईयाछैन । जावेर परम कल्याण स्वरूप मुक्ति लाभ करिते हईले आवा शास्त्रानुसारे धर्म साधन ये नितान्त आवश्यक ७ आवाधम्य ये भारतेर सर्व प्रकार उन्नतिर मूल एतावे कयेक दिनेर वक्तृताय वक्तृता सुन्दर रूप प्रतिपादन करिया गियाछैन । एथाने एह वक्तृतार फल एकटी आर्या धर्म प्रचारिणी सभा ७ स्थापित हईयाछे । एथानकार उक्त पदस्थ व्यक्ति मात्रेह ईहार सभा श्रेणीभूक्त हईयाछैन ।

अत्रज जैनिक मुख्या पण्डित निम्न लिखित श्लोक द्वारा वक्तृ महोदयके सम्मान सह अभिनन्दन करियाछलैन !

“जीवानां भारतेऽस्मिन् कलिपर कलिता-

नामहो मुक्ति रेखा

हाता धर्म प्रचारैः कलि गज नमिता

धर्म निःशेषितोऽभूत् ।

दृष्ट्वा दुःखं जनानां परम करुणया

चाक्षुशोऽभूत् सुवेद्यः

श्रीकृष्ण सेन नामा कलि करि मथने

येन धर्म प्रचारः ॥”

एतद्वारतवर्षे अर्धशतक बहल प्रचार जना कलुषित चित्त जीव गणेर मुक्ति सुदूर परागत ७ कलिरूप हस्तार पद पोड़ने धर्म निःशेषित प्राप्त हईया उठियाछे । जन गणेर दुःख दर्शने नितान्त करुणाद्रु हृदय वैद्य वंशीय श्रीश्रीकृष्ण सेन महाशय कलि रूप असत मातङ्ग मथनेर अद्भुत स्वरूप हईया धर्म प्रचार करितेछैन ।

जनैक श्रोता ।

सम्प्रति टाकी—सैदपुर ७ वेणुसराई “सुनाति सचारिणी सभा” द्वयेर वार्षिक उद्भव अति समारोह पृथक् सुसम्पन्न हईया गियाछे । उक्त श्रानेह श्रानेर प्रधान २ व्यक्ति गण सभार काय पध्यावेकणे परम सन्तोष प्रकाश करियाछैन ।

भा० आ० ध० प्र० सभा के संस्थापक वी काय्य सम्पादक महाशय ने इस गहर छापरे में पधारे थे । उस सभा के एक धर्माचार्य अत्रा के योग्य ओमत् आत्मा इस सभा ने भी जपा करो थी । सम्पादक महाशय ने यहाँ दो वक्तता देशो भाषा में वी एक बग भाषा में करी । वक्तृता सभा में गायः ३००० श्रोता सुशोभित थे । उस समय, जबकि उस महा-आह्वय सभा समीप में लाहो पर से उतरे वी वक्तता अवगोचरक समास्य समस्त श्रोता खुड़े हो हा कर उहाँ को सम्मान किये, एक अपूर्व दिव्य शोभा हुई थी । प्रधान २ न्यायकर्ता, वकील, विद्यावान रहस वी अन्यान्य साधारण लोग वक्तार को उत्तेजना, प्रेम वी साधुभाव से पूर्ण वक्तृता अवग करके नितान्त विमोहित हुए । परम कल्याण रूप सात साहने हारों को आर्य धर्म शास्त्रों के अनुसार काय्य किये बिना फल नहीं मिल सका है, वी आर्य धर्म जो भरतखण्ड को सर्व प्रकार उन्नति का मूल है, के दिवस को वक्तृता के द्वारा वक्तार महाशय ने इतना उत्तमरूप प्रतिपादन करे गये । इन वक्तृताओं को उत्तेजना से यहाँ एक आर्य धर्म प्रचारिणी सभा भी स्थापित हो गयो है । यहाँ के उच्च २ पदवी के महात्मा मात्रही इस सभा के सभ्य बने ।

यहाँ के एक मुख्य पण्डित ने निम्नाक्त श्लोक से वक्तारमहोदय को सम्मान सहित अभिनन्दन किया था-

“जीवानां भारतेऽस्मिन् कलिपर-कलिता-

नामहो मुक्तिरेखा

हाताऽधर्म प्रचारैकलि गज नमिता

धर्म निःशेषितोऽभूत् ।

दृष्ट्वा दुःखं जनानां परम करुणया

चाक्षुशाऽभूत् सुवेद्यः

श्रीकृष्ण सेन नामा कलि करि मथने

येन धर्म प्रचारः ॥”

इस भरतखण्ड में अधर्म के अत्यन्त प्रचार से कलि-कलुषित-चित्त जीवों को मुक्ति मिलनी कठिन हो गया । वी कलिरूप हाथों के पदपषण से धर्म का शेष होता जाता है । जीवों के दुःख देख कनितान्त करुणारस-परवश होकर वैद्य कुल—भूषण श्रीकृष्ण सेन नामक महात्मा ने कलिरूप मत्त मातङ्ग को मथनाथ अंकुशरूप बन के धर्म प्रचार कर रहे हैं ।

जनैक श्रोता

अल्पदिन हुआ कि सैदपुर-टाकी वी वेणुसराय को सुनाति सचारिणी सभा का वार्षिक उत्सव अतीव धूम धाम से सम्पन्न हो गया । दोनों ही स्थान के प्रधान महात्मागण सभा का कार्य देख के परम प्रसन्न हुए ।





“এক এব সহস্রক্ষৌ নিধনেঃ প্যনুযাতি যঃ ।  
শরীরেণ সমগ্রাণং সঙ্গম্যনাত্ত গচ্ছতি ॥”

“एक एव सहस्रक्षौ निधनेऽप्यनुयातियः ।  
शरीरेण समं नाशं सर्वमन्यत, गच्छति ॥

৭ম ভাগ । { শকাব্দা ১৮০৫ ।  
১০ম সংখ্যা { মাঘ—পূর্ণিমা ।

৩ম ভাগ । { একাদশী ১৮০৫ ।  
১০ম সংখ্যা { মাঘ—পূর্ণিমা ।

### কেবলোহং ।

বিশোক্ত আনন্দ ময়ো বিপশিৎ  
স্বয়ং কুতশ্চিৎ বিভেতি কশিৎ  
নান্যোস্তি পন্থা ভব বন্ধ মুক্ত্য  
বিনা স্বতত্ত্বাবগমং সুসূক্ষ্মা ॥

যিনি আত্মযোগ সাধনা করিয়াছেন, তিনিই শোক তাপ রহিত ও পরমানন্দিত এবং সর্বথা জয়যুক্ত ও নির্ভীক হইয়াছেন অর্থাৎ রিপুবর্গের ভীষণ সংগ্রামে তিনি বিজয়ী বীর ও দোষিগু প্রতাপশালী দণ্ডধর যমের সম্মুখেও তিনি ভয় শূন্য। আত্মোপলব্ধি ব্যতীত ভয়ঙ্কর ভব বন্ধন মোচনের আর কোন উপায়ই নাই। আত্মজ্ঞান অতীব সুক্ষ্ম প্রক্রিয়া সাধ্য ব্যাপার।

নিত্যং নিভুং সর্বগতং সুসূক্ষ্ম—

### কেবলোহং ।

বিশোক আনন্দ ময়ো বিপশিত  
স্বয়ং কুত শিৎ বিভেতি কশিত  
নান্যোস্তি পন্থা ভব বন্ধ মুক্ত্য  
বিনা স্বতত্ত্বাবগমং সুসূক্ষ্মা ॥

জিননে আত্ম যোগ কৌ সাধনা করী হৈ, তহী কা চিত্ত যোক তাপসে রহিগ বৌ পরম আনন্দকৌ প্রাম হুয়া মৌ বেহী সর্ব থা জয় যুক্ত বৌ ভগ মুক্ত হুএ অর্থাৎ রিপুর্মৌ সংগ ভীষণ সংগ্রাম মৌ বেহী বিজয়ী বৌ বৌ দৌহুন্ড প্রতাপশালী দণ্ডধর যম কে আগে মৌ বেহী নির্ভয় হৈ । বিনা আত্ম স্বরূপ কৌ অনুভব কিয়ে ইস সংসার কৌ বন্ধন ছুটনে কা কৌই মৌ উপায় নহী । আত্ম জ্ঞান অত্যন্ত সুক্ষ্ম প্রক্রিয়া কৌ সাধন সে মিল সত্তা হৈ ।

নিত্যং নিভুং সর্বগতং সুসূক্ষ্ম—

मनुर्वहिः शुन्य मननमाश्रयः ।

विज्ञाय सम्यग् निजतत्त्वमेतत्

पुमान् विपाप्माविरजो विमृत्युः ॥

नित्य विद्यमान सर्वगत सूक्ष्मातिसूक्ष्म, अशुक्लाश्च  
आआर तातत्त्व विदित हैइया मानव अपाप अशोक  
ओ अमर हैइया थाके ।

ब्रह्माभिन्नश्च विज्ञानं भवनेनैकस्य  
कारणम् ।

येनाद्वितीयमानन्दः ब्रह्म सम्पद्यते  
बुधः ॥

ब्रह्म ओ आआ उभये अभिन्न बुद्धि है संसार मुक्ति  
उपाय । एतद्वारा है अतुल आनन्द लाभ हैइया थाके  
एवं हैइया द्वारा है जीव ब्रह्म स्वरूपता प्राप्ति হয় ।

ब्रह्मभूतस्तु संसृते विद्वान्नामर्षते पुनः ।

विज्ञातव्यमतः सम्यग् ब्रह्माभिन्नश्च माश्रयः ॥

ये विद्वान् पुरुष ब्रह्मस्वरूप हैइया परित्रुष्ट  
हैइयाहेन, तै हाके आर संसारे पुनरावर्तन  
करिंते হয় नः । अतएव पण्डित गण सर्वथा ब्रह्म  
निष्ठ विवेकबुद्धि विचार द्वारा ब्रह्मा विज्ञात  
हैइयेन ।

यदिदं सकलं विश्वं नानारूपं

प्रतीत मज्जनात् ।

तत्सर्वं ब्रह्मेकं प्रत्यक्षादेशव

भावनादोषम् ॥

एहै नानारूप प्रत्यक्ष परिदृश्यामान जगत् अज्ञानता  
वशतः सत्तावत् भासित हैइया थाके । तत्समस्त है  
एकब्रह्म मात्र, नाना च चिन्ता करा कथन है उचित  
नहे ।

मृत्कायं भूतोऽपि मृदो न भिन्नः

कूटोऽस्ति सर्वत्र तु मृत् स्वरूपा ॥

न कुम्भरूपं पृथगस्ति कुम्भः

कूटोऽपि कल्पित नाम मात्र ॥

गुप्तिका हैइते ये सकल द्रव्य गठित হয়, ताहा मृत्तिका  
भिन्न अन्य किछु है नहे । कुम्भ मृत्तिका हैइते कौन  
स्वतन्त्र पदार्थ नहे, “कुम्भ” एहै नाम एकटी कल्प-  
निक शब्द मात्र ।

केनापि नृक्षिप्तं तथा स्वरूपं

घटस्य सन्दर्शयितुं न शक्यते ।

अतो घटः कल्पित एव मोहा-

शब्देन सत्यं परमाद्यं भूतम् ॥

मन्तवेहिः शुन्य मनन्य मात्मनः ।

विज्ञाय सम्यग् निज तत्त्वमेतत्

पुमान् विपाप्मा विरजो विमृत्युः ॥

आत्मा का जोकि नित्य विद्यमान सर्वगत, सुक्ष्म से  
प्रत्यन्त सूक्ष्म, भीतर बाहर से रहित है, सम्पूर्ण तत्व  
को विदित होकर मनुष्य ने पाप, शोक, मृत्यु आदि  
से रहित हो जाता है ॥

ब्रह्मा भिन्नत्व विज्ञानं भव माश्रयस्य कारणम् ।

येनाद्वितीयमानन्दः ब्रह्म सम्पद्यते बुधः ॥

ब्रह्म वो आत्मा इन दोनों में अभिन्न बुद्धि करनाही  
मे संसार से मुक्त होने का उपाय है । इसी से अतुल  
मानन्द मिलता है ओ इसही से जीव ब्रह्म स्वरूप  
को प्राप्त कर लेता है ।

ब्रह्म भूतस्तु संसृते विद्वान्नामर्षते पुनः ।

विज्ञातव्यमतः सम्यग् ब्रह्मा भिन्नत्वमात्मनः ॥

जिस विद्वान् पुरुष ने ब्रह्म स्वरूप बन कर लस हो  
चुका, उन के देहान्त होने पर फिर लोटा ने नहीं  
पड़ता है । अतएव पण्डित गण को चाहिये कि  
सर्वथा ब्रह्मनिष्ठ विवेक बुद्धि विचार के द्वारा ब्रह्मा-  
त्म ज्ञान को प्राप्त कर लें ।

यदिदं सकलं विश्वं नानारूपं प्रतीतमज्जनात् ।

तत्सर्वं ब्रह्मेकं प्रत्यक्षाशेष भावनादोषम् ॥

भांति भांति के रूपों में प्रत्यक्ष देख पड़ता हुआ  
जगत, अज्ञानता के सत्यवत् भासित होता है ।  
वास्तव में समस्तही एक ब्रह्म मात्र है । एक में  
नानात्व की चिन्ता करना कभी न चाहिये ।

मृत्कायं भूतोऽपि मृदो न भिन्नः

कुम्भोऽस्ति सर्वत्र तु मृत् स्वरूपात् ।

न कुम्भरूपं पृथगस्ति कुम्भः

कूटोऽपि कल्पित नाम मात्रः ॥

मिट्टी में जो सब पदार्थ बनते हैं, वे मिट्टी-  
छोड़ के कोई भिन्न पदार्थ नहीं हैं । कुम्भ मिट्टी से  
कोई स्वतन्त्र पदार्थ नहीं । “कुम्भ” यह नाम एक  
काल्पनिक शब्द मात्र है ।

केनापि मृक्षिप्तं तथा स्वरूपं

घटस्य सन्दर्शयितुं न शक्यते ।

अतो घटः कल्पित एव मोहा-

शब्देन सत्यं परमाद्यं भूतम् ॥

अगते कोन व्यक्ति है वृत्ति। इहते घटेर  
अतन्त्रता अदर्शन करिते पारे ना। 'घट' इत्याकार  
नामर आरोप मोह वशतः कल्पना त्रिज आर  
किछु नहै।

सद्बुद्ध कार्यं सकलं सदेव  
तन्मात्रं मेतन्म ततोऽन्यदस्ति ।  
अस्तीति यो वक्ति न तस्य मोहो-  
विनिर्गतो निद्रितवत् प्रजल्पः ॥

ब्रह्म सत् सूत्रात् तां। इहते उपर सगलुहै सत्,  
केन ना ब्रह्म त्रिज अन्य पदार्थर आदो अस्तुइह  
नाहै। ईहा ये व्यक्ति स्वीकार ना करेताहारवृद्धि अग  
जाल जड़ित। निद्रित व्यक्ति स्वीप्तावेश कथोप-  
वधनेर नाय ताहार कथा वृथा जल्पना मात्र  
बलिता हैवे।

## आर्य दिगेर उपासना प्रणाली ।

(पूर्व प्रकाशितर पर)

मनहै अधिनायक स्वरूप हैया शरीर ओ शारीरिक  
वृत्ति समूहेर उपर यथावत् आधिपत्य करिया  
थाके। अनेकेर संस्कार ये मनर द्वारा शरीर ओ  
शरीरेर द्वारा मन विचालित हय किन्तु वस्तुतः शरीर  
मनर उपर आधिपत्य करिते आदो समर्थ नहै।  
शरीर अमूर्त हैले मन दूषित ओ गलिन हैया  
थाके, एवं शरीर अरोगी थाकिले मन ओ प्रफुल्ल  
थाके, ईहा देखिया शरीरके मनर परिचालक  
बलिया बोध हैते पारे किन्तु वस्तुतः शारीरिक  
क्रिया मनके अभिभूत वा उत्तेजित करिते  
पारेना। शरीर रोग ग्रस्त हैले मस्तिष्क मनर  
संकल्पोपयोगिनी शक्तिर उपादान संग्रहे  
सहजेई अपटू हय ऐहजन्य मनके तखन गलिन  
ओ अभिभूत बलिया बोर हय। शरीर मूर्त हयार  
सङ्के २ यदि मस्तिष्क मनोमत शक्तिर उद्दीपक  
उपादान संग्रहे समर्थ हय ताहा हैलेई मन  
स्कृति युक्त हैया थाके। मनर संकल्प हैलेई  
चक्र, कर्ण, हस्त पादादि कार्ये प्रवृत्त हय, किन्तु चक्र

मिही से घट को स्वतन्त्रता देवाने में संभार  
में कोई भी समर्थ नहीं है। 'घट' यह जो नाम  
दिया गया यह भी मोह को कल्पना छोड़के और कुछ  
ही नहीं।

सद्बुद्ध कार्यं सकलं सदेव  
तन्मात्रं मेतन्म ततोऽन्यदस्ति  
अस्तीति यो वक्ति न तस्य मोहो-  
विनिर्गत निद्रितवत् प्रजल्पः ॥

ब्रह्म सत् है, अतएव उन से उत्पन्न हुआ ममस्तही  
सत् है, क्योंकि ब्रह्म छोड़के दूसरे वस्तु, को अस्ति-  
त्व ही नहीं है। इस सिद्धान्त वाक्य जोन माने,  
उसको वृद्धि अम जाल में जड़ित है। सोते हुए  
पुरुष को रूप में वार्त्तालाप के न्याय उसकी कथा  
को भी व्यर्थ जल्पना मात्र जानना चाहिये।

## आर्य सज्जनों की उपासना प्रणाली ।

( पूर्व प्रकाशित के भाग )

मन ही नायक बन कर शरीर की शारीरिक वृ-  
त्तियों पर यथोचित कर्तृत्व किया करता है। बहु-  
तेरे का यह संस्कार बना हुआ है, कि मन करके  
शरीर की शरीर करके मन चलता फिरता है,  
किन्तु वास्तव में मन पर शरीर कुछ भी आधिपत्य  
नहीं कर सक्ता है। शरीर रोग युक्त रहने में मन  
भी प्रसन्न रहता है, यह देख कर शरीर को मन  
का चालक करके बोध हो सक्ता है किन्तु वास्तव  
में शरीर की क्रिया मन की अभिभूत या उत्तेजित  
नहीं कर सकती है। शरीर रोगयुक्त होने से मस्ति-  
ष्क मन के संकल्प मिट करने वाली शक्ति के उपा-  
दान संग्रह करने में असमर्थ हो जाता है, इस  
लिये उस समय मन की मस्तिष्क की अभिभूत बोध  
हाता है। शरीर के आरोग्य के संग्रहीत यदि  
मस्तिष्क मन के योग्य शक्ति के उद्दीपक उपादान  
संग्रह में समर्थ होय तोही मन प्रसन्न हो जाता  
है। मन का संकल्प होने ही से चक्र, कर्ण, हस्त,  
चरण आदि कार्य करने में प्रवृत्त होते हैं, किन्तु  
चक्र, कर्ण आदि मन की यथावश्यक चलाने में

কর্ণাদি কখনও মনকে যথাবশ্যক চালাইতে পারেনা।

মন উপাদান না পাইলেই মলিন ও পাইলেই স্ফুর্তিমান হয়, বস্তুতঃ শরীরের কর্তৃত্ব মনের উপর আদৌ দৃষ্ট হয় না।

মনকে কেহ ২ একটি বৃত্তি বিশেষ বলিয়া স্বীকার করেন এবং বলেন যে অন্যান্য তাবদ্ধৃত্তির উপর ইহার অবিনায়কত্ব আছে। কিন্তু আমরা মনকে বৃত্তি বিশেষ বা বৃত্তি গুণের নায়ক বলিতে সঙ্কুচিত হই। তাবদ্ধৃত্তিরই সমগ্রী মন বলিয়া আমরা স্থির করিলাম। ইহাকে অন্তঃকরণ বলিয়াও অভিহিত করা যায়। চিন্তা একটি মনের কার্য মাত্র। ঐশ্বরের রূপ বা গুণ বিশেষের বা গুণ সমূহের চিন্তার নাগই ঐশ্বরের আরাধনা। চিন্তা ও জ্ঞান এই দুইটি ভিন্ন জাতীয় বস্তু নহে। মনুষ্যের কোন বিষয়ে জ্ঞান হইবার সময় মনোমধ্যে যে ২ কার্য হয় তদ্বিষয়িণী চিন্তাকালেও মনের মধ্যে তাদৃশী ক্রিয়া হইতে থাকে। জ্ঞান মনের একটি ক্রিয়া মাত্র। যে কোন বিষয়ক জ্ঞান হউক না কেন, উহা মনের একটি ক্রিয়া ভিন্ন আর কিছুই নহে। রূপ, রস, গন্ধ, স্পর্শ, শব্দ আদি ভিন্ন ২ নামে জ্ঞান অভিহিত হইলেও সমস্তই মনের ক্রিয়া বলিয়া পরিগণিত হইবে। ক্রিয়া হইবার সময় মনোমধ্যে সঙ্কেতের ইতর বিশেষ হয় মাত্র। বাহ্য বস্তু বা ব্যাপারের আবির্ভাবে অভ্র মণ্ডলে যে এক প্রকার স্বাভাবিক গতি বা সঞ্চেগ উপস্থিত হয়, সেই গতিই নভোগণ্ডলে রাশি ২ তরঙ্গ উৎপাদন পূর্বক নৃত্য করিতে ২ মানবের ইন্দ্রিয় সংলগ্ন স্নায়ু মণ্ডল সহযোগে সঙ্কটকে গিয়া আঘাত করিতে থাকে। সঞ্চেগ সংখ্যার ইতর বিশেষ কোনটি রূপের, কোনটিবা শব্দের জ্ঞান উদয় করিয়া দেয়। প্রত্যেক সঞ্চেগের ক্ষমতাই এক, কেবল ভিন্ন ২ সংখ্যানুসারে ভিন্ন ২ জ্ঞানের উপলব্ধি হয় মাত্র। মনে করুন দুইটি সঞ্চেগ দ্বারা আমাদের স্নায়বীয় ক্রিয়া শক্তি সহযোগে আমরা রূপ অনুভব করিতে পারি আবার চারটি সঞ্চেগ উপস্থিত হইলে শব্দ জ্ঞানের উদয় হয়। সঞ্চেগ সংখ্যাসম্বন্ধীর তার-

কমী সমর্থ নহী বন সক্তি হ। মন উপাদান বিনা মলিন বা উপাদান মিলনে হী ব স্ফুর্তিযুক্ত হীতা হৈ, বাস্তব মন মন পর শরীর কা কত্ব কুছ ভী নহী দেখ পড়তা হৈ।

কিসী কিসীনে মন কী এক প্রকার কী বৃত্তি করকী মানতা হৈ ভী কহতা হৈ কী অন্যান্য বৃত্তিয়া পর ইহ কা নায়কত্ব হৈ। কিন্তু মন কী বৃত্তি বা বৃত্তিয়া ক নায়ক কহনে মৈ হম বড়া সঙ্কোচ মানতে হৈ। বৃত্তিয়া কী সম্পূর্ণ সমষ্টী হী কী হম মন মান লেতে হৈ। ইহকী প্রত্যাকরণ ভী কহা জাতা হৈ। চিন্তা মন কী এক ক্রিয়া মাত্র হৈ। ইশ্বর কে কিসী রূপ বা গুণ অথবা গুণ সমূহ কী চিন্তা কা নাম ইশ্বর কী আরাধনা হৈ। চিন্তা বা জ্ঞান যে দী বিভিন্ন যণী ক পদার্থ নহী হৈ। কিসী বিষয় কা জ্ঞান হানে কৈ সময় মন মৈ জী জী ক্রিয়ায়ৈ হাতী হৈ, উহা বিষয় কী চিন্তা কৈ সময় মৈ ভী মন মৈ বৈভী হী ক্রিয়ায়ৈ হুগা করতী হৈ। জ্ঞান কী মন কী এক ক্রিয়া মাত্র জাননা। জিহ কিসী বিষয় কা জ্ঞান কয়ী ন হী, বহু মন কী কোহ ক্রিয়া ছোড়কে আর কুছ হী নহী হৈ। রূপ, রস, গন্ধ, স্পর্শ, শব্দ আদি জ্ঞান কী ভিন্ন ২ সংখ্যা হোনে পর ভী সব কুছ মন কী ক্রিয়ায়ৈ করকী গিনে জায়গৈ। কোহ ক্রিয়া হোনে কৈ সময় মন মৈ সঞ্চেগ কা তারতম্য হীতা হৈ। বাহ্যবস্তু বা ব্যাপার কৈ আবির্ভাব মৈ আকাশ মণ্ডল মৈ জী এক প্রকার কী স্বাভাবিক গতি বা সঞ্চেগ আজাতী হৈ, বহী গতি আকাশ মার্গ মৈ মূরি ২ তরঙ্গ উঠা করকী নৃত্য করতী ২ মনুষ্য কৈ ইন্দ্রিয় মৈ সংলগ্ন স্নায়ু মণ্ডল কৈ দ্বারা সঙ্কট মৈ জা করকী আঘাত করতী হৈ। উহা সঞ্চেগ কী সংখ্যানুসারে রূপ শব্দ আদি কা জ্ঞান হী জাতা হৈ। প্রত্যেক সঞ্চেগ কী শক্তি বা ক্ষমতা একহী হৈ, কেবল ভিন্ন ২ সংখ্যা কৈ অনুসারে ভিন্ন জ্ঞান উপজতা হৈ মাত্র। মনিয়ে জৈমা কী দী সঞ্চেগ কেবল সে হমারে স্নায়ু কী ক্রিয়া শক্তি কৈ দ্বারা হম রূপ কী অনুভব কর সক্তি হৈ। ফির আর সঞ্চেগ পড়'ব জানে সে শব্দ কা জ্ঞান উদয় হীতা হৈ। সঞ্চেগ কী সংখ্যা-সমষ্টী কী ন্যূনতা বা আধিক্যতা জৈমা রূপ, শব্দ আদি বহুগ কা কারণ হৈ,

७। येमन रूप, शब्दादि ग्रहण के कारण, ईश्वर  
गणन सूक्ष्मसूक्ष्मताओं तत्त्व उद्धार अनांतर कारण।  
एथाने एकटी दृष्टान्त प्रकटित हईले बोध हय  
पाठकेर बोध सुगम हईते पावे। दृष्टान्त दिलेई  
दृष्टान्तिकेर सहित ताहार कथन तेद देखिते  
पावया यय। किन्तु दर्शनशास्त्र दृष्टान्तदार्ष्टिकेर  
सारूप्य दृष्ट हईया थाके। मन करुन आपनि एक  
दिन रात्रि १ ठार समय देवदत्त के रूप दीपालोक  
दर्शन करियाहेन। “दर्शन करियाहेन” ईश्वर  
वैज्ञानिक अभिप्राय एई ये दीपालोक ताहार  
देहेर उपर एकटी क्रिया करियाछिल, देह त  
क्रिया द्वारा अतुल्य हईया अथवा एकटी क्रिया  
करियाछिल एवं मेई क्रिया जमित समेग नभे  
मार्गेर द्वारा आपनार चक्षे चालित हईयाछिल।  
एई शेष क्रियाटी रात्रि २ समेगेर समेगी।  
एई समेग रात्रि चक्षुरिन्द्रिय सहयोगे मस्तुके  
गिया आघात करियाछिल। मेई दिन छई  
घंटा पते, यथन आपनि स्थानांतरे गमन करिया-  
हेन, अथवा येथाने देवदत्त उपस्थित नाई, तथन  
यदि उक्त वाक्त्रिके चिन्ता वा स्मरणकरेन, तबे कि  
ऐ वाक्त्रिक यथायथ रूप अनुभव हईवेना? तथन कि  
उक्त विध क्रिया समूह हईते थाकिवेना? तथन कि  
उक्त समेग रात्रि आपनार मस्तुके उपस्थित  
हईवेना? अवश्यई हईवे; ताहाते समेह नाई।  
प्रत्यक्ष दर्शन काले मनोमये यादृशी क्रिया हईते  
थाके चिन्ता काले मन तदनुश्रुति क्रिया हय।  
आमरा प्रत्यक्ष ज्ञान द्वारा ये सर्वदा भीत, श्रुति  
ओ विरक्त हई, तत्वाव ७ मन के क्रिया मात्र। तमेर  
द्वारा आमादेर शरीर सकुचित हय, शोके शरीर  
शीर्ण हईया यय, ओ आनन्दे शरीर पुष्टि लात करे।  
मनई आमादेर शरीर के नायक। सारथि येमन  
रथेर परिचालक, मन ओ तत्त्व शरीर के परिचालन  
करिया थाके। मन भिन्न शरीर के कोन रूप  
क्रियाई हईया संभावना नाई।

एकणे उपासना प्रकृत मर्मलोचनाय अग्रसर  
हईतेह। गत संख्याय कथित हईयाछे ये भिन्न २  
रूप के उपासना करिले भिन्न २ फल लात हईया थाके  
तत्त्व भिन्न २ समेग भिन्न २ रूप के आराधना करिले  
भिन्न २ फल लात हय। एई जून आर्या शास्त्र  
प्रमाणे, तत्त्व, मध्याह्न विष्णु ओ सायंक

इन्द्रियों का सूक्ष्मता वा स्थूलता भी उस के अन्य-  
तर हतु है। यहाँ एक दृष्टान्त देने से बोध होता  
है कि हमारे पाठकों के मनमाने में कुछ सुविधा  
होगी। दृष्टान्त देने से दार्ष्टान्तिक के साथ कुछ  
निश्चिता देखही पडती है। किन्तु दर्शन शास्त्र में  
दृष्टान्त वा दार्ष्टान्तिक में एक रूपता दृष्ट होती है।  
भाविने कि आप ने एक दिन रात्रि ७ बजे के समय  
देवदत्त का स्वरूप दीपालोक में दर्शन किया। “दर्शन  
किया” इसका वैज्ञानिक तात्पर्य यह है कि दीपालोक  
उसके देह पर एक प्रकार की क्रिया करो, देह  
और उस क्रिया करके अभियुक्त होकर दूसरी एक  
क्रिया किया और उस क्रिया से उत्पन्न हुई  
समूह नभो मार्ग करके आपके आंखों में चला  
गई। यही शेष क्रिया बहुतसो समूहों की समष्टी है।  
ये समूह रात्रि फिर चक्षुरिन्द्रिय करके मस्तिष्क में  
जा आघात करो। उसके दो घंटे के अनन्तर, जब  
आपने और किसी एक स्थान में चला गया वाने जहाँ  
देवदत्त नहीं है, वहाँ यदि उस व्यक्ति को चिन्ता वा  
स्मरण करें, तो क्या उसका रूप यथावत् आपकी  
अनुभव न होगा? उस समय क्या उक्त विधिसे क्रिया  
यें नहीं होती रहेंगी? उस समय क्या उक्त समूह  
रात्रि आपके मस्तिष्क में न पहुँचेंगे? अवश्यही पहुँ-  
चेंगी। प्रत्यक्ष दर्शन के समय मन में जैसा २ क्रिया  
होती है, चिन्ता करने के समय भी मन में वैसेही  
क्रियायें हुआ करती हैं। हम प्रत्यक्ष ज्ञान से जो  
मान, मोत वो विरक्त होते हैं, वे सब मन की  
क्रिया मात्र हैं। भय करके हमारा शरीर सकुचित  
होता है, शोक से शरीर शीर्ण हो जाता है वो मान  
न्द से शरीर की पुष्टि होती है। मन ही हमारे शरीर  
का नायक है। सारथी जैसा यथा मन भी वैसेही  
शरीर का परिचालक है। मन बिना शरीर की कोई  
क्रिया होने की सम्भावना नहीं है।

अब उपासना के प्रकृत मर्म की आलोचना में  
आगुया होते हैं। गत संख्या में यह कहा  
गया है, जो भिन्न २ रूप की उपासना करने से  
भिन्न २ फल मिलता है। फिर वैसेही जानना  
कि भिन्न २ समय पर भिन्न २ रूप की आराधना  
करने से भिन्न २ फल मिलता है। इस लिये  
प्रातःकाल ब्रह्माजी को, मध्याह्न में विष्णु महा



महेश्वर ध्यान करिवार व्यवस्था करिग्राह्येन। ब्रह्मा, रजोगुण, विष्णु सत्त्व गुण, ओ महेश तमोगुण, ब्रह्म, रजोगुण आकर्षण कारी वा सत्त्वगुण, विष्णु, तमोगुण विघोषण वा विकर्षण कारी। एवं सत्त्व एतद्भूतयोर सांगुण्य कारी। एकत्र विज्ञानेन सतागरी सहायता लईरा। देखिब, भिन्न २ समय भिन्न २ मूर्तिर परिचिष्टने कि अपूर्व फल लात हईरा थाके। सगुण ब्रह्म (ईश्वर) यथन आराधना करा याय तथन आत्मा वासना वर्जित हईरा पड़े। आत्मा वासना शुन्य ओ भगवद्भाव तद्गत चित्त हईरा। कण कालेन जन्य ओ ये अपूर्व सुखेन अनुभव करे, अथवा ये सुख प्राप्तिर कामना मानव भगवानेन उपासना करे, ताहा ब्रह्मा, विष्णु ओ महेश एतद्भूतयोर अपूर्व विग्रहेन उपासना अन्यासे लात हईरा थाके।

क्रमशः

### आमार अभिमान ।

अभिमान सगुण दुःखेन मूल। यथनई कोन कार्येन अन्य आमार अभिमानेन उद्भूत हईराह, आमा ताहातेई दुःख पाईराह, ईहा आमार जीवनेन परीक्षित फल। आमाके केह तिरस्कार करिले आमार निज गौरवेन अभिमान आमाके उद्भूत ओ क्रमे तत्सह विवादे प्रवृत्त करे। केह आमार निन्दा करिले आमार महत्त्वेन अभिमान आमाके उद्भूत करे ओ अन्येन दोषानुसन्धाने परामर्श देय। आमार कार्येन अपटुता देखिब। केह उपहास करिले अभिमान आमाके नितास्त निर्देष्टु शक्त करे ओ आमार रुदन नीरवे रोदन करिते थाके। आमा विद्यावान, विना आमाके आमा कोन उच्च समाज याईव केन, एही अभिमान आमार अनेक समय अनेक सत्त्व समागम ओ आनन्द साधने विघ्नोपादान करिग्राह्ये। आमा धनवान, अशुभ स्थाने गेले पाह, आमा उच्च आसन ना पाई, एही अभिमान कठ दिन

राजकी वो मध्याकालीन महेश्वरकी ध्यान करना। आर्य शास्त्रने यही व्यवस्था की है। ब्रह्मा जीरजी गुणका, विष्णु महाराज सत्त्वगुणका वा महादेवजी तमोगुणका साक्षात् मूर्ति है। रजोगुणमें आकर्षण वामिलानकी शक्ति है, तमोगुणमें वियोजन या अलग करनेकी शक्ति है, सत्त्वगुणमें इन दोनोंका सामंजस्य करनेकी शक्ति है। अब हमको विज्ञानकी सत्ययथी सहायता लेके देखना चाहिये कि भिन्न २ समय में भिन्न २ मूर्तिकी चिन्तासे क्या अपूर्व फल मिल सकता है। सगुण ब्रह्म या ईश्वरकी आराधना जब की जाती है उस काल में आत्मा बाहर विषयों की भूल जाता है, इन्द्रिय सुख की इच्छा तिरोहित होजाती है। इस समय में आत्मा वासना वर्जित होजाता है। आत्मा वासना रहित वो भगवद्भाव से तद्गत होकर क्षण भर के लिये भी जो अपूर्व सुख अनुभव करता रहता है अथवा जिस सुखकी कामना स जीव भगवत की उपासना करता है, ब्रह्मा, विष्णु वो महेश इन तीनोंके अपूर्व मूर्ति की उपासना से वह सुख अनायास मिल जाता है।

शेष आगे ।

हमारा अभिमान ।

अभिमान सगुण दुःखका मूल है। जबही किसी कार्य के अनुष्ठानसे हमारा अभिमान उत्पन्न होता है, तबही दुःख आकर मुझे प्राप्त हुआ, यह मेरे जीवनका बाधक परस्पर हुआ फल है। मुझे कोई तिरस्कार करने पर मेरे निज गौरवका अभिमान मुझे उद्भूतित वो उसके साथेही साथ उससे लड़नेकी प्रवृत्ति कर देता है। यदि किसीने निन्दा करे तो मेरे सत्त्वका अभिमान मुझे उत्ताता है वो दुःखका दोष दृढ़ नेकी परामर्श दिया करता है। मेरी सामर्थ्य की कभी टूटनेक यदि कोई हंसे तो अभिमान मुझे निपटदुःखोत्प्रेता है, वो मेरा हृदय नीरवसे रोषा करता है। मैं विद्यावान् हूँ, विन बलाये मैं शक्ति की सो भद्र समाजमें जाऊंगा, यही अभिमान अनेक समय बहुतेरे अज्ञान-समागम वो मेरी शान्तिविध केराह पर विघ्न डालता। मैं धनवान् हूँ, फलाने स्थान में जानेपर यदि मुझे उंची आसन न मिले, रानी संशय से अभिमान बितने दिन कितनी प्रवृत्ति की

আমাকে কত আশ্চর্য প্রদর্শনের আয়োজনাতে  
বঞ্চিত করিয়াছে। কত দিন আমি মরম সুদয় কৃষকও  
ভূত্যের সহিত অসংক্ষেপে হৃদয় খুলিয়া সদালাপ  
করিতে চেষ্টা করিয়াছি, কিন্তু প্রভুত্তর অভিমান  
কেনা করিয়া আমাকে বারণ করিয়াছে।  
শুনিলাম অমৃতের ভৃত্য আমার ভৃত্যকে কটাক্ষ  
করিয়াছে, অগ্নি অভিমান ভূত্যের মূত্র অবলম্বন  
করিয়া প্রতিবাদীর প্রভু সহিত কলহ কোলাহলে  
প্রবৃত্তি দিল। অজস্র অর্থব্যয় করিয়া ক্রমে আমি  
নিঃস্ব হইয়া পড়িলাম। আমি দর্শন শাস্ত্রে সুচি-  
পুণ পণ্ডিত, যখনই সভা সমুপে অন্য একজন  
পণ্ডিতকে “ঐশ্বর্যোহস্তি” ইত্যাকার প্রতিপাদন  
করিতে শুনিলাম, অগ্নি আমার অভিমান আমাকে  
তৎপ্রতিদ্বন্দ্বী করিয়া “ঐশ্বর্যো নাস্তি” এই পাপ  
পুণ মিছান্ত কটিতে প্রবৃত্তি দিল। আমি অভি-  
মানের দাস হইয়া কত সভাতে অমণ্ড বসিয়াছি,  
কত সভাপন্যাকে অব্যবস্থা করিয়া প্রমাণ করিয়াছি,  
কত পাপ করিয়া লোকের সমক্ষে দাবুতার পরিচয়  
দিয়াছি। অভিমানই আমাকে কপট করিয়াছে,  
অভিমানই আমাকে বিবাদী করিয়াছে, অভিমানই  
আমাকে ঘোর নরকের কুটিল পথ দেখাইয়া দি-  
য়াছে। হা! অভিমানই আমার পরম শত্রু হইয়া  
ভক্তের—মহাত্মার চরণ চুম্বন করিতে বাধা দিয়াছে,  
অভিমানই আমাকে অন্যের নিকথা শুনিতে নিবৃত্ত  
করিয়াছে, অবিক কি অভিমানই আমাকে সন্ত  
সুখের মূল ধর্ম সাধনে বার ২ বারণ করিয়াছে।  
হা! আজ অভিমান বশতঃই আমি ভাগবতী কথা  
শুনিতে ২ অঙ্কগোচনে লজ্জা বোধ করিতেছি,  
অভিমানই আমার সর্বনাশ করিল। অভিমান!  
তুমি আমাকে পরিত্যাগ কর, আমার সমস্ত স্তম্ভ  
সুশীতল হউক। একবার সর্বত্র সম দর্শনে আমি  
পরমানন্দরস পান করিয়া চির দুঃখের প্রবলানল  
নির্বাপন করি, প্রাণ পরিত্যক্ত হউক।

শান্তিঃ শান্তিঃ শান্তিঃ।

সরস্বতী পূজা।

(পুনঃ হইতে প্রাপ্ত)

আমাদের মধ্যে দেবর্চনা এবং অন্য অন্য অনুর্ত্তান  
আধ্যাত্মিক ভাবে অনুর্ত্তিত। কিন্তু দুঃখের বিষয়  
এই যে প্রায় সাধারণের চক্ষুতে সত্যকে ভ্রান্ত

বস্তুকারী আমোদে মুগ্ধবশিত किया। कितने दिन  
मे ने मरत हृदय क्षपक वा भृत्यमे संतोष छोड़के  
नो खुलि मनसे मद्रासाप करने कीचछा कराधी,  
तन्तु प्रसुत्व का अभिमान मुझ केसाक्षेण करके माना  
किया। जबही सुनाकि फलानका भृत्यन मेरे भृत्य  
नो कुछ कटी वात बोली, भट मेरा अभिमान भृत्य  
रूप सूचना को प्रबलमन करके प्रतिबन्दीके प्रभुके  
आथ मडा कलह कोलाहलमें प्रवृत्त करदिया वो  
पुनः। अथे ध्या करके मैमा क्रमे क्रम धनहीन  
होतागया। मे दर्शन शास्त्रमें सुनिपुण पण्डितह,  
जबही किसी सभामें दुमरा किसी पण्डितको “इश्व  
र्वास्ति” इतना प्रतिपादन करनेकी सुना, भट अभि  
मान मुझ उसके प्रतिद्वन्द्वी बना कर “इश्वरी ना  
स्ति” यही पापपुण मिहान्त करने में प्रवृत्ति दिया।  
मे ने अभिमानका दास बनकर कितने सत्यकी प्रमत्त  
कर प्रमाण किया, कितने पापाचरण करके फिर  
कोीके सामने माधु बन बैठा। अभिमानही मुझे  
क्षपटी बनाया, अभिमानही मुझे विवादी बनाया,  
अभिमानहा घोर नरक की कुटील मार्ग मुझे देखा  
दिया। ह! अभिमानही मेरा बैर बनकर भक्तों—  
महात्माके चरण चुमनेकी बाधा दिया। अभिमानही  
मुझको दुमरा किसी मे सत्यथा सुन नेकी निवृत्त  
किया, अधिक्कथा, अभिमान मुझे धर्म साधन करने  
में, जोकि समस्त सुखका मूलहै, बारम्बार निषेध  
दिया। हा! आज अभिमानही करके मैं भगवत की  
कथा सुनतेर भरेआँखेंसे आंसु गिराने में लज्जा मान  
लिया। अभिमानही मेरा सर्वनाश किया। अभिमान  
तु मुझे छोड़दे। मेरा मन्तम हृदय सुशीतल हो  
जाय। एकवेर सर्वत्र समदृष्टिसे मैं परमानन्दरसकी  
पीकरके चिर दुःख रूप प्रवल अग्नि की निर्वाण  
कर। प्राण दस मान जाय! •

शान्तः शान्तिः शान्तिः।

सरस्वती पूजा।

(प्राप्त)

हमारी समाज में जो देवदेवी को मूर्ति पूजा प्रच-  
लितहै, वे समस्तही आध्यात्मिक भावसे रंगाईहुई है”  
किन्तु खेद यहहै, कि सर्व साधारण लोग इन आश

পবিত্র ভবেবেথিতে পায় না। বাহ্যতে জীবের জড়  
বুদ্ধি ও অজ্ঞানাক্রমার বিদূরিত হয়, তজ্জন্য  
পবনা বিদ্যার আরাধনা করা আশাশ্রয়। নির্মল  
শ্রুত শতদল নিবাসিনী বেদ বিদ্যা বিধায়িনী বীণা  
পাণিই সেই সর্বার্থ সাধিনী বিদ্যার অধিষ্ঠাত্রী।  
বিগুণ বাস্তবী বুদ্ধিতে তাঁহার পূজা করিতে হয়।  
কিন্তু আজ কাল আগাদের দেশে প্রকৃত সরস্বতীর-  
বিদ্যার্থিত্রী দেবতার—পূজা না হইয়া ছুটী-  
সরস্বতীর পূজা হইয়া থাকে। এই পূজার  
উপলক্ষে মাতৃ সমক্ষে কাহারও ২ প্রাঙ্গণে কুল  
কলিকিনী কমিনী গণের নৃত্য গীত হইতেছে,  
কেহ বা বন্ধুগণ সহ সুরাপানে উন্মত্ত হইয়া আ-  
পনার জঘন্য বৃত্তির পরিচয় দিতেছে, কেহবা ধর্ম-  
সুরাপানের পরিবর্তে, চতুর্বিধ পার্থিব রস আশ্বাদন  
করিয়া আপনাকে ধন্য জ্ঞান করিতেছে। ছুথের কথা  
কি কহিব, এই সাস্বতী দেবীবেদ্য বর্গের আদরের  
দেবতা হইয়াছেন। কলিকাতা নগরীতে গমন করুন,  
দেখিবেন, গুণ পুরুষ গণ তাঁহাদের বিদ্যার্থীর  
মন্দিরে উপস্থিত থাকিয়া অতীব জঘন্য আগোদে  
লিপ্ত আছেন। হায়! মায়ের দশা শেষে কি এত  
হইল! তাঁহাকে এই অপবিত্র স্থানে অবস্থিত করিতে  
হইল! ভাতি! কি কুলাকার সন্তান গণকেই নিজ  
নির্মল ক্রোড়ে স্থান দিয়াছিল! যে, তাহারা  
তোমার ছদ্মশার এক শেষ করিল।

হায়! দেশের কি ছুরদশা! দেবর্চনা জঘন্য আ-  
গোদের উপায় স্বরূপ হইল! এই জন্যইতো আমরা  
এত হীন হইয়াছি—এই জন্যইতো আমাদের অধঃ-  
পতন হইয়াছে। এই জন্যইতো ইউরোপের সভ্য  
জাতীগণ আমাদের দেশে জ্ঞান করিয়া থাকেন—  
এই জন্যইতো খৃষ্টিয় শিক্ষারীগণ পৌত্তলিকতার  
নিন্দা করিয়া থাকেন, এই জন্যইতো আমাদের  
কৃতবিদ্য ব্যক্তিগণ হিন্দু ধর্মকে অসার বিবেচনা  
করিয়া থাকেন। আমাদের শাস্ত্রের প্রকৃত উদ্দেশ্য  
মহৎ। কিন্তু তাহা হইলে কি হইবে? আমরা  
তন্নুসারে কার্য্য করি কৈ। আমাদের মনের জঘন্য  
বৃত্তিপকল চরিতার্থ করাই আমাদের নিত্য ত্রুত, হইয়া  
উঠিয়াছে। ভাতৃগণ! আর কেন! যথেষ্ট হইয়াছে।  
বাহ্যতে শাস্ত্রের অভিপ্রায় অনুসারে দেবতার  
পূজা করিতে পার তাহার চেষ্টা কর। প্রকৃত রূপে  
পৌত্তলিক হও। একবার সাধরণকে দেখাও যে যিনি  
প্রকৃত পৌত্তলিক, তিনিই যথার্থ ত্রুত জ্ঞানী।

যাঁকো এস প্রবিশ ভাবমে নহৌং দেখিতেছি। जिस से  
जीवोंको जड़बुद्धि वोषमान रूपि प्रत्यकार छूट जाय  
तज्जन्य परमा विद्याकी आराधना करनी चाहिये।  
निर्मल श्रुत शतदलवासिनो, वेद विद्या विधायिनो  
बीणा-पाणि हो उस सर्वार्थ साधिनो विद्या की अधि-  
ष्ठात्री देवता है। बिगुण सात्विकी बुद्धिसे उनकी पूजा  
करनी पड़ता है किन्तु आज कल हमारे देशमें सर-  
स्वती या विद्याविष्ठात्री देवताकी पूजा तो दूर रही  
केवल दुष्टा सरस्वती जीकी पूजा होती है। इस  
पूजाके समय देवोंके साथ होने किमो २ के अंगन में  
कुल कलिकिनो कायिनोर्याकी मूल गीत होती है,  
किमो २ ने मित्रगण मंदिर मद्य पानमें उन्मत्त हो  
निज २ जघन्य वृत्तियांका पड़वान देता है, किमो २ ने  
धर्म वप सुधा पानके बदले चार प्रकार के पर्थव  
रसका स्वाद लेकर अपनेको धन्य मानता है। खेदकी  
बानि क्या कहूं, यत्न सरस्वतीजी वैश्यावर्गकी आदर  
णीय देवता बनी है। कलकत्तामें जाकर देख लीजि-  
य, कि अष्टमन सब अपने २ विद्याधरोयांको मन्दिर  
में बधमान रहकर अत्यन्त नीच आभोदमें प्रवृत्त  
रहें हैं। हा! अन्तमें देवोंको यह क्या दशा पा पड़ी  
है! उनकी इसी अपवित्र स्थान में रहनी पड़ी।  
हे भारति! कैसे कुलांगार सन्तानोंको तु निज  
निर्मल प्रकृत स्थान दी है? उन्हें तो तुम्हीं दुर्दशा  
की अप्र मीमामें पड़ु चोटया है।

यही! भरतखंडकी किमो दुर्दशा बढ़ गयी है। देवता  
की अर्चना भी जघन्य आभोद के लिये हो रही है।  
इसी लिये हम उसी नीच अवस्थाकी प्राप्त हुए—इसी  
लिये हमारी अधोगति हुई। इसही लिये तो युरोपके  
मध्यम्राट्गण हमसबको हेय कर मानते हैं—इसही  
लिये तो इस धर्म प्रचारक मण्डली मूर्ति पूजन  
को निन्दा करते हैं—इसही लिये हमारे ज्ञत विद्या  
व्यक्तिगण हिन्दू धर्मको असार कर जानते हैं। हमारे  
शास्त्रका प्रकृत अभिप्राय अत्यन्त महान है। किन्तु  
उमें फल क्या? हम तदनुसार कार्य्य कहां करते  
हैं? हमारे मनको जघन्य वृत्तियां को प्रष्ट करना  
ही तो आज कल हमारा नित्यव्रत बन चुका। भाइयो  
अब बहुत दुःख। जिसे शास्त्रके यथार्थ अभिप्राय  
नुसार देवताओंकी पूजा कर सको, उसीसे दृष्टा करो  
सत्यही सत्य मूर्ति पूजन बनी। एकद्वार सबकी यह  
देखो, कि प्रकृत मूर्ति पूजन, प्रकृत मूर्ति पूजन ही

এই সারস্বতী পূজা উপলক্ষে অবিদ্যার সেবা  
পরিহার করতঃ যাহাতে প্রকৃত বিদ্যা অর্জন করিতে  
পারি তৎপক্ষে যত্নবান হও, তজ্জন্য পরা বিদ্যার  
অধর্ষিত্রী দেবীকে পূজা কর। এতদুপলক্ষে অধ্যা-  
পক গণ্ডুলী সহ শাস্ত্রালাপ ও ধর্ম্মালাপ কর। তাঁ-  
হাদের মর্গদ্বারা রক্ষা কর। তাঁহাদের উৎসাহ বর্দ্ধন  
কর। সরস্বতী পূজা উপলক্ষে আগোদ প্রমোদ  
আবশ্যক। তাই বলিয়া কি, নটীর নৃত্য দর্শন  
করিবে ও তাহার মুখ নিঃসৃত অশ্লীল সংগীত শ্রবণ  
করিবে? ব্রহ্মাণীর প্রেমানন্দে আপনানারাই নৃত্য কর,  
বেদ গান ও শ্রবণ করিয়া অন্তঃ করণকে উল্লাসিত  
কর। বেদ বিদ্যার বিকাশে ভারতের ভাব-ভীতি ভার  
মুক্ত কর।

বীণা পুস্তক রঞ্জিতহাস্ত

ভগবতি ! ভারতি ! দেবি ! নমস্তে ॥

মুদ্রের অ', খ, গ, সত্যায় বিনামূল্যে গৃহস্থনাথ রায়  
মহাশয়ের বক্তৃতা।

ভারতবাসী গণ! আৰ্য্য ভ্রাতৃ গণ! একবার ক্ষণ  
কালের জন্য একাত্ম চিন্তে নিজ ২ শোচনীয়  
অবস্থার প্রতি দৃষ্ট পাত কর। পবিত্র আৰ্য্য কুলে  
জন্ম গ্রহণ করিয়া আমাদের পিতৃগণ একমাত্র ধর্ম  
বলে বলীয়ান ও তপঃ প্রভাবে ত্রিলালজ্ঞ হইয়া  
জীবনের গুঢ় উদ্দেশ্য সাধন করিয়া গিয়াছেন এবং  
অবশেষে গুলে এমন ইকীর্তিসুভাস্ত্র পন করিয়া গিয়াছেন  
যে এখন ও পর্য্যন্ত আমরা তাঁহাদের নামে বিখ্যাত  
হইয়া রহিয়াছি। তাঁহাদের পূণ্যবলে ও তাঁহাদের  
প্রসাদে এখনও আমরা আৰ্য্য জাতি বলিয়া পরি-  
চয় দিতে পারিতেছি। এই জগতে দুই প্রকার সম্ভান  
দেখিতে পাওয়া যায় কোন সম্ভানের দ্বারা বংশের  
মুখ সমুজ্জ্বল হয় ও কাহারও দ্বারা বংশের ও  
পুরুষানুক্রমে অধোগতি হয়। ইহা আমরা অনেক  
স্থলে প্রত্যক্ষ দেখিতে পাইতেছি। এক্ষণে আৰ্য্য  
বংশে আমরা কি রূপ সম্ভান জন্ম গ্রহণ করিয়াছি,  
তাহা আমাদের নিজ ২ শরীরিক ও মানসিক  
অবস্থা পর্য্যালোচনা করিলেই সহজেই অনুমিত

इस सरस्वती जी की पूजा के समय अविद्या की सेवा करना छोड़ दो । जिसे प्रकृत विद्या की भर्जन कर सको, उसपर अधिक यत्नशाल बनो । तत्पश्चात् परा विद्या की अधिष्ठात्री देवी की पूजा करो । इस समय पाण्डवों ने मिलकर शास्त्रार्थ वी धर्मवर्षा करो । । उन सबको मर्यादा भी उरहां का उतसाह बढ़ाओ । सरस्वती पूजा के समय अवश्यही कुछ आमीद करनी चाहिये । तदर्थ क्या दुषित चरित्र नाचनेवाली स्त्रियां को नृत्य देखना उचित है ? तो उन सबको मुंहसे बुरी २ गीत सुनते रहेंगे ? ब्रह्माणी के प्रेमानन्द से आपही आप नृत्य करते रहो—वेद गान सुनते वी गाते जाओ । इससे भक्तिकरणको प्रफुल्लित कर लो । वेद विद्या की बिस्मय से भारत को भव- मोति रूप भारको उतार दो ।

वीणा पुस्तक रंजित दस्तो

भगवति ! भारति ! देवि ! नमस्ते ॥

मुंगेर आ० ध० प्र० सभा में श्रीवावु महेन्द्र  
नाथ राय जी की वक्तता ।

हे भारत वासियों ! हे आर्य्य भाइयों ! एक बेर क्षण भर के लिये भी तो निज २ शोचनीय अवस्था पर दृष्टि करो । पवित्र आर्य्य कुल में जन्म लेके हमारे पूर्व्व पुरुषों ने केवल धर्म-बल से वली वो तप की प्रभाव से त्रिकालत्र बन कर शरीर धारण का गूढ़ उद्देश्य साधन कर गये औ संसार में ऐसे कीर्त्त स्तम्भ सब स्थापन कर गये जो अब तक हम उन्हीं के नाम से प्रसिद्ध हो रहे हैं । उन्हीं के पुण्य बल से उन्हीं की कृपा से अब तक हम आर्य्य जाति का पहचान देते हैं । इस संसार में दो प्रकार के सन्तान देख ने में आते हैं । किसी पुत्र से तो कुल उज्ज्वल होता है, किसी की बुरी रीति नीति से कुल को अधोगति आती है । बङ्गतेरे स्थान में यह प्रत्यक्ष देखची पड़ता है । आर्य्य कुल में हम सब कैसे २ लड़के उत्पन्न हुए, सो तो हमारे शरीर वो मन की अवस्था देखने ही से सुझ पड़ता है । हम अब

हैते पावे। आगरा एक्के एक्के विषय विकारे विमोहित ओ संसारामुक्त हईया पड़ियाहि, ये कण कालेर जन्य आपनादिगेर अग्रा उन्नतिर चिन्ता करिवार अवसर ओ पाईतेहि ना। मन प्रबल संसार ओते पड़िया अहर्निशि विचलित, एक मुहूर्तेर जन्य ओ विश्राम नाई। आगादेर वर्तमान अवस्था भाविले आर्य सन्तान बलिया परिचय दिते लज्जा बोध हय। ताँहादेर पवित्र कुल पवित्र गृहे उन्नति करिया। यदि आगरा ताँहादेर आचरित पथ अनुसरण करिते ना पारिलाम, तबे आगरा वृथा केन ताँहादेर कुलजात बलिया ताँहादेर पवित्र नाम कलंकित करि।

आगादेर एहे रूप अवनातिर कारण कि। एक समयेई वा केन एहे आर्य वंशेर एत प्रमान ओ गौरव छिन् एवम् एक्केई वा कि कारण आगादेर एक्के दुर्दिशा उपपन्न। देखिते पाँउया याय, एक मात्र धर्म बलई आर्य वंशीयरा जीवन सुखेर चरम मोहाम उपपन्न हईयाछिलेन, एत मेहे एकमात्र धर्माभावेई आवार मेहे आर्य वंशीय आगादेर एक्के होनावहा घाँटेराहे मे समये ताँहादेर धर्म एक्के गाँठ अनुराग छिन् एवम् एतमे आगादेर ई वा एक्के धर्म विराग घाँटेवार कारण कि। मनके अभाग द्वारा ये दिके लईया याईवे मेहे दिकेई याईवे। बाल्य काल हैते ये रूप संस्कार जमिबे मानुमेर एकुति मेहे रूप गठित हईवे। एहे जन्ये बुद्धि मान लोके बाल्य काल हैते सन्तान दिगके सुशिक्षित करेन। बालक गण येरूप शिक्षा पाईवे मेहे रूप शिक्षिबे। आज काल आगादेर मधे अर्थकरी विद्या छिन् अना कोन विद्या शिक्षाईवार जन्य पिता माता वा शिक्षक दिगेर आदो यत्न नाई। सुतरां सन्तान सकल ओ मेहे रूप बाल्यकाल हैते विषय व्यापार गाँठ अनुराग हईया पड़े। सुतरां अना २ दिके अर्थ २ धर्मेर दिके विराग आगनाआपनि उदय हय। मेहे अवधार पठित हईयाई आगादेर एक्के अधोगति हईयाछे। पूर्वकार आर्य क्षत्रि गण एकाद्वे निवास ओ वनेर कल मूल द्वारा जीवनाति

ऐसे विषय के विकारों में विमोहित वो संसार में फँसे रहे हैं जो क्षण भर के लिये भी हमारी अवस्था की उन्नति के अर्थ अवसर नहीं मिलती है। मन प्रबल संसार के प्रवाह में पड़कर दिन रात विचलित हो रहा है एक मुहूर्त का भी विश्राम नहीं। हमारा वर्तमान अवस्था को मोचने पर अपने को आर्य सन्तान कहलाने में लज्जा बोध होता है। उन्हीं के पवित्र कुल में जन्म लेकर यदि हम उनके चलाई ऊँच पंथ पर न जा सकें, तो व्यर्थ क्यों हम आर्य वंश कहला के उस पवित्र नाम को कंवकित करें।

हमारी इस भाँति अवनाति का कारण क्या है ? क्यों एक समय में इस आर्य वंश का सम्मान वो गौरव बड़े तेज से चमकाये थे, फिर अब क्यों इस धृष्ट दुर्दिशा हम सब को प्राप्त हुई। स्पष्ट प्रतीति होती है जो केवल धर्मही के बल से आर्य लोग जीवन के सुख को अन्त मोसा लो पहुँच गये थे, फिर केवल उस धर्म ही के अभाव से हमारी ऐसी दुर्दिशा आ पड़ी है। एक समय धर्म पर उन सब को ऐसी प्रीति रही, किन्तु हमारा चित्त इस धर्म पर आरुढ़ क्यों नहीं रहता है। अभ्यास के बल से मन को जिधर चाहें उधर ले जाइयें। बाल्यकाल से जैसा २ संस्कार बनता जायगा मनुष्य की प्रकृति भी वैसी २ बनती जायगी। इसी लिये बर्तमान लोग बाल्यकाल से सन्तानों को सुशिक्षित करते रहते हैं। जैसी शिक्षा दो जायगी, बालकों ने वैसीही सिखते रहेंगे। आज कल हमारे देश में यह बड़ा एक दोष देख पड़ता है, कि किसी ने अपने पुत्र को बिन रुपये कमाने की विद्या और कुछ सिखालाने के यत्न ही नहीं करते हैं। अतएव सन्तान सब बाल्यकालही से विषय व्यापारों में क्यों नहीं फँसेंगे ? सुतरां धर्म पर विराग स्वतः एव उदय होता है। इसी अवस्था के अनुसार चलने पर हमारी यह दुर्दिशा आ गयी। प्राचीन आर्य ऋषि गण एकान्त स्थान में वास वो वन के फल मूल भोजन करते रहे वो भगवत की परिचर्या, उन के गुण कीर्तन वो चिन्तन करके जीवन को



पात करितेन ओ भगवन् पारचया, तद्गुणान्  
कीर्तन, ओ चिन्तन करिहै जीवन मफल करितेन ।  
सामाजिक गण ओ तौतादेर सत्त प्रकिया उपदेश  
पाठिया सेहै रूप अनुकरण करितेन । आमादेर  
भगवन् चिन्ता न्हिने मंगार चिन्ता, उदरेर  
चिन्ता, स्त्री पुत्रेर चिन्ताहै नलनः हेरा पड़ियाछे ।  
ऐ रे अवस्थाम हेरार प्रधान कारण । ये मनुष्य  
ऐश्वरेर उपर निर्भर करिया चले ताका कि हेह  
लौकिक कि पारलौकिक सकल कर्षाई सत्तारु  
रूपे चलया याय । कि तौहरे उपर अश्वि सत्त  
आमादेर अधःपतने प्रान कारण । तौहरे आत  
निश्वास ओ निर्भर थाकिले मन तार मंगार ओ  
ताहार आनुसङ्गिक नियतरेर जना रूपा चिन्तित ह्य  
ना, सुतरां सेहै निश्चित मन अनायासेहै भगवन्  
चिन्ता अग्रसर हईते पावे । मनुष्येर मन एक,  
ताहै एक दिकेठे चाकित हईते पावे । महात्मा  
तुलसी दासजी एक शाने बसिय छेनः—

“यांहा राम तांहा काम नाह

यांहा नाम तांहा नाह राम ।

तुलसी कह्यौ क हो मने

रव रजनौ एक ठाम ॥

येमन एक समयेहै दिवा ओ रात्रि हईते पावेन ।  
तत्काल एक मन द्वारा मंगार कामना ओ  
भगवन् चिन्ता दुई कर्षा, हईते पावेन । आशु  
सूत्रकनौ कामनाके आगरा निवृत्तर रूपे  
शान दितेछ किन्तु एक ददुतर जना ओ कामना  
नाके ऐश्वरेर दिके अग्रसर हईते पा-  
रितेहिना । एहै आमादेर अवनतिर कारण ।  
बोध हय एहै वाक्यटी सकणेहै जानेनः—

“आपात मधुर पाप कर्षा काल बटे ।

परिणामे परिताप अश्विहै बटे ॥

“हेहा जानिया सुनियाओ गामरा आपात  
सूत्रे मत्त हईया परिणाम दुःख डूलिया गियाछि ।  
भगवन् भक्ति यदिछ प्रथम शिक्क कठोर ओ  
शुक् बलिया बोध हय बटे किन्तु यतहै अग्रसर हउया  
याय ततहै आनन्द अनुभव हईते थके । अतएव  
ब्राह्म गण ! एकणे यदि केह आमादेर जिज्ञासा  
करे ये प्रथमे सुख ओ परे दुःख चाओ अथवा  
प्रथमे दुःख ओ परे सुख चाओ । ताका हईले बोध  
हय सकले समयरे बसिय ये आमा प्रथमे दुःख

मफल करते रहै । सामाजिक गण भौ उन्हीं को  
संग रहते रे वो उन्हीं के उपदेश सुनते रे उन्हीं  
के अनुसरण कर लेते थे । किन्तु हमे भगवन् चिन्ता  
के बदले, उदर को चिन्ता, स्त्री पुत्रों को चिन्ता, अ-  
धिक बनवती हों चुकी है । इस का प्रधान कारण  
भगवत् पर अविश्वास है । जिस ने भगवत् पर अ-  
पना भार डाल के दिन निबाहता है, उस के इस  
लोक की परलोक में आनन्दही आनन्द मिलता है ।  
उन पर अविश्वास करनाही हमारे अधःपतन का  
मूल है । उन पर विश्वास वो भार रहने में शान  
फिर संसार के विषयों के अर्थ वृथा चिन्तित नहीं  
होता है । सारां वह चिन्ता रहित मन अनायास  
भगवत् को चिन्ता करने में प्रागुया हो जाता है ।  
मनुष्य का मन एक है, वह दो काम कैसे करे !  
मुहावा तुलसी दास जो ने कहा है—

जहां राम तहां काम नहीं

जहाँ काम तहां नहीं राम ।

तुलसी कवज्जं कि होसकी

रव रजनौ एक ठाम ॥

एक ही समय में दिवा वो रजनौ, नहीं ही  
सक्तो है । एकही मन से संसार को कामना  
वो भगवन् को चिन्ता नहीं बन सक्तो है ।

उसी कामना को, कि जिससे उपास्यत सुख  
मिलता है, हम हृदयमें रखते हैं, किन्तु क्षण  
भरके लिये भो काय मन वचन से ईश्वर की  
ओर आगे बढ़ने का जी नहीं चाहता है । यह  
हमारे अवनति का कारण है । बोध होता है  
कि यह सब कोई विन्दन हैं कि पप करनी  
के समय तो सुख कर है किन्तु अन्त में पश्चा-  
त्ताप अवश्य ही होता है । यह जान बुझके  
भी हम उपस्थित सुख में प्रमत्त होकर अन्तः  
का दुःख भुन जात हैं । यदि भगवन् की भक्ति  
पहले थोड़ा बज्जत कठोर वो सुखी सुखी बाध  
हीतो है, किन्तु जतने ही आगे बढ़ोगे उननेही  
आनन्द अनुभव होता रहेगा । अत एव ही आह-  
रण ! अब यदि कोई हम को पुके, कि पहले  
सुख वो अन्तमें दुःख चाहते हो अथवा पहले  
दुःख वो अन्तमें सुख चाहते हो ? इसे बाध

उठे। माँ के उठे। अलु अनलु सुख है।  
 किन्तु एति आमादेर गोथिक कथा मात्र, कारण  
 कायों आगरी याहाते आपात सुख मेई  
 दिक्केई भावित्र हईतेछि। वस्तुतः जगते माहार  
 एकट्टे बुद्धि आदेह मे याहाते परिणामे सुख हय  
 मेई चेष्टोई करे। बालक गण बाल्य काले परिश्रम  
 उ अथवागस्य सह लेखापड़ा शेषे, केनना शेष  
 डाल हईते। युवक गण परिश्रम उ कष्ट स्वीकार  
 करिया अर्थ उपार्जन करेन ये शेषे उथे  
 थाकिन। एई ईछा प्रसि गकलेर देखा याय, किन्तु  
 सुख किरूपे हय ताहार तयु अनेकेई चिन्ता  
 करेन न। सुतरां सुखेर आभिलास युगेर मरी  
 चिकर नयार चारिदिक् पागलेर मत् घुरिया  
 नेड़ाईतेछेन। शिर झुंठ गण! कण कांटेर जना  
 हि। ईश देथ, देश विवेचना करिया देथ, मे  
 सुख कोथाय, याहा आमादेर पूर्व पुरुषेरा एई  
 पुण्य भूमि आर्यावर्ते एककाले अनाशादम  
 मनर मधेभोग करिया गियाछेन। एथन  
 कोमरा मेथाने मे सुखेर आश्रय करितेछ  
 मेथाने सुख नाई वरं ताहार परिणर्ते ताहार  
 विपरीत छुंथई विराजमान रहिराछे। एमन  
 मोह आच्छ हईया पड़ियाछ, ये केन पथे  
 गेले सुखके पाठेव ताहा देखिते पाठेतेछेन।  
 भारतेर एई मोह निद्रा कि एत गाढ़ हईयाछ  
 ये चारिदिक् हईते धर्मोत्साही महाभाग  
 उर्क उच्छ एरूप जागईया दितेछेन तथ पि  
 निद्रा भङ्ग हईतेछेन। यदि यथार्थ निद्रा हईते  
 ताहा हईले बोध हय एत चिंकारे अवच्छे भ्रा-  
 क्षित। ए ये जागिया निद्रितेर नयार रहियाछि,  
 सुतरां शत वज्राघात हईलेओ आमादेर एरूप  
 निद्रा भङ्गियार नह। हा! सन्तानेर द्वारा माता  
 पिता सुख उच्छन्द हय। किन्तु आगरी एमनई  
 कुसन्तान मातार गर्भे जन्म लेईयाछि, ये आगरी  
 जीविक थाकिदेई मातार एई दुःखनाकह।  
 वस्तुगण! कण कालेर जना हिरावते आमादेर  
 भात मोतार अन्ध। पर्यालोचना कर। अति  
 रुक्ते अमादिके, महागरी दुर्भक्त मेदरिग्रा,  
 पराधीनता, नीति उ धर्मर अभाव, आचार

होता है यही उत्तर प्रब कोइ देंगे, कि चाहे  
 पहले दुःख या कुछ हो अन्तमें अनन्त सुख  
 हमको मिले किन्तु यह उत्तर हमारा वा-  
 शिलास मात्र है। क्योंकि कार्य के समय तो  
 हम उसी में दौड़ते हैं कि जिसमें उपस्थित  
 सुख है। वास्तव में संसार में जो कोइ बुद्धिमान  
 ही उसने अन्त सुख के लिये चेष्टा करती है।  
 लड़कों सब बाल्य काल में परिश्रम वो अध्व-  
 साय से लिखते पढ़ते हैं, क्योंकि अन्त में सुख  
 मिलेगा। युवक गण परिश्रम वो कष्ट करके  
 द्रव्य संग्रह करते हैं, क्योंकि अन्तमें सुख बनेंगे।  
 ऐसीही इच्छा सब किसीही की देख पड़ती है,  
 किन्तु सुख कहां से होय, यह बोझ नहीं  
 सोचता है। अतएव संसारके सुख के अर्थ मृग  
 हृणाके समान मनुष्य गण बावड़ाये फिरते हैं।  
 हे प्यारे भाइयों! श्रम भरके लिये स्थिर होकर  
 देखो सोच विचारके देखो जो वह सुख कहां  
 मिलता है, जो कि हमारे आर्य महात्मा  
 लोग पुण्य भूमि आर्यावर्त में एक समय अना-  
 याम यथा ह्यच भोग कर गये। अब जहां उस  
 सुख को दुदते ही वहां वह नहीं है, वरं उस  
 के बदले उसके विपरीत दुःख ही मिलेगा।  
 ऐसे मोहमें फंसे हो कि कस राह पर जाने स  
 सुख चैन मिलता है, सो भी बुझ नहीं सक्ते  
 हो। भारत को यह मोह निद्रा ऐसी हो चढ़  
 गया है, कि चारों ओर से धर्मोत्साही महात्मा-  
 अने उंची स्वरसे हात उठाये पुकारकर जगा-  
 ने को चाहते हैं, तब भी निद्रा नहीं टुटती है।  
 यदि यह सत्य निद्रा हीनो तो यह टुटजाती,  
 किन्तु वास्तव में हम जागे हुए हैं। केवल  
 निद्रितों की समान हम आखें मुंदे सोये रहते  
 हैं। अब सौ बिजली गिरने से भी हमारी निद्रा  
 न टुटेगी। चाहिये कि सन्तानों से पिता माता  
 के कल उज्ज्वल होवे, किन्तु हम माता के गर्भ  
 में से ऐसे कलांगर उत्पन्न हुए कि हमारी  
 जाति दशा ही में माताको दुईया ही रहोई।  
 भिन्न गण। श्रम भरके ये भी स्थिर चितता से  
 भारत माता की दुईया पर ध्यान धरो। अति इष्ट,

কিছুটা আদিত ভারত মাতার কি শোচনীয় অবস্থা উপস্থিত হইয়াছে। আমাদের জীবন আদিতও চক্ষুর সম্মুখে মাতার এই দুঃবস্থা দেখিয়াও সংসার মদে মত্ত হইয়া অনায়াসে দিন পাত করিতেছি। ধিক্ আমাদের জন্মে! ধিক্ আমাদের, কন্মে! ধিক্ আমাদের কুলে, ধিক্ আমাদের ধনে, ধিক্ আমাদের মানে, ধিক্ আমাদের জীবনে। আর এ জীবন ধারণের কিছুতে প্রয়োজন নাই। যদি এমন দুর্লভ মনুষ্য জন্ম পাইয়া এমন ধরা ভূমি ভারত খণ্ডে জন্ম গ্রহণ করিয়া মনুষ্যত্ব লাভ করিতে না পারিলাম তবে এ জীবনই বুঝা। ইহা অপেক্ষা পশু হওয়া শাস্ত্যর্থক। আহার, নিদ্রা মৈথুন এতিনটীতো পশুদিগেরও আছে, তবে মানুষ পশু অপেক্ষায় কোন্ বিষয়ে শ্রেষ্ঠ। মনুষ্যের সদমৎ বিবেচনা শক্তি আছে, পশুদিগের নাই। এই বিষয়েই খাল পশু অপেক্ষা মনুষ্য শ্রেষ্ঠ। সেই মনুষ্য জন্ম পাইয়া যদি আমরা সদমৎ বিবেক বিচীন হইয়া আহার নিদ্রা মৈথুনেই প্রবৃত্ত থাকি তবে আমাদের সঙ্গে পশুর ভিন্নতা কোথায়?

“আহারো মৈথুনং নিদ্রা ভয়ং ক্রোধস্তথৈবচ।  
জায়ন্তে সর্বজন্তুনাং বিবেকো দুর্লভঃ পরঃ”।

ক্রমশঃ

(প্রাপ্ত)

সমাজের সাময়িক বেগ। ✓

শিক্ষিত সমাজে নিত্য নূতন তরঙ্গ উঠিতেছে, সময় স্রোত তাহাকে দিগ্দিগন্তে ভাসাইয়া দিতেছে। আমরা স্বাধীনতা চাই, ইংরাজদিগের সমকক্ষ হইতে যাই, অব্যাহত বেগে স্বেচ্ছামত উন্নতির দিকে যাইতে চাই, প্রত্যেক লোকই জৈদৃশী উন্নতির জন্য ব্যস্ত। কেহ বা সামাজিক উন্নতি, কেহ বা রাজনৈতিক উন্নতি, কেহ বা ধর্ম জগতের উন্নতি, এই প্রকারে শিক্ষিত ব্যক্তি গণ বিভিন্ন রীতির উন্নতির হাসা মুখ দেখিতে চান। যাঁহারা সমাজের উন্নতি লিপ্সু তাঁহারা সমাজকে নূতন আকারে গঠিত করিতে ও বিলাতি সজ্জায় সাজাইতে চান, যাঁহারা রাজ নৈতিক উন্নতির পক্ষপাতী তাঁহারা ইংরাজদের সহিত

সমাহাট, মহা ভারী, দুর্ভিক্ষ, ম্যালেরিয়া, পরাধীনতা, নীতি বী ধর্ম স্বর্ষা কা অভাব, আচার ভ্রষ্টতা আদি সে ভারত মাতাকে যহ শোচনীয় দশা পাইছে। হম সব জীবিত রহে, সাম্রহনে হমারী মাতাকী দুহুঁশা দেখ কে মৌ হম অনায়াস চেন করতে রহতে হৈ। হমারে জন্ম কৌ ধিক্কার হৈ, হমারে কন্ম কৌ ধিক্কার হৈ, হমার কুল কৌধিক্কার হৈ, হমারে ধন কৌ, হমারে মান কৌ, হমারে জীবন কৌ মৌ ধিক্কার হৈ। যহ জীবন সে ফির লাভ ক্যা? এসে উত্তম দুর্লভ মনুষ্য শরীর পাकर के, इस भरत खंड में जन्म लेकर के यदि मनुष्यत्व न मिला तो यह जीवन व्यर्थही है, पशुका शरीर भी इससे उत्तम है। आहार निद्रा, मैथुन ये तो पशुओं में भी है, तो फिर पशुओं से किस विषय में हम श्रेष्ठ हें। सत् वा असत् की विचार शक्ति करके मनुष्य पशुओं से उत्तम है। यदि मनुष्य शरीर पाकर के भला बुरा का विचार न कर सके, यदि आहार निद्रा वो मैथुन ही में प्रवृत्ति बनो रहो तो हम से पशुओं को भिन्नता क्या रहो?

आहारो मैथुनं निद्रा भयं क्रोध स्तथैवच ।  
जायन्ते सर्व जन्तूनां विवेको दुर्लभः परं ।

शेष आगे

(प्राप्त)

समाज की सामयिक वेग ।

शिक्षित समाज में नित्य नयी २ तरंग उठल उठ रही है, किन्तु समय के प्रवाह इसको कंहा लेजाती है, उसको कुछ भी पता निशान नहीं मिलती है। हम को स्वाधीनता चाहिये, हम को अंगरेजों की बराबरी करनी चाहिये, बिन रोक टोक के जैसी जी चाहे वैसे उन्नति की मार्ग में जाना चाहिये। प्रति मनुष्य ही अब इस भांति उन्नति के लिये व्याकुल है। किसीने सामाजिक उन्नति, किसीने राज नैतिक उन्नति, किसीने धर्म जगत् की उन्नति, इसी प्रकार से शिक्षित व्यक्ति मात्र ही किसी न किसी प्रकार की उन्नति को हंस मुख देखने चाहते हैं। समाज की उन्नति चाहने वाले यह चाहते हैं, समाज की एक नयी ढंग बनावे वो वेजाती साज से साजार्ने, राजनैतिक उन्नति के

समान आगमन समिते चान्, याहारा धर्म जगत्‌में  
उन्नति कामना करेन, ताहाने इच्छा, पुरातन  
धर्म—जोर्ण धर्म—भारत बामीर बामि धर्म छुा हईया  
वाउक, एकटी नवीन बरगड़ा धर्म प्रचारित हुँक।  
आधुनिक समाज्‌में उन्नतिर फल विधवा विवाह,  
स्त्री शिक्षा, स्त्री स्वाधीनता इत्यादि। राजनैतिक  
उन्नतिर फल, सुरेन्द्र बाबुर कारावास, इलवाट  
बिलेर, अपुस चिखई इत्यादि। आधुनिक धर्मोन्नतिर  
फल ब्राह्म समाज ओ यथेच्छाचार। एकथे दैखते  
हईवे एही उन्नत रितिये प्रसूत फल द्वारा  
भारतेर उपकार अथवा अपकार हईयाछे। विधवा  
विवाह वर्तमान भारते ये भावे आगियाछे  
ताहते नातिचारेर श्रोत बाड़ाईयाछे ओ एक  
प्रकार उन्नत श्रेणीर द्विचारिणी दणेर सृष्टि ओ पुष्टि  
वर्द्धन करितेछे। अगन विधवा विवाह देखिनाम  
ना, बाहा निर्बिघ्ने एवम् पवित्र भावे सम्पन्न  
हईयाछे, स्त्री शिक्षा ये रीतिसे चलियाछे, स्त्री  
जाति शिष्ट, शास्त्र, निम्नल स्वभाव हउया दूरे  
थाकत ताहानेर प्रचउता ओ प्रगल्भता दिनर वृद्धि  
पाईतेछे। पाति ब्रता काहाके बने ताका दिन २  
डूनिया यातेतेछे। गुरु जन शुद्धिवा, बहु परि-  
वार नह एकद्व बाम, पाक प्रक्रिया, सन्तान पालन,  
कुटुम्ब सेवा आदि विषये विमुख हईतेछे। राज  
नैतिक अन्दोलन द्वारा इलवाट बिलेर ये आन्द  
ठहरा गियाछे ताहते देनोदरे ओ इंग्रजे मित्र  
भार दूरे थाकत वरम् अक्रभाव वृद्धि पाईयाछे,  
इहा काहार ओ अविदित नाई ये आधुनिक नव धर्म  
प्रचार कर्तार ए क्रान्ति अभिहित हईया ये प्रका  
एकतर ओ मन्देरेर परिचय दितेछेन ताहा तिनटी  
समाज्‌में भिन्न अस्तु हई जगतें घोषण करितेछे  
थियसफिष्ट दल भविष्य नास्तिकतार अलक्षित मूर्ख  
सूत्र अवलम्बन करियाछेन, ताहाने इन्द्रजाल भेद  
करिया बुझिया उठे काहार मोधा। राजनैतिक आ-  
न्दोलने आपाततः याहा किछु अगिदरेर उपकार  
हईयाछे, उद्विग्न भारत वर्षे बहुल शिक्षा  
प्रचार ई एक मात्र कारण। किन्तु भविष्यते दुर्लभ  
प्रकृति देशी गण एवम् प्रकृति इंग्रजेर  
सहित समान आपपत्य करिते गेले निश्चय ई

पक्ष पाता लोग अंगरेजी की बराबर आसन पर  
बैठने चाहते हैं, जिन्होंने धर्म जगत् की उन्नति  
कामना की करती है, उन्हीं को चाह यह है, कि  
पुराना धर्म, जोर्ण धर्म याने भारत निवासियों के  
आदिम धर्म, जो कि उन्हीं के साहने दुर्गमो है,  
दूर निकाले जावे वो एक ताजा बनाया हुआ धर्म  
प्रचारित होय। आधुनिक समाज की उन्नति के  
फल ये हैं, विधवा-विवाह, नारी शिक्षा, स्त्री-स्वा-  
धीनता इत्यादि। राज नैतिक उन्नति का फल-सुरेन्द्र  
बाबू की कारा-निवास, इलवाट बिल की अपूर्व चिन्-  
कारो इत्यादि। आधुनिक धर्मोन्नति का फल ब्राह्म  
समाज वो यथेच्छाचार। अब देखना चाहिये कि इन  
तीनों उन्नति से जोर फल उपजाते हैं वे हमारे  
उपकारी या अपकारी हुए। जिस रीति से विधवा  
विवाह वर्त्तमान भारत में आ अवतीर्ण हुइ है,  
उसे व्यभिचार की प्रवाह बढ़ गयी है, एक उन्नत  
अणी की द्विचारिणी के दल की सृष्टि वो पुष्टि  
वर्द्धन हातो जाती है। ऐसी विधवा-विवाह हमें न  
दृष्टि में आइ, जो कि निर्विघ्नता वो पवित्रता से  
सम्पन्न हुइ। नारी शिक्षा जिस रीति चलई जाती  
है, उसे शिक्षा की शिष्ट, शान्त निम्नल स्वभाव बन  
ने की आशा तो दूर रही, उन्हीं की प्रचण्डता वा  
प्रगल्भता दिनों दिन बढ़ही जाती है। पातिब्रत्य  
धर्म तो वे भूलही गयी। गुरुजन की सेवा, बहु परि-  
वार सहित एकत्र वास, पाक-प्रक्रिया, सन्तान पालन,  
कुटुम्ब सेवन आदि व्यापारों में वे विमुख होने  
लगीं। यह किसी का अविदित नहीं कि राजनैतिक  
आन्दोलन से इलवाट बिल का जो आव हो चुका  
इसे देशी वो बेलाता यों में मित्र भाव होना तो  
किनारा रह्य बरं शक्तता बढ़ गयी। आधुनिक नव धर्म  
प्रचार करने हारों जिन्हों ने ब्राह्म नाम धारण किये  
हैं, जिस प्रकार की एकता वो महत्व का नमूना  
देखलाये हैं, सो एक समाज से तीन समाज  
बन जाना वो परस्पर में खट पट रहना उस  
का पूर्ण प्रमाण है। थियसफिष्ट दल भविष्यत्  
नास्तिकता की अलक्षित सूक्ष्म सूत्र को अव-  
लम्बन कर लिये हैं। किसको सामर्थ्य है कि  
उनको इन्द्रजाल फोड़ तोड़ के ये बात समझ  
ले। राजनैतिक आन्दोलन से हमारा जो कुछ  
उपकार हुआ, वह भारत वर्ष में केवल उंची  
शिक्षा का फल है। किन्तु भविष्यत् काल में  
दुर्लभ प्रकृति भारत निवासी गण प्रवल प्रकृति  
अंगरेजों से यदि बराबरी करते चले, तो  
आश्चर्य नहीं कि वे लोग मारे जागे। अत-

गारा यह है। अतएव ईश्वराजेर सकल ईश्वर आशा करा तथा ।

उक्त प्रकार धर्म एवं समाज सम्बन्धी आ-  
न्दोलन द्वारा भारतेर किछु मात्र उपकार  
हैर रहे बलिश बोध हयना वरं राशी २ अर्थ  
उत्पन्न होयाहै। याहा उक्त एकणे यथार्थ  
भारतेर उन्नत एक प्रकारे होते पावे  
तद्वस्ये चित्ता करा आवण्णक। भारतवर्ष आया  
विवास नागदा चिरकाल प्रसिद्ध। आर्येरा  
एक समये भारतवर्षे उन्नतिर उक्त शीर्षे उठिया-  
हिलेन, धर्मही ताहादेर प्रधान बल, सहाय ओ  
सम्पत्ति छिन्, ईश सकल देशेर सकल शास्त्रे  
स्वीकार करितेहै। आध्यात्मिक उन्नतिकेहै तांहरा  
उन्नति बलिश स्वीकार करितेन। एकणे आमरा  
मेहै ऐतुक सम्पत्ति "धर्म" यथार्थ सहायकार  
करिना बलिश आमादेर एहै दुर्गति। मेहै  
धर्मेर पूर्ण परिचर्या वातिरेके लक्ष २ ब्राह्म समाज  
हैलेन ओ वा लक्ष २ समाज संस्कृति। आसिले ओ एहै  
पतित भारतेर अवस्था केहै किहाते पावि-  
वेना। तौहै बलिताछ, शिक्षित महादय गण !  
याहाते आमार मेहै स्वर्गीय आया दिगेर नाहाआ  
भारते पुनर्जागत हय, तद्वस्ये चेष्टा करुन।  
ब्राह्म गण ! निज निर्मित धर्मनत प्रतिपाद कर।  
आहैस, भाईये २ बलिश सदाचार, सदाहार ओ  
सद्गुणेर पद पूजा करिते थाक। जगत् चर्चित  
छके दर्शन करुन, ये भारते आमार आर्षा जन  
जोतिः विप्रशत होते छ। आमादेर गन्तु  
हृदय शशीतल होइरा याहैने। \*

कलिकाता ।

कयाचं करिरतुगा ।

(प्राप्त)

उत्सव समाचार

गुजरेर आ. ध. प्र. मञ्ज ।

१९११ दशेते २११ माघ, गुरुदिवस त्रये अत्र

\* कविरत्न महाशय आर्य साहित्य संसारे लक्ष प्रतिष्ठ  
पूकव। त्रिनि वर्तमान समाजेर दूरवस्था दर्शन छुथित  
हृदये याहा लिखियाहैन, याहा प्रकटित अरिलाम, किन्तु  
तांहार व्यक्तिगत मतामतेर जन्य आमरा दाही नहि।

ध. प्र. मं ।

एव अंगरेजों की समकक्ष होन का आशा  
निरर्थक है। उमा रति धर्म समाज के बारे  
में जो कुछ झुलड़ उड़ाया गया, उसमें भी तो  
कुछ उपकार देख नहीं पड़ता है। वरं वज्रत  
सो अनर्थ उत्पन्न हो रहे हैं। जाहो, अब  
यहां देखना चाहिये कि किस रीतिम भगत  
खंड को यथार्थ उन्नत हो सके। भारत वर्ष  
बराबर से आर्य निवास करके प्रसिद्ध है।  
भारतवर्ष के आर्य सज्जन गण एक समय  
उन्नति को उंचो सोमा तक पड़चें थे। धर्म ही  
उन्हीं का प्रधान बल सहाय वो सम्पत्ति  
रहा। मय देश को कहानी से इस बात को  
सत्यता सूचित होती है। अब हम उस धर्म  
रूप पत्रिक द्रव्य को जो उत्तम रीति आचरण  
नहीं करते हैं, ईसा से हमारी यह दुर्दशा  
आ पड़ी है। फिर उस धर्म की पूरी परिचर्या  
किये बिना चाहे लाख ब्राह्म समाज बने या  
लाख समाज संस्कारक आवे इस पतित  
भारत का अवस्था कभी से सुधरन वाली  
नहीं। इसी से हम कहते हैं कि हे शिक्षित  
महादय गण ! जैसे उन स्वर्गदूत आर्य  
जनों की माहना फिर भारत में देख पड़े उसी  
की चेष्टा कोजिये। हे ब्राह्म गण ! निज बनाये  
धर्म मत का कोर दो, भाईयो मिल कर सदा  
चार, सदाचार वो सद्धर्म का पद-पूजन करते  
रहो, जगत चमकती हुई आखें से देखें, कि  
भारत में फिर आर्य जनों की ज्योतिः प्रकाश  
हो रहा है। हमारा सन्तप्त हृदय भी सुशान्त  
हो जायगा। \*

कलकत्ता ।

कयाचित् करिख्ये ।

प्राप्त ।

उसकी को समाचार

मुंगेर आ. ध. प्र. मं ।

माघ सुदी ५ मी से लेकर ७ मा पय्यत तीन दिन

\* कविरत्न महाशय आर्य साहित्य संसारे लक्ष प्रतिष्ठ  
हैं ! उन्ने वर्तमान समाज का दर्दशा देख कर दुःख  
मे जो कुछ लिखा हमने प्रकाश किया जिल, उनको निज मत  
के गुण वा दोष के लिये हम उत्तर देना नहीं है।

ध. प्र. मं ।



सभार ८५ वार्षिक उत्सव सुसज्जित रहै। गिराहै।  
 एतदुपलक्षे परबती देवी मूर्तिर अर्चन, ब्राह्मण  
 भोजन, नगर संकीर्तन, सुनाति सकारणी सभार  
 वार्षिक अभिवेशन, नीति विषयिणी वक्तृता, बालक  
 वर्गके मित्रान् विवरण, पाठ्य दिनेर सभा, विचार  
 विद्वान् ; सभान्तर्गत संस्कृत पाठशालाय वार्षिक  
 परीक्षाय उत्तीर्ण बालक वर्गके पारितोषिक दान,  
 सदागोष्ठी सभार उत्सव, स्तोत्रपाठ, उपदेश  
 व्याख्यान, संगीत आदि रहै। बाराणसी  
 रहैते भा, आ, ध, प्र, सभार सम्पादक महाशय  
 महाशयस्य समीपमे एताहार करै। उपादेश  
 मार्गदर्शक ओ भक्ति भाव पूर्ण वक्तृताय अत्र सभा  
 विशेष उपकृत रहै। भिन्न स्थानीय कृत  
 दिना भद्र महोत्सव गण सभा रहै। सभार गौरव  
 वृद्धि करै।

जनैक सभा ।

दाई हाट हरि सभा ।

२५१ रहैते २२९ पर्यन्त सभार ८५ वार्षिक  
 सारिक उत्सव महा समारोहे सम्पन्न रहै। गिराहै  
 एह उत्सव काले आगमनाराधना पूजा, १२ दल  
 नगर संकीर्तन, सभा ओ आगमन स्थाने अत्र  
 केन्द्र, श्रीमद्भागवत व्याख्या, गू०२ अष्टांगी गान,  
 भक्तिगीत कर्तृ कृष्णगीतगान, रात्रि हरीमन्त्र  
 ओ भक्तिमन्त्र एतद्विषयक विषयक अभिनय रहै।  
 एताह भा, आ, ध, प्र, सभार सम्पादक महाशय  
 अनुभवयि धर्म, नीति, दर्शन, विज्ञान ओ भक्ति  
 पूर्ण भिन्न विषयिणी वक्तृता राशि द्वारा एह उत्सव  
 उपलक्षे एतद्विषयक वार्त्ता एकरी नवीन जीवन  
 लाव करै। सभार कार्यकाले श्रीपूज्ये शाय  
 ५००० लोक सुख भावे वक्तृता सुधारस पाने  
 आनन्दित रहै। आगमन गृहस्थ भद्र महिला  
 वर्गके धर्म वृद्धि करै। जनता उक्त महाभा  
 एकदिन आवाह हरिनारायण मुखोपाध्याय महाशय  
 गृह आगमने एकरी सरल ओ हृदय आशी वक्तृता  
 करै। हरिवाव अत्र हरिसभार जीवन  
 स्वरूप तहार उत्साह, उद्यम, चेष्टा ओ अजस्र अर्थ  
 व्याख्या एह महा महोत्सव ठहरै।

आकेदार नाथ भट्टाचार्य ।

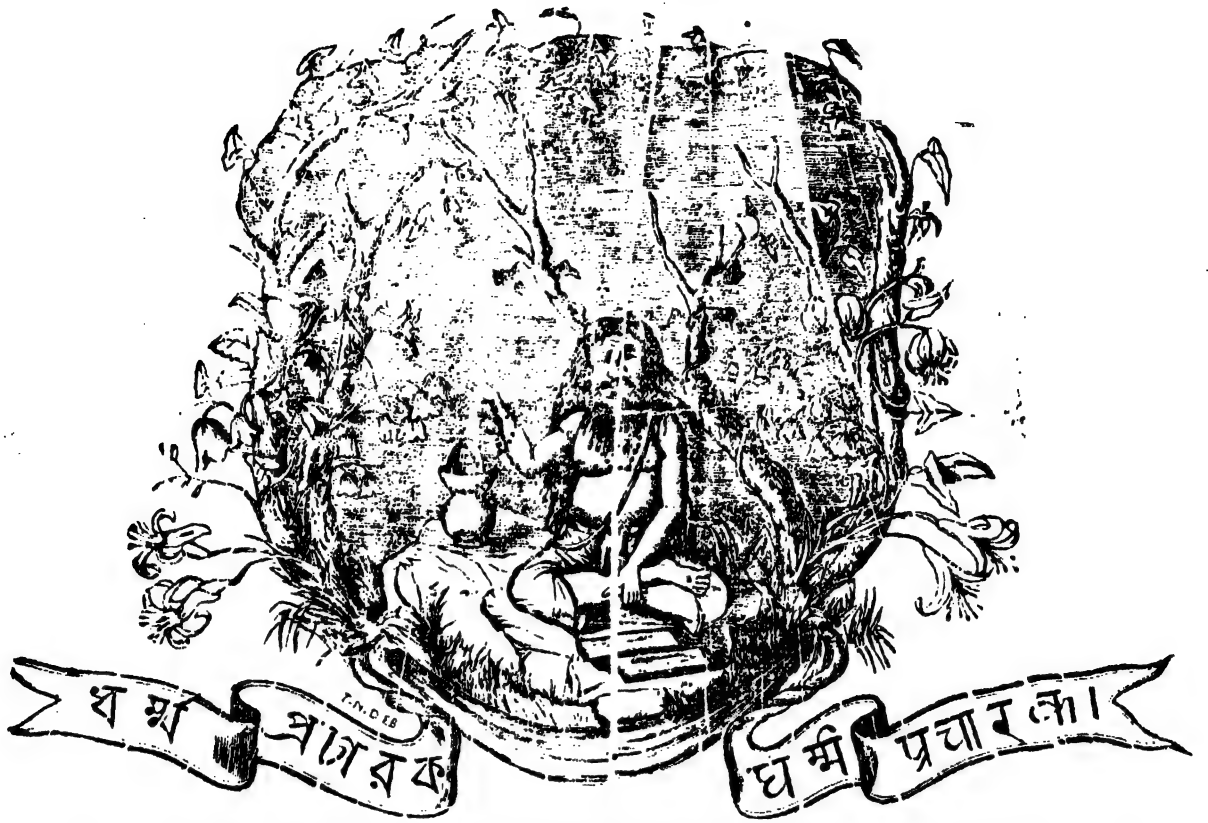
सभार ८५ वार्षिक उत्सव सुन्दर नीति सम्पन्न  
 रहै। एह उत्सव काले भक्तिमन्त्र, नीति  
 की पूजा, ब्राह्मण भोजन, नगर संकीर्तन, सुनाति  
 सकारणी सभा का वार्षिक अभिवेशन, नीति के  
 बारे में वक्तृता बालकी की मिष्टान्न वितरण,  
 पण्डितों की सभा-शास्त्रार्थ वी विद्वान्, सभान्तर्गत  
 संस्कृत पाठशाला की वार्षिक परीक्षा में उत्तीर्ण हुए  
 बालकों को परस्कार दान, सदानोपमा सभाका  
 उत्सव, स्तोत्र पाठ, उपदेश व्याख्यान, संगीत आदि  
 सम्पन्न रहै सुन्दर रूप में। बाराणसी में भा० आ०  
 ध० प्र० सभा के सम्पादक वी सम्पादक महाशय  
 के आने से वी जनकी मधुर, सार गर्भित वी भक्ति  
 भावसे पूर्ण केक व्याख्यानसे इस सभासे अत्यन्त  
 उपकार माना। भिन्न स्थानसे आये हुए कृतविद्या  
 महोदय गण सभासे सुशोभित होकर सभाका  
 गौरव बढ़ाये।

जनैक सभा ।

दाई हाट हरि सभा ।

आध सुदी एकादशी से लेकर पूर्णिमा तक केक  
 दिन इस सभाकी चौथे दर्जे वार्षिक उत्सव  
 बड़े धूम धाम में हो गया। आगमनाराधना की  
 पूजा, १२ दल नगर संकीर्तन, सभा गृह में वी  
 आगमन के भिन्न स्थानों में अन्न कुट, योगदानगत  
 की व्याख्यान, गृह गृह में प्रभाती भजन, कीर्तन  
 वाली की कृष्ण लोला को गान, रात्रि कालमें  
 “हरिमन्त्र” वी “अभिमन्त्र वध” वी दोनाटक का  
 अभिनय हुआ। प्रति दिन भा, आ, ध, प्र, सभाके  
 सम्पादक वी अमृतमयी वक्तृतायें से जो कि  
 धर्म, नीति, दर्शन, विज्ञान वी भक्ति भाव से भरी  
 रहो। इस अवसर में यहां के सब जन एक नवीन  
 जीवन प्राप्त हुए सभा में स्त्री वी पुरुष मिलाके  
 पाय ५००० लोग स्थिर भावसे वक्तृता की सुधारस  
 पीकर आनन्दित हुए। आगमन गृहस्थ भद्र महिला  
 वर्गकी धर्म दृष्टि वृद्धि के लिये उक्त महाभा ने  
 एक दिन श्री वावू हरि नारायण मुखोपाध्याय  
 महाशय की गृह में एक वक्तृता, जो कि अतोय  
 सरल वी मनलोभावनी हुई, करी। हरिवाव  
 इस सभा के जीवन रूप है। उन्हीं के उत्साह,  
 उद्यम, चेष्टा वी अजस्र अर्थ व्यय से यह महा  
 महासव हो गये।

आकेदार नाथ भट्टाचार्य ।



“ একএব স্তম্ভদ্বারা নিধনেঃপানুয়াতি যঃ ।  
শরীরেণ সমস্তাংশং সমস্তমভ্যুত্ত, গচ্ছতি ॥ ”

“ এক एव स्तम्भद्वारा निधनेऽप्यनुयाति यः ।  
शरीरेण समं नाशं सर्वमभ्युत्त, गच्छति ॥ ”

কম ভাগ । { শকাব্দা ১৮০৫ ।  
১১শ সংখ্যা { ফালগুণ—পূর্ণিমা ।

৩ম ভাগ । { শকাব্দা ১৮০৫ ।  
১১শ সংখ্যা { ফালগুণ—পূর্ণিমা ।

বিষ্ণু স্মৃতি ।

ওঁ শ্রীগণেশায় নমঃ ।

বিষ্ণুদেবতা গঙ্গা নদী প্রভৃতি স্মৃতি বিশারদম্ ।  
পত্রচ্চ যুগ্মঃ সপ্তে কলাপ গ্রাম বাসিনঃ ॥ ১ ॥  
শ্রুতি স্মৃতিাদির প্রকৃত তাৎপর্যাবেত্তা বিষ্ণুকে  
স্থির ভাবে উপবিষ্ট দেখিয়া কলাপ গ্রাম বাসী  
যুগ্ম গণ জিজ্ঞাসা করিলেন ।

কুতে যুগ্মেশ্বরীণে লুপ্তোৎসাহঃ সনাতনঃ ।  
তত্রৈব শীর্ষমাণেচ ধর্মো ন প্রতিমার্গিতঃ ॥ ২ ॥

গত্যা যুগ্মবাসানের সঙ্গে সঙ্গেই সনাতন ধর্ম  
বিলুপ্ত হইয়াছে এবং উহা বিনষ্ট হইলেও কেহই  
এতদ্ব্যর্থের সংস্কার করে নাই ।

ক্রেতা যুগ্মে ২য় সংখ্যাপে কর্তব্যমাস্য সংগ্রহঃ ।  
যথা সংখ্যাপ্যতে হস্তাভিস্তব্রহ্মো বক্তৃমর্হসি ॥ ৩ ॥

একগণে ক্রেতা যুগ্ম সংগীত, এ জন্ম হইবার নক্টো-  
ক্রেতার নিত্যকর্ম হইবে, অতএব যে উপায়ে

বিষ্ণু-স্মৃতি

ওঁ শ্রীগণেশায় নমঃ ।

—০—

বিষ্ণু, মেকাগ্র মাসীন শ্রুতি স্মৃতি বিশারদম  
॥ পপ্রচ্চ, মুনয়ঃ সর্ব কলাপগ্রামবাসিনঃ ॥ ১ ॥

শ্রুতি স্মৃতিয়াং কে সর্ব তত্ত্ব বেত্তা বিষ্ণু, কী  
একাগ্র বেঠে হুই দেখকর কলাপ গ্রাম কে रहने  
বাসী মুনয়ীনে পুছা

কুতে যুগ্মেশ্বরীণে লুপ্তোৎসাহঃ সনাতনঃ ॥  
তত্রৈব শীর্ষমাণেচ ধর্মো ন প্রতিমার্গিতঃ ॥ ২ ॥

সত্য যুগ্ম ব্যতীত হীনে পর সনাতন ধর্ম বিলম্ব  
হী গয়া । তস কা অভাব বা নাশ হীনে পর ভী কীহ  
তস ধর্ম কা যোধ ন কিয়া ।

ক্রেতায়ুগ্মে ২য় সংখ্যাপে কর্তব্যমাস্য সংগ্রহঃ  
যথা সংখ্যাপ্যতে হস্তাভিস্তব্রহ্মো বক্তৃমর্হসি ॥ ৩ ॥

যথ ক্রেতা যুগ্ম প্রাপ্ত হুয়া হৈ, হস লিয়ে হসমা  
নক্টোকার অবসর করনা বাড়িয়ে । অতএব বাতাহুই

आमरा उहा प्राप्त हईते पारिताहा बलिग्रा निम् ।  
वर्णाश्रमाणां यो धर्मो विशेषतैश्च यः कृतः ।  
भेदस्तथैव तेषां यस्तन्ना कृहि द्विजोत्तम ॥४॥  
वर्णाश्रम समूहेर ये धर्म तन्मध्य परम्परैर  
विशेष उ विवृता किरुण आछे, हे द्विजोत्तम !  
तथापि आमादिगैर निकट व्याख्या कर ।

श्रीगणैः समवेतानां त्वमेव परमो मतः  
धर्मस्यैव समस्तस्य जान्या वक्तास्ति सुमतः ॥५॥  
हे सुमत । एषाने यत शशि मन्त्रेण आछेन,  
तन्मध्य तूमिहै श्रेष्ठ, केनना समस्त धर्मैर यथार्थ  
तां पर्या व्याख्याता तूमि भिन्न आर कहै नहि ।  
अत्र धर्मः चरित्रादौ यथाने परिभाषितम् ।  
तन्मां कृहि द्विज श्रेष्ठ ! धर्मकाग हेमे द्विजाः ॥६॥  
हे द्विज श्रेष्ठ ! एहै सकल ब्राह्मण गण धर्म पिपा-  
सु, तोमार कथितानुरूप आमरा धर्म आचरण  
करिव, अतएव तूमि व्याख्या कर ।

हेतुहो मुनिभिस्तैस्तु विष्णुः प्रोवाच तांस्तदा ।  
अनघाः श्रुत्वा धर्मो वक्ष्यामो मया क्रमात् ।  
मुनि गण वर्तुल अवस्थितार उक्त हईले पर महाशय  
विष्णु तांशदिगके बलिलेन, हे अनघ मह आगण !  
आमि क्रमशः धर्माचारादि बलितेछि, तोमरा  
श्रवण कर ।

ब्राह्मणः कश्चिद्यो वैश्याः शूद्रैश्च तथापरे ।  
एतेषां धर्म सारं यद्वक्ष्यामं निबोधत ॥७॥  
ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र एवं अनान्य सकलैर  
धर्मतत्त्वैर सारांश आमि व्याख्या करितेछि,  
तोमरा तांशत अवधान कर ।

आतो आतो हू संयोगाद् ब्राह्मणो जायते स्वयम् ।  
तन्माद्ब्राह्मण संस्कारं गर्भादौ हू प्रयोजयेत् ॥८॥  
एतेक शूद्र काल अर्थां श्रीरजसला हईले १७  
दिनैर मध्यह्ने (श्रीर शुद्धतार पर) पवित्र भावे  
संयोग करिले ब्राह्मण आत्मा गर्भ उपगत होइन,  
एहै जन्य गर्भैर अथमेहै ब्राह्मण संस्कार सम्पन्न  
होगा उचित ।

सौमन्तोन्नयनं कर्म न स्त्री संस्कार ईषाते ।  
गर्भे चैव तु संस्कारो गर्भे गर्भे प्रयोजयेत् ॥९॥  
प्रथमतः गर्भाधान, तत्परे सौमन्तोन्नयन अर्थात्  
अन्ते मातुल्या (गर्भ हईवार ७ मास पारे ईहा  
करिते हर), करिटे । एतावत् श्रीसंस्कार नहै,

किं किम उपाय मे हम्भव का यह मिल सके ।  
वर्णाश्रमाणां यो धर्मो विश्वस्यैव यः कृतः ॥  
भेदस्तथैव चैषां यस्तन्ना कृहि द्विजोत्तम ॥ ४ ॥  
वर्णाश्रम का जो धर्म है, उसमें विश्व क्या है,  
वो परस्पर भिन्नता क्या है, हे द्विजोत्तम ? यह सब  
हम को कहिये ।

क्षत्रीणां समवेतानां त्वमेव परमो मतः ॥  
धर्मस्यैव समस्तस्य जान्या वक्तास्ति सुमतः ॥ ५ ॥  
यहां जितने क्षत्रिय हैं, उनमें आपही सब से  
श्रेष्ठ देख पड़त हैं, क्यों समस्त धर्म के तात्पर्य  
पूरी रीति व्याख्यान करने हार, हे सुमत, आप से  
दुसरा कौन नहीं ।

अत्वा धर्मं चरिष्यामी यथावत्परिभाषितम् ॥  
तस्माद् ब्रूहि द्विजश्रेष्ठ धर्मकामा इमे द्विजाः ॥ ६ ॥  
हम सब ब्राह्मण गण धर्म के प्यास हैं, आप का  
कथनानुसार हम सब धर्म आचरण करेंगे, अतएव  
हे द्विज श्रेष्ठ, आप बोलिये ।

इत्युक्तो मुनिभिस्तैस्तु विष्णुः प्रोवाच तांस्तदा ।  
अनघाः श्रुत्वा धर्मो वक्ष्यामो मया क्रमात् ।  
उन मुनियों के इस रीति के कहने पर उस समय  
महात्मा विष्णु, ने बोला कि, हे निर्याप क्षत्रिय गण !  
मैं क्रमसे धर्माचार आदि कह जाता हूं, आप सब  
सुनते रहिये ।

ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यः शूद्रश्चैव तथापरे ।  
एतेषां धर्म सारं यद्वक्ष्यामं निबोधत ॥ ७ ॥  
ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र सभी धर्मों के धर्म का  
सारांश में कहता हूं, आप सब दत्तचित हो  
री कथन पर ध्यान दीजिये ।

क्षतौ क्षतौ तु संयोगाद् ब्राह्मणी जायते  
स्वयम् । तस्माद् ब्राह्मण संस्कारं गर्भादौ तु  
प्रयोजयेत् ॥ ८ ॥

प्रत्येक क्षत काल में अर्थात् श्री रजसला हो, तब  
से १६ दिन के भीतर श्रद्धा के उपरान्त स्त्री  
संयोग करने से ब्राह्मण होता है, अतएव गर्भ के  
पहलेही ब्राह्मण का संस्कार करना चाहिये ।

सौमन्तोन्नयनं कर्म न स्त्री संस्कार इष्यते ।  
गर्भस्यैव तु संस्कारो गर्भ गर्भे प्रयोजयेत् ॥ ९ ॥  
प्रथमतः गर्भाधान (फलपीक) तब सौमन्तोन्नयन  
अर्थात् अष्टमास (वा आगरणी) यह गर्भ के ६

गर्भ-संस्कार नामे अतिरिक्त है। प्रातः  
बार गर्भकाले ईश्वर अनुष्ठान होना आवश्यक।

जात कर्म तथा कुर्यात् पुत्रे जाते यथोदितम्।

बहिर्निष्क्रमणं चैव तस्य कुर्यात् क्षिप्रः शुभम् ॥

पुत्र जाते मातृ जात कर्म यथा विधाने मन्त्र  
करिबे, तदनन्तर बालकके स्तिकागारेर बाहिरे  
नईना याईवार समय बहिर्निष्क्रमण नाम शुभ-  
संस्कारे अन्वृष्टान करिबे।

षष्ठे मासे च संप्राप्ते अन्न प्राशनमाचरेत्

तृतीये द्वे च संप्राप्ते केश कर्म समाचरेत् ॥१२॥

शिशु छत्र मासेर तहिले ताहार अन्न प्राशन निवे  
७ तृतीय वर्ष प्राप्ते तहिले ताहार मस्तक मुण्डन  
कराईबे।

गर्भादेकान्ते तथा कर्म ब्राह्मणस्योपनायनम् ।

द्विजस्य तु संप्राप्ते मातृजागधिकारभाक् ॥१३॥  
गर्भकाल हैते गणना करिया अन्तम वर्षे ब्राह्मण  
बालकेर उपनायन २५२ यच्छोपनीत हैने।  
बालक १५२ संस्कार द्वारा द्विज ७ गायत्री मन्त्रे  
अधिकारी होबे।

गर्भादेकान्ते तैमके कुर्यात् क्षिप्रं तैमकेऽप्येकः ।

कारयेत् द्विज कर्मणि ब्राह्मणेन यथाक्रमः ॥१४॥

गर्भ काल हैते गणना करिया एकान्त नये  
क्षिप्रं ७ द्वादश वर्षे तैमकेर द्विज कर्म यच्छो  
पनीतानि संस्कार ब्राह्मणेर द्वारा अनुष्ठान करा  
हैते होबे।

शूद्रश्चतुर्थो वर्णस्तु सर्व संस्कारवर्जितः ।

उक्तस्तस्य तु संस्कारो द्विजेस्वात्मनिवेदनम् ॥१५॥

चतुर्थवर्ण शूद्र दिगेर एतावत् कोन संस्कार है  
करिते होबेना। द्विज गेनाई अर्थात् द्विज  
दिगेर उपदेशानुक्रम कार्य कराई ताहादेर  
परम धर्म।

(वर्तमान काले शूद्रगणके द्विज गण वर्णित चके  
देखिया थाकेन। एमन कि अति कदाचारी ब्राह्मण ७  
सदाचारी शूद्रके मोच मने करेन। शूद्रगण द्विज  
वर्गेर अनुज ठूला स्नेहेर पात्र। कनिष्ठ जात  
ज्येष्ठ जातार ये रूप सेवक, शूद्रगण द्विजगणे  
तादृश सेवक जानेटे होबे। सेवक बलिने  
वर्णित पात्र बुझा ना। कनिष्ठ ज्येष्ठेर अनुगमन

मर्दिन को पयात् होता है) यह संस्कार स्त्री का  
नहीं, किन्तु गर्भनी का होता है। अतएव प्रति  
गर्भ ने समय यह करना चाहिये।

जात कर्म तथा कुर्यात् पुत्रे जाते यथोदितम्।

बहिर्निष्क्रमणं चैव तस्य कुर्यात् क्षिप्रः शुभम् ॥१२॥

सौमन्तावयन के अनन्तर जात कर्म अर्थात् जन्म  
का संस्कार बालक हातेही शास्त्रान्त विधि के  
अनुसार करना, तत्पश्चात् बालक को बाहर लेजाने  
का भी बहिर्निष्क्रमण शून्य संस्कार करना चाहिये।

षष्ठे मासे च संप्राप्ते अन्न प्राशनमाचरेत् ।

तृतीये द्वे च संप्राप्ते केशकर्म समाचरेत् ॥१२॥

छठ मर्दिन में अन्न प्राशन (अन्न खिलाना) और  
तौमर वर्ष में चोल करना अर्थात् चोटा रखना,  
ये दो संस्कार करना चाहिये।

गर्भाष्टमे तथा कर्म ब्राह्मणस्योपनायनम् ॥

तै त्वय संप्राप्ते सावित्र्या मधिकारभाक् ॥१३॥

गर्भ से आठवें वर्षमें ब्राह्मण का उपनायन अर्थात्  
जनऊ करना, अब यह द्विज होता है। द्विज होने  
पर गायत्री का अधिकार मिलता है।

गर्भादेकादशे तैमके कुर्यात् क्षिप्रं तैमकेऽप्येकः ॥

कारयेत् द्विजकर्मणि ब्राह्मणेन यथाक्रमम् ॥१४॥

गर्भ से ग्याह में वर्षमें क्षिप्र और बारहवें में  
वैश्य के द्विज कर्म अर्थात् जनऊ आदि ब्राह्मण  
के द्वारा करालेना चाहिये।

शूद्रश्चतुर्थो वर्णस्तु सर्व संस्कारवर्जितः ॥

उक्तस्तस्य तु संस्कारो द्विजेस्वात्मनिवेदनम् ॥१५॥

शूद्र जा चौथा वर्ण है, उसका कोई संस्कार करना  
न पड़ेगा। द्विज को सेवामें तत्पर रहना अर्थात्  
द्विजों के उपदेशानुसार कार्य करना इतना ही  
उन्का परम धर्म है

आज कल द्विज गण शूद्र जनों को घृणित मानते  
हैं अधिक क्या, अत्यन्त कदाचारी ब्राह्मण भी सदा  
चारों शूद्रों को नीच समझता है। शूद्रगण द्विज  
लोगों के अनुज समान खिन्न पात्र है। छोटा भाई  
बड़े भाई के जिस भाँति सेवक है, शूद्रगण को उसी  
रीति द्विज समूह के सेवक जानना चाहिये। यह  
न समझना कि सेवक होने की घृणा का पात्र  
होना है। छोटा भाई बड़े के पीछे चलेगा, बड़ा

करिबे, ज्येष्ठेय आचरण दोधिया कनिष्ठ शिक्षा करिबे, ज्येष्ठ कनिष्ठके तद्वृत्ति आचरणेय अष्टा करिबेन, कनिष्ठ भक्ति पूर्ण हृदये ज्येष्ठेय प्रिय कार्या साधन करिबे ॥ ईश्वरे उक्त ७ नोच भाव कोथा हईते आसिन । अभिमानई ब्राह्मण दिगके सम्मानेय उक्त शीर्ष हईते धरातले आनिरा केलियाछे । विज गण ! अभिमान त्याग कर, शूद्र वर्गेय गति ज्येष्ठ कनिष्ठ ब्राह्मण नाय समान ७ धेय सह सहायहार कर । आपनाके शत्रु ७ शूद्रके दास एकरुप शास्त्र विरुद्ध भाव हृदये नान दिओ ना ।)

यो यमा विहितो दण्डो मेघनाजिन धारणम् ।

सूत्रं वस्त्रं च गृह्णीयाद्ब्रह्मचर्येण यस्तुतः ॥१७॥

ब्रह्मचर्या अर्थात् उपनयन हईया गेले याहार ये रूप निरुद्ध आछे, तदनुरूप दण्ड, मेघना अजिन अर्थात् मृग चर्म, सूत्र (यज्ञोपवीत) ७ वस्त्र ग्रहण करिबे ।

क्रमः

## आर्य शास्त्र विज्ञान ।

(पूर्व प्रकाशितेय पर )

कान मानसिक क्रिया ७ वारम्बार उद्बुद्धित करिबे नेषे आपना हईतेई सेई क्रिया वारम्बार हईते थारक ।

रस रुधिरादिहित पदार्थ सकल, येरूप यात्रिक क्रियाद्वारा शक्ति प्राप्तु हईले उक्त प्रकारे सहायक शक्ति सम्पन्न हईया अनेक काल पर्याप्त आपनई किन्ना यात्रिक क्रियाय सामान्य सहाय्य लईयाई परिणाम कार्या निर्वाह करिते पारे एवम् यन्त्र सकल येरूप आहार क्रिया द्वारा क्रमागत वेगवान् हईले पारे आपनई अथवा आहार क्रियाय किन्ना सहाय्य प्राप्तुई अथ कार्या निष्पन्न कारिते पारे, सेई रूप, यात्रिक क्रिया ७ आहार रसरुधिरादिहित पदार्थ सकलेय तदनुष आहार्यामिक क्रियाद्वारा—क्रमः सहाय्य प्राप्तु ७ परि-  
वर्द्धन हईया अति सामान्य रूप निजेय वल आहाराद्वाराई अधिक परिमाणे आपन कार्या निष्पन्न करे । एवम् रस रुधिरादिहित पदार्थ सकलेय तदनुष परिणाम क्रियाद्वारा यात्रिक क्रिया

का क्रिया हृषा पाचरण देखकर छोटा भाइ सिखेगा बड़े भाइ छोटे भाइ को उचित आचरण करने को पान्ना करेंगे, छोटे भाई भी भक्तिसे पूर्ण हृदय से बड़ा का प्रिय कार्य साधन करता रहेगा । इस में जो भी नोची मिट्टी कहीं से पाइय अभिमान ही ब्राह्मणोंको इन दिनों में मर्यादा को उंची पहाड़ पर से भूमि तक से पान गिराया । हे विज गण ! अभिमान को छोड़ो शूद्रों के साथ जैसाकि बड़े भाई वो छोटे भाई के समान आदर वो खेड से मद व्यवहार करते रहो । अपने की प्रभु वो शूद्र काद स ऐसा शास्त्रके विरुद्ध भाव को कभी हृदय में स्थान न दो ।

या यस्य विहितो दण्डो मेखला जिनधारणम् ॥

सूत्रं वस्त्रं च गृह्णीयाद्ब्रह्मचर्येण यस्तुतः ॥ १६ ॥

ब्रह्मचर्य अर्थात् उपनयन होने पर प्रथमायममें जो जो जिस को दण्ड ( यष्टि ) मेखला वा अजिन पश्चात् मृग चर्म कहते हैं, वस्त्र वो सूत्र ( यज्ञोपवीत ) ओ वस्त्रग्रहण करे ।

शेष आगे

## आर्य शास्त्र विज्ञान ।

(पूर्व प्रकाशित के आगे )

यदि किसी मानसिक क्रिया को भी उक्त ई जाय तो अन्तमें वह क्रिया भी आप ही आप वारम्बार होती रहती है ।

रस रुधिर आदिमें स्थित पदार्थों ने जिस रीति यंत्र की क्रिया करके शक्ति पाने पर उस प्रकारसे अधिक शक्ति सम्पन्न हो दीर्घ काल तक आप ही अथवा यात्रिक क्रियाको सामान्य ही सहायता लेके अन्त क्रिया निबाह सक्ते हैं ओ यंत्र सब जिस रीति आत्मा को क्रिया करके लगातार वेग युक्त होने पर आप ही अथवा आत्मक्रिया को थोड़ी ही सहायता पाकर निजर कार्य निबाह सक्ते हैं, उसी प्रकार ने यात्रिक क्रिया भी । फिर रस रुधिर में स्थित पदार्थ सबों को उस रीति अन्त की क्रिया के द्वारा क्रम सहायता पाकर वो वर्द्धित होकर थोड़ी ही भी अपना वल देने से अधिक परिमाण कार्य करते रहते हैं ओ रस रुधिर स्थित पदार्थ सबों को उस भाँति परिणाम क्रिया करके यात्रिक क्रिया उसे



উত্তেজিত হইলে তাদৃশ যান্ত্রিক ক্রিয়া দ্বারা অথবা যদি বিশুদ্ধ যান্ত্রিক ক্রিয়া হইত, তখন সে তদ্বারাও আবার মানসিক ক্রিয়ার উত্তেজনা হইয়া মানসিক বেগ অতি সামান্য বলবান হইলও অধিক পরিমাণেই সেই ক্রিয়ার ফল সম্পাদন করে। এই প্রকার পরস্পরের সাহায্য পরস্পরের ক্রিয়ার উত্তেজনা হয়। মনে কর, তুমি ভোজ্য পদার্থ আহরণ করিলে উৎসাহের অভাবের নীতি হইয়া শরীরের যে যে অবয়বে ঐ ভোজ্য পদার্থ আছে তাহাদের সহিত রাসায়নিক আকর্ষণে ও মজাঠীয় আকর্ষণে পরস্পর মিলিতে লাগিল। পাকস্থলী প্রভৃতি যন্ত্র সকল পোষণ ক্রিয়া সম্পাদিকা জীবনী শক্তি দ্বারা (vitality) স্বয়ং বাগ্যে প্রবৃত্ত হইয়া পদার্থ সকলের পূর্বোক্ত মত শক্তির উৎপাদন করিল; তখন সেই শক্তি দ্বারা তোমার শারীরিক যন্ত্র সকল যে শক্তি প্রয়োগ করিতেছিল, সেই শক্তিরই সাহায্য এবং সমধিক উত্তেজনা হইতে থাকিলে। সুতরাং তোমার আহার ক্রিয়া দ্বারা ঐ সকল যন্ত্রের পরিচালনের যে ফল, উহাতেও সেই ফলই উৎপন্ন হইতে পারে। আবার যন্ত্রের ঐরূপ ক্রিয়া হওয়াতে যন্ত্রাধিকৃত আহার ক্রিয়া ও অগত্যাই যান্ত্রিক ক্রিয়ার সঙ্গে ২ তদনুযায়ী স্ফূর্তিত হইতে থাকে। এই কারণেই মানুষের শারীরিক প্রকৃতি (constitution) বিভিন্ন প্রকার হইয়া থাকে। এই কারণেই মানুষ গণ ইচ্ছানুসারে সদস্য প্রবৃত্তিকে বিনিয়োগ করিতে পারেন।

ক্রমশঃ

## আর্য্য দিগের উপাসনা প্রণালী।

(পূর্ব প্রকাশিতের পর)

শুক্ল, কৃষ্ণ, রক্ত আদি বর্ণের কি কি গুণ বা ক্ষমতা আছে, তাহা এখানে যথাযথক আলোচনা করা বিধেয়। একটা বর্ণ যে রূপ পার্থিব, বায়বীয়, আকাশীয় ও নেত্রের স্নায়বীয় প্রক্রিয়া দ্বারা যে ভাবে প্রণীত হয়, অপরিণীত প্রক্রিয়া ও গতি তাহা হইতে স্বতন্ত্র। পূর্ব ২ সংখ্যা পাঠে পাঠক গণ

জিত হাঁ তো যান্ত্রিক ক্রিয়া ম অথবা যদি বিশুদ্ধ যান্ত্রিক ক্রিয়া হইত, তখন সে ফির মানসিক ক্রিয়া কী উত্তেজনা হাঁনে সে মানসিক বেগ অতি সাধারণ হাঁনে পরে অধিক পরিমাণ ফল সে ক্রিয়া কা সম্পাদন করতা হাঁ। ইসো রীতি পরস্পর কী সহায়তা সে পরস্পর কী ক্রিয়া উত্তেজিত হাঁতো হাঁ। সৌচিয়ে কী আপনে কীই ভৌমপদার্থ ভোজন ক্রিয়া বহু শরীর কী ভীতর পেঠনে পর শরীর কী জহাঁ জহাঁ ভৌম পদার্থ হাঁ, তহাঁ তহাঁ বহু রাসায়নিক আকর্ষণ কী দ্বারা অথবা সজাতীয় আকর্ষণ করকে উহাঁমে মিলনে লগা। পাকস্থলী আদি যন্ত্রসব জীবনী শক্তি (vitality) জিমসে পোষণ ক্রিয়া সম্পাদিত হাঁতো হাঁ, নিজ নিজ কার্য্য করকে প্রবৃত্ত হাঁকর সে পদার্থী কী পূর্বকথিত শক্তি কী উৎপন্ন কিয়ে; ফির সে শক্তি কী দ্বারা আপকে শারীরিক যন্ত্র সব জিন শক্তি যাঁ কী প্রয়োগ কর রহে থে, সে কী শক্তি কী সহায়তা বা অধিক তর উত্তেজনা হাঁতো রহেগো। অতএব আপ কী আত্মা কী ক্রিয়া করকে সে সব যন্ত্র কী চলানে সে জো ফল হাঁতো হাঁ, সেমে ভৌম বহু ফল হাঁ সক্তা হাঁ। যন্ত্র কী সে কী রীতি ক্রিয়া হাঁনে পর যন্ত্র পর আরুড় আত্মা কী ক্রিয়া ভৌম যান্ত্রিক ক্রিয়া কী সংগে সংগ তদনুরূপ করনে লগতী হাঁ। ইসো হে তু সে মনুষ্য কী শারীরিক প্রকৃতি (Constitution) ভিন্ন ২ প্রকার কী হাঁতো হাঁ, ইসো হে তু সে মনুষ্য গণ আপনীর ইচ্ছা কী অনুসার মলী বুরো প্রবৃত্তিয়াঁ কী বিনিয়োগ নহাঁ কর সক্ত হাঁ।

শেষ আগো।

## আর্য্য সজ্ঞনীর কী উপাসনা-প্রণালী।

(পূর্ব প্রকাশিত কী আগো)

শুক্ল, কৃষ্ণ, রক্ত আদি বর্ণ কী ক্বা ক্বা গুণ বা শক্তি হাঁ অথ সে কী যথাযথক আলোচনা করনী চাহিয়ে। কীই এক বর্ণ জিস রীতি সে পার্থিব, বায়বীয়, আকাশীয় বা নেত্র কী স্নায়ু যাঁ কী প্রক্রিয়ায় সে জিস ভাতি স্ফুট পড়তা হাঁ, দুসর বর্ণ কী প্রক্রিয়া বা গতি সে

वर्णानुद्धृतिर कियत् परिमाणे गच्छत अवगत  
इहेया थाकिवेन । एकमेव वर्ण विशेषेण गुण  
विशेषे मानवेन मन किरूप काया हर, ताहाई  
विचार करितेहि । रक्त वर्णे आकर्षण शक्ति अधिक ।  
इहा अन्यान्य वर्णापेक्षा अवल । येथाने एकजे  
विविध वर्णेंर समावेश, तथाय देखिवेन, तन्मन्त्र  
लोहित वर्ण चक्र द्वाया मनके निज अभिमुखे  
प्रथमे आकर्षण करिवेही करिवे । मनके विचलित  
करिवार क्रमता लोहित वर्णे विद्यमान देखिते  
पाव्या याय । मन यदि क्रिया वर्जित ७ सुष्ठित  
थाके, चक्र रक्त वर्णेर अभिमुखीन इहेलेहे मन  
चकल ७ बापाटेर धबड इहेवे । श्यामवर्ण चक्रूची  
वृत्ति द्वारा मनके दृष्ट करिया देय । हेहावाध-  
हर अनेकेही अनुभव करियाहेन, हे चित्त यथन  
उद्बुजित हर, गेहे गमरे एकान्न ग्रहित अनरुक्क  
हार आकाश मध्ये विश्राम करिले चित्त सहजेही  
स्थिर इहेया आसे । श्याम वर्ण धारणा द्वारा  
उद्बुलित चित्त चकलीभूत चित्त येन सुरे सुरे दृष्टी  
भूत इहेते थाके । श्वेत वर्ण चक्रूक वड अधिक  
परिमाणे आकर्षण करिते पावेना अथवा  
आकर्षण करिते आदो असमर्थ बलिले ७ हर ।

सेतारेंर सङ्ग्रेज तार येमन अल्प आघातेही  
बहु दूर पर्यन्त विचलित हर शिथिल भावे येमन  
एकवार ए दिक, एकवार ७ दिक यातायात करे,  
मन अथवा मनरे वृत्ति सकल लोहित वर्णेर  
संश्रव गांजेही वा सामान्य चिन्ता द्वाराही विचलित  
वा बापारोदित इहेया उठे । सेतारेंर पक्षमेर  
तार आवार येमन सबले आघात करिले ७ शीघ्र  
विचलित हरना, मन २. कम्पित हडेवे वटे ; किन्तु  
शिथिल भावे नहे, तद्द्वारा श्याम वर्ण चिन्तने मन  
एत दृष्ट हर ये ताहाके चालित करिले से  
कम्पित इहेया ७ चकल स्वभाव प्रीण हर ना ।  
शुक्ल वर्णे आकर्षण शक्ति नाई, मूहरां चित्त तद्द्वारा  
विशेष उद्बुजित हरना । यांशारा आध्यात्मिक  
गुह्यतत्त्वदर्शी, उागारा निज २. सूक्ष्मादिसूक्ष्म दर्शन

सांख्यतंत्र है । पूर्व पूर्व संख्या के पठन से वर्ण  
अनुभव करने के बारे में पाठकों थोड़ी बड़त  
हमारे विदित होचौ चूके हैं अब किसी २  
वर्ण के किसी किसी गुण को विशेषता से  
मनुष्यके मन में किसी रीति क्रिया होनी है  
सी विचारना चाहिये । आकर्षण करने की  
शक्ति रक्त वर्ण में अधिक है । यह वर्ण  
अन्यान्य वर्णों से अत्यन्त प्रबल है, जहां एकट्टे  
बड़त स वर्ण रहते हैं, वहां देख लीजिये कि  
उन में सरक्त वर्ण चक्षु के द्वारा मन को  
प्रथमेही अपने ओर खचलेगा । मन की  
चालायमान करने की शक्ति रक्त वर्ण में  
विद्यमान देख पड़ती है । मन यदि क्रिया  
वर्जित वो स्थिति बने रहे, रक्त वर्ण के आर  
दृष्टि गिरने ही से मन चंचल वो कार्य में प्र-  
वृत्त हो जायगा । श्याम वर्ण का यह गुण है  
कि चक्षु का दृष्टिको द्वारा मन को दृढ़ बना  
डालता है । बोध होता है, कि बड़तेरे जन यह  
अनुभव किये होंगे, जो जब चित्त उद्बुजित  
होता है उस समय प्रकाश रहित वो द्वार बंध  
की ऊई कोटरों में विश्राम करने पर चित्त  
सहजे ही स्थिर हो आता है । श्याम वर्ण की  
धारणा से उद्बुग प्राप्त हुआ चित्त चंचली भूत  
चित्त मानाये कि क्रम से दृढ़ता की प्राप्त हो  
जाता है । श्वेत वर्ण चक्षु को अधिक परिमाण  
आकर्षण नहीं कर सकता है, अथवा यह भी  
कहा जाय तो अधिक नहीं कि श्वेत वर्ण एक  
दम आकर्षण शक्ति से रहित ही है ।

सेतार का जो षड्ज तार है, वह जैसा अल्प  
मात्र ही आघात से बड़ दूर तक विचलित  
होता है, शिथिल भाव में जैसा एक वेर इधर,  
एक वेर उधर ऐसी गति होती है, मन अथवा  
मन को दृष्टियां लोहित वर्ण से सम्बन्ध होता  
ही वा सामान्य चिन्ता ही के द्वारा विचलित  
वा क्रिया करने में उद्यत हो जाते हैं । फिर  
यह भी देखिये कि सेतार की पंचम की तार  
जैसा बल से आघात करने पर भी शीघ्र  
विचलित नहीं होता है, वेर २ कंपती रहेगी,  
किन्तु शिथिलता से नहीं, उस भांति श्याम  
वर्ण की चिन्तन से मन इतना दृढ़ बन जाता  
है जो उस की चलाने पर वह कंप कर भी  
चंचल स्वभाव की प्राप्त न होगी । शुक्ल वर्ण

पट्टे चक्रुः द्वारा परीक्षा करिया। दोथायाहेन ये प्राणि मनुष्येन चक्रुः, नासा, अङ्गुली, मस्तकानि हतेते नाना वर्णैर धत्तान् अनवरत निर्गत हट्टया याहेतेहे। क्रोधन शब्दाव अङ्कृत, मूलवृद्धि, अनङ्कित बाहिर मस्तक हतेते येन गात्र रुग्ण वर्णैर आभा प्रवाहित हतेतेहे, कायक गणैर मस्तक हतेते द्वेष्टं लोहित, तपसावान् महाभार मस्तक हतेते क्रोधादिर आभा, विश्वामी भक्तैर मस्तक हतेते श्यामलाभा, निर्विकार चित्त, आनन्द पूर्ण मानवैर मस्तक हतेते शुद्ध आभा उर्ध्व श्रोत्रे श्वाशित हट्टया याहेतेहे। विशेष २ प्रकृतिर विशेष २ रूपं ओ विशेष २ वर्ण आहे। एहे गम्भीर गवेषणार अन्तःपुर दियाहे अन्तः शक्तू शाली महाका गण, राग र गिनीर अभूर्ति दर्शन करिया जगते प्रचार करियाहेन। याहा प्रकृति हतेते उद्भूत, ताहा रूप निश्चित हतेवेह हतेवे। प्रकृतिर कोन शक्तिहे रूप ओ गुण वर्जित नहे। मन्त्र, रजः ओ तमोगुण मयी प्रकृति अर्थात् महाभाया हतेतेहे सृष्टि, स्थिति ओ प्रलय कारिनी शक्तिद्वयैर तर्थात् ब्रह्मा, विष्णु ओ महेश एतन्त्रिणैर आविर्भाव ओ विकास। ईहारा रूप ओ गुण निश्चित, ओहै राहे रूप ओ गुण मूलक जगतेर अस्ती, पाता ओ मंहर्ता; ईहाराहे सृष्टि, स्थिति ओ विनाश मय्य शील जीवैर उपाया।

निद्राकाले आमादेर मन ओ तमोनीन रति सकल क्रिया वर्जित ओ सुषुप्त अवस्थित करेः विशेषतः संसारैर विविध व्यापार ओ चिन्ता द्वारा मनैर पवित्र भाव सकल नितास्त आतड्ड हट्टया अन्यान्य समस्त चिन्तार अमस्तुले मूर्च्छित थके। निद्राहतेते जाग्रत हट्टयागात्र पवित्र तेज, पवित्र बल पवित्रभाव, पवित्र प्रवृत्ति संग्रह ना करिया संसारकार्यो उद्यत हट्टिले आमा समस्त विघ्न बाधा अतिक्रम पूर्वक किरूपे संसार समुद्र मग्न करिया अमृत लाभ करिते मग्न हट्टिव। एहे जना मनै विशुद्ध वीर्यैर उद्भावना ओ उद्दीपना करिवार

में आकर्षण शक्ति है जो नहीं अतएव क्लृप्त उम से उद्देजित नहीं होता है। जो लोग आध्यात्मिक गच्छा तत्व को जानने चरे हैं। उन्होंने कि निज निज नेत्रों से जो कि सूक्ष्म से परम सूक्ष्म दार्थों को देख सकत हैं, परीक्षा कर देख चके हैं कि प्रति मनुष्य की नत्र नामा, अंगुली, मस्तक आदि से भक्ति वर्ण का तेज धुआं की तरह मलाई निकल जाता है। जिने बड़े क्रोध या अहंकरतया, स्थूल बद्धि अथवा मुढ़ है, उम की मस्तक पर से गाढ़ा एक प्रकार के क्षुब्ध वर्ण तेज प्रवाहित होता है, जिस ने बड़ा कामुक है उम की मिर पर से फिकानाल, तपस्वा महात्मा के मिर परसे उज्ज्वल तेज, निष्वासा भक्त के मिर पर से श्यामल वर्ण का तेज, जिन का चित्त विकार वर्जित है वो आनन्द से पूर्ण है उन के मस्तक पर से खेत प्रभा ऊर्ध्व प्रवाह से उड चकी जाती है। भिन्न प्रकृति का भिन्न रूप वो भिन्न वर्ण है। इस गम्भीर गवेषणा अर्थात् शास्त्रानुसन्धान ही रूप दर्पण के द्वारा अन्तःपुरवाले महात्मा लोगोंने सुखर के भी मूर्ति देखकर संसार में प्रचार किया है। प्रकृति से जो कुछ उत्पन्न हुआ वह अवश्य ही रूप विगिष्ट होगा। एस कोइ शक्ति प्रकृति को नही है, जिस का रूप वो गुण न होगा। मत्व, रज वो तमोगुण मयी प्रकृति अर्थात् महाभायाही से सृष्टि, स्थिति वो प्रलय करने वाली तीनों शक्ति का अर्थात् ब्रह्मा, विष्णु, वो महेश इन तीनों का आविर्भाव वो विकास हुआ है। ये तीनों ही रूप वो गुण विगिष्ट है, ये तीनों ही रूप वो गुण से भासित होना हुआ जगत के सृष्टा, पाता वो मंहर्ता हैं, येही सृष्टि, स्थिति वो विनाश मय्य शील जीवों के उपाय्य हैं।

मो जानै पर हमारा मन वो उम के अधीन वृत्तियां सब क्रिया रहित वो सुषुप्त पड़े रहते हैं, विगिष्ट, संसार के भांति भांति के कार्य वा चिन्ता करके मन के पवित्र भाव सब निपट अभिमूत हो के सारी चिन्ता मे दबे हुए अचेतन पड़े रहते हैं। निद्रा से हम जागतेही पवित्रतेज, पवित्र बल, पवित्र भाव, पवित्र प्रवृत्ति के संग्रह किये बिना यदि संसार के कार्य में उद्यत हो, तो किस उपाय मे हम समस्त विघ्न बाधा अतिक्रम पूर्वक संसार समुद्र को मग्न करके अमृत पा सकेंगे? इस लिये मन में विशुद्ध वीर्य को उद्भावना वो उद्दीपन

जन्म, त्र्यम्बु मुक्ति-पात्र-पवित्र तेजो  
राशिके कार्य। केन्द्रे पुनरुत्थित करिवार जन्म  
निष्क्रिय चित्तके क्रिया शील करिवार जन्म प्रभाते  
ऋतुवर्ण वस्त्रादि पवित्र मूर्ति धारण ओ तज्जन्म।  
दुष्कार ध्यानादि द्वारा मनोवृत्ति निवृत्ति पवित्र भावे  
सकलित ओ क्रिया व्यापारे अरुत हईले एवम्  
क्रमणः वृत्ति सकल सम्पूर्ण शक्ति स क्रिया कारते  
मार्तुण्डेय अथवा कर्ण मालाय यथन नितांतु  
उद्बलित ओ पूर्ण मात्रा प्राप्त हय तथन तत्तावत्के  
घनीभूत-दृढीकृत वा धिरतावापन्न करा अथास्त  
आवश्यक, एही जन्म मयादेह मनोहर श्याम  
सुन्दर विष्णु मोहन मूर्ति ध्यान करा विधेय।  
किन्तु उक्त दृढीकृत मयूचित्त भाव मर्स्वना थाकिले  
कायादेहे वृत्ति निवृत्ति निज २ कार्योत्तर पर्याय  
मगरे स्फुरित हईते कष्ट अनुभव करे, अर्थात्  
वृत्ति मयूहके किफित शिथिलीकृत अथवा निरुद्धेय  
कारण देवता ओ सरल अवस्था आनयन करा  
नितांतु प्रयोजन हय। तज्जन्मई सकलसमागमे  
रजत गिरिनिभ नितांतु निम्न महादेवके शुद्ध  
मूर्ति ध्यान करा विहित। एही समयेई वृत्ति मयूह  
अच्छन्द भूह, मयूह ओ सरल भावे कार्य करिते  
थाके।

एतन् पाठे हयतो केह २ मने करिते  
पाठेन ये मनके विचलित वा क्रियेन्द्रिय, घनी-  
भूत वा दृढीकृत एवम् शिथिलीकृत वा सरल  
करिवार जन्म यदि रजत, श्याम ओ श्वेत वर्ण  
परिचिन्तन वा ध्यानेन प्रयोजन हय, तवे तत्  
वर्ण के कोन पदार्थ विशेष चिन्ता करिलेई से  
उद्देश्य सिद्ध हईते पाठे। पाठक महादेव गण !  
मनेर उक्त कयेक प्रकार अन्ध परिचिन्तनई  
जीवनेर उद्देश्य नहे। विशेष २ वर्ण प्रभावे  
अन्ध ई अवस्था काल आमादेर जीवनेर गुरुतर  
साधनेर उपयोगी उपादान मात्र जानियेन।  
पुन २ मयूहय अर्णित हईर हई ये ईश्वरेर  
भिन्न २ रूप चिन्ताय भिन्न २ भावेर उद्देश्य ओ भिन्न २  
फल लाभ हय ओ मने आनन्द श्रोत वसिया यय।  
आमादेर प्रति कार्यो, प्रतिपद विक्षेपे, चिन्ता  
प्रति तरङ्गे भगवद्भक्तिर उद्देक करा अति

करणार्थ मोवा हय। अचत पडा हय।—अभिभूत  
दशा प्राप्त हय। पवित्र तेज राशि को कार्य जे  
मे फिर प्रवृत्त करने के लिये, निष्क्रिय चित्तको  
क्रिया शील करने के लिये प्रातः काल में रक्त वर्ण  
ब्रह्माजी के पावन मूर्ति का ध्यान वा भजन अवश्य  
करणीय है। ब्रह्माजी के ध्यान आदि से मन को  
वृत्तियां पवित्र भाव से संचालित हो क्रिया में  
प्रवृत्त होने पर जो वृत्ति सब क्रम क्रम सम्पूर्ण  
शक्ति से क्रिया करते रहने पर जब सूर्य के प्रवल  
किरणों से निःशुद्ध हो पूर्ण सोमामे जा  
पहुंचे, उस समय उन सब की घनीभूत—दृढी-  
कृत वा स्थिर भावापन्न करना अत्यन्त आवश्यक  
होता है, इस लिये मयूह काल में मनोहर  
श्याम सुन्दर विष्णु महारज के मोहन मूर्ति ध्यान  
करना विधेय है। किन्तु कथन रूप से दृढीकृत  
संकुचित भाव सदैव रहने से वृत्तियां सब कार्य  
जे में निज निज कार्य की समय फुरने में कष्ट  
अनुभव करेंगे इस लिये वृत्तियां को थोड़ी सी  
फिर शिथिल यादि अथवा निरुद्ध कर देना वा  
सरल अवस्था में लेखना चाहिये। इस हेतु संख्या  
के ध्यान पर रजत गिरिनिभ नितांत निम्न  
महादेव के शुभ्र मूर्ति ध्यान करना विहित है।  
इसी समय वृत्तियां सब स्वच्छन्द, आनन्दयुक्त, संयत  
वा सरल भाव से कार्य करते रहते हैं।

इतना पढ़ कर किमो किमो ने शंका करेगा कि  
मन को विचलित वा क्रिया में उद्यत, घनीभूत वा  
दृढीकृत वा शिथिल वा सरल करणार्थ यदि रजत,  
श्याम वा श्वेत वर्ण को चिन्ता वा ध्यान करना हो  
तो उमो उमो वर्ण के और किमो पदार्थ को  
चिन्ता करने से भी तो अभिप्राय सिद्ध हो सक्ता है।  
है पाठक महादेव गण ! पूर्य कथित रूप के  
प्रकार को अवस्था का परिवर्तन का ही जीवन का  
सहस्य नहीं है। उन अवस्थाओं का जो कि भिन्न २  
वर्ण के प्रभाव से उत्पन्न होता है, हमारे जीवन  
के गुरुतर सहस्य साधन का उपयोगी उपादान  
करक जानना। पूर्य २ संख्या में यह देखाया गया  
कि ईश्वर के भिन्न २ रूप को चिन्तन से भिन्न २  
भाव का उद्भव होता वा भिन्न २ फल मिलता है वा  
मन में आनन्द का प्रवाह बह जाता है। हमारे  
प्रति कार्य में—प्रति पद चरण में—चिन्ता के प्रति

आत्मिक, जेना भक्ति द्वारा जीव क्रमशः स्वकीय लोभ करिते सार्थक है। अर्थात् ये कोन कारणोंसे वापसी करवावेन, ताहार गुण उद्देश्य। उगना प्रेम लोभ उ गौण उद्देश्य। शरीर, मन उ गणादेर अछन्दता। सूत्र १९ उगनादेर मन यदि काँट, उद्वेग, क्रियाशून्य, उ सुख न। हरेन, तब ताहार जन्य अतः अयत्न करिष्य। जीवनेर एक उद्देश्य संसाधित हैवे ?

पाठक ! कनकर चारा अखुत करिनार अनायो देखावेन। अथगे एकटी वृक्षर एकटी पल्लव उद्वेग हैवे छेदन पुनिक अपर वृक्ष मंगल उ वृक्ष करिष्य। देखा है। छिन्न पल्लव जीवनी वृक्षशाखा मंगल शाकिष्य, ताहारै रम आकर्षण पुनिक धीरे २ पुष्ट उ वृद्धि हैवे थाके, किन्तु अन्तर है ये है पल्लव ये वृक्ष हैवे छिन्न हैवे ताहारै उग लोभ करिष्य, किन्तु याहार रम पुष्टि उ वृद्धि लोभ करिष्य ताहार कर्षण उ अकृति अहं करिष्य। हेतु कारण कि ? अथगे पल्लव ये वृक्षर रम कर्षण छिन्न उ अथगे हैवे ये रम आकर्षण करिते निशियाछिन्न, तद्वत् रम अहं करिष्य ताहार अभाव वा अहं छेदना अनाछ। ये यदि अथगे भिन्ने रम टोनिदे निशिया थाके, तब भिन्ने रम आकर्षण करिष्य ताहार अहं हैवे निशिया छेदना, अथगे ताहार अन्तरम वृक्ष वृक्ष अर्थात् राशिदेन उ ये ताहार अर्थात् अन्तरम अन्तरम छेदना अन्तरम है (गर्भ उ अन्तरा मिश्रित आछे) अहं उ अन्तरा दूषित अन्तरा टूटू परिहार करिष्य। अतद्वत् मन अहं आछे, अन्तरा उ अन्तरा अहं अहं यदि उगनादेर पवित्र शास्त्र अन्तरम आकर्षण करिते २ उग आपनार अहं करिष्य लभ, उद्वेग ये ये कोन कारणे केन अहं हैवे ना, ताहार हैवे ये उगनादेर अहं अहं अहं अहं करिष्य। अहं रम ये पुष्ट, वृद्धि उ अकृति हैवे जीवनेर मार्गकता साधन करिष्य।

क्रमशः

तरंग में भगवत् भक्ति को जागाना अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि भक्ति करके क्रमे क्रम जीव को ब्रह्म पद भी मिल सकता है। आर्य सज्जनगण जिस किसी कार्य को व्यवस्था कर गये भगवत् प्रमत्त उमका मुख्य उद्देश्य वो शरीर, मन वो समाज का कल्याण उम का गौण उद्देश्य माने गये। अतएव भगवत् भाव से मन यदि जाग्रत, उद्यत, क्रियाशील वो सुस्थिर न हुआ तो तदर्थ इतना प्रयत्न करके जीवन का कौन सा उद्देश्य सिद्ध होगा ?

पाठक महाशय ! गाढ़ का कमल बनाने की रीति आप देखे ही होंगे। पहले एक वृक्ष के एक पल्लव को उस वृक्ष से छेदन करके दूसरे एक वृक्ष पर लगा कर बंध दिया जाता है। किन्तु पल्लव दूसरे वृक्ष के शाखा पर रह कर उसी के रस खींच के धीरे २ पुष्ट वो वृद्धि होता रहता है। किन्तु आश्चर्य यह है, जो पल्लव जिस वृक्ष से कटा गया वह उसी वृक्ष का गुण प्राप्त होता है, किन्तु जिस के रस से पुष्ट होता वो बढ़ता गया उस की प्रकृति कुछ भी न लिया। इस का कारण क्या है ? पल्लव पहले जिस वृक्ष के रस से उपजा था वो पहले ही से जिस रस को खींचने सिखा था, उसी भाँति रस लना उस का स्वभाव वा धर्म बन गया। पहले यदि वह मिठो रस खींचना सिखा हो, तो मिठो रस खींचना ही उस का धर्म बन गया। अब उस की अम्ल रस युक्त वृक्ष पर आरुढ़ रखने से भा वह निज धर्मानुसार अम्ल रस से मधुरांश को (जो कि उस में मिला हुआ है) ग्रहण वो अम्लता करके दुषित भाग को परित्याग कर देगा। इस रीति से मन प्रति दिन प्रातःकाल, मध्याह्न काल वो संध्या के समय में भक्ति पूर्वक यदि भगवत् की पवित्र शान्ति सुधारस पौते २ उसी की अपना धर्म समझ लें तो फिर चाहे जिस किसी कार्य में प्रवृत्त हो जाय, उस से वह भगवत्-भाव-साधु भाव-आनन्द रूप अमृत हो लाभ करेगा। भक्ति रूप रस से वह पुष्ट, वृद्धि वो प्रफुल्लित होकर जीवन को सफल कर लेगा।

शेष आगे।



## (प्राप्त) शिवरात्रि ।

चतुर्दशी निश्चित भारत में येन कि एकंटी आ-  
लोक दृष्टि गोचर हुई। आज शेष रात्रिमें  
अस्ताचल गत ज्ञान शशधर येन एकंटी ज्योतिः  
हृदये विकसित करिमा दिनेन! आज समस्त  
कार्यालय बन्द, आर्याधर्मोपग सांसारिक सर्व  
कार्य परिहार पूर्वक कोन् पवित्र आनन्दे मत्त ?  
आज विश्वेश्वर के साक्षात् शैव, शाक्त, वैष्णव,  
गानपता, नानकपन्थि आदि सर्व सम्प्रदायों में उपवास  
पूर्वक आशुतोष के आराधना के निशि पालन रूप  
कठोर व्रत उद्घोष पान करि लेन। आज जन समाजे  
केवल मात्र “जय विश्वनाथ जी को जय” “शिव शिव  
शम्भु” भिन्न आर किछुई श्रवण गोचर नही रहे।  
आज भारत में कि पवित्र उत्सव ही उपस्थित ! आज  
भारत के आने २ प्रसिद्ध शिवालय समूह नाना  
दिग्देशीय यात्री समूह के समगम नही रहे। एवम्  
तीर्थेन्द्र काशी के जेठ कोलाहल से द्रवा सामग्री के  
परिपूर्ण ७ विश्वेश्वर के मन्दिर लोकार्पण नही  
पाड़िया। पाठक गण ! बलि के पात्र के केन  
आज हिन्दूगण एकत्र कठोर क्लेश शंका करि-  
ते छेन। याहारा शास्त्र विधि शिरोधार्य करिमा  
निज कर्तव्य बोधे ली, ताहारा हो अतीव  
महात्मापुरुष—सूतार, ताहारी के उदाहरण  
वर्तमान आचार भुटे समाजे प्रदर्शन करि लेन  
ताहारे अमर्यादा करा छय। याहारा पुण्य  
कामनाय ली ताहारे कथा छुड़िया दिनेन।  
याहारा अभास वशः करिमा थाकेन ताहारे  
दृष्टान्त देखा के आवश्यक नाई। किन्तु वर्तमान  
समाज समाज याहारा हिन्दू दिने के अतीव क्रिया  
कलाप के “प्रेजुडिस्” बनिमा थाकेन ताहारा  
दिने के जनाई आज आगरा एवम् प्रस्तावे के  
अवतारणा करिमा। वर्तमान शिक्षित समाज  
आज ये अगतीर, मनि विज्ञान आवरण के  
अन्तराले दाड़िया आर्य शास्त्र के विविध वश  
अतीव दुष्ट बोध करि ते छेन, याहारा जन्य  
ताहारा आचार्य के शिक्षित सम्प्रदाय बोधे

## (प्राप्त) शिव चतुर्दशी का व्रत ।

—०—

भारत वर्ष में इस चतुर्दशी के रात्रि में कैसा ती  
एक ज्योति प्रगट देख पड़ा। आज रात्रि के अन्त भाग  
में मनि चन्द्रमा ने अस्ताचल पर आकृष्ट होकर  
हृदय में मानो एक दीपक वर देगया। आज सारे  
कार्यालय बन्द हैं। आर्यधर्मोपग समस्त कार्य छोड़  
कर पवित्र आनन्द भोग के मत्त हो रहे हैं। आज  
विश्वेश्वर के सम्मान में शैव, शाक्त, वैष्णव नानक  
पन्थी आदि समस्त सम्प्रदाय ही विन भोजन किये  
आशुतोष को आराधना में निशि पालन रूप कठोर  
व्रत उद्घोष किये। आज जहाँ जाया तहाँ केवल  
“जय विश्वनाथजी को जय” “शिव शिव शम्भु”, छुड़  
क दुसरी बात का कान में न पड़ती है। हा। आज भारत  
भूमि में कैसा ही पवित्र उत्सव निश्चि देख पड़ते हैं।  
आज भारत के स्थान स्थान के प्रसिद्ध शिवालयों में  
नाना दिग्दिगन्त से यात्रिलोग वे समार चले आते  
हैं। तीर्थेन्द्र, आकाशौ जी कोलाहल वो भाँति भाँति  
के सामग्री से परिपूर्ण सुगोभित हो रही है। विश्व-  
ेश्वरजी के मन्दिर अगति की लोको से समाकीर्ण  
हो गयी है। ये मेरे पाठक सज्जन ! आप कह सकते  
हैं कि आर्य लोग क्यों सहकर आज इस कठोर व्रत का  
पालन करते हैं ? जिन्होंने ने इस लिये करते हैं कि  
शास्त्रविधि की टटना न चाहिये वे तो अत्यन्त भद्र  
पुरुष हैं, हम उन्हें के दृष्टान्त इस वर्तमान अष्ट  
समाज में देखा कर उन्हें को मर्यादा घटाने नहीं  
चाहते हैं। जिन्होंने ने केवल पुण्य को कामना से व्रत  
करते हैं उन्हें वो बात भी छोड़ दीजिये। जिन्होंने  
ने बराबर के अभ्यास व्रत होकर व्रत करते हैं, उन्हें  
के दृष्टान्त भी देखना कुछ आवश्यक नहीं। किन्तु  
वर्तमान मध्य लोग, जिन्होंने ने आर्याजनों को इसी  
रोति क्रिया समूह को “प्रेजुडिस्”, कर मानता है,  
उन्होंने की सेवा के अर्थ आज हमको इस प्रस्ताव को  
अवतारणा करना पड़ा। आज कल के शिक्षित लोग  
जिस विज्ञान की परदे के आड़ से आर्य शास्त्र की  
विधि को व्यवस्था अत्यन्त तुच्छ कर मानते हैं, जिस  
के वल से उन्होंने अपने “शिक्षित सम्प्रदाय”, मान

बुद्धि अत्यन्त उच्च पाठन आज आगरा अर्थात् गणेश गङ्गा गवेषणा कर्म, जगत्तर मनोहर चित्र, उपादिगण ए विष्णु नेत्र ई मन्त्रा दिया देखाईते चेष्टा करिव ये शिवरात्रि प्रयोजन आछे।

एतद्विषय अनुधान करिते ईहेण प्रथमतः ज्योतिर्विज्ञान पर्यालोचना करा आवश्यक। पृथ्वी उ तपस्वि जीव जन्तु सहित चन्द्र, सूर्य उ अन्यान्य एह नक्षत्रादिर किरूप मन्त्र एवं कागतेदे कि प्रकार उपायवर्तन उपायित ईहेण थारु ताहा विशेष रूपे आलोचन करा आवश्यक। पृथ्वी सहित चन्द्र सूर्य गति मन्त्रा ये कि रूप कर्मा उपाय ईहेण थारु ताहा प्रतिदिन (विशेषतः अमावस्या उ पूर्णिमा) गङ्गा ज्योतिर ताहा देखिने सकलैई अवगत ईहेते पावने। शारीरक रस अधिक परिमाण सकल रस दलियाई एही मन्त्रा जलदोषज अधिकारा पानि रक्ति ईहेण थारु। ईहा चिकित्सक गान्धेई मुक्त कष्टे ओकर करिने। एही जनाई मन्त्रावत शत्रु कर्त्तारा एकदशूपनामानि द्वारा शरीर आवश्यक रूपे नोवस करिते पाना करिया गियाछे। अधिकस्तु एही जनाई छानेके अमावस्यादर उत उ करिया थारु। शत्रु परिवर्तन काले एही रूप लक्षण देखा आवश्यक। केनरा उपवास द्वारा सदा क्रियाशील शरीर यन्त्रादि किफि विज्ञान पाईया प्रकृत रस सूर्य उपाय काले परिवर्तने देहेर केन विकार उपाय ईहा प्रष्टे केन प्रकार छान करिते सकल हय ना। किन्तु आचार एउ उपवास पवित्र छाने देवाछना द्वारा करिते पारिले मनः प्रकृतिर आरु ओ अपक उपाय मापित ईहेते पावने। ईहा अमाव्या उपायशीलन परारण पुरुष गणनिरूपण करियाछे। पुनराप उपाय जाना आवश्यक, ये वसन्त काले शरीर रस विकार उपस्थित हय, उपाय एउ काले गात्र कष्ट, वसन्त आदि चन्द्र रोगेरा प्रतिशया दृष्ट ईहेण थारु। एही जना आर्य गण उपायवर्तन उ पायारुद्धर मन्त्रा शत्रु काले "ज्यामिनी" एवं शीतारवर्तन उपाय थारु मन्त्रा सकल

करानरुद्धर मन्त्रा मे फली रहतेई। आज हम आर्य जना को मन्त्रा गवेषणा का फल, धर्मजगत को मनोहर चित्र, उपाय के विज्ञान के मार्ग मे यह देखनान को चेष्टा करे ग कि शिवरात्रि व्रत को विशेष आवश्यकता है।

ये सब बातें पर ध्यान देने के पहलीही श्रुति विज्ञान को आलोचना करनी चाहिये। श्रुति वो उम पर रहनेवाले जीवों मे चन्द्र, सूर्य वो अन्यान्य ग्रह नक्षत्र आदि का क्या सम्बन्ध है वो काल के अनुसार इ मे क्या क्या परिवर्तन होता रहता है ये सब विवेक करके देखना चाहिये। पृथ्वी मे चन्द्र सूर्य को गति के संबंध करके क्या फल उपजता है सो प्रति दिन (विशेषतः अमावस्या वो पूर्णिमा मे) गंगाजी को ज्वार वो भाटे देखने मे प्रतीत होती है। गंगा मे रसांश बढ़ जाता है इसो मे गंगा मे उस समय रसांश बहुत सो धिमा हो बढ़ जाती है। चिकित्सक मात्र ही इस बात का उपयोग करेंगे। इसो लिये महानुभव शास्त्र कर्त्ता सोने एकादशी आदि के दिन मह कर शरीर को सुखाने को व्यवस्था दी है। अधिकस्तु इसो लिये बहुतेरे मन्त्र अमावस्या आदि का भी व्रत करते हैं। ऋतु परिवर्तन के समय इस श्रुति एक भाष दिन मह लेना अत्यन्त आवश्यक है। क्यों कि शरीर के यंत्र सब सदैव क्रिया करते करते थक जाते हैं। मध्य मे कांक्षित विश्राम करने पर वे सब प्रकृतिस्थ हाजाते हैं। फिर समय के परिवर्तन से कोई विकार शरीर के स्वास्थ्य को हानि नहीं कर सकता है। किन्तु यदि कोई निरश्रय के देवत को पूजा पवित्रभाव मे कहें तो उस से उ को प्रकृति को उन्नति अधिक हो सकता है। अत्यात्मतन के जाने हारे मन्त्रों ने इसको भलि भांति सिद्धान्त कर चुके। पुनराप यह भी जानना चाहिये कि वसन्त ऋतु मे शरीर मे रस-विकार उत्पन्न होता है, इस लिये इस ऋतु मे गात्र कंड, माया को विमरो आदि चर्म रोग अधिक देख पड़ते हैं। इस हेतु से पार्थ गण योष के अन्त वा शीत के प्रारम्भ इन दोनों के संविधान शरत ऋतु के जन्म स्थली मे भी शीत के अन्तर्वा योष के प्रारम्भ इन दोनों के संवि-

वसन्त ऋतु "शिव रात्रि" उत्तम व्यवस्था प्रचलित करिष्ये गिर्ये ह्येन । एतच्छ्रुत्वा गन्धर्व, उपवास, पूजादि विधेयः एकत्रैव जिज्ञासां करितुं पादरेन । एतन्मये अनादेवोपायना नाहंसा महादेवतः आराधना इहेतः उद्देश्य किं ? ये देवतारं ये शक्तिं अहं मेहै शक्तिं लब्ध करिष्ये अति-प्रायेहै मनुष्य गण उहं अर्चना करिष्ये थाकन । एतन् वसन्त काले मनुष्य गण नानावृत्त सकलेश्वर आत्मिक शक्ति विशेषतः कामादि वृत्ति सकल अतीव प्रबल इहेतः । उहेतु मनुष्यः एकत्रैव काश्वर उपासनां करिष्ये एहै सकल अनर्थ इहेतु उद्देश्य इहेतु पारा गार ? निश्चयै महेश्वरतः महेश्वर अनायास वृत्त्या । यिनि दृष्टि गारैहै कन्दर्पकै वृत्त्या उद्देश्य करिष्ये ह्येन, यिनि वृत्त्या उद्देश्य, यिनि निव पारिपाक करिष्ये नालकै, यिनि आशुतोष, एतन् वसन्त मनुष्य गण शिव रात्रि अतिष्ठित इहेतः पारकन, यिनि भिन्न एहै रामोत्तम जननी वसन्ती प्रकृतिर तीव्र शर इहेतु के रक्षा करिष्ये ? किरितल्लिखता, आरागा, दीर्घ जीवन, अनामय अदिश्र प्राथी इहेतः निवपाना निवपाने आराधना ना करिष्ये आर काश्वर करिष्ये ?

एहै वसन्त काले शिव रात्रि उत्तम गन्धर्व पूजा करिष्ये जीव शिव रूप पारकन करिष्ये । शिव मनुष्य गण शिव । गणेश अकल प्रबल वेग उपासकके उपासनां करिष्ये ।

गुणेश्वर आ, म, प्र, मन्त्र

शिव गणेश्वर नाथः शिव गणेश्वर वृत्त्या ।

(पूर्व प्रकाशित क आगे)

यिनि उद्देश्य मनुष्य गण पारकन शिव गणेश्वर उत्तम रूपी नोका आराधना करिष्ये । एहै वसन्त ७१ मनुष्य पारकन शिव गणेश्वर ।

महात्मा तुलसी दासजी रामायण एक श्रुति करिष्ये ह्येन—

इह तन् कर फल विषय न भाई ।

अर्गळ स्वप्न अन्त दुःख दायी ॥

नर तनु पायी विषय मन देहि ।

पलटि सुधाते षठ विष लेहि ॥

एतन् वसन्त मनुष्य गण शिव गणेश्वर उपासनां करिष्ये ।

स्थान वसन्त काल में शिव रात्रि उत्तम व्यवस्था करे गये हैं । इन अवसरों में मंत्र, उपवास, पूजा आदि करनी चाहिये ।

अब किसीने यह पूछ सकता है, कि अन्य देवता को छोड़ कर इस काल में महादेवजी की पूजा क्यों होती है ? यह मिथ्याज्ञा है कि जिन देवता में जो कुछ शक्ति रहती है, उसी शक्ति मिलन को आया से मनुष्य उन देवता का पूजते हैं; भी इस वसन्त काल में मनुष्यों की मन की वृत्तियां अधिक स्फुरित होती हैं; विशेषतः काम आदि रिपुगण अत्यन्त प्रबल होते हैं, कहिये अब कौन देवता का पूजने पर इन मनर्थों से मनुष्य बच सकते हैं ? एतदर्थ महादेव जी की महात्म्य अवस्था ही करणीय है । जिनने अपनी दृष्टि के तज में कामदेव को भस्मी भूत किया, जो स्वयं सृष्ट्यज है, जिन्होंने कालकुट को पोकर नीनकंठ करके प्रामद रूप आशुतोष जिनका नाम है मंगल के आलय, इसीलिये जिनका नाम "शिव" है उन्हें छोड़ के, इस वसन्त प्रकृति के, जो कि रस उत्पन्न करनेवाला है, चोखेवाणों से कौन बचते । जितेन्द्रियता, आरोग्य, दीर्घ जीवन, अनामय, आदि को जिनोंने चाहते हैं, वे विष्णु-शरजी का आराधना छोड़ कर फिर किस की पूजेंगे ?

इस वसन्त काल के शिव रात्रि की दिन मंत्र पूर्वक शिवजी की पूजा करने से जीव शिव रूप बन जाते हैं अर्थात् शिव के समान गुण विशिष्ट हो जाते हैं । स्वल्प कष्टादि से रहित मन की प्रबल वेग उपासक को उपास्य के समान बना देती है ।

मुंगेर आ, ध, प्र. सभा में श्री बाबू

महेन्द्रनाथ रायजी की वक्तृता

(पूर्व प्रकाशित क आगे)

जिसने दुर्लभ मनुष्य जल पाकर योग्य के चरण रूपी नाव को आश्रय कर संसार समुद्र के पार न उतर जावे वही आत्म घाती है । महात्मा तुलसी दासजी ने रामायण के एक स्थान में कहा है—

यह तन् कर फल विषय न भाई ।

स्वर्ग स्वप्न अन्त दुःख दायी ॥

नर तनु पायी विषय मन देहि ।

पलटि सुधाते षठ विष लेहि ॥

इस सुन्दर मनुष्य का शरीर विषय सुख

अन्य आसरा पाईना है। एमन कि अर्गयुग ईश्वर निकटे गति डूख आर शेष दुःख नाशक। कारण "कीर्णे पुण्य मर्त्तामाके विमल्लि" पुण्य कय हईनेहै अर्ग हईते अर्धःपतन उर। एमन नर तनु पाईना ये विषये मन दस्य ओ विषय सुदथ मत्त हय मे अर्ग परिताग क री। गगन ग्रहण करे। ईश्वर अमाग आर ओ अनेक हाने अग्नि-राहि ओ अग्नि आसितेहि किछु दुर्भाग्य वशत जानिना अग्नि आओ मेहै विषय विषयानन्द उप डेगेहै उग्रत रहिनाहि। उग्रतके येमन केह कोन कथा बलिने अथवा कोन उपदेश दिते ताहा। से धारणा करिते अकम हय मेहै रूप महाश्री दिनेर उदार ओ नीतिगर्भ उपदेश सकल आमादेर पूर्ण रुदये अर्थ विषय छिटा द्वारा पूर्ण रुदये ज्ञान पाईतेहै ना। मेहै जन्य बलिनेहि एकवार अग कादेर जन्य निश्चित हईना निज २ अवस्था उपर ओ आपन २ कर्तव्य कर्तव्य उपर दृष्टि करिना देख। एमन ओ मग्न आहै एमन मग्न गेदेर भेला करिना शरीर ओ ना। भेसे पश्चात्ताप करिते हईवे आर तथन कोन कलादस हईनेना। कि उपाये आसरा एहै आसन्न विपद हईते उद्दीर्ग हईते पारि ताहाहै चिन्तनीय। यांशदिनेर चित्त किछि परिमाणे मंसार हईते अवसर लईराहै ओ यंशरा मग्न २ निज निज कलाग कागनाय तीर्थाटन। लठ ओ डगव २ अगानुकार्जन ओ अवरण आग्रह आकाश करिना पाकेन, यांशदिनेरकेहि किछु बलिवार इच्छा करितेहि आर यंशरा मंसार मूढकेहि एकमात्र जीवनेर प्रमान उद्देश्य जानिना विषय मूढकेहि उग्रत उद्देश्यके निम्न कि करिव ? यांशरा एमन कथा मशग कर्नात करिनेना।

अग्र कार्य अनेक विषय बुद्धिमानगग उज्जना भोज २ ताहा मान करिना लयेन। कारण

भोगने के लिये हम को न मिला, अधिक क्या, स्वर्ग का सुख भी इस के साम्हने अतीव तुच्छ वा अन्त दुःखदाई है, क्योंकि "क्षीणे पुण्ये मर्त्यलाक विशन्ति", पुण्य क्षय होने पर स्वर्ग पर से फिर धरती में आने पड़ता है। इस नरानु पा कर जिसने विषय में फँस जाता है वो विषय सुख में मग्न होता है, वह अमृत छीड़ के गरल पीता है। इस को प्रमाण कितने स्थानों में सुना गया वो सुना जाता है, किन्तु अभाग्य यह है कि जानबुझ के भी हम विषमय विषयानन्द भोगने को में उन्मत्त रहे हैं। उन्मत्त मनुष्य को यदि कोई कुछ कहे वा उपदेश करे तो वह उनकी बात पर ध्यान नहीं दे सकता व उसी रीति महात्माओं की नीति पूर्ण उपदेश हमारे भरे हृदय में अर्थात् विषय चिन्ता से भरे हृदय में स्थान नहीं पाते हैं, इसी लिये हमारी प्रार्थना है, कि निज २ अवस्था पर वो क्या करनीय वो क्या अकरनीय है उस पर सब कोइ क्षण भर के लिये भी ध्यान दें। अब तक अबसर है; ऐसा शुभ समय पा करके काम में अबहेला न करना। कौन उपाय करने पर हम इस उपस्थित आपत् से बच सकते हैं, सी ही चिन्तनीय है। जिन्हीं के मन संसार से थोड़ी बज्जत अबसर पाई है वो जिन्हीं ने समय समय में निज २ कल्याण की कामना करके तीर्थाटन, व्रत भगवत् गुण कीर्तन वो अरण में आग्रह करते हैं, उन्हीं को कुछ कहने की चाहते हैं औ जिन्हीं ने सांसारिक सुखही को केवल जीवन धारण का प्रधान उद्देश्य मान रखा वो विषय सुख में मग्न रहा, उन्हीं को कहने पर फिर क्या होगा ! उन्हीं ने उन बातों पर कुछ भी ध्यान नहीं देंगे। अथे कार्य में अनेक विघ्न हैं। बुद्धिमानों ने इस लिये अथ कामों में बड़ो शीघ्रता करती है। क्योंकि जीवन को कुछ भी स्थिरता नहीं। प्रति मूर्च्छा ही में काल जीवन की संक्षेप कर डालता है। अतएव हे भ्रातृगण ! व्यर्थ दिन न बीताना चाहिये। सब जन सर्वथा तैयार बने रहो वो अपना २ कल्याण कर लो।

मनुष्य शरीर मिलना परम दुर्लभ है। अब सोचना चाहिये कि किस साधन से कलियग

এ জীবনের কিছু গাছ স্থিরতা নাই। কাল প্রতি মুহূর্তেই জীবনের হুম কঠিতছে। অতএব জাতবর্গ! আর তথা দিন নষ্ট করা উচিত নহে সকল প্রকৃত চণ্ড ও আপন ২ কলাগ সাধন করিয়া লও। এমন জন্য আর পাইবে কি না তাহার স্থিরতা নাই। এখন ভাবিয়া দেখ কোন্ সাধনে জীব এই দ্বার কলিকাতা অনায়াসে উদ্ধার হইতে পারে। কারণ আমরা যেকোন অলগ ও উৎসাহ হীন হইয়া পড়িয়াছি তাহাতে যে কোন প্রকার প্রাণারাম আদি কঠিন সাধন আমাদের দ্বারা হইয়া উঠিবে একরূপ বোধ হয় না। আমরা মনে করি যে যদি কেহ আমাদেরকে একটি সহজ উপায় বলিয়া দেয় তবে আমরা গেই প্রাণীভে চলিয়া পরম পদ প্রাপ্ত হই। কিন্তু আমরা যেকোন শিথিল প্রকৃত তাহাতে সম্পূর্ণ অন্তরের সহিত ভগবৎ ভক্তি করিতে পারি না, কারণ যথার্থ যদি আমরা তাঁহাকে পাইবার জন্য ব্যাকুল হই ও প্রাণ যদি যথার্থ তাঁহার জন্য কাঁদে, তাহা হইলে তিনিই নির্দয় মন, তাঁহার একটি নাগই দয়াময়, তিনি তখনই তাহাকে স্নেহের সহিত আপনার কোড়ে স্থান দেন। কিন্তু তেঁ, কয় জন আমাদের মধ্যে যেকোন করিতে পারিতেছি। যত দিন না সকল প্রকার বিষয়ের আশা ভরসা ছাড়িয়া কল্পমনে থাকে তাঁহার শরণাগত হইতে পারিবে তত দিন তাঁহার কৃপা লাভে আমরা বঞ্চিত থাকিব, তত দিন আমাদেরকে নিরাশ্রয় অনাথের ন্যায় পিতৃ মাতৃ হীন শিশুর ন্যায় এই সংসার অরণ্য অশেষ ক্লেশে দিনপাত করিতে হইবে ও জন্মমৃত্যু রূপ বন্ধন প্রাপ্ত হইয়া থাকিতে হইবে। জাতবর্গ! যদি জগতে যথার্থ কলাগ চাও ও যদি মনুষ্য জন্মের সার্থকতা চাও ও যদি অনন্তমুখ, ইন্দ্রিয়লৌকিক ও পারলৌকিক সুখ উপভোগ করিতে চাও, যদি গিঠা মাঠ ও জগত্তমির মুখ উজ্জ্বল করিতে চাও, তবে জাগ্রত চণ্ড এখনও সঙ্গম আছে, তাঁহার শরণাগত হও। তাঁহার চরণে শরণ নহলে কোন প্রকার বিঘ্ন বাধা ভোগকে কষ্ট দিতে পারিবে না। শরণাগতের লজ্জা তিনি আপনি রক্ষা করেন। মহাত্মা ভৃগু দাগজী একহাটন কহিয়াছেন—

“জো জাকো শরণ লিয়ে গো রাখে তাকি লাজ।

উপটে-জলে গমলি চলে বহি যার গজরাজ।”

মৎস্য হস্তী অপেক্ষা অতীত ক্ষুদ্র ও হীন বল কিন্তু স্রোতঃস্থতী নদীতে হস্তী পাড়তেও ভাগিয়া যায় কিন্তু অংগা ক্ষুদ্র ও দুর্বল হইয়া স্রোতের বিপরীত দিকে পানারাগে মুখে বিচরণ করিতে

মেঁ জীবী কা অনায়াস উদ্ধার হই সক্ষম হৈ।  
ক्योंকি हम सब जिस भाँति चलसो वो उत्साह वर्जित हो गये हैं, इसे किसी प्रकार का योग अर्थात् प्राणायाम आदि कठिन साधना हम सब से बन नहीं सकती है। हम चाहते हैं कि किसी ने ओकर हम को कोई सहज उपाय बतावे कि जिस से हम अनायास परम पद को प्राप्त हो जाय। किन्तु हमारा प्रयत्न जैसा अल्प है, उसे सम्पूर्ण अन्तःकरण से भगवत् पर हमारी भक्ति उपजती ही नहीं। यदि हम अस्तुगत्या उन को प्राप्त के लिये व्याकुल होते वो यथार्थ हों यदि हम तदर्थ रोंते तो वे भी झूट खेद से हम को गोध पर उठा लेते, क्योंकि वे परम दयालु हैं, भक्तों के समीप उन को कहुणा अपार है। किन्तु हमारी वैसी भक्ति कहाँ? जब तक हम विषय की आशा छोड़कर काय मन वचन से उन के शरणागत न हो सकेंगे, तब ली उन की कृपा कैसे मिलेगा तब ली हम सब को निराश्रय अनाथ के समान पितृ-मातृ हीन शिशु के समान इस संसार रूपी अरण्य के मध्य में अशेष क्लेश से दिन व्यतीत करना पड़ेगा वो जन्म मरण रूपी बंधन में रहने होगा। भाइयों! यदि संसार में यथार्थ कल्याण चाहें, यदि मनुष्य शरीर को सफल करना चाहो, यदि अनन्त सुख, इच्छा-लौकिक वो पारलौकिक सुख भोगन चाहो, यदि पिता माता व जन्मभूमि का मुँह उज्ज्वल करन चाहो, तो जाग उठो, अब तक समय है, शीघ्र ईश्वर के शरणागत हो जाओ, उनकी शरणागत होने से कोई विघ्न बाधा तुम को पाँहावने न सकेगा। शरणागतों को लज्जा व स्वयं निवारण करते हैं। महात्मा तुलसीदासजी ने एक स्थान में लिखा है, कि—

“जो जाको शरण लिया सो राखे ताको लाना

उलट जले मछली चले वहे जाय गजराज।” मछली तो चाहो वे अत्यन्त क्षुद्र वो बल विहीन है, किन्तु बहतो दूर नदी में चाहो भी गिरे तो वह जाता है किन्तु मछली क्षुद्र वो दुर्बल होने पर भी प्रवाह को पकड़ धीरे धीरे बहने से विचर सके हैं, क्योंकि वह



पादर । कारण से ताहार शरणगत, ऐसनकि  
एकदण्डर जन्य ताहाके छाड़ेना सेहै रूप  
ऐसा आगरा सेहै शरणगत रक्तक परमेश्वर  
शरणगत है । ऐहै संगमारे कत लोक अनेर  
शरणगत है । कत विपद हैते उक्तर हैया  
याहेतेहै आर ये सेहै सल शाक्तमान मर्के  
श्वर शरणगत हर ताहार आर भावना कि ?  
उगवान् श्रीकृष्ण अर्जुनके कहियाहिलेन—

सर्व धर्मान् परित्याज्य मामेकं शरणं ब्रज ।

“अहं ह्रीं सर्व पापेभ्यो माकुरिष्यामि मांशुचा”  
शरीर, मन, इंद्रिय प्रभृतिर यावतां धर्म  
परित्यज्य परमेश्वर आगरा है शरणगत है ।  
संगत पाप हैते आगि तोमाके दूख करिब ।  
एकप उगवाने श्रीकृष्ण वचन श्रवण करियाँ कि  
आमादेर आशा मकार हैवेना ? याहाते  
ताहार शरणगत हैते पारितोहार है एकमा  
चेष्टा करा उचित । किन्तु यतकन ना आमादेर  
निजेर निराश्रय अहं जानिते पारिँ यत  
अन ना तिनहै एकमात्र सार आर जगते  
संगत है आगरा एकप मने दूख निश्चय ना  
करिते पारित तत दिन कोन मते ताहार  
शरणगत हैते पारिवना । उर्थां यतकन  
मने यथार्थ विवेक उद्वीपित ना हैवे, ततकन  
एक उपाय करिनेँ यथार्थ रूपे अन्तर मति  
ताहार शरणगत हैते पारित ना । एकप  
विवेक कि रूपे उदय हैते पारिँ । उगवानहै  
संगत विद्या ऐहै ज्ञान विवेक । आगरा  
तद्विपरीत निश्चय करिया वासना आहै ! आगरा  
जगत् संगत ब्रह्म विद्या ऐहै रूप श्रित करिया  
लहियाहै, सेहै जन्य आगरा जगतेर संगत  
निश्चय है विवेक आगच्छ प्रकाश करितेहै किन्तु  
उगवाने प्राप्तिर निमित्त आगरा से परिमाण  
किछु है करितेहैना यदि आमादेर मने  
कारण २ तत्पद प्राप्तिर किये परिमाण  
है आहै ३ चेष्टा करिया थाकेन किन्तु ताहा  
विशेषकन दायक हैतेहैना, ताहार कारण  
ऐहै ये ये परिमाण आगरा संगत शुभ ३  
अच्छन्दतार जन्य वास्तु ३ उद्देशित, ताहार  
शतांशर एकांश आगरा उगवाने उक्ति ३  
तत्पद लाभर जन्य चेष्टित नहि सूत्रां आ-  
मादेर से चेष्टा कोन मते फलवती हैतेहैना ।  
आमादेर यथार्थ विवेक उदय हैतेहै आगरा  
सत्वां शुभ प्राप्तिर जन्य यत्न ३ चेष्टा करिब, आर  
ततगहै आमादेर सेहै चेष्टा फलवती हैतेहै ।

महो का शरणगत है, वा जगत् भर के किये भी  
वह नही को नहीं छोड़ता है । उमो गीति, आहं,  
हम सब उन शरणगती के रक्त परमेश्वर के  
शरणगत हो जाय । कितने भूषण तो साधारण  
कीर्ति की शरण ले ले कर कितने विपत् से बंध  
जाते हैं, और जिनमें सर्व गतिमान परमेश्वर के  
शरणगत होवंगे, उन की फिर क्या चिन्ता है ?  
श्रीभगवान् श्रीकृष्ण महाराज ने अर्जुन की कहा  
था, कि—

“सर्व धर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं ब्रज ।

अहं त्वां सर्व पापेभ्यो माकुरिष्यामि मांशुचा ॥”

शरीर, मन, इंद्रिय आदि के समस्त धर्म को  
त्याग करके केवल मेरे ही शरण ले लो ; समस्त  
पापों से तुम को मैं छोड़ा दूंगा । भगवत् के मुख-  
विन्द से ऐसी वचन सुन कर भी क्या हमारी आशा  
न बढ़ेगी ? जिसे उन के शरणगत हो मके ऐसी  
चेष्टा करना चाहिये किन्तु हम जो निराश्रय हैं, यह  
जब तक हम को सुझ न पड़ेगा, जब तक यह सू-  
चित न होगा कि वेही एकमात्र सार है यो सार  
संसार समार है, जब तक उर्ही को रक्त करके  
सम्पूर्ण विश्वास न होगा, तब तक किसी प्रकार से  
उन के शरण में जा नहीं सकेंगे । अर्थात् जब तक  
मन में वस्तुगत्या विवेक न उपजे तावत पश्यन्त  
चाहे लाखों उपाय करो, सम्पूर्ण रीति से कभी  
उन के शरण में जा नहीं सकेंगे । अब यही वि-  
चारना चाहिये कि किस रीति से विवेक होवे ?  
केवल भगवान् ही सत् है वो जगत् मिथ्या है, इस  
भाति ज्ञान ही का नाम विवेक है । किन्तु हमारी  
मिथ्या तो इस का विपरीत है । जगत् सत्य वो  
ब्रह्म मिथ्या है, यही तो मुझे सुझ पड़ता है । अत-  
एव संसार के तावत् वस्तु पर हमारी आसक्ति बनी  
बनायो रहती है, भगवत् के किये चित्त अथ भर  
भी व्याकुल नहीं होता है । यदि हमारी मिथ्याओं  
में से दो एक ऐसे निकलेंगे कि जिनमें ने उस  
पद प्राप्त के अर्थ भर सक चेष्टा करते रहते हैं,  
किन्तु हम में सम्पूर्ण फल नहीं मिलता है, क्योंकि  
हमारा चित्त संसार के सुख को आनन्द से जितना  
प्रमत्त बना रहता है, उस से एक गतांग भी चेष्टा  
भगवत् भाक्ति का कृपा लाभार्थ नहीं है । अतएव  
हमारी चेष्टा का फल कहां से मिले । विवेक का उदय  
होने ही से सत्य परम पदार्थ के निमित्त चेष्टा  
बढ़ती है, तबही समय हमारी चेष्टा फलवती  
है । नहीं तो हम कितनीही चेष्टा वा आग्रह क्यों  
न करे हम को कभी नहीं फल मिलेगा । अतएव  
पहले तो यही चेष्टा अवश्य करनीय है कि जिस से

अनाथा। आभरा यतई चेष्टा ओ आग्रह करिना। तागतें केन कल हईवार नठे। अतएव प्रथमे याताते आभरें विनयेकामर ह्य ताहार चेष्टा कर। उचित। एक. ग कि उपाये सेई सर्व साधन मूग विनयेक उदय ह्य ताहाई विचार। संशय अध्यायन ओ ध्यान, संसर्ग ओ संसर्ग ओ नाम सकीर्तन द्वारा विवेक उदय हईवे। यथार्थ विनयेक हईले वैराग्य आपनापनि उदय हईवे। संसारे विरग हईलेते सता नष्ट भगवत्पराग अपात्र प्रेम आपनापनि आसिया ५ डिबे। तथन अनाथासेई देव उल्लेख परम पद प्राप्त हईया अनन्त सुख सागरे निगम हईवे। तथनई यथार्थ अनुवा जन्मर सकलता हईवे। तथनई आपनापनि पिता माता ओ जय भूमि मूग समुच्छ्रित करिते पारिव। अतएव हे जात गण! कण कालेन जन ओ विर हईया आपनार अवधार उपर दृष्टि कर।

क्रमशः

प्राप्त पुस्तकें समालोचना।

रत्न रत्नस्य। मानयोग श्रीमान् डक्टर रामदास मेन जी न संग्रह किया। इसमें बहुत साहित्य, मणि परीक्षा, शुक्र गीति, मानसोद्धार, अमर विवेक, मुक्तावली, अग्निपूराण आदि भांति भांति के शास्त्रों में से बहुतरे प्रमाण सहित मणि, मुक्ता, महारत्न, उपरत्न, पादि के विवरण, जो विज्ञान के परम योग्य है, प्रगट किये गये हैं। यह पुस्तक गभीर गवेषणा से पूर्ण हो सुकवि के परिचायक है। इससे साहित्य भांडार की गोभा, जो भारतीय गौरव को हृदि हृदि है।

देव दूत। कलिकाता संस्कृत प्रेस डिपजिटरी हईते प्रकाशित। “गोहत्याही भारतवर्षर सर्वनाशर मूग” लेखक उल्लेखनी पूर्ण हृदय-भेदा श्रेणें एही कथा की भारतके बुझाईने चेष्टा करवाछेन। ये उद्देश्य पुस्तक थानि प्रकाशित हईयाछे भगवान् ताहा सुसिद्ध करन। पुस्तकें सकल भाषा कठोर हृदय के अव करिते समर्थ। भारतवासी गण! अर्थी गण! अदेश विनाशिली गण! हिन्दू धर्माभिमान गण! एकपत्र पुस्तक थानि पठ कर। गो सातक गण! गो पठ कर गण! त्रिभाषादेन विनय करिया नलि एकवार अन्यानिवेश करिया पुस्तक थानि पठ कर।

हमारो विवेक वृद्धि बढ़ जाय। अब देखा चाहिये कि किस उपाय से यह विवेक को कि सर्वसाधना का मूल है, उदय हो सके। संसार के और सम्पूर्ण वैराग्य बढ़ने हो से भगवत पर प्रेम वो पुराण आपही आप बन जायगा। उस समय देवताओं के भी दुर्लभ उस परम पद को अनायास प्राप्त होकर पल्लव सुख सिन्धु में मगन हो जायेंगे। उसी समय भगवत्पराग की सफलता होगी, उसी समय निज पिता माता का जन्मभूमि के मुंह की उज्ज्वल कर सकेंगे अतएव भाईयो! जय भर के लिये भी अपनी र पवस्था पर ध्यान धरो।

शेष आगे।

प्राप्त पुस्तकों की समालोचना।

— 0 —

रत्न रत्नस्य। मानयोग श्रीमान् डक्टर रामदास मेन जी न संग्रह किया। इसमें बहुत साहित्य, मणि परीक्षा, शुक्र गीति, मानसोद्धार, अमर विवेक, मुक्तावली, अग्निपूराण आदि भांति भांति के शास्त्रों में से बहुतरे प्रमाण सहित मणि, मुक्ता, महारत्न, उपरत्न, पादि के विवरण, जो विज्ञान के परम योग्य है, प्रगट किये गये हैं। यह पुस्तक गभीर गवेषणा से पूर्ण हो सुकवि के परिचायक है। इससे साहित्य भांडार की गोभा, जो भारतीय गौरव को हृदि हृदि है।

देव दूत। कलिकाता संस्कृत प्रेस डिपजिटरी से (वग भाषा में) प्रकाशित हुआ। “गोहत्याही भारतवर्ष के समस्त अनर्थ का मूल है,” लेखक ने बहुत उत्तेजना से पूर्ण हृदयभेदी ध्वनी से भारत को यही बात समझाने के लिये चेष्टा करी है। जिस अभिप्राय से यह पुस्तक प्रकाशित हुई है, भगवान् उस उद्देश्य को सम्पूर्ण करें। पुस्तक की सब कारण भाषा कठोर हृदय की भी द्रवीभूत करती है। हे भारतवासी गण! हे आर्य गण! हे स्वदेश के हिताभिलाषी गण! हे हिन्दु धर्माभिमान गण! इस पुस्तक की एक बेर पढ़ो। हे गोघातक गण! हे गो भक्षक गण! विनति से तुम को भी कहते हैं, कि एक बेर तुम भी इस पुस्तक को दराचिन्त होकर पढ़ लो।



“ एक एव स्रष्टृर्देवो निधनेऽप्यनुयाति यः ।  
शरीरेण समं नाशं सर्वमन्यत्, गच्छति ॥ ”

“ एक एव स्रष्टृर्देवो निधनेऽप्यनुयाति यः ।  
शरीरेण समं नाशं सर्वमन्यत्, गच्छति ॥ ”

७४ भाग । { शकाब्द १८०५ ।  
१२७ संख्या । { जेष्ठ—पूर्णिमा ।

६४ भाग । { शकाब्द १८०५ ।  
१२७ संख्या । { चैत्र—पूर्णिमा ।

दिक्षु संहिता ।  
( पृथक् प्रकाशिते पर )

विष्णु स्मृति  
( पूर्व प्रकाशित के आगे )

ब्राह्मे स्रष्टृर्देवो उवाच चोपस्पृश्य पयस्तथा ।  
त्रिरायमा ततः प्राणां स्थितेन मोनो समाहितः ॥  
ब्रह्मचारी कथं—ब्राह्म स्रष्टृर्देवो उवाच त्रिरायमा ततः प्राणां स्थितेन मोनो समाहितः ॥  
ब्रह्मचारी कथं—ब्राह्म स्रष्टृर्देवो उवाच त्रिरायमा ततः प्राणां स्थितेन मोनो समाहितः ॥

अथैकवर्तः पवित्रैस्तु कृत्वा त्मपरिमार्जनम् ।  
सावित्रीं च जपंस्तु तदा सूर्योदयनां पुरा ॥  
तदनन्तरं पवित्रं जलं ये गच्छन्ति देवता, सेहं  
गच्छन्ति उद्धारणं पूर्वकं अन्तःशुद्धिं ओ आत्मा शुद्धिं  
जन्यं मार्जनं करिष्या सूर्योदयं पर्याप्तं गायत्रीं जप  
करिष्ये थाकिषे ।

अग्निकार्यं ततः कुर्यात्प्रातरेव व्रतं चरेत् ॥

अथैकवर्तः पवित्रैस्तु कृत्वा त्मपरिमार्जनम् ।

ब्राह्मे मुहूर्तं उत्थाय चोपस्पृश्य पयस्तथा ॥  
त्रिरायमा ततः प्राणां स्थितेन मोनो समाहितः  
॥ १७ ॥

ब्रह्मचारी के कर्म—ब्राह्म मुहूर्तं अर्थात् प्रभातमे  
पूवा ३ घड़ी रात रहते बैठना और जल स्पर्श  
अर्थात् मुख प्रक्षालन और स्नान करना और विचार  
प्राणायाम करके एकाग्र चित्त और मोनो होकर  
बैठना ॥ १७ ॥

अथैकवर्तः पवित्रैस्तु कृत्वा त्मपरिमार्जनम् ॥  
सावित्रीं च जपंस्तु तदा सूर्योदयनां पुरा ॥ १८ ॥

फिर पवित्रं जल जिनको देवता है ऐसे मंत्रोंसे अंतः  
शुद्धि वा आत्मा शुद्धि के हेतु मार्जन (जल छिड़कना)  
करके सूर्योदय तक ब्रह्मचारि गायत्री जप करता  
हुआ रहे ॥ १८ ॥

अग्निकार्यं ततः कुर्यात्प्रातरेव व्रतं चरेत् ॥ गुरु-  
वेतु ततः कुर्यात्प्रातरेव व्रतं चरेत् ॥ १९ ॥

अवन करि लाग, याही हिलाग ताहाई आं हि, किछू हईल ना। गाहारा किछू हई ना करे ताहारा ओ येमन, आनि ओ हेमनि, केवल निशेष एही मात्र ये “आनि एकजनकम्पौ,” एही बलिशा रथाभिमान द्वारा आआं हईतेछे। राग, द्वेष, ईर्ष्या, असूया, मात्सर्य, मिथ्या, कपटा, अर्द्धाति कुप्रवृत्ति गुणि यादृश छिल तऊपरहै आछे वरुं एवल हईताछे। मगसु कार्यानुष्ठानेनर फल अरूप शास्त्रि कि, ताहा जानि-लाग ना, अरुत गढ्यास, वैराग्य, ज्ञान, सरलता ओ अक्रिय दया अर्द्धाति माधु अर्द्धाति, एकरा ओ गदन स्फुरित हईल ना। कि अन्या हईल ना? यदि अरुत रूपे कार्यानुष्ठान करिशा थाकि, तवे केन ताहार फल पाठेलाग ना? यदि नहि हईलाके उदार फल हईल ना बटे किछु परलोक अवस्था हईवे। एकरा ओ मगसु नदह कारण हईलाके आआं ओ अतःकरणेन यादृश अन्या वा अर्द्धाति उपरित करिग, पर काले ताहाई शास्त्रि, गढ्यासदि अगीश्र यथेन बीज अरूप हईवे। ईश्वरने यदि आआं ओ मनोर किछु मात्र भाल अवस्था ना देखा राग तवे परकाले ओ उदरु रूप हईवे, ईश्वर अन् भाल गन्धेह छ ना। वास्तविक अरुत रूपे कार्यानुष्ठान कवा हयना बलिशाई ताहार कोन फल परिलक्षित हयना। आजोवन मगसु अरुतान का छ मता, किछु से केवल जल कोड़ा मात्र, आवास्तिक कोन व्यापारहै हयना। जीवाआर ओ परमाआर मक्ति (निताश्र मन्त्रित भाव) अरूप मगसा तो एकरा ओ गदन आगना। पूजा, आहिकादि, करा हय मता, किछु केवल पत्र, पुष्प, ओ नृत्य गीतदि वाञ्छिक आह्वारेहै परिपूर्ण, हृदय द्वारा तो एकरा ओ उदार निकटे उगनात हईते पारिलाग ना, अरु परिश्रुत मोठने मनोर छूथ ताहाके जानाईते निशिलाग ना, मगसुदो कुप्रवृत्ति मकल ताहार निकटे बाल दान करिलाग ना, सुत्रां केनर अताशी कोथाय? वाञ्छिक एवम मानसिक ईश्वरा युगपे अनुष्ठित हईलेहै आह्वार चरितार्थ करित मगसु ईश्वर एकतीर अनादे आर एकतीर फल दाने अमगसु। बांदा, अरुत आह्वारित

आदि समस्त कार्य अनुष्ठान करते आये, बालपनसे भातिर के व्रत उपवास आदि कर आये, जनमसे पुराण इतिहासका पठन वी श्रवण करे आये, किन्तु उसे मुझसे कुछ भी न ऊँचा, बुद्धि वो अवस्था जैसी थी वैसी ही रह्यो। जिन्होंने पूजन आदिका नाम तक नहीं लिया उससे भी मुझसे कुछ भी भिन्नता देख नहीं पड़ती है। विशेषता यही सुझ पड़ी कि “मैं कम्पौ ऊँ,” यह एक वृथाभिमान मुझ पर चढ़ बैठा। राग, द्वेष, ईर्ष्या, असूया, मात्सर्य, मिथ्या, कपटाई, आदि कुप्रवृत्तियाँ जैसीकी तैसी ही रह्यो वरं प्रबल होगयी। शान्तिके, जोकि समस्त कार्यानुष्ठानका फल है, समाचार ही कुछ न मिली। प्रकृत सन्तोष, वैराग्य, ज्ञान, सरलता वो अक्रिय दया आदि साध प्रवृत्तियाँ एकवेर भी मनमें भासित नहीं होती हैं। इसका क्या कारण है? यदि यथा विधि कार्यानुष्ठान किये करते तो क्यों नहीं फल मिला? यदि कहा जाय कि फल इसलोक में नहीं परलोक में अवश्य ही मिलेगा। यह भी असम्भव है। क्यों कि इस लोक में आत्मावा अन्तःकरणकी अवस्था वा प्रवृत्ति जैसी बनता रह्यो, परकाल में वेहो सब शान्त, सन्तोष आदि स्वर्गीय सुख की बीज रूप होंगे। वर्तमान शरीर में यदि आत्मा वा मनकी अवस्था कुछभी उत्तम स्वरूप न हो, तो परलोक में भी फिर वैसी रह्यो। इसमें क्या सन्देह है? वास्तविक यथा विधि कार्यके अनुष्ठान जो नहीं होता है, इससे कुछभी फल नहीं देख पड़ता है जीवन भर मगसाका अनुष्ठान किया जाता है सही, किन्तु वह केवल जल खेलही होती है, अन्तःकरणका काम कुछभी नहीं होता है। जीवात्मा वा परमात्मा की संधी (अत्यन्त सन्निकर्ष भाव) रूप मगसातो एकवेर भी स्मरण नहीं होता है। आह्विक पूजा की जाती है सही, किन्तु वह केवल पत्र, पुष्प, वो नृत्य गीत आदि वाञ्छिक आह्वारही से परिपूर्ण हैं, हृदय द्वारा तो एक वेर भी हम उनके समीप नहीं हो सक्ते हैं। अन्तःकरणसे तो एकवेर भी उनकी आत्म निवे-

अभिलाषा, तीस दिगके आध्यात्मिक व्यापारों में युथा लक्ष्य राखियां वास्तविक क्रियाके आध्यात्मिक व्यापारों में गहरा गौरव जानियां सदाचार और सदावाचारादि अमूर्तान पुरस्कार भक्ति और श्रद्धा सह गम्भीर पूजा, जप प्रभृति सत् कार्यों में अमूर्तान करिते रहेंगे। वास्तविक अमूर्तान और सदाचारादि ना थाकिले कहें कदाचित् आध्यात्मिक अमूर्ताने समर्थ हय ना। पक्षी छुईछी पक्ष ना थाकिले येमन एक पक्ष आकाशे उठिते पारेना, तद्वत् वास्तविक और आध्यात्मिक अमूर्तान भिन्न मनुष्य जगत् परि-त्याग पुरस्कार चिन्ताकाशे उठिते समर्थ हय ना।

## आर्य शास्त्र विज्ञान ।

(पूर्व प्रकाशिते पर)

अहोरात्र आर्य एकटि कथा गला आवश्यक । आर्य-नेत्र एहै प्रणिनीते ये सकल एह नक्षत्रों की क्रिया रहैया थाके, ताहा सर्वना एक प्रकार नहै। एह नक्षत्रगण, पृथ्वी के चारुदिके लक्षणान रहियाहै। नून्याधिक रूपे सकलनेह पृथिवीके एकजो करणेर चेष्टा (आकर्षण) आहै। अतएव एक प्रकार परिवर्तन आहै। अतएव दिन, अतएव होरा, अतएव नवांश, अतएव द्वादशांश और अतएव त्रिंशांश पृथिवी गहित एह नक्षत्रों के सञ्चर किछु २ हेतु विशेष और अनाथा हय।

शनि, बृहस्पति, मंगल, सूर्य, शुक्र, बुध, चन्द्र एह सप्त ग्रह और उपग्रह मध्य सूर्य अवधि पर पर अतएव चरु ग्रह और उपग्रहों के दिन और होरादि समय केद पृथिवी गहित सञ्चर अतिशयता हय। अर्थात् अद्य (रविवार) रविर गहित पृथिवी गञ्चर अतिशय, आगामी कला (गोमवार) चन्द्र गहित अधिक सञ्चर, परशु (मंगलवार) मङ्गल गहित पृथिवी अधिक सञ्चर, तार पर दिन बुध गहित, उ२ पर दिन शुक्र गहित है आदि।

दन न कर सकें, मर्य छेदों के वृत्तियां जो तो उनके साधने बलि न दे सकें, अनएव फल को आशा कहा? वास्तविक और आध्यात्मिक दोनों उपाय से कार्य के अनुष्ठान होनेसे आकाश चरितार्थ होंगे नहीं तो एक से विना दूसरा निष्फल है। जिज्ञासे प्रकृत आत्मोन्नति के अभिलाषी हैं, उक्तों को चाहिये कि आध्यात्मिक क्रियाओं पर विशेष दृष्टि रखें वो वास्तविक क्रियाओं को आध्यात्मिक व्यापारों के सहायक मात्र जानकर सदाचार, वो सद् व्यवहार आदि के अनुष्ठान करें वो भक्ति वो श्रद्धा पूर्वक संन्या, पूजा, जप आदि सत्तम कार्य करते रहें। वास्तविक अनुष्ठान वो सदाचारादि विना कभी आध्यात्मिक अनुष्ठान नहीं बनता है। दो पक्ष विना जैसा पक्षी केवल एक ही परसे आकाश पर नहीं चढ़ सकता है तद्वत् वास्तविक वो आध्यात्मिक अनुष्ठान विना मनुष्य कभी जगत् छोड़क चिन्ताकाश पर नहीं चढ़ सकता है।

आर्य शास्त्र विज्ञान ।

(पूर्व प्रकाशित के आगे)

यहां यह बात भी प्रगट रहनी चाहिये कि पृथ्वी पर ग्रह नक्षत्र आदिकी क्रिया जो कुछ होती है, सो सदैव एक प्रकार की नहीं। ग्रह नक्षत्र गण पृथ्वी के चारों ओर लटक रहे हैं। पृथ्वी को अपने अपने से मिलाने की चेष्टा अथवा अधिक परिमाण, सब किसी की है। उसमें एक प्रकार का परिवर्तन है। प्रति दिनमें, प्रति घंटेमें, प्रति नवांशमें, प्रति द्वादशांश में, प्रति त्रिंशांशमें पृथ्वी से ग्रह नक्षत्र आदिकी सम्बन्ध की थोड़ी बड़त घट बढ़ वो भिन्नता होती है।

शनि, बृहस्पति, मंगल, सूर्य, शुक्र, बुध, चन्द्र ये सात ग्रह वो उपग्रहों के मध्य में सूर्य से आरम्भ करके प्रति चतुर्थ ग्रह वो उपग्रहसे पृथ्वी की सम्बन्ध की अधिकता दिन वो होरा आदि के अनुसार होती है। अर्थात् आज (रविवार) सूर्य से पृथ्वी की सम्बन्ध की अधिकता है, कल (सोमवार) चन्द्रमा से अधिक सम्बन्ध परशु (मंगलवार) मंगल से अधिक सम्बन्ध है, दूसरे दिन बुधसे, तदनन्तर बृहस्पति से इत्यादि—



एहे रूप, अन्धकार प्रथम होरास सूर्योत्तर गति पृथिवीर अधिक मन्त्र, कला प्रथम होरास चन्द्रोत्तर गति अधिक मन्त्र, परम मन्त्रोत्तर गति हे होरादि । एहे रूप नवांश, द्वादशांशादिते जातना । एहे निमित्त रवि रईते एतोकं चतुर्थ एह पर पर एक एक दिन ओ होरादिदर अधि पति । “मंगलाधः क्रमेणैव चतुर्था दिवसाधिपोः” हेतादि । परस्तु एथातेन हेहा मने करिवेन ना ये यथन पृथिवीर एक एक एहेर मन्त्रोत्तर आधिका हय तथन अन्धकार एहेर गति मन्त्र थाके ना किम्मा अतास्तु कमिया याय । ये आकर्षण शक्ति द्वारा आकृष्ट हहेया पृथिवी आपन केन्द्रापकर्षणी शक्ति द्वारा सूर्योत्तर चतुर्दिके परिभ्रमण करितेछे सेहे शक्ति ये दिन वा ये होरादिते चन्द्र ओ अन्यान्य एहेर आकर्षण अपेक्षास पृथिवीर उपर अधिक कार्य करे सेहे दिनोत्तर नाम रविवार, आर ये होराते अन्यान्य एह गणेश आकर्षण अपेक्षा सूर्योत्तर आकर्षण पृथिवीर उपर अधिक कार्य करे तातीर नाम सूर्योत्तर होरा । यदिच मन्त्र एहनक्तोत्तर मन्त्रोत्तर शक्ति अपेक्षा सूर्योत्तर शक्ति हे गर्भना पृथिवीर उपर आधिपत्या करितेछे मन्देह नाहे, तथापि अन्यान्य एहेर आकर्षण शक्ति द्वारा सूर्योत्तर आकर्षण मन्त्र २ आपन अवस्था अपेक्षा किछु अल्प ओ मन्त्र २ प्रकृत अवस्था प्राप्त ना हहेते पावे, समत नाहे । वास्तविक यथन प्रकीर्ण अवस्था अपेक्षा सूर्योत्तर वन किछु ह्रास हहेते (पृथिवीर उपर) दृष्टे हर तथन पृथिवीर उपर अन्यान्य गुण गण अधिक कार्य करितेछे हेहाहे बुझिते हहेवे । यथन अन्यान्य गुण शक्ति पृथिवीर उपर एकट्टे अधिकार प्राप्त हर, तथनहे सूर्योत्तर आकर्षण प्रभावस्था अपेक्षा किछु अल्प कार्य करिते थाके । मने कर ! एकजन वीर्यवान् व्यक्ति तोमार हस्त धरिया टोनिते लागिल, ठूमि तोमार सम्मुखे दिक् पलायनेर चेष्टा करिते लागिले, सुतरां तोमार शरीरे नूतन एक शक्ति उत्पन्न हवेया आकर्षण कारीर चतुर्दिके ठूमि घुमते लागिले । एकण यदि ७८८ होटे

इसी रीति आज प्रथम होर मे पृथ्वीका सम्बन्ध सूर्यसे अधिक है, कल प्रथम होरे मे चन्द्रमा से अधिक सम्बन्ध परसु मंगल से इत्यादि । इसी रीति नवांश मे, द्वादशांश मे भी जानना । इसी लिये रवि से आरम्भ करके प्रति चतुर्थ ग्रह क्रम से एक एक दिन वो होरा का अधिपति होता है । “मंगलाधः क्रमेणैव चतुर्था दिवसाधिपोः” । इत्यादि । पर यह न सोचिये कि जब पृथ्वी से एक एक ग्रहके सम्बन्ध का आधिक्य होता है, उस समय अन्यान्य ग्रहोंसे सम्बन्ध कुट जाता है अथवा अत्यन्त कम हो जाता है, किन्तु जिस आकर्षण शक्ति करके आकृष्ट होकर पृथिवी निज केन्द्रापकर्षणी शक्ति के प्रभावसे सूर्यके चारो ओर घूम रही है, वही शक्ति जिस दिन वा जिस घड़ी मे चन्द्र वा अन्यान्य ग्रहके आकर्षण से अधिक पृथ्वी पर कार्य करती है, उसी दिनका नाम रवि वार औ जिस होरेमे अन्यान्य ग्रहोंके आकर्षण से अधिक सूर्य का आकर्षण पृथ्वी पर होता है, उसीका नाम सूर्यका होरा है ।

यदिच समस्त ग्रह नक्षत्र को सम्पूर्ण शक्ति यांसे अधिक सूर्यको, शक्ति पृथ्वी पर आधिपत्य करती है, तथापि यह भी कुछ आश्चर्य नही कि अन्यान्य ग्रहोंके आकर्षण शक्तिके द्वारा सूर्यका आकर्षण जब तब निज अवस्था से कुछ न्यून वा प्रकृत अवस्था को प्राप्त हो सक्ता है । वस्तुतः जब सूर्य का बल निज अवस्थामे कुछ कम (पृथ्वी पर) देख पड़ता है, तबही जानना कि पृथ्वी पर अन्यान्य ग्रहों की शक्ति अधिक असर करी है । जब अन्यान्य ग्रहों की शक्ति पृथ्वी पर फैल जाती है, उस समय सूर्यका आकर्षण पूर्वावस्था से कुछ न्यून हो जाती है । मानो किमी वीर्यवान् पुरुष ने तुझारे हात पकड़ खींचने लगा औ तुम भी साझाने से भागने की चेष्टा करने लगे अतएव तुझारे शरीरमें कोई एक नवीन शक्ति उत्पन्न होने पर तुम खींचने वाली की चारों ओर घूमने लगीगे । इसी समय यदि कौक कोटे

वाणक आसिना तोमार इच्छासुर धारिना। एदिक  
उदिक आकर्षण करे, तवे सेठ आकर्षणे.  
बोधवान् वाञ्छित आकर्षण अल्प बोध होले०  
तोमार उपर कि ताण कार्य करितेछे ना ?  
तुमि कि ताण अनुभव कविते पार ना ? त्व  
कालेन कि एई सकल क्रुद्ध २ आकर्षण द्वारा बोधा  
वान् वाञ्छित आकर्षण समय २ किछू न्यायिक ह्य  
ना ? पूर्विना ७ अगावस्यार समय ये समुद्रेर  
जोमार ताँठा ह्य ताण बोध ह्य काधार०  
अनिदित नाठे। तथन कि सूर्याकर्षण अपेक्षा  
चन्द्राकर्षण अधिक ह्य ? ताँठा नह, तथन चन्द्रा  
कर्षण पृथिवीर उपर कार्य करिते पात्रे छे नाइ।

अन्यान्य ग्रहेर वार ७ होरादि० एई रूप—ये  
दिन अन्यान्य ग्रह अपेक्षा चन्द्रेर क्रिया पृथिवीर  
उपर अधिक ह्य सेई दिन सोमवार, से होराते  
चन्द्रेर क्रिया अधिक ह्य ताहार नाम चन्द्रेर  
होरा। इत्यादि।

क्रमशः ।

## तीर्थ दर्शन ।

( प्राप् )

आमादेर शास्त्रे तीर्थेर एत गहिना कि जन्य  
वर्णित छैयाछे ताँही छिर तावे पर्यालोचना  
करा आवश्यक । पूज्यपाद शास्त्रेण साधारण लोकेर  
मध्य भग्गतावेर उद्दीपना करिवार जन्य ये सबल  
वाचंछा करियाछेन ताँही ये अतीव चितकर  
तएणके सन्देह नाइ। दृष्टोदर्शन एतावे ताँहार  
छिर करियाछेन ये विषय बापादेर मध्य  
अवस्थिति कराते मन हहेते भग्गभाव विनूण प्राय  
हैया यात्र, संगारेर एलोडने पड़िना। मातृ  
विगर्हित कार्य करे एवंग गर्कता विषयेर आ-  
लोचना कराते मन अगाड़ु हैया पड़े। एई  
दुरवस्था हैते मनके उद्धार करिवार जन्य तीर्थ  
दर्शन आवश्यक । आमादेर शास्त्रेण गण संगार  
आश्रमके प्रधान आश्रम बलिना वर्णन करियाछेन।  
ताहार कारण एहेवे, संगारेर मध्य शाकिना

लडके आकर तुम्हारा दुसरा हात पकड़ कर  
इधर उधर खींचे तो उस आकर्षण से बौद्ध  
वान् पुरुष का आकर्षण अल्प बोध हो तो क्या  
यही सूचित होगा, कि वह तुम पर अमर  
नहीं करता है। इसका अनुभव तुम क्या नहीं  
कर सकते हो ? उस समय चंद्र चंद्र आकर्षण  
करक बौद्धवान् पुरुष का आकर्षण क्या  
बोच में थाड़ा बहूत न्यूनाधिक नहीं होता  
है ? पौर्णमासी वो अमावस्या के समय जो  
समुद्रका जल बढ़ता वो घट जाता है ये तो सब  
कोई विदित है । उस समय क्या सूर्या-  
कर्षण से चन्द्राकर्षण अधिक होता है ? नहीं।  
इतना ही है, कि उस समय चन्द्राकर्षण पृथ्वी  
पर अमर कर सकता है ।

अन्यान्य ग्रह के वार वो होरादिको नियम  
में इसी रीति जानना । जिस दिन अन्यान्य  
ग्रहका अपेक्षा चन्द्रमा का क्रिया पृथ्वीपर  
अधिक होती है, उसी दिनका नाम सोमवार  
है ; जिस होरेमें चन्द्रमा की क्रिया अधिक  
होती है, उन होरा का नाम चन्द्र का होरा है।  
इत्यादि ।

शेष आगे ।

तीर्थ दर्शन ।

( प्राप्त )

हमारे शास्त्रों में तीर्थ की महिमा बहुत  
सी कहो गयी है कारण इसका क्या है सी  
पर्यालोचना करना चाहिये । पूज्य पाद  
शास्त्रियों ने सब जनों के हृदयमें धर्म भावका  
उद्दीपना की अर्थ जतने व्यवस्था करेगयं,  
सी समस्तही अतीव चितकर हैता में सन्देह  
नहीं । भयो दर्शन के प्रभावमें उद्दीने यह  
मिद्वान्त किये रहे कि विषयों के व्यापार  
में लगे रहने पर मनमें धर्म भाव छूट जाता  
है, संसार के फंदे में लटक कर मन साधुता  
के विरुद्ध कार्य में प्रवृत्त होता है श्री मव्वं  
टा विषयों के चिन्तन से मन निस्तेज बन  
जाता है । इस दुईशा में गिरा ऊआ मनको  
उद्धार करने के अर्थ तीर्थ दर्शन करना आव-  
श्यक है ।

समग्र कर्तृत्वा कथं साधन करा धर्मोद्वेग कार्य।  
 पिता मातर प्रति कर्तृत्वा, श्री गुरुवर प्रति कर्तृत्वा,  
 प्रति वामी गणेश प्रति कर्तृत्वा एवं आपामर  
 साधारण प्रति कर्तृत्वा यिन मया कृपे पालन  
 करिते पात्रेन तैव तत्काल साधना नह।  
 तिन एकटी निम्नोर्ग मया ज्ञान साधन कर्ता  
 आपन प्रार्थ। किन्तु एते मंगल रूप  
 मया ज्ञान साधन करिते तन मनुष्योय धर्म  
 बल प्रयोगन। मंगल मया थाकिरा धर्मशास्त्र  
 आलोचना करतः अनेक ज्ञान लाव करा यत्र वटे,  
 अनेक उपदेश प्राप्त हवा यत्र—किन्तु, नाना  
 ज्ञान दर्शन ना करिले, नाना प्रकार लोकेर आचार  
 वाचनार उद्भूतभाव हृदयजन्म करितेना पारिले  
 एवं विशेष २ ज्ञानेन येमकन मया अवाञ्छित  
 करितेहेन तैव तैव निकट हईते मया उपदेश  
 ग्रहण करिते ना पारिले प्रकृत शिक्षा लाव हयना।  
 शास्त्र हईते ये ज्ञान लाव कराया ताका ज्ञान-  
 दर्शनन अभावेन सुदृढ़ हईते पात्रेना विशेषतः  
 मनुष्योय मनन भावई एहे ये प्रताह एक प्रकार  
 पदार्थ, एकप्रकार मनुष्य दर्शने दृष्टि लाव करिते  
 पात्रे ना। जैवरेर सृष्टि मया कि ना आश्चर्य?  
 आभरी प्रतिदिन यात्रा देव ताका कि धर्मभावेर  
 उद्घोषन हयना? प्रतात कालीन सूर्योदय जवाकुसुम  
 सकाश रूप, पूर्णिमा रजनीर चन्द्रमार रजतमया  
 काञ्चि एव तिमिराच्छन्न निशाय नक्त जाला  
 शोभित आकाश, निष्पतित अपार भस्मि  
 प्रचार करितेहे। किन्तु केन् वाञ्छि ए मनुष्य  
 दर्शन करिरा जैवरेर मया अनुभूत करे एवं  
 तैव तैव उपगमना निमग्न हय? मंगल ज्ञान  
 सकल नीचोरा हईरा ताका करितेहे  
 एमन मंगल आजा के ये ए यात्राके तुष्ट  
 करिरा भगवानेर प्रति मनोनिर्देश करे?  
 विशेषतः प्रतिदिन नयन गोचर हईतेहे वस्त्रा,  
 सकल पदार्थ कि काहाके आकर्षण करिते  
 मंगल हय? किन्तु, यदि गगन उद्भासित करिरा  
 एकटी धूमकेतु उदय हय अथवा सूर्य ग्रहण प्रकाश

हमारे शास्त्र कर्ताओं ने गृहस्थाश्रम का  
 सब आश्रमों के प्रधान करके वर्ण किया है,  
 क्यों कि गृहमें रह कर समय धर्मकर्म साध-  
 न करना बड़े बोर का कार्य है। पिता माता  
 की प्रति कर्तव्य, स्वामी पुत्रादिके प्रति, परीसीयों  
 की प्रति और आपामर साधारण जनों की  
 प्रति जो जो कुछ करना है, जिस पुरुष ने वे सब  
 समग्र रीतिमें पालन करसके उनका शक्ति कुछ  
 सामान्य नहीं है। मानो उसने एक सुविस्तृत  
 सम्राज्य के अधिपति से श्रेष्ठ है। किन्तु इस  
 संसार रूपी सम्राज्य की शासन करने के लिये  
 मनुष्य को धर्म बल चाहिए। यदि धर्म रहक  
 धर्म शास्त्र की आलोचना से अनेक ज्ञान, अनेक  
 उपदेश पाया जाता है, किन्तु नाना स्थान को देखे  
 बिना, नाना प्रकार लोगों की रीति नीति को आ-  
 चार, भाव जाने बिना जो स्थान में जो महाका  
 लोग विराज करते हैं वहाँ से धर्मों पदेश पाये  
 बिना मझो शिक्षा नहीं मिलती है। शास्त्र पढ़ पढ़-  
 के जो कुछ ज्ञान का लाभ होता है। सो भी भूयो  
 दर्शन बिना पक्का नहीं बन सकता है। विशेषतः मनुष्य  
 की प्रकृति ही ऐसी है कि प्रति दिन एकही रंग की  
 पदार्थ, एकही रंग के मनुष्य देखने के लक्ष नहीं  
 मानती है। भगवत् की सृष्टि के मध्यमें जो कुछ  
 देखो सबही चमत्कार है। प्रतिदिन हमको जो  
 कुछ देखने में आता है हमसे धर्म भाव हमारा  
 क्या नहीं बढ़ जाता है? प्रातः काल के सूर्यका जवा-  
 कुसुम संराग रूप, पूर्णिमासो चन्द्रमा की रजत-  
 मायो दिव्य गोमा भी अत्यन्त से ठापा हुआ रात्रि,  
 कालमें नक्षत्रों में सुशोभित आकाश मंडल विस्फूर्ति  
 की आश्चर्य महिमा प्रचार कर रहे है। किन्तु किसने  
 ये सब देखके भगवत् की सत्ता का अनुभव करता है  
 और उनको उपासना में मग्न हो जाता है? विषयों  
 की वखड़े में दिक होकर सब लोग हा-हा-कर रहने  
 है, ऐसा संयम पुरुष कौन है, कि सब यातना को  
 तुच्छ समझ के भगवत् पर ध्यान धरे? विशेषतः जो  
 जितना पदार्थ नित्य देख पड़ता है, उससे हमारे  
 चित्त तो नहीं आ जाता है। किन्तु यदि आकाश  
 में मंडल की चमत्कार को एक पुच्छत तारा उदय

पात्र, ताहा वहेल, के ना निर्निर्गमन नेजे ईश्वर दर्शन करिया থাকे ? मनुष्योत्तर सृजन के विश्व विधातार मानान्य कमता अकाश पाईयाछे ? रमणी गर्भ जीनेर मक्षार इहेते पूर्ण अवस्थेन परिणत भोग्य पर्याप्त ताहार कत कोशल कत मङ्गलभाव अतीरगोन हय, ताहा के आलोचना करिया থাকे ? किन्तु, यदि एकटी चारि हस्त विशिष्ट मनुष्य जन्म ग्रहण करे, ताहा देखिनार जन्य के ना उद्देश्यक हय ?

मनुष्योत्तर निम्न ऊद्धित मनके नन २ भावे पूर्ण करिदार जन्य नाना ज्ञान दर्शनेर निशेष प्रयोजन । ए जन्य आमादेर निम्न शास्त्र कारेरा तीर्थ दर्शनेर फल माहात्मा निशेष रूपे कौर्तन करियाछेन । हेउरोपेन पण्डितेरा श्रित करियाछेन ये, नाना ज्ञान दर्शन करा शिकारि एकटी प्रधान अङ्ग । एवम् एहे जन्य विद्यालय प्रतियाग करिदार पर कृतनिदा व्यक्तिगण हेउरोपेन अन्तर्गत अपरापर प्रदेश जगण परतः अभिज्ञता लाभ करिया थाकेन । पार्थिव ज्ञान लाभ करा हेउरोपिय दिगेर उद्देश्य । किन्तु, आमादेर शास्त्रकार गण ये वावस्था करि-  
याछेन हेहा द्वारा सांसारिक व पारमार्थिक उभय विध ज्ञान हे लाभ हईया थाके ।

ये सकल स्वाभाविक शोभाय शोभित ज्ञानेन, हूवार मण्डित पर्यवे, कल्लोलिनी श्रोतः स्वतो तीरे मथवा विचित्र बनेन कोन याग यज्ञ, वा तपोभूषणानादि पवित्र कार्य हईयाछिल एगन ज्ञान हे तीर्थ रूपे परिणत हईयाछे । एक कानेन पृथ पाश्चात्तमि गण ये सकल बनेन अवस्थिति करितेन माहा व तीर्थ रूपे परिगणित हईयाछे । ए सकल नि दर्शन करिनेन व तथाय वास करिनेन ये उज्ज्वल कृतिय पवित्र भाव मनोमग्नो आविष्ट हईया निबदे निर्मल हृदय करिया देय व धर्मभावो उद्देश्य करे उपपत्ति सम्पन्न मज्जा नाहे । तीर्थ दर्शनेर मनुष्यजिक आरव कएकटी उपकार आछे । पद-  
ज्जे जमण कराहे तीर्थ दर्शनेर नियम । हेहा द्वारा अन्तःकरण मध्य माहसेन मक्षार हय एवम् नाना हातेर लोकेन आचार व्यवहार दर्शन करिया

हा अथवा संश्रुता ग्रहण लगे, तो कीन् नही उसका निर्निर्गमन नेच से देखता है ? मनुष्य बनाने में विश्व विधाता की सामर्थ्य क्या कुछ कम प्रगट हुई है ? स्त्रीके गर्भ में जीवके संचार से लेकर पूर्ण अवस्था बनना तक भगवत् की कितनी कारीगिरी कितन मंगल भाव प्रतीत होते हैं, इसकी आलोचना कीन् करें ? किन्तु यदि कोई चार हात वाले मनुष्य जनमें तो उसको देखने के लिये कीन् नही दौड़ता है ?

फंदे में बंध हुआ मनुष्य के मनको नवीन नवीन भावसे परिपूर्ण करने के लिये नाना स्थान दर्शन करना आवश्यक है । इसे हमारे वज्र शास्त्र कर्त्ताओं ने तीर्थ दर्शन को फल माहिमा विस्तार कर वर्णन किये हैं । यूरोप के विद्याथानों ने सिद्धान्त कर चुके हैं कि देश देशान्तर पर्यटन करना शिक्षा का एक प्रधान अंग है । इसी लिये पाद्यावस्था क अनन्तर यूरोपके कर्त्तावय पुरुषों ने वहाँके भिन्न प्रदेश पर्यटन करके परम अभिज्ञता प्राप्त कर लेते हैं । पार्थिव ज्ञान लाभ करना यूरोपीयों का उद्देश्य है किन्तु हमारे शास्त्र कर्त्ताओं ने जैसी व्यवस्था की है हमसे सामाजिक वी परमार्थिक दोहो प्रकारका ज्ञान मिलता है ।

जी सब स्वाभाविक शोभा से सुशोभित स्थानोंमें, तुषार मण्डित पर्वतों पर, कल्लोलिनी के तट पर अथवा विचित्र वनमें किसी याग-यज्ञ वा तपस्याका अनुष्ठान आदि पवित्र कार्य ऊँचा रह्य ऐसे ऐसे स्थान ही तीर्थ करके प्रसिद्ध हुए । जहाँ जहाँ पवित्र आत्मा कृषि गण किसी समय में विराज किये रहे, वह सब स्थान भी तीर्थ करके प्रसिद्ध होते गये । इन सब स्थानों के दर्शन से अथवा वहाँ निवास करने से उन स्थानोंकी प्रकृतिका पवित्र भाव अन्तःकरण में प्रविष्ट होकर हृदय को निर्मल कर देता है वी धर्म भावकी उसका तात्त्विक, इसमें सन्देह नहीं । इसके साथ ही साथ तीर्थ दर्शन से और भी थोड़ा बड़त उपकार है । पाँच पाँच चलना तीर्थ दर्शन का नियम है । इससे अन्तःकरण में बड़ा साहस बढ़ जाता है वी नाना स्थानके

समधिक ज्ञान लाभ रहेगा था। दुःखेतर निष्ठा  
 एते ये तीर्थेतर उपकारिता रुद्रसम करिते ना  
 पात्रिया आभरा हेहाके कृमंकार विभिन्ने विवे-  
 चना करिया थाकि। केहरे बलिदे पातरेन ये  
 प्राकृतिक शोभा सम्मर्शन करिते आभरा धस्तु  
 आदि किन्तु ताहे बलिआ आभरा याजीदेर नाश  
 काष्ठ एवम् अस्तुर निर्मित मूर्ति दर्शन करिया  
 वेडाईते पात्रिना। पवित्र मूर्ति गशूर दर्शने कि  
 रुद्र हर ताहा ए अस्तादेर आलोच्य नदरे, सुतरां  
 ए आपति भुवनार्थ एकदम बहू करिलाग ना।  
 बाहारा मूर्ति पूजा ना करेन मनन मगागोदिग-  
 के उ तीर्थेन करिते देखा यार। माधु ना अमाधु,  
 ज्ञानी ना मूर्ति, ऊड़ बुद्धि वा कवि तीर्थ शान्ति  
 मान काहाके उ उक्ति करेना। याहाइके मूर्ति  
 पूजनेका ना पाकिने उ तीर्थ दर्शन करा ये श्रेयः  
 उहा फुल्लित करिवार जन्य एकटि दृष्टांत  
 निरुद्धि;---

हेति प्रकृत, आभि पुरुष तीर्थ दर्शन करिते गिरा-  
 जिनाम। एकजै, सुविशुद्ध जलाशय हे पुरुष तीर्थ।  
 हेहार चारि दिक फुल्ल पस्तते वेष्टित। एहे  
 जलाशयतिरुत ज्ञान करिया पृथ्वी पुरुष दिगके पिण्ड  
 दान करिते हर। उतल्लाने अनेक शलि देना-  
 न्य आछे, वन्यदेवा गावित्री एवम् उक्ता उ गायत्री  
 मन्त्र विधाय। गावित्री मन्त्र एकटि पर्वतेर  
 उपर स्थापित। एहे स्ताने उक्ता गायत्रीके  
 अहण करिया छिलेन बलिआ, गावित्री क्रोदन  
 अहीरा इहेहा पस्तते अवस्थिति करिलेन।

एहे भावजै चिन्ता करिते आभार मन मन्दिर  
 दोनाय आन्तर्गत रहेते लागिल। भाविलाग, कि  
 आभर्या। आभादेर उपास्य देवता एकटि पात्रि-  
 नीता समीप काग करिया आर एकटोके अहण  
 करिलेन, एहे पार्श्व भावटिके चित्रमूर्तीय करि-  
 तार जन्य कि पुरुष एकजै तीर्थ रूपे प्रतिगत रहेन?  
 एवम् देव देवता एहे माधु विगर्हित कार्य करिलेन,  
 तनि आभादेर आराध्य देवता रहेलेन? भावार्

आचार व्यवहार देखने से अधिक ज्ञान मिल  
 ता है। खेद यह है कि तीर्थ की उपकारिता  
 समझे बिना इसको हम बुरे संस्कारों का  
 काम करके मान लेते हैं। कोई कोई यह  
 कहेगा कि हम तो प्राकृतिकी शोभा देखने में  
 प्रस्तुत हैं किन्तु यात्रियों की समान हम काष्ठ  
 वी पत्थर का बनाया ऊँचा मूर्ति सब देख देख  
 की फिर नहीं सकते हैं। (पवित्र मूर्तियों की  
 दर्शन से क्या सुफल मिलता है, सो इस प्रबन्ध  
 का आलोच्य नहीं। सुनरा इस आशंका निवा-  
 रण की अर्थ अभी यत्न न किया गया) जो लोग  
 मूर्ति का पूजन नहीं भी करते हैं ऐसे सन्न्यास  
 गण भी तीर्थ टिन किये करते हैं। चाहे साधु  
 या असाधु होय, ज्ञानी या मूर्ख होय, जड़ वा  
 या कवीश्वर होय, आनन्द देने में तीर्थ किसी  
 को कमी नहीं करते हैं। जो हो, मूर्ती पूजन  
 को इच्छा न रहे पर भी तीर्थ दर्शन करना जो  
 आवश्यक है, उसी की प्रगट करने की लिये  
 यहाँ एक दृष्टान्त दिया जाता है।

थोड़े दिन व्यतीत हुए कि हम पुष्कर तीर्थ  
 दर्शनार्थ गये रहे। वहाँ एक जलाशय है;  
 पुष्कर राज करके प्रसिद्ध है। इसके चारों  
 ओर कोटेर पहाड़ों से वेष्टित है। यहाँ स्नान  
 करके पूर्व पुरुषों को पिण्ड दान करने की  
 विधि है। यहाँ देव मन्दिर बज्जत है, उन सब  
 में सावित्रीजी का श्री ब्रह्मा वो गायत्री का  
 मन्दिर सब में प्रधान है। सावित्री जी का मन्दि-  
 र एक पर्वत पर है। इस तीर्थ में ब्रह्माजं,  
 गायत्री को ग्रहण किये रहे, इसे सावित्री  
 क्रोध से वेवश होकर पहाड़ पर जा बैठी। इस  
 आशय की सोचते विचारत हमारा मन  
 सन्देह से डौलने लगा। सोचा कि यह ठीक  
 बड़ी आश्चर्य है कि हमारे उपास्य देवतान्  
 एक विवाहिता रमणी की क्रीड़के दूसरी स्त्री  
 स्त्री की ग्रहण करी। इसके स्मरणार्थ कगे  
 पुष्कर तीर्थराज बन गया और जिस देवता ने  
 ऐसा साधुता के विरुद्ध कार्य किया, वे हमारे  
 ही आराध्य देवता बन गए। फिर यह मनसे



मनोगमो उदय इहेल ना, ईश्वर मद्य कोन निगूठ  
भाव अवस्था निहित आटेह आगादेर पूजनीय  
शास्त्रकार गण ये धर्मात्मी धित करिआछेन ताहाते  
मन्दभाव थाकिवार गल्लाना नाहे। मनोगमो,  
अन्यकार आन्दोलन इहेतेहे, एगन समय ऐह  
व्यापादेर अकृत तात्पर्या रुदगत इहेन।

लक्षा पुरुष ज्ञानीय एवम् सावित्री शुभा वामना  
वक्रपा श्री। पुरुष वामन'मुक्त इहेया आवा तख  
विमृष्ट इहेयाछेलन। परे महायज्ञे लक्ष्मी इहेया  
गायत्री रूप अक्ष विद्या प्राप्त इहेलन। लक्षा  
ज्ञान लाव करिने, मनुष्य वामना मुक्त इहेया  
सावित्री लक्षाके प्रार्थन करिआ दूरे अवस्थित  
करिने सागिलेन एवम् लक्षा लक्ष्मीया रूपिणी  
गायत्रीके लहेया आनन्द उपभोग करिने  
सागिलेन।

आदि निर्गुण उपासना धर्मात्मी पर्यालोचना  
रिनेन अतीवमान इहेते, ये ईश्वर अत्यन्त अक्ष  
ज्ञान ना कोन आध्यात्मिक गूढ भाव वाञ्छुक।  
ईश्वर के ज्ञान करिवार पुरुष ईश्वर तात्पर्य  
ग्रहण करिने चेष्टा पाठ्या उचित।

मुद्गर आ, ध, अ, मञ्ज

मिथुन वावु गच्छेन नाथं रात्र मशमयैर वक्तुता।

(पूर्व प्रकाशिते पर)

सुजन, पालन ओ संहार कर्ता उपासनेर उपासना  
गुणानुवाद करिवार जन्यै एगन दुष्ट ७ अन्य  
साहेयाछि। आहार, निद्रा, मेषुनेर जन्य ए देह  
प्राप्त इहे नाहे। मन्सादे ये कोन नाकि साहाय  
पारा किछे परिमाणे उप कृत इरा से आग्रह  
इश्वर उपकारी शरणपन्न थाके ओ अहनिश  
सुहार गुणानुवाद ओ कृतज्ञता प्रकाश कने—  
अति आग्रह एगन कृपानिधाने दयार अहनिश  
पालित ओ रक्षित इहेया ओ अन्यासे ईश्वर  
भूषिया थाकि, ए कि आगादेर सामान्य ज्ञान ? एक  
आमान्य मूर्खता ? एताने आग्रह कय दिनेर जन्य  
आगियाछि ? एतो आगादेर विदेश। येगन  
अग्रह शोकार धेलिने २ कोन एक जस्त

भलकाया कि इसका कोई निगूठ मर्म अवश्य  
होई। हमारे पूजनीय शास्त्र कर्त्ताओं ने जै-  
सी रीति बांधी है, उस में बुराई कहां से आ-  
वेगी? ऐसा आन्दोलन करने से इसका यथार्थ  
अभिप्राय झलक आया।

'ब्रह्माजी पुरुष वो सावित्री शुभा वामना हैं।  
पुरुष जब तक वासना युक्त बने रहें, तब तक  
आत्म तत्व भूलें रहते हैं फिर महायज्ञ में  
बनी होकर गायत्री रूपा ब्रह्म विद्या को प्राप्त  
ऊँ। ब्रह्मात्म ज्ञान मिलने पर मनुष्य वासना  
से मुक्त हो जाता है। सुतरां ब्रह्माजी को  
कोड़ करके सावित्री जी बड़ी दूर भागी और  
ब्रह्माजी ब्रह्म विद्या रूपिणी गायत्री के साथ  
मिल कर आत्मानन्द भोगने लगे।

आर्यसज्जनों की उपासना की रीति पर्या  
लोचना करने से यह प्रतीति होती है कि इस  
के प्रति पद में कोई न कोई आध्यात्मिक गूढ़  
भाव है। इस की तुच्छ मानने के पड़िले इस  
का गूढ़ तात्पर्य समझने की चेष्टा करनी  
चाहिये।

—०—

मुंगेर आर्य धर्म प्रचारिणी सभामें श्री बाबू  
महेन्द्र नाथ रायजी की वक्तृता।

(पूर्व प्रकाशित के आगे)

—०—

ऐसा दुर्लभ मनुष्य शरीर हमको केवल  
इसी लिये मिला कि सुजन पालन वो संचार  
करने चार भगवान को हम भजन करेंगे।  
आहार, निद्रा, मयन आदिके अर्थ यह शरीर  
नहीं मिला। रीति यह है, कि संसार में यदि  
किसी ने और किसी में थोड़ी बहुत उपकार पावे  
तो वह आमरण उनके शरणगत रहकर दिनरात  
उनकी गुणानुवाद किया करता वो कृतज्ञ बना  
रहता है। हम सब परम कृपानिधान की दया में  
दिन रात प्रतिपालित वो रक्षित होकर भी अपनाये  
उनको विस्मृत हो चैन उड़ाते हैं। यह क्या हमारा  
सामान्य भूल-सामान्य मूर्खता है? हम कितने दिन  
के लिये इस संसार में आये हैं? सच पूछिये तो

पञ्चाद याइते २ आपनारे देश घर छाड़ाईया दूर देशे गहन कानने गन्नुथे सक्कार अक्कारे किंकरुन्या ११८ हईया ७ नितान्त निराश्रय अनश्रय पाठित बाक्ति अनन्य गति हईया एक मात्र भगवानेर शरणापन्न हय, कोन प्रकार भय भने उदय हईले केवल हा परमेश्वर ! हा जगन्नाथर ! जहि मां, जहि मां, उदैछः परे छांकार करिते थाके, गेई रूप आभराओ आशा रूपिनी हरिणीर पञ्चाद २ एई दूर देशे अर्ध, २ मंगारारणे आसिया पड़ियाछि । एथाने सुख सामनेर जन्म ग्या वन्धित अनेक प्रकार दुखा गन्नुथे देखितेछि ओ उप भोग करिते पाइतेछि किन्तु हृदयेर चकनता किछुतेई याइतेछेना । याहा पाइले गर किछुई पाइवार ईछा थाकेना, एरूप यथार्थ आनन्द किछुतेई पाइतेछ ना सुतरां सदाई चिन्ता मागरे निरग्न । चतुर्दिक हईते काग, क्रोध आदि शबल शक्र सब भयण मूर्ति मारण करिया निर्वीर्यका देखैतेछे । एकदण्ड कण ना आभरा अनन्य गात हईया सेई अनाथ शरण आर्त्ति हरण भगवान् नारायणेर शरण पन्न ओ उँहार अन्न चरणारविन्दे आश्रय अछण करिते पारि एतए कातर परे जहि मां मधुसूदन ! जहि मां मधुसूदन ! बलिया उदैछः परे उँहाके डाकिते ना पारि तत्कण पर्याप्त आमादेर कल्याणेर आर वितीय उपाय नाई । मंगारे एतोक जीव आपन आपन सुख ओ कल्याणेर जना लालारित । सेई जना बलितेछि सेई सुखेर यथार्थ उपाय ये रूप नास्तु कथित आछे, तारा अमूर्तान कर, देख, सुख पाओ कि ना । आर रुखा मरौतिकार नार मंगारे अर्ध सेई सुखेर आश्रये गुरिओना । अनेक दिन गुरिने, कै कना मात्र ओ सुख भोग करिते पारिने ? जीवनेर अधिकार है तो मंगारेर दास्य करिया काटाईले, अनेक प्रकार चरुता द्वारा अर्थ उपार्जन करिले, किन्तु बल देखि भाई, सहा करिया बल देगि, कतठुकू यथार्थ सुख प्राप्त ठठ्याह । एई सब महाजन मगुना ! तोगरा तो भाई अर्थापु अर्थ मंग्र करियाह । २१ टी घर एके वारे टाकार तोड़ाय पूर्ण करिया बाधियाह,

यह हमारे लिये परदेश है । जैसा कोई बरनम शोकार खेचते खेचते किसी जानवार के पीछे दौड़े वो अपना घर बाड़ छोड़कर बहुत दूर जा पड़ते, संझा काल, साझने पन्थकार देखकर घबड़ा जाता वो नितान्त निराश्रित के समान केवल भगवत् के शरण आ जाता है, ओ भय होने से केवल हा जगदीश्वर ! हा परमेश्वर ! चाहिमां ! चाहिमां ! उची स्वरसे पुकारता रहता है । हम सब भी प्राणरूपी हरिणी के पीछे इतना दूर तक पर्यात् सार रूपी शरण में आ पड़चे हैं । विषय सुख साधन के लिये यहाँ माया काल्पित अनेक प्रकार के सामान देख पड़ते हैं, वो हम भोगते भी जाते हैं । किन्तु हृदय किसी प्रकार में स्थिर नहीं होता है । जो मास्र्या मिलने से और किसी पदार्थ के धर्म इच्छा नहीं होती है, ऐसा यथार्थ आनन्द कहीं नहीं मिलता है । सुतरां हम सदैव भित्ता मसृद्र में मगन रहते हैं ! चारो ओर से काम क्रोध आदि प्रबल शत्रु, गण भीषण मूर्ति धारण करके भय देखलाते रहते हैं । जब तो हम अनन्य गति होकर उन अनाथ शरण आर्त्ति हरण भगवान् नारायण के शरणपन्न नहींगे वो उनके प्रभय शरण कमल के आश्रय ले न मर्गेगे वो खेद पूर्ण हृदय से जब लो चाहि मां मधुसूदन ! चाहिमां मधुसूदन ! करके उची स्वरसे उनकी पुकार न सकेंगे तब को हमारी कल्याण को आशा कहाँ संभार में सब किसी ने अपना २ सुख वो कल्याण चाहता है । हम लिये हम कहते हैं, शास्त्र में सुख मिलने का जो जो उपाय बताये गये, उन सबका अनुष्ठान करो, देखो तो सुख मिले या नहीं, मृग दृष्टि के समान निरर्थक संभार में न घुमा करो । बहुत दिन तो चकर खाते पाये ! कणा भर क्या सुख कहाँ मिले ? जीवन के अधिक प्रसङ्ग तो संभार को मेवा में बितायो । अनेक प्रकार को चतुरता द्रव्य कमायो, किन्तु कहिए तो भाइ, सचेहो सच कहिये, यथार्थ सुख कितना मिला ? यहाँतो बड़े बड़े ने ठो मब बैठे हुए हों पाप सब तो बहुत घन एकट्टे किए हो, दो एक कोठरी रुपये से भर रखे हों गृह, इमारत, बड़े धूम धामसे बनाये हों । प्रतिदिन

बाजी, हेमराज, बड़ भूमधामेन साहत निर्माग करियाह, प्रति दिन गाढ़ मनोयोगेन साहत अनेक राजि पर्याप्त हिसाब कितान करिया। थाक, बल देधि कि परिमाणे अथ उपदेश करितेह। आमरा तो तोमादेन मने करि तोमराई बड़ सुखी। यदि सत्य कथा बल तो तोमराई एही बलिबे ये आमरा सुखो नहि। कारण अर्थ ना थाकार एक दोष, अर्थ थाकार अनेक दोष। अर्थ थाकिले, किसे ताहा रुझि हईवे, किसे चोर डाकाईत हईते उहा रुझा हईवे, ओ अर्थ गदे हयतो अनेक अक्ष हईया। अनेक पापाचरण करिते कृति करेन ना, सुतरां उहा द्वारा सुखेन आशा कोथाय? आर यथार्थ सुख ताहाकेई बले, ये सुखेन रुझि तिस ह्रास नाई ओ निरुति नाई। सुतरां एरूप अर्थ, पुत्र, परिवार, कलत्र ओ अन्यान्य काहार ओ द्वारा प्राप्त हईरार सञ्जावना नाई। नानक जी एक हाने कहियाहेन।

“ नानक दुखिया सब संसारा

सो सुखिया यो नाम आधारा ” ॥

संसार सकलै दुःखी, केवल सेहै व्यक्तिहै सुखी ये एक मात्र नारायणन नामके आश्रय करियाहे, नागई सञ्चल करियाहे। सांसारिक विषयादि हईते मनके निरुत करिया ये व्यक्ति अहरह भगवत् गुणानुवाद ओ नाम कीर्तन करिया जीवन यापन करिते पाऐन, तिनिहै शासु तिनिहै यथार्थ सुखी, तिनिहै संसार मनुष्य जन्मर निकल लाउ करिते पाऐन।

आमादेन अवनतिर एधान कारण एहे, यो ब्राह्मण पण्डित गण योहादेन एक मात्र उपदेश देओराई रुति, उहारा आपनार पण्डित परित्याग करियाहेन। उहादेन मन्थो उहेन अंश ह्रास हईया रुका ओ उहेन रुझि हईयाहे सुतरां अनाना उक्ति उपदेश अभाव इच्छा थाकिले ओ नानक उन्नति करिते पाऐन ना। यत दिन ना आमादेन देधे ब्राह्मण पण्डित गण पुरस्कार अरु एक मात्र धर्म उपदेश ओम्कार आलोचना

कितान ठोक करते रहते हो, कहिये तो भक्ता, आप सब कितना सुख भोगते हैं? हमतो आप सब को परम सुखो जानते हैं, यदि मिथ्या न कहिये तो आप को भी यही कहना पड़ेगा कि हम सब भी दुखी हैं, क्या कि द्रव्य न रहे तो एक ही दोष है, किन्तु द्रव्य रहने से आनेकानेक दोष देख पड़ते हैं। द्रव्य रहने पर यही चिन्ता सदैव बनी रहती है, कि कैसे इसको हृष्टि होगी, कैसे चोरी से इसको रक्षा होगी वो धन मद से धंधा होकर बहु तेरे लोग पापाचार करने में भी चूटी नहीं करते हैं, सुतरां उससे सुख की आशा कहाँ? यथार्थ सुख तो उसीका नाम है, कि जिस सुख की न्यूनता वो निवृत्ति के बदले दिनों दिन वृद्धि होय। सुतरां ऐसा सुख धन, पुत्र, कलत्र वो अन्यान्य परिवारों से कब मिल सक्ता है? एक स्थान में नानक जी ने बोला है।

नानक दुखीया सब संसारा।

सो सुखी या जो नाम आधारा ॥

संसार में सब कोई दुखी है, केवल सुखी वही है कि जो नारायण के नाम का आश्रय किया है। सांसारिक विषयों से मनकी चटा कर जो सदैव भगवत् नाम संकीर्तन करते हुए जीवन व्यतीत करते हैं वे ही शान्त हैं, वे ही सुखी यथार्थ हैं, उन्हीका जन्म संसार में सफल हुआ।

हमारे दुर्दशा का प्रधान कारण यह है, जो ब्राह्मण पण्डित गण, जिन्ही को केवल यही वृत्ति रहनी, औरों को धर्मका उपदेश करें, अपनी वृत्तिको कोढ़ दिये हैं। उन सबों में सत्व गुण कम ही गया, क्रौरज, तम गुण की वृद्धि हुई है। सुतरां अन्यान्य लोगों को दुःख रहने पर भी बिना उपदेश पाये आपनी अपनी उन्नति नहीं कर सक्ते हैं। जब तक हमारे ब्राह्मण पण्डित गण प्राचीन काल की रीति में केवल मात्र धर्मापदेश देना, धर्म को चर्चा करना अपना मुख्य कार्य न समझेंगे तब

करेन, तब दिन आमादेर उन्नतिर आर उपाय नाई ! मेहे उद्देशेन हे धर्मात्माही महाभाग ज्ञाने २ आर्था मत्तार संहारण करिशाहेन । याभाते धर्म जिज्ञासू गणेर कल्याण साधित हर हेराहे मत्ता मधुदेव मुखे उद्देश्य ।

आत्ता गण ! यदि कल्याण चाओ, यदि संहारण यथाथ सूख चाओ, तब वेडाईते हईवे ना, येथाने उगवने चर्चा ! उ उगवने गुणानुवाद, उग, महत्त्व कार्य परिताग करिशा तथाय याईवे । सुनिते २ धेमेर उद्दीपना हईवे । एक वातेर हे हईतार मत्तावना नाई ।

“नय नागत नागत लागे ।

भय भागत भागत भागे” ॥

कोन एक थानि दर्पणे मगला लागिले येमन वचिते २ क्रमे ताहार मगला छुटिशा परिष्कार हईरा यात्र अथवा एक थो लोका या मारिते २ भाजिशा यात्र, मेहे रूप मदासर्वदा उगवने गुणानुवाद सुनिते २ हनय रूप दर्पणे ये विषय चिन्ता रूपी मगला लागिले गिराहे, ताहा एहे रूप उगवने चर्चा रूप वर्षा द्वारा परिष्कार हईरा याईवे । तथन अनायास हे मर्ख घटे वासो उगवान् के हनय मधोहे प्रत्यक्ष करिते पारिवे । तथन आर ए तीर्थ उ तीर्थ, ए ठाकुर वाडी उ ठाकुर वाडी बुरिबेना । तथन हे यथार्थ सूत्र उ भासि उपदेश करिवे । कलि काले तीर्थ उत, जप, पूजा, पाठ, योग, ध्यान, प्राणायाम, अर्चति ना करिले उ एकमात्र उगवने गुणानुवाद अवग उ कीर्तन द्वारा एहे दुर्गम तब समुद्र गोष्प देर नाय अनायासे पार हईते पारिवे । एमन सूत्रोपदेश थाकिते हेलाय शराहेले काजे काजे हे कठे भाग करिते हईवे । हेछा करिशा आपनार हात यदि अगिते दाओ अवच्छाई पूडिशा याईवे उ कठे पाईवे । मेहे रूप जानिशा सुनिशा उ यदि उगवने चिन्ता उ गुणानुवाद ना करिशा विषय चिन्ता उ विषय सूत्रे उन्नत थाक ताहार कल परिणाम दुःख अवच्छाई भाग करिते हईवे । बुद्धिमान लोक ये कोन कार्य करेन, ताहार परिणाम कल कि हईवे, ताहा हिन करिशा कार्य प्रवृत्ति । आर अज्ञानी लोक अ

तक हिन्दु समाज को उन्नति की आशा कम है । इसी लिये धर्मात्माही महात्मा श्रीने स्थान स्थानमें आर्य धर्म सभा स्थापित करते जाते हैं । सभा समूह का उही उद्देश्य है कि धर्म जिज्ञासा करनेहारों का कल्याण साधन करें । भाइयों ! यदि निज २ कल्याण चाहो, तो झुट मुट घुमो मत । जहां भगवत् की चर्चा वा भगवत् गुणानुवाद होती है, सच्च २ काम छोड़के वहां जाइये । सुनते २ प्रम की उद्दीपना होगी । क्षण भर में कोई काम नहीं बनता है ।

लय लागत लागत लगे ।

भय भागत भागत भागे ॥

दर्पण पर जो मैल लग जाता है, मलत् २ वह कूट हो जाता इस में सन्देह नहीं । लोहा, कैसाही क्यों न कठिन हो, प्रवल आघात से वह भंग हो जाता है । उसी भांति भगवत् की नाम सुनते २ हृदय रूपी दर्पण में जी विषय चिन्ता रूपी मैल लग गया है, वह अवश्य ही कूट जायगी । तब सब घट निबासी भगवान् की हृदय की मध्य ही में प्रत्यक्ष कर सकोगे, उस समय तीर्थ तीर्थ में, मठ मठ में फिरना न पड़ेगा । उसी समय यथार्थ सुख वा शान्ति भोग सकोगे । कलियुग में तीर्थाटन, व्रत जप, पूजा, पाठ, योग, ध्यान, प्राणायाम आदि न करे पर भी कवल भगवत् गुणानुवाद की श्रवण वा कीर्तन से इस दुर्गम संसार रूपी समुद्र के गोष्प के समान अनायास पार उतर जा सकोगे । ऐसी सुविधा रहे पर भी क्यों व्यर्थ काल नष्ट करते हो ! अपनी इच्छा से यदि अपना हात आगमें डालो तो अवश्य ही जर जायगा वा तुमको कष्ट होगा । उसी भांति जान बुझके भी यदि भगवत् की चिन्ता वा गुणानुवाद के बढते विषय की चिन्ता वा विषय सुखमें उन्मत्त रहो, उसका फल अन्त में दुःख अवश्य ही भोगने पड़ेगा । मानी का यह पदचान है, कि परिणाम विषय करके काममें प्रवृत्त हो वा सुखी बन जाओ

পঞ্চাৎ বিচার না করিয়া কার্যে প্রবৃত্ত হয়, শুভরূপে তাহাকে পদে ২ কণ্ঠে ভোগ করিতে হয়। অতঃপর জাতগণ! আমরা তো বড় ২ বুদ্ধিমান ও জ্ঞানী, এক্ষণে অভিমান সকলেরই আছে। আমি যাহা বুঝি ও যাহা করি এমন বোধ হয় গংগাতীরে আর কেও বুঝেনা অথবা করেনা। এই অভিমান আমাদের সমস্ত অনর্থের মূল হইয়া পড়িয়াছে। যদি আমাদের অপেক্ষা বরং কয় অথবা জাতাংশে চোট কোন ব্যক্তি ধর্ম কথা বলে, তবে ঘৃণা করিয়া সেহান পরিভ্যাগ করিয়া যাইবেন অথবা একবারে সে দিক ঘাড়াইবেন না। বাস, বাস্তবীকী সনক, সনাতন প্রভৃতি মহাত্মারা যাহা করিয়া গিয়াছেন ও কহিয়া গিয়াছেন, তাহা আমাদের নিকটে তুচ্ছ হইয়া পড়িয়াছে। মহাত্মারত অনেক স্থলে দেখিতে পাওয়া যায় নৈমিষারণ্যে প্রভৃতি পুণ্য ক্ষেত্রে ৩০।৭০ শতাব্দীর ধর্ম একত্রিত হইয়া কেবল ভগবৎ কথাস্বত পান করিয়া দিন যাপন করিতেন। যতই শুনিতেন, অথবা লালসা ততই বৃদ্ধি হইত। রাজা পরীক্ষিত মহাত্মা শুকদেব প্রমুখাৎ ক্রীমদ্ভাগবৎ শ্রবণ করিতে ২ একরূপ বিমোহিত হইয়া পড়িয়াছিলেন যে নিকটে দেবতা গণ অমৃতের কলস আনিয়া দিলেও তিনি ভগবৎ কথাস্বতের নিকটে দেবদত্ত অমৃত তুচ্ছ বোধ করিয়া তাহা গ্রহণ করেন নাই। এমন অপরূপ ভগবৎ কথা আজকাল আমাদের নিকটে শ্রবণ যোগ্য নহে। আমাদের শাস্ত্র, আগাদের দেব লইয়া বিনেশীয় স্নেহ জাতিরা কত আন্দোলন করিতেছে, কত প্রশংসা করিতেছে! আমরা আমাদের ঘরে একরূপ অপূর্ণ অমূল্য ধর্ম থাকিতে কাঙ্গালের ন্যায়, অনাথের ন্যায় চারিদিকে, এখন খ্রীষ্টান, কথন জাক, কথন থিয়োজফিক্যাল সোসাইটি গুলি বেড়াইতেছে। ইহা কি অল্প আক্ষেপের বিষয়! জাতগণ! এখনও আপনাপন ব্যবহার উপর ক্ষণকালের জন্য লক্ষ্য কর, এবং সাধু মহাত্মা গণের আদর্শিত ও আচারিত পথ অনুসরণ কর। মানব জন্মের লক্ষ্য করিয়া লও। দেখিতে ২ আমাদের দিন তো ফুরাইয়া আসিল। ক্রমে ২ অমৃত গণ ও বুদ্ধি নিস্তেজ হইয়া আসিতেছে।

লক্ষ্য হইবে। কি আগে পৌঁছিতে চিনা কাম করিতে লগে। সুতরাং সত্বেব উনকো কষ্ট ভোগনে পড়তা হৈ।

ভাইয়া! আমরা সব কোঁয় এই অভিমান তাঁও বনা বনায়া জন্মা হৈ, কি আমরা সব সৈ বড় চড়কো জ্ঞানো বা বুদ্ধিমান হৈ। আমরা কোঁয় কিছু সমস্তে বা কর্তে হৈঁ এসা আর কিমো সৈ নহীঁ বনতা হৈ। সমস্ত অনর্থ্য কা মূল আমরা যহী অভিমান হৈ। যদি আমরা কোঁয় কম অবস্থা কোঁয় অথবা কোঁয় আমরা সৈ ন্যূন জাতি কোঁয় পুরুষ ধর্ম সম্বন্ধী কিছু কহেঁ বা শুনাও তাঁও ঘৃণা বন হীকরা মরুত উস স্থান কোঁয় ছোড় দৈ হৈঁ যা তাঁওহী আনা হী বন্ধ কর দৈ হৈঁ। বেদ ব্যাস, বাস্তবীকী, সনক, সনাতন আদি কোঁয় কিছু অনুষ্ঠান কর্তে গয়ে, আমরা সব তুচ্ছ মানতে হৈঁ। মহা ভারত মে দেখতে হৈঁ কি নেমিষারণ্য মে ৬০।৩০ সহস্র ঋষি একট্রে জ্ঞে বা প্রেমসৈ ভগবৎ কোঁয় কথামৃত পান কর্তে রহে। জিতনা হী শুনে গয়ে, উতনা হী প্যাস বড়তী গয়ী। রাজা পরীক্ষিত নে শ্রীমদ্ভাগবৎ শ্রী শুক দেব জীমে জব শুনে রহে, এস সময় বা এসে বিহ্বল হীগয়ে থে, কি দেবতা লোগ উনকো ক্ষিয়ে অমৃত কোঁয় খট লয়ে কিন্তু পরীক্ষিত কথামৃত পৌতে ২ দেবতা কোঁয় অমৃত কোঁয় কিছু ভী নহী সমস্তে। এসী রমোলী ভগবৎ কোঁয় কথা আজ আমরা সন্মোপ সন্মোব নীরস বৃক্ষ পড়া আমরা শাস্ত্র, আমরা বেদ কোঁয় খর্চী কর্তে ২ বিদেশী লোগ তাঁও কোঁয় পরম সুখকো প্রাপ্ত হীতে বা প্রশংসা কর্তে হৈঁ, কোঁয় আমরা অপনে ধরকো অপূর্ব বা অনমোক্ত ধরকো ছোড়কো কাংক্ষীকো সমান, অনার্থীকো সমান ইধর শুধর যা নে কভো ব্রাহ্ম সমাজ মে, কভো ইমার মে কভো থিয়োজফিক্যাল মে খুঁস জাতে হৈ! যহ কথা খোড়ী খুদকা বিষয় হৈ? ভাইয়া! আমরা অপনো ২ অবস্থা পর খোড়া বহুত ধ্যান ধরো কোঁয় সাধু মহাত্মা কোঁয় দেখাও হুই মার্গ কোঁয় অনুসরণ করো বা মনুষ্য খোলা কোঁয় সফল কর লো দেখতে দেখতে পরমাশু তাঁও খীণ হীতা আসতা হৈঁ বাঁ বুদ্ধি ভী নিস্তেজ হীতো জাতী হৈ। মার্জার জেসা মূষিক















